श्रीगणेशाय नमः

दृष्टान्तप्रदीपिनी

चतुर्थभाग उत्तरार्द्ध

जिसमें

...यिक निबन्ध सम्बन्धी अत्यन्त रोचक ...कृत अपूर्व अद्भुत बृहत् विस्तृत दृष्टान्त वर्णित हैं ॥

जिसको

सद्गुणग्राहक आर्य्यहितैषी धूसरवंशावतंस ...आयुष्मान् प्रयागनारायणजी के व्यय से ॥

...क्कोपाध्याय (देवीसहाय) शर्मा नारनौलीय ने ...त कर निज भाषा विभूषित करके समस्त लोक के उपकारार्थ प्रकाशित किया ॥

दूसरीबार

लखनऊ

सुपरिण्टेण्डेण्ट बाबू मनोहरलाल भार्गव के प्रबन्ध से
नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छापा
सन् १९०९ ई०

भूमिका

इस संसारसागर में दृष्टांतरूप अमूल्यरत्नों को चुनते २ इस समुद्रका एकदेश ऐसा महान् प्राप्तहुआ जिसमें महाही भारी अनर्घ्य रत्न वर्तमान इनमें से किन २ का संग्रहकरें किनको छोड़ें यह कह २ अत्यन्त अद्भुत चमत्कृत रोचकों को संग्रहकरते थोड़े ही संख्या के महद्वृत्तान्त गर्भित दृष्टान्तों से भाग प्रमाण समाप्त प्रायहुआ तो तिसे पूर्वार्द्ध संज्ञासे समापन किया शेष वहुतसे सामान्य विस्तृत अपूर्व कथा संबंधी सैकड़ों दृष्टान्त इसके उत्तरार्द्ध में प्रकाशित हैं वे समस्त अपूर्व नवीन हैं उनका आनंद देखनेही से प्राप्त होसक्ता है मैंने निज तुच्छ बुद्धि से यह शोचके कि इस पूर्वोक्त विस्तृत सागरके विभाग से परे और ऐसा देश न होगा यह समझकर मनमें संतोष करलिया तथा इसमें कुछ अधिक विशेषता न समझ इस साहस को यहांही समाप्त करना चाहा था परन्तु दैववश मैं उन्हीं रत्नों की खोजमें अपूर्व वृहत्कथा सागर में जा पहुँचा तव तो अतीवानन्द से मग्न हो इन रत्नों को चुनने में परायण हुआ तथाच उस समुद्र के भी सार २ रत्नों को एकत्र किये इस शुभचिन्तक की पूर्ण अभिलाषा है कि श्रेष्ठ सुजन हंस सम इसके अवगुण मल जल को तजकर इसका सार २ रूप पय पानकरके प्रसन्न हुये ऐहिक पारमार्थिक अलभ्य लाभ को प्राप्तहो यंत्रालयेश मैनेजर अवध अखवार श्रीयुत मुंशी प्रयागनारायणजी को धन्यवाद दे मुझको कृतार्थ करेंगे किमधिकं विज्ञेषु स्वल्पमेव वहुयथा ॥

दोषत्यागोगुणग्राहो महतांलक्षणंमतम् ॥
यथाहंसःप्रकुरुते जलत्यागंपयोग्रहम् ॥ १ ॥

आप जनोंका कृपापात्र देशका पूर्ण हितैषी याजकेश शुक्लो-पाध्याय (देवीसहाय) शर्मा नारनौलीयः शुक्लजी गंगासहायजी को मकान महेश्वरी मुहाल कानपुर शुक्लजी श्री ईश्वरीसहायजी को मकान शवकामहोला नारनौल शर्मेति मार्गशीर्षशुक्ले प्रति-पदि रवौ संवत् १९५६ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागके उत्तरार्द्धका सूचीपत्र ॥

विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
स्त्रियोंके दृष्टान्त में पुष्पदन्त गन्धर्व की जया नामवाली स्त्री की कथा का वर्णन.	१	६
श्मशानक्रीड़ा, पिशाचसहचारी, चिताभस्म का लेपन तथा मुण्डों के माला से अपने अमङ्गलरूप के कारण को श्रीशिवजी को शिवाजी से वर्णन करने का दृष्टान्त.	६	७
चाही वस्तु को यत्न करने से भी न प्राप्त होना और सन्तोष से प्राप्त होने के दृष्टान्त में काणभूत और वररुचि के सम्वाद का वर्णन.	७	११
जिस तरह पाटलीनाम से राजपुत्री थी और पाटलीपुत्र नाम से नगर का नाम भया सो कारण वररुचि को काणभूत से वर्णन करने का दृष्टान्त.	११	१७
वररुचि को काणभूत से तीन हिंसक तथा कामीपुरुषों को अपने पाप से नष्ट होने और पतिव्रता स्त्री को भय से मुक्त न होने के सम्वादका वर्णन.	१७	२४
वररुचि को काणभूत से योगमार्ग की युक्ति से भी धन प्राप्तहोने के दृष्टान्त में इन्द्रदत्त की कथाका वर्णन करना.	२४	२६
मन्त्रियों के साथ विरोध करने का निषेध राजा नन्द को अपने शकटाल मन्त्री को सौ पुत्रों सहित कुँए में डालना और शकटाल को अकेले जीकर राजा से अपना बदला लेनेका दृष्टान्त. ...	२६	३८
एकवणिक् को एक मरे मूसले व्यापार करके अत्यन्त धनवान् होकर मूसासाह नाम से संसार में प्रसिद्ध होनेका दृष्टान्त. ...	३८	३९
विना मौके के कामका निषेध ॥ एक सामवेदी ब्राह्मण को एक वेश्या से चतुरता सीखना और वेश्याकरके हतधनहो ब्राह्मण के भागने का दृष्टान्त.	४०	४१
गुणाढ्य को काणभूतसे सातवाहन राजाकी उत्पत्ति की कथाका वर्णन करना.	४१	४३
गुणाढ्य को काणभूत से राजा सातवाहन की विद्या प्राप्त होनेकी कथाका वर्णन करना.	४३	५०
गुणाढ्य को काणभूतसे पुष्पदन्त व माल्यवान् की कथा कहना	५०	५६

विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
भला तभीतक करना जबतक निज सर्वथा हानि नहीं-इसपर एक नपुंसक यक्षका दृष्टान्त.	३२८	३३०
माता पिताकी आज्ञानुसार न चलने से दुःख प्राप्त होताहै-जैसे चक्रनाम वैश्यपुत्रने पिता माता की आज्ञा उल्लंघन कर दुःख को प्राप्त हुआ.	३३०	३३२
मूर्ख दरिद्रीका प्राप्त हुआभी धन नष्ट होजाताहै-जैसे शुभदत्त पाये भी भद्रघटको मत्त होकर नृत्य करने में खोबैठा. ...	३३२	३३४
कुटिनी के कूट चरित्रों को जाने सो पण्डितहै जैसे ईश्वरवर्म्माने निज पिताकी शिक्षाकरके वेश्यासे सब धन लेलिया. ...	३३४	३४२
कहीं २ बालककी कही बातभी प्रमाण होजातीहै-जैसे निजपति मारिणी स्वैरिणी दुःशीला निज सुतके बतादेने से पहिचानी गई.	३४२	३४४
कुटिल कामी जन कामिनियों में महा अप्रतिष्ठा पाता है—जैसे निज स्त्री को दण्ड देतेहुये वज्रसारने निज नाक कान कटाये. ...	३४४	३४५
शूरबीर की ज्ञानवाली स्त्री व्यभिचार से छूट जाती है जैसे कल्याणवती रानी परपुरुषसे कामवश रति चाहती भी तिसकी तुच्छतापर घृणा करिकै व्यभिचार से निवृत्त भई.... ...	३४६	३४८
वाणी के दोष करिकै निज छिपारूप भी प्रकट होजाताहै जैसे बोलने पर गधा पहिंचाना गया.	३४८	३४८
छोटाभी जीव निजबुद्धि से भारी भी शत्रुको वशकर लेताहै—जैसे हाथी को एक शशेने वशमें किया....	३४९	३५०
क्षुद्रप्राणी का विश्वास दुःखदायी होताहै-जैसे एक बिलावने विश्वास दिलाकर दो पक्षी खालिये.	३५०	३५१
एककी बुद्धि बहुतों के कथन से बहक जाती है—जैसे धूर्तों के कहनेपर एक ब्राह्मण ने निज बकरा त्यागा.	३५१	३५२
आपसमें विवाद करने से भी निज काज की हानि होजाती है जैसे—चोर और राक्षस कृत विवादसे ब्राह्मणका जागरण होगया.	३५२	३५३
जो जैसाहो उसे वैसाही प्रिय मिलताहै जैसे एक मूषकी ने कन्या होनेपर भी वही मूषक पतिपाया.	३५३	३५४
वैरी से विश्वास न करना चाहिये-जैसे विश्वास किये सर्प ने मेंढकों का महानाश करडाला.	३५४	३५५
मूर्खोंका किया विभाग भी हानिकारक होताहै जैसे दो ब्राह्मणों ने निज एक दासीका विभाग किया तो तिनकी महाही हानि भई.	३५५	३५६
अनेक मूर्खों के दृष्टान्त.	३५६	३६०
बिन लालन की हुई दुहागिन स्त्री तो साध्वी होनेपर हित देने वाली होती और लालन कीहुई स्त्री दुःखदायक होजाती है जैसे-एक पुरुष के दो स्त्री थीं तिनमें पहिली हितकारक दूसरी		

विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
हितकारक अर्थात् व्यभिचारिणी थी.	३६०	३६५
अनेक मूर्खोंके दृष्टान्त.	३६६	३६८
बिन विचार करनेवाले मूर्ख आदिके दृष्टान्त.	३६८	[illegible]
चोरों की चालांकी बड़ी भारीहै जो मायावाली की भी मोहने वाली होती है इसपर राजपुत्री और दो चोर घट व कर्पर नामियों का दृष्टान्त.	३७०	३७८
उपकार किया कोई प्राणी समयपर महान् प्रत्युपकार करताहै— इसपर एक मुनि और चार जीव याने सिंह, सर्प, स्वर्णचूड़पक्षी व एक स्त्री का दृष्टान्त.	३७८	३८४
अनेक मूर्खों के दृष्टान्त.	३८४	३६०
अनेक व्यभिचारिणी स्त्रियों की चालांकी के दृष्टान्त. ...	३६०	३६६
त्रिमारिका कन्या का दृष्टान्त.	३६६	३६७
धूर्त्तका दृष्टान्त.	३६७	३६६
मूर्ख न्यायाधीश मूर्खता सेही न्याय करताहै-इसपर देवभूति नाम एक वैदिक ब्राह्मण और बलासुरनाम धोबीका दृष्टान्त. ...	३६६	४००
महादान देनेवाला भारी सिद्धिपाताहै—इसपर एक महादानी का दृष्टान्त.	४००	४०२
महाशीलवाला जन निज सुशीलता से सबको सुशील करदेता है इसपर एक महाशीलवाले का दृष्टान्त	४०२	४०४
क्षमावान् मनुष्य महाआपत्ति में भी क्षमा करताहै-इसपर एक शुभनय नाम मुनि और चोरोंका दृष्टान्त.	४०४	[illegible]
दृढ़ध्यान धरनेवाला ध्यानी जन उत्तमपद पाता है—इसपर मलयमालीनाम वैश्यपुत्र और इन्दुयशानाम राजपुत्री का दृष्टान्त.	४०६	४०८
चोरभक्त भक्ति भी बुराकरही करताहै-इसपर सिंह विक्रम एक चोर का दृष्टान्त.	४०८	४११
महामूर्खों के अपूर्व दृष्टान्त.	४११	४१५
मूर्ख की स्त्री व्यभिचारिणी भी होजातीहै इसपर एक कुलटा स्त्री का दृष्टान्त.	४१५	४१७
मूर्ख स्त्री गुप्तवार्त्ता को शीघ्रही प्रकाशित करदेती है-इसपर एक मूर्ख स्त्री का दृष्टान्त.	४१७	४१८
गंजे आदि अनेक मूर्खों के दृष्टान्त.	४१८	४२३
जलडर आदि महामूर्खों के अपूर्व दृष्टान्त.	४२३	४२८
धूर्त्तजन धूर्त्तता करके कहागया वश में होजाताहै-इसपर मूलदेव और उसकी स्त्री का दृष्टान्त.	४२८	४३५
शिष्ट श्री अलखरामजी का दृष्टान्त.	४३५	४४०

इति ॥

दृष्टान्तप्रदीपिनी सटीक ॥

चतुर्थभाग ॥

अपूर्वकथानिबन्ध ॥

उत्तरार्द्ध ॥

गुप्तवार्तानरक्षन्ति ह्यज्ञानिन्यः स्त्रियोयथा ।
विद्याधरापूर्वकथां शिवाग्रेऽकथयज्जया १ ॥

(अर्थ) अज्ञानवती स्त्रियां गुप्तवार्ताको पेटमें नहीं रखतीं अर्थात् शीघ्रही दूसरे से कहदेती हैं जैसे (जया) नामवाली पुष्पदन्त गन्धर्व की स्त्री ने निज पति से सात विद्याधरों की अपूर्व कथासुन शिवाजीसे जायकही इसीसे शापपाकर उनको मृत्युलोकमें आना पड़ा १ इसपर दृष्टान्त अपूर्व कथा सरित्सागरकी प्रथम तरंग जैसे कि सम्पूर्ण पर्व्वतोंका राजा हिमालय नाम पर्व्वत जिसपर किन्नर गन्धर्व और विद्याधरादिक सुखपूर्व्वक निवास करते हैं जिसका माहात्म्य सम्पूर्ण पर्व्वतों की अपेक्षा से इसकारण अधिक प्रसिद्ध है कि तीन लोकों की माता साक्षात् पार्व्वतीजी जिसकी कन्या हैं

जिसके उत्तरमें उसीका शिखररूप हज़ारों योजनके विस्तारवाला
कैलास नाम पर्व्वत स्थितहै यह कैलास पर्व्वत अपनी कान्ति से
मन्दराचल को इस कारण हँसता है कि यह समुद्रके मथने से निक-
लेहुये अमृत से भी उज्ज्वल नहीं हुआ और मैं बिनाही यत्नके ऐसा
उज्ज्वलहुआहूं कि मेरे ऊपर सम्पूर्ण चराचर संसारके स्वामी श्री
महादेव जी विद्याधर और सिद्धगणों से सेवित कियेहुए पार्वती
जी समेत निवास करके बिहार करते हैं जिनकी पीली २ जटाओं
के समूहों में प्राप्त चन्द्रमा सन्ध्याकाल की अरुणता से पीतवर्ण
होकर उदयाचल के शृङ्गों के संगके सुखको अनुभव करताहै और
जिन शिवजीने अन्धकासुरके हृदयमें त्रिशूलगाड़कर तीनोंलोकों
के हृदयका शूल निकालडाला और मुकुटों पर जड़ी हुई मणियों
में जिनके चरणों के नखों के प्रतिबिम्ब पड़ने से देवता तथा दैत्य
लोग चन्द्रशेखर से मालूम होते हैं ऐसे महादेव जी को पार्व्वती
जीने एकान्त में किसी समय प्रसन्न किया तब स्तुतिसे प्रसन्नहुए
महादेव जी पार्वती को गोद में बैठाकर बोले कि हे प्रिये ! तुम
क्या चाहतीहो वह हम करें ऐसे बचन सुनकर पार्व्वतीजी बोलीं
कि हे स्वामी ! यदि आप प्रसन्न हैं तो कोई अत्यन्त रमणीय नवीन
कथा कहिये २ ३ यह सुनकर श्री महादेवजीबोले कि हे प्रिये ! भूत
भविष्य और वर्तमान ऐसी कौनसी बस्तुहै जिसको तुम नहीं
जानतीहो तब पार्वती जीके अत्यन्त हठकरने पर श्री महादेवजी
एक छोटीसी कथा कहनेलगे कि एक समय नारायण और ब्रह्मा
जी मेरे देखने के लिये पृथ्वी में भ्रमण करते हुए हिमाचल के
नीचे आये वहां उन दोनों ने एक ज्वाला रूप महाभारी लिङ्गदेखा
उसके अन्त के देखने के लिये ब्रह्मा ऊपरको गये और नारायण

नीचेकोगये २८ जब दोनों ने उसका अन्त न पाया तब मेरी प्रसन्नता के लिये तप करनेलगे उससमय मैंने प्रगटहोकर दोनों से कहा कि तुम कोई वरदान मांगो यह सुनतेही ब्रह्मा ने तो यह वरमांगा कि आप हमारे पुत्र होयँ इसी निन्दित वचन कहने से ब्रह्मा संसार में अपूज्य होगये और नारायण ने यह बरमांगा कि हे भगवन्! मैं सदैव आप का सेवक बनारहूं इसी से वह नारायण तुम्हारे स्वरूप में होकर मेरे अर्द्धाङ्गीहुए और इसी से तुम्हीं मेरी शक्ति रूप नारायण हो और तुम्हीं मेरी पूर्वजन्म में भी स्त्री थीं शिवजी के इस वचन को सुनकर पार्वतीजी बोलीं कि मैं पूर्वजन्म में किसप्रकारसे आपकी स्त्री थी ३३ शिवजी बोले हे पार्वती! पूर्व समय में दक्षप्रजापति के तुम और तुम्हारे सिवाय अनेक कन्या थीं दक्षप्रजापति ने तुह्मारा विवाह मेरे साथकिया और अन्य कन्याओं का धर्मादिक देवताओं के साथ कर दिया एक समय दक्षने यज्ञ में सब जामाताओं को बुलाया परन्तु केवल मुझे नहीं बुलाया तब तुमने दक्षसे पूछा कि मेरे पतिको क्यों नहीं बुलाया दक्षने यह उत्तरदिया कि तुम्हारा पति मनुष्यों के कपाल आदिक अशुभवेष को धारण करताहै उसको मैं यज्ञमें कैसे बुलाऊं उसके ऐसे कठोर वचनों को सुनकर हे पार्व्वतीजी! तुमने यह शोचा कि यह बड़ा पापी है और मेरा शरीर भी इसी से उत्पन्न हुआ है इसलिये तुमने उस अपने शरीर को योग से त्याग दिया और मैंने क्रोधसे दक्ष के यज्ञ का नाश करदिया इसके उपरान्त जैसे समुद्रसे चन्द्रमा की कला उत्पन्नहुई है उसीप्रकार हिमालय के घर में तुम्हारा जन्महुआ ३६ इसके उपरान्त तुम्हें तो यादही होगा कि जब मैं तप करने के लिये हिमालय पर गया तब तुम्हारे पिताने

मेरी सेवा के लिये तुमको आज्ञादी इसी बीच में तारकासुरके मा-
रने के निमित्त मेरे पुत्र होने के लिये देवताओं के भेजे हुए
कामदेव ने अवसर पाकर मेरे ऊपर अपने बाण चलाये और मैंने
उसे भस्मकरदिया फिर बड़ा कठोर तप करके तुमने मुझे प्रसन्न
किया और मैंने भी तुम्हारे तपके बढ़ाने के लिये बहुत देरलगाई
इसप्रकार से तुम मेरे पूर्वजन्म की स्त्री हो बताओ अब मैं और
क्या कहूं ऐसा कहकर महादेव जीके चुप होजाने पर पार्वतीजी
क्रोध करके बोलीं कि तुम बड़े धूर्त्तहो मेरे प्रार्थना करने पर भी
कोई उत्तम कथानहीं कहते गङ्गाकोशिरपर धारणकरते हो सन्ध्या
की बन्दना करतेहो क्या मैं तुम्हें नहीं जानती यह बचन सुनकर
जब शिवजीने अपूर्व मनोहर कथा कहने की प्रतिज्ञा की तब पा-
र्वती जीका क्रोध शान्तहुआ ४५ पार्वतीजीने यहां कोई न
आनेपावे यह कह नन्दी को द्वारपर खड़ाकरदिया और शिवजी
कथा प्रारम्भ करके कहनेलगे कि देवतालोग अत्यन्तसुखी होते
हैं और मनुष्य अत्यन्त दुःखी होतेहैं इसलिये देवता और मनुष्यों
की कथा अत्यन्त मनोहर नहीं है इस हेतु से मैं विद्याधरों की
कथा प्रारम्भ करताहूं इसप्रकार जब शिवजी कहनेलगे तो उसी
समय शिवजी का अत्यन्त प्यारा पुष्पदन्त नाम गण आया और
द्वारपर खड़ेहुए नन्दी ने उसे रोकदिया परन्तु मुझे निष्कारण
रोका है ऐसा समझकर योग के बलसे अलक्षितहोकर भीतर च-
लागया और जाकर महादेव जी की कहीहुई सात विद्याधरों की
अपूर्व्व कथा सुनी और वही सब कथा उसने अपने घर जाकर
जया नाम अपनी स्त्री से कही क्योंकि कोई भी स्त्रियों से धन
और गुप्तवार्त्ता को नहीं छुपासक्ता ५२ उस कथा के आश्चर्य्य से

मरीहुई जयाने भी सम्पूर्ण कथा पार्वती जीके सन्मुख कही क्योंकि (स्त्रियां किसी बातको छुपा नहीं सक्तीं) जया से इस कथा को सुनकर बहुत क्रोध युक्तहो पार्व्वतीजीने शिवजी से कहा कि तुम ने यह अपूर्व कथा नहीं कही इसे तो जया भी जानती है तब महा-देवजी ने ध्यानकर देखा और कहा कि पुष्पदन्त ने योग बल से यहां आकर सब कथासुनीहै और जया से वर्णन की है नहीं तो इस को कौन जानसक्ताहै यहसुनकर पार्वतीजी ने बड़ेक्रोध से पुष्पदन्त को बुलाकर कहा हे दुष्ट! तू मनुष्यहोजा यह शापदिया और उसके लिये शिफ़ारस करनेवाले माल्यवान् को भी यही शापदिया ५७ तब उन दोनों ने और जयाने पैरोंपर गिरकर बहुत समझाया तब पार्वतीजी ने शापका अन्त इसप्रकार से बतलाया कि जो विन्ध्याचल के बनमें कुवेर के शापसे पिशाच हुआ सुप्रतीक नाम यक्ष काणभूत नामवाला स्थित है उसके देखने से अपनी जाति को स्मरण करके जब उससे इस कथाको कहोगे तब हे पुष्पदन्त! तुम इस शापसे छूटजावोगे और काणभूत की कथा को जब माल्यवान् सुनेगा तब काणभूत के मुक्तहोजानेपर कथाको प्रकट करके यह भी मुक्तहोजायगा यह कहकर पार्वती जी तो चुपकी होगईं और वह दोनों गण भी देखतेही देखते बिजली के समान नष्टहोगये ६२ इसके उपरान्त कुछ समय व्यतीत होजाने पर पार्वती दयायुक्त होकर शिवजी से बोलीं कि हे स्वामी! जिन दोनों गणों को मैंने शापदिया था वह पृथ्वी में कहां उत्पन्नहुए यह सुनकर महादेवजी बोले कि कौशाम्बी नाम नगरी में बररुचिनाम से पुष्पदन्त उत्पन्नहुआहै और सुप्रतिष्ठित नाम नगर में गुणाढ्य नाम से माल्यवान् भी उत्पन्नहुआहै वह उन दोनों का वृत्तान्तहै

इसप्रकार कहकर श्री महादेवजी गणोंको शापदेने से पश्चात्ताप वाली पार्व्वती को कैलास पर्व्वत पर कल्पवृक्ष की लताओं में क्रीड़ा करके प्रसन्न करते भये ६६ ॥

इति श्री दृष्टान्तप्रदीपिन्यां पुष्पदन्तः दृष्टान्तः प्रथमः प्रदीपः ॥ १ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेद्वितीयप्रदीपः ॥

श्मशानेष्वाक्रीडास्मरहरपिशाचाः सहचराश्चिताभस्मालेपः स्रगपिनृकरोटीपरिकरः ॥ अमंगल्यं शीलंकथमितिमहेशस्यविषये प्रमाणंदृष्टान्तंस्मरतागिरिजाशम्भुगदितम् २ ॥

(अर्थ) श्मशानमें क्रीड़ा और पिशाच सहचारी हैं तथा चिता कीभस्मका लेपन और माला भी नरमुण्डन की ऐसा शिवजी का अमंगलरूप कैसेहै इसविषयमें दृष्टान्त शिव गौरी सम्वाद कहाहै सो स्मरणकरो जैसे कि एक समय महादेवजी से गिरिजाजी ने पूँछा कि हे देवदेव! आपकी प्रीति कपाल और श्मशान में क्यों है तब शिवजी बोले कि पहिलेही कल्पके अन्तमें सब संसार के जलमय होनेपर मैंने निज जांघ चीरकर एक रुधिरकी बूँद टपकादीथी, वह जल में गिरकर अंडे के आकार होगई तो तिस अंडेको फाड़ने से एक पुरुष उत्पन्नहुआ उसीसे मैंने संसारके बनानेके लिये 'प्रकृति' उत्पन्नकी, तब तिन दोनों ने मिलकरके 'प्रजापति' उपजाया उसने प्रजाको उत्पन्न कियाहै इसीसे जन उसको पितामह कहते हैं ऐसे सब संसार को उत्पन्न करके अभिमानयुक्त भये उस पुरुषका शिर मैंने काटडाला उसीके पश्चात्तापसे मैंने यह महाव्रत ग्रहण कियाहै इसीसे मैं कपाल हाथमें लिये रहताहूं तथा श्मशान मुझे बहुतही

प्याराहै और हे गिरिजाजी ! यह कपालरूप संसार मेरे हाथ में स्थित है क्योंकि उसी अण्डके दोनों टुकड़े धरती आकाश कहलातेहैं ॥

इति द्वितीयप्रदीपः २ ॥

अथ श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे तृतीयप्रदीपः ॥

अन्वेषितं न लभ्येत स्वयं लभ्येत दैवतः ॥
भूभागेष्वेषितश्चापि प्राप्तो विप्रो यदृच्छया ३ ॥

(अर्थ) कोई भी वस्तु ढूंढ़नेपर तो नहीं मिलती और फिर संतोष करनेपर दैवयोगसे वह आपही मिलजातीहै जैसे एक ब्राह्मण सकृत् श्रुतिधर—एकबार सुन याद रखनेवाला सारीभूमिमें ढूंढ़नेपर भी सहजही उसके घर उतरनेपर मिलगया इसपर दृष्टान्त (काणभूत) और (बररुचि) का संवाद प्रमाणहै बररुचि कहताहै हे काणभूत ! कौशाम्बी नाम नगरी में सोमदत्त नाम ब्राह्मण रहताथा जिसका कि दूसरा नाम अग्निशिखभीथा उसब्राह्मणकी स्त्रीका नाम बसुदत्ताथा वह किसी मुनिकी कन्या थी और किसी शाप से ब्राह्मण की स्त्री हुई उन्हीं दोनों में से मेरा जन्म हुआ है जब कि मैं बहुत छोटा बालकथा तब मेरा पिता मरगया मेरी माताबड़े दुःखसे मेरा पालन करनेलगी २२ एकसमय बहुत दूरसे चलेहुए दो ब्राह्मण रात्रिभर रहनेके लिये मेरे घरपर ठहरे वहदोनों मेरे घरपर टिकेहीं थे कि उसीसमय मृदंगकी आवाज़ सुनाईपड़ी उसको सुनकर मेरी माता मेरे पिताकी यादकरके गद्गद वचनसे बोली कि हे पुत्र ! यह तुम्हारे पिताका मित्र नन्दराम नट नाच रहाहै मैंने भी माता से कहा कि मैं इसे देखने को जाताहूं और देखकर तुझे भी सम्पूर्ण दिखाऊंगा मेरे यह बचन सुनकर उन ब्राह्मणों को बड़ा आश्चर्य

हुआ ३६ तब मेरी माता ने उन दोनोंसे कहा कि इसमें कोई संदेह नहीं है यह बालक एकबार की सुनीहुई सब बातोंको हृदयमें धर लेताहै तब मेरी परीक्षा के लिये उन्होंने प्रीतिसांख्यका पाठकिया मैंने वह सुनकर उसीप्रकार सुनादिया इसप्रकार मुझे सकृत श्रुति-धर (एकबार सुनकर याद रखनेवाला) जानकर उन दोनों मेंसे एक व्याडि नामक ब्राह्मण ने मेरी माताको प्रणामकरके यह कथा कही ४० हे माता ! वेतसनामपुरमें देवस्वामी और करम्भक नाम दो ब्राह्मण अत्यन्त परस्पर प्रेम करनेवाले भाई थे उनमें से देव-स्वामी का पुत्र यह इन्द्रदत्त नाम है और करम्भकका पुत्र व्याडि नाम मैं हूं उनमें से प्रथम मेरा पिता मरा उसी के शोक से इन्द्रदत्त का भी पिता मरगया और उन्हीं दोनोंके शोकसे हमारी माताभी मरगई ४३ इसीकारण से धन होनेपर भी अनाथ होकर विद्याकी अभिलाषा से हम दोनों स्वामिकुमार की तपस्या करनेलगे ४४ तप करते २ एक दिन स्वप्न में स्वामिकुमारने यह कहा कि नन्द नाम राजाके पाटलिपुत्रनाम नगरमें वर्ष नाम एक ब्राह्मणहै उससे तुमको सम्पूर्ण विद्या मिलैगी तुम वहीं जाओ इसके उपरान्त पाट-लिपुत्र नाम नगर में जाकर हम लोगोंने पूंछा तो लोगोंने कहा कि हां वर्ष नाम एक मूर्ख ब्राह्मणहै ४७ तब सन्देहयुक्तहोकर हम दोनों वर्षके घरमें गये और जाकर मूसों के बिलोंसे युक्त गिरीहुई दीवारवाले छाया तथा छप्पर से रहित आपत्तियों के स्थान के स-मान घरमें ध्यान लगाये बैठेहुए उसवर्ष ब्राह्मणको देखा हमलोगों को आया देखकर वर्षकी स्त्री जिसका कि शरीर अत्यन्त मलिन केवल बालखुले हुये और वस्त्र मैले थे वह स्त्री क्या थी मानों वर्षके गुणों को देखकर साक्षात् दुर्दशाही स्वरूप को धारणकिये आई थी

उसने बड़ा सत्कार किया तब हमने प्रणाम करके अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कहा और यह भी कहा कि हमने सुनाहै कि वर्ष बड़े मूर्ख हैं यह सुनकर वह बोली कि तुम हमारे पुत्रके समानहो तुम से क्या लज्जा है सुनो मैं तुमसे यह कथा कहती हूं ५२ इस नगर में शंकर स्वामी नाम एक ब्राह्मण रहते थे उनके दो पुत्र थे एक तो मेरा पति और दूसरा उपवर्ष मेरा पति तो अत्यन्त मूर्ख तथा दरिद्री हुआ और इसका भाई अत्यन्त धनवान् तथा विद्वान् हुआ उसने अपनी स्त्रीको हमारे घरके भी पालन करने की आज्ञादेदी थी पर यहांकी यह बड़ी बुरी रीति है कि वर्षाऋतु में गुड़ और पीठी को मिलाकर स्त्रियां गुप्तरूप से कोई बुरी चीज़ बनाकर मूर्ख ब्राह्मण को देती हैं ऐसा करने से जाड़ों के दिनों में स्नानका क्लेश और गर्मियों में स्वेदका दुःख नहीं होता इसलिये मेरी देवरानी ने भी दक्षिणा सहित वह पदार्थ मेरे पतिको दिया उसे लेकर जब वह घरमें आया तब मैंने इसे बहुत डाटा और यह भी अपनी मूर्खताके कारण अत्यन्त दुःखीहोकर स्वामिकुमारकी सेवा करनेकोचलेगये इनके तपसे प्रसन्नहुए स्वामिकुमारने इनके हृदयमें सम्पूर्ण विद्याओंका प्रकाश करदिया और कहा कि जब सुकृत श्रुतिधारीब्राह्मण तुमको मिलै तब तुम इन विद्याओं का प्रकाश करना इसप्रकार स्वामिकुमार की आज्ञापाकर बहुत प्रसन्नतापूर्व्वक घर में आकर इन्हों ने सम्पूर्ण वृत्तान्त मुझसे कहा तबसे यह बराबर रात्रि दिन जप और ध्यानमें लगे रहते हैं इससे कोई सुकृत श्रुतिधारी (एक बार सुनकर याद रखनेवाला) ब्राह्मणलाओ तो तुम्हारा कार्य्य सिद्धहोय वर्षकी स्त्री से ऐसे वचन सुनकर और उसे १०० अशर्फ़ी देकर सुकृत श्रुतिधर के ढूंढ़नेको हम सब पृथ्वीपर घूमे परन्तु वह

कहीं नहीं मिला आज थककर तुम्हारे यहां आये तौ यह तुम्हारा बालक सुकृत श्रुतिधारी मिला सो तुम इसे विद्या पढ़ने के लिये हमको सुपुर्द करदो ६६ व्याड़िके ऐसे वचन सुनकर हमारी माता बड़े आदरपूर्व्वक बोली कि तुम्हारा कहना बहुत ठीकहै क्योंकि जिस समय यह बालक उत्पन्नहुआथा तव यह आकाशवाणीहुई थी कि यह बालक सुकृत श्रुतिधारी होगा और वर्षउपाध्यायसेविद्याको पढ़कर संसार में व्याकरणशास्त्रकी प्रतिष्ठा बढ़ावेगा और इसका वररुचि नाम इसकारण से होगा कि संसारमें वर अर्थात् उत्तमपदार्थही इसको अच्छे लगेंगे इसी से इस बालकके बढ़नेपर मैं रात्रि दिन शोचतीथी कि वर्षउपाध्याय कैसे मिलैंगे आज तुम्हारे मुखसे यह बात सुनकर मुझे बड़ा सन्तोष हुआ तुम इसे लेजाओ कोई शोचकी बात नहीं है यह तो तुम्हारे भाई के समानहै मेरी माताके ऐसे वचन सुनकर वह दोनों बड़े प्रसन्न हुए और क्षणके समान वह रात्रि व्यतीत की ७२ इसके उपरान्त उन दोनों ने मेरी माता के प्रसन्न होनेके लिये अपना सम्पूर्ण धन देकर मेरायज्ञोपवीत किया फिर मेरे लेजाने के लिये आज्ञामांगी तब मेरी माताने भी बड़ेदुःख से किसी प्रकार अपने आंसुओंको रोककर मुझे जानेकी आज्ञादी वह मुझे साथमें लेकर वहां से बड़ी प्रसन्नतापूर्व्वक चले और वर्ष के घर में पहुँचे वर्षने भी मुझे स्वामिकुमार के वरदान के समान मानकर दूसरे दिन हम लोगोंको सन्मुख बैठालकर अपनी दिव्य वाणी से ॐकार उच्चारण किया उसीसमय सम्पूर्ण वेद अपने २ अंगोंसमेत उनको स्मरण हो आये और वह हम लोगोंको पढ़ाने लगे एकबार सुनकर मैंने दोबार सुनकर व्याड़िने और तीनबार सुनकर इन्द्रदत्त ने गुरूका पढ़ायाहुआ यादकर लिया उस अपूर्व्व

दिव्यध्वनिको सुनकर सम्पूर्ण नगरनिवासी ब्राह्मणलोग देखनेको आये और प्रशंसा करके वर्ष उपाध्यायको प्रणाम करने लगे ऐसे आश्चर्य्य को देखकर पाटलिपुत्र नगरनिवासी सम्पूर्ण लोग उत्सव करनेलगे परन्तु उसके भाई उपवर्ष ने अभिमान के कारण नहीं किया और नन्द नाम राजा ने भी स्वामि कुमारके प्रभावको देख कर और वर्षके ऊपर प्रसन्न होकरउनका घर धनसे भरवादिया ८३ ॥

इतिदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेतृतीयःप्रदीपः ॥ ३ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे चतुर्थःप्रदीपः ॥ ४ ॥

पाटलीराजपुत्र्यासीत्पुत्रस्तुनृपतिस्तदा ॥
तयोर्नाम्नेनजातापूः पाटलीपुत्रउच्यते ४ ॥

पाटली नामसे राजपुत्री थी और पुत्रनाम राजा इन दोनों से बनाया पाटलीपुत्र नामसे नगर भया इसपर दृष्टांत वररुचि काणभूतका संवाद जैसे—

वररुचि एकाग्रमन से सुननेवाले काणभूत से फिर बोला कि एक समय अपने नित्यकार्य्यों को करके हमने वर्षनाम उपाध्याय से पूछा कि हे उपाध्याय! किस कारणसे इस पाटलिपुत्र नामनगर के निवासी अत्यन्त धनवान् और विद्वान् होते हैं सो आप कृपा करके वर्णन कीजिये यह सुनकर उपाध्याय बोले कि हरद्वारमें जो कनखल नाम अत्यन्त पवित्र तीर्थहै जिस तीर्थमें काञ्चनपात नाम दिग्गज उसीनरगिरिको तोड़कर उसपर से श्रीगङ्गाजी को उतार लायाहै उसमें एक दक्षिणी ब्राह्मण अपनी स्त्रीसमेत तप करता था उस ब्राह्मण के तीन पुत्र थे समय पाकर जब वह ब्राह्मण स्त्रीसमेत मृत्युको प्राप्त हुआ तब उसके पुत्र विद्या पढ़नेकी इच्छा से राजगृह नाम स्थान में जाकर विद्या पढ़ने लगे और पढ़कर किसी

स्वामी के न होनेसे दुःखित होकर स्वामिकुमार के दर्शन करनेको दक्षिणकी ओर गये ८ वहां समुद्रके तटपर किञ्चिनी नाम नगरी में भोजक नाम ब्राह्मण के घर में रहने लगे उस ब्राह्मण के तीन कन्याथीं उसने अपनी तीनों कन्याओं का विवाह इन तीनों से करके और अपना सब धन देके तप करनेके निमित्त गङ्गाजीकी यात्राकी इसके उपरान्त सुसरके घरमें रहते २ उस देश में अनावृष्टि के कारण बड़ाभारी दुर्भिक्ष पड़ा इससे वह तीनों ब्राह्मण अपनी २ स्त्रियोंको छोड़कर देशान्तर को चलेगये (क्योंकि दुष्टोंके हृदयमें सम्बन्धका स्नेह नहीं होता) १२ और वह तीनों कन्या अपनेपिता के मित्र किसी यज्ञदत्त नाम ब्राह्मण के घरमें रहीं उनमें से बीच वाली कन्या के गर्भ भी था समय पाकर उसके पुत्र उत्पन्न हुआ उस बालक पर उन तीनों का बड़ा स्नेह था एक समय आकाशमार्गमें विहार करते हुए महादेवजी की जङ्घापर बैठीहुई पार्व्वती जी उस बालकको देखकर दयापूर्व्वक बोलीं कि हे स्वामी! देखो इस बालकपर यह तीनों स्त्रियां कैसा स्नेह करती हैं और इनको यह आशाहै कि यह हमारा पालन करेगा सो हे स्वामी! ऐसाकरो जिससे यह बालक इनकी पालना करे पार्व्वती जी के ऐसे दयायुक्त वचनों को सुनकर वरदाता भगवान् महादेवजी बोले किइस पर मैं अवश्य अनुग्रह करूंगा क्यों कि पूर्व्वजन्ममें इसने अपनी स्त्री समेत मेरी बड़ी आराधना की है इसीलिये इसको यह जन्म भी दियाहै इसकी स्त्री महेन्द्रनाम राजा की पुत्री पाटली नामसे उत्पन्नहुई है उसीसे इसका विवाह भी होगा २० यह कहकर शिवजी ने उन पतिव्रता स्त्रियोंको यह स्वप्न दिखाया कि तुम्हारे इस बालक का पुत्रकनामहै यहजब शयन करके उठेगा तब इसके शिरहानेमें

एक लाख अशर्फी प्रतिदिन मिलेंगी और इसीसे यह राजाहोगा इसके उपरान्त जब बालक सोते से उठा तब वह स्त्रियां उस अशर्फियों के ढेरको पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुईं इसप्रकार उन अशर्फियों से बड़ाभारी खज़ाना इकट्ठा होगया इसीसे वह पुत्रकनाम लड़का राजाभी होगया किसीसमय उसके नानाका मित्र यज्ञदत्त एकांत में उस बालक से बोला कि हेराजन्! आपके पिता दुर्भिक्षके कारण से देशान्तरको चलेगयेहैं आप ब्राह्मणोंको सदैव कुछ दान दिया कीजिये जिसे सुनकर आपके पिताभी आवैं और मैं आपसे इसी विषय में राजा यज्ञदत्त की कथाको कहताहूं उसको सुनिये २६ पूर्व काल में काशीजी में ब्रह्मदत्त नाम एक राजाहुआ उस राजा ने रात्रिके समय आकाश में उड़तेहुए सैकड़ों राजहंसों से घिरेहुये दो सुवर्ण के हंसों को देखा उनकी ऐसी शोभाथी कि मानों बिजली के समूहको श्वेत मेघों के समूह घेरे चलेजाते हैं राजाको उनके देखने की उत्कण्ठा ऐसीहुई कि राज्यके सब सुखोंको भूल गया और मन्त्रियों की सम्मति से एक बड़ा उत्तम तड़ाग बनवाकर उनमें सब जीवोंके आनेकी बेरोक आज्ञा देदी फिर समय पाकर वह दोनों हंसभी आये राजाने उनको आया हुआ देखकर विश्वास देके उनसे पूंछा कि तुम्हारा शरीर सुवर्णका क्योंहै यह सुनकर वह हंस प्रकट बाणी से बोले कि हेराजन्! पूर्व्वजन्ममें हम दोनों काक थे एकसमय किसी निर्जन पवित्र शिवालयमें भोजन के निमित्त लड़ते २ शिवालय की जलाधारी में गिरकर मरगये और अब पूर्व्वजन्म के जाननेवाले सुवर्ण के हंसहैं उनके यह वचन सुन और उन्हें अच्छे प्रकार से देखकर राजा अत्यन्त प्रसन्न हुआ ३४ इसीसे मैं कहताहूं कि जो आप कोई अपूर्व दान किया

करोगे तो आपके भी पिता उसके प्रभावसे आपको मिलेंगे इस प्रकार यज्ञदत्त से सुनकर पुत्रकके उसीप्रकार दान देनेसे दानकी प्रसिद्धी को सुनकर उसके पिताभी वहांआये और पहिचान लिये गये तब पुत्रने उनको बड़े आदरपूर्वक धन देकर रक्खा (भाग्य से आपत्तियों का नाश होजाने परभी अविवेक से अन्धबुद्धि वाले दुष्टोंका स्वभाव नहीं जाताहै यह आश्चर्य है) एक समय उसके पितादिक राज्य पाने की इच्छा से उस पुत्रकनाम अपने पुत्रको मारनेकी इच्छाकरके उसे विन्ध्यवासिनी के दर्शनके बहाने वहां लेगये और बधिकोंको देवी के मन्दिर में स्थापित करके पुत्रसे बोले कि पहले तुम अकेलेही देवीके मन्दिरमें दर्शन करने जाओ उसने उनके विश्वाससे भीतर जाकर मारनेको उद्युक्तहुए पुरुषों से पूंछा कि तुमलोग मुझे क्यों मारते हो बधिक बोले कि तुम्हारे पिता और चाचाओं ने सुवर्ण देकर हमको तुम्हारे मारने को यहां रक्खाहै इसके उपरान्त देवीकी कृपासे मोहितहुये बधिकों से पुत्रक ने कहा कि यह सम्पूर्ण रत्नजटित मेरे आभूषण लेकर मुझे छोड़दो मैं इसबातको किसी से न कहूंगा और कहींदूर चला जाऊंगा तव बधिक लोगों ने उसके सब भूषण लेलिये और उसके पितासे कहदिया कि हम पुत्रक को मारआये फिर वहांसे लौटकर गये हुये राज्यके चाहने वाले उसके पितादिकों को मन्त्रियों ने द्रोही जानकर मारडाला (क्योंकि कृतघ्नियोंका कल्याण कैसेहो सक्ताहै) ४४ इसी बीचमें वह सत्यवक्ता राजा पुत्रक भी अपने बन्धुओं से विरक्त होकर बिन्ध्याचल के बन में चलागया और वहां जाकर घूमते २ पुत्रक ने मल्लयुद्ध करतेहुए दो पुरुषों को देखकर उनसे पूछा कि तुमकौनहो उन दोनोंने कहाकि हमदोनों मयासुर

के पुत्रहैं और एक पात्र एकदण्ड तथा दोपादका यही हमारे पिता का धनहै इसी धनके लिये हम दोनों लड़ते हैं जो अधिक बलवान् होगा वह छीन लेगा उनके यह वचन सुनकर पुत्रकने हँसकर कहा कि यह कितना धनहै जिसके लिये तुम लड़ते हो तब वह बोले कि इन खड़ाओं के पहरने से आकाश में उड़जाने की सामर्थ्य होती है इस दण्डसे जो लिख दियाजाताहै वह सत्य होता है और इस पात्रमें जिस भोजनकी इच्छा करो वही प्राप्त होजाता है यह वचन सुनकर पुत्रकने कहा कि युद्ध से क्या प्रयोजन है यह प्रतिज्ञा करो कि दौड़नेसे जो आगे निकलजाय वही इसधन को पावे इस बातको मानकर वह दोनों मूर्ख दौड़े और पुत्रक भी खड़ाओंपर चढ़कर दण्ड और पात्रको लेकर आकाशको उड़गया ५२ इसके उपरान्त क्षणभर में बहुत दूर जाकर आकर्पिका नाम सुन्दर नगरीको देखकर आकाशसे पुत्रक उतरा और यह विचारने लगा कि वेश्या बंचक होतीहै ब्राह्मण हमारे पिताके समानहोते हैं और वैश्य धनके लोभी होते हैं तो मुझे कहां रहना चाहिये ऐसा विचार करते२ किसी निर्जन टूटेफूटे घरमें एकवृद्धास्त्रीकोउसनेदेखा तब उसे कुछ देकरप्रसन्नकरके उसीटूटेफूटे घरमें गुप्तहोकर रहने लगा एकसमय उस वृद्धा ने पुत्रक के स्वरूपको देख प्रसन्नहोकर उससे कहा हे पुत्र!मुझे यह बड़ी चिन्ताहै कि तुम्हारेयोग्यस्त्री कहीं नहीं है यहांके राजाकी कन्याका नाम पाटली है वह तुम्हारे योग्यहै परंतु महलों में रत्नके समान उसकी चौकसी कीजाती है ५८ वृद्धा के ऐसे वचन सुनकर उसके चित्तमें कामदेवकी बाधा हुई तो विचार किया कि आज उसको अवश्य देखूंगा यह निश्चय करके रात्रि के समय खड़ाऊं पहर कर आकाश मार्ग से वह चला और पर्वत

के शिखरके समान ऊंचे झरोखे में से प्रवेश करके महल में सोती हुई उस पाटलीको देखा उसकी ऐसी शोभाथी कि वह स्त्री नहीं है मानो सम्पूर्ण संसार को जीतकर थकी हुई कामदेवकी शक्ति शरीर में लगी हुई चन्द्रिका से सेवन कीजाती है उसे सोती हुई देखकर पुत्रकने शोचा कि इसे कैसे जगाऊं उसीसमय अकस्मात् किसी पहरुएने यह दोहा पढ़ा ॥

दोहा । अलस दृष्टियुत कामिनी आलिंगन करिजौन ।
रहसिजगावे तरुण जन जन्मकेरि फलतौन ॥

इसको सुनकर कांपतेहुए अंगों से उस परमसुन्दरी राजपुत्री का उसने आलिंगन किया और वह जग पड़ी तब उस राजपुत्र को देखकर लज्जा तथा आश्चर्य्य से उस राजपुत्री की दृष्टि चकि-तहोगई इसके उपरान्त वार्त्तालाप करनेपर इनका गन्धर्व विवाह होगया और उन दोनों की प्रीति परस्पर अत्यन्त बढ़ी फिर रात्रि के व्यतीत होजानेपर राजपुत्री से पूछकर पुत्रक उस वृद्धा के घर में फिर लौटआया इस प्रकार वह हर रात्रिमें वहां जाने आनेलगा एक समय रक्षकों ने पाटलि के संभोगचिह्नों को देखकर उसके पितासे कहा तब राजाने भी एक स्त्रीको छिपाकर उसके पहचानने के लिये महल में रक्खा ७० उस स्त्री ने जब पुत्रक सोगया तब पहचानने के लिये उसके वस्त्र में महावरलगादी प्रातःकाल उसके कहने से राजा ने दूत भेजे और उसी पहचान से दूत उसे पकड़ कर राजाके निकट ले आये राजाको क्रोधित देखकर पुत्रक खड़ाऊं पहरकर आकाश में उड़ा और पाटली के महल में आकर बोला कि हमको राजाने जानलिया है तो चलो हमदोनों खड़ाऊं के बल से उड़चलैं यह कहकर पाटली को गोद में लेकर उड़गया इसके

उपरान्त गङ्गाजी के तट पर आकाश से उतरकर थकी हुई प्रिया को उसी पात्रके द्वारा उत्पन्नहुए भोजनों के प्रकारों से प्रसन्नकिया इसप्रकार के अद्भुत प्रभावको देखकर पाटली ने प्रार्थना की तब पुत्रकने उसदण्ड से चतुरंगिणी सेनासमेत एक नगर लिखा उस नगर के सत्य होजाने पर पुत्रकने उसमें राज्य किया और अपने श्वशुर से मिलकर धीरे २ वह सम्पूर्ण पृथ्वी भरे का राजा होगया इसी से यह नगर लक्ष्मी सरस्वती का क्षेत्र विख्यात होकर अत्यन्त धनवान् तथा विद्यवान् पुरवासियों समेत माया से रचाहुआ है और पाटलीरानी के कारण से इसका नाम पाटलिपुत्र (पटना) रक्खागयाहै इसप्रकार उपाध्यायके मुखसे इस अपूर्व कथाको सुनकर हमारे चित्तमें बहुत काल तक आश्चर्य्य और आनन्द बढ़तारहा॥

इति दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेचतुर्थप्रदीपः ४॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागपञ्चमप्रदीपः॥ ५॥

हिंस्राःस्वपापेनहिहिंसितास्तथासाध्वीसमत्वेन भयात्प्रमोचिता। स्त्रीणांचरित्रंतदतीवदुर्घटंदेवो नजानातिकुतोमनुष्यः॥ ५॥

(अर्थ) हिंसक कामी तो तीनों पाप से नष्टहुए और पतिव्रता भयसे छोड़ाई गई इससे स्त्रियों का चरित्र अत्यन्तही दुर्घटहै तिसे देवता भी नहीं जानते मनुष्य तो कैसे जानसकताहै इस पर भी वही सम्वाद—जैसे॥

इसप्रकार काणभूत से बीच में इस कथा को कहकर वररुचि फिर अपनी कथा कहनेलगा इस रीति से व्याड़ि और इन्द्रदत्तके साथ धीरे २ सम्पूर्ण विद्याओं को पढ़कर मैं तरुणअवस्था को

प्रसहुआ एक समय हम सब लोग इन्द्रोत्सव नाम मेले को देखने गये थे वहां काम के शस्त्र के समान एक कन्या को देखकर मैंने इन्द्रदत्तसे पूछा कि यह कौनहै उसनेकहा कि यह उपवर्षकी लड़की उपकोशानामहै इतनेही में उसकन्याने भी अपनी सखियों से मेरा वृत्तान्तपूंछा और मेरे मनको खैंचेहुए अपने घरको चली गई उस का मुखारविंद पूर्ण चन्द्रमा के समान नेत्र नीलकमल के समान भुजा कमलकी दंडी के समान स्तन बड़े ग्रीवा शंखके समान और ओष्ठ मूंगे के समान थे उसका कहांतक वर्णन किया जाय मानों वह कामरूपी राजा की सौन्दर्य्यरूपी मन्दिर की दूसरी लक्ष्मीही थी ७ इसके उपरान्त काम के बाणों से मेरा हृदय छिदने लगा और उस रात्रिको उसके ध्यान में मुझे अच्छेप्रकार निद्रा भी न आई जब बड़े कष्ट से कुछ निद्राआई तो यह स्वप्न दिखाई पड़ा कि श्वेत वस्त्र धारण कियेहुए कोई स्त्री मुझसे यह कहरही है कि हे पुत्र ! यह उपकोशा तेरी पूर्व्वजन्म की स्त्री है तेरे सिवाय और किसी की उसको कामना नहीं है इससे चिन्ता मतकरो और मैं तेरे शरीर के भीतर रहनेवाली सरस्वती हूं मुझसे तेरा दुःख देखा नहींजाता यह कहकर वह अन्तर्द्धान होगई ११ तब मेरी निद्राछुटगई और मैं विश्वासयुक्त होकर अपनी प्रिया के घरके समीप एक छोटे से आमके बृक्ष के नीचे बैठा १२ इसके उपरान्त एक सखी ने मुझसे यह कहा कि उपकोशा भी तुम्हारे निमित्त काम से पीड़ितहोरही है तब मैंने उससे कहा कि उसके पिता की आज्ञा बिना मैं उपकोशा को कैसे स्वीकार करसक्ताहूं क्योंकि इससंसार में अपयश से मौत अच्छी है जो इसबातको उपकोशा के घरवाले जानजायँ तो बहुत अच्छाहै इसलिये तुम ऐसाहीकरो

जिससे मेरे और तुम्हारी सखी के प्राणबचैं यह सुनकर उसने स-म्पूर्ण वृत्तान्त उपकोशा की माता से कहा उसने अपने पति उप-वर्ष से कहा कि उपवर्ष ने अपने भाई वर्ष से कहा और वर्षने उ-सबातको स्वीकारकिया विवाहके ठहरजानेपर बर्ष उपाध्याय की आज्ञासे व्याड़ि मेरी माताको कौशाम्बी नगरी से बुलालाया इस के उपरान्त उपवर्ष ने विधिपूर्व्वक उपकोशा नाम कन्यादान क-रके मुझे देदी तब मैं सुखचैन से अपनी माता और स्त्री समेत वहीं निवास करनेलगा १९ इसके पीछे समय पाकर वर्ष उपाध्याय के बहुतसे शिष्य बनगये उनमें से एक पाणिनिनाम शिष्य बड़ा मूर्खथा वह सेवा करनेसे बहुत घबराकर वर्षकी स्त्री का भेजाहुआ विद्याकी कामनासे तप करने को हिमालय पर्व्वतपर चलागया वहां बड़े तपसे प्रसन्नहुये महादेवजी ने सम्पूर्ण विद्याओं का मुख-रूप नवीन व्याकरण उसे दिया उस विद्याको पाकर लौटेहुए पा-णिनिने शास्त्रार्थ करने के लिये मुझे बुलाया तब हम लोगों के शास्त्रार्थ करते २ सातदिन व्यतीत होगये आठवें दिन मैंने पा-णिनिको जीत लिया तब आकाशमें स्थितहुए शिवजीने बड़ा घोर हुंकार किया उससे हम लोग सम्पूर्ण ऐन्द्र व्याकरण भूलगये और पाणिनिने हम लोगोंको जीतलिया २५ तदनन्तर मैंने बहुत लज्जित होकर अपना सम्पूर्ण धन हिरण्यगुप्त नाम बनिये के यहां घरके खर्चके निर्वाहके लिये रखदिया और यहबात उपकोशा को बताकर मैं तपसे श्रीशिवजी के आराधन करनेको हिमालय पर गया और उपकोशा भी मेरे कल्याणकी इच्छा से नित्य नि-यमपूर्व्वक श्रीगङ्गाजी का स्नान करके अपने घरमें रहा करती थी एक समय बसन्तऋतु में अत्यन्त दुर्बल शरीरवाली पांडुवर्ण

युक्त चन्द्रमाकी कलाके समान मनुष्योंके नेत्रोंको आनन्द देने-
वाली उपकोशा गङ्गाजी के स्नान करनेको चली जा रहीथी बीच
में राजाके पुरोहितने कोतवालने और मन्त्रीके पुत्रने इसको देखा
तो उसी समयसे वह तीनों कामके वशीभूत होगये और उसने
भी उसदिन स्नान करने में अधिक देर लगाई ३१ जब वह लौटी
तो सायंकाल के समय मन्त्री के बेटेने हठकरके उसको रोका उस
ने भी अपनी हिकमतअमली से यह कहा कि मेरी भी पहिलेही से
यह इच्छाथी परन्तु मैं अच्छे कुलमें उत्पन्नहुईहूं और मेरापति पर-
देश गयाहै इससे मैं डरतीहूं कि जो कोई देखले तो मेरी और
तेरी दोनों की बुराई होगी इससे जब वसन्तका उत्सव देखने को
लोग चलेजायँ तब पहर रात्रिगये तुम मेरे घर आना यह कहकर
जैसे कि वह आगे को चली वैसेही पुरोहितने पकड़ा पुरोहित से
भी उसने वही बात कहकर रात्रिके दूसरे पहरका संकेत करदिया
उससे भी जब किसीप्रकार छूटकर चली तो कोतवालने रोका
उससे भी उसने वही बात कहकर रात्रिके तीसरे पहरका वादाकर
दिया इसप्रकार भाग्यवश से उसके हाथ से भी छूटकर घरमें आई
और अपनी सखीसे सलाह करनेलगी कि रूपके लोभ से मतवाले
पुरुषोंके घूरनेके बनिस्बत पतिके परदेश जानेपर कुलीन स्त्री का
मरजानाही बेहतरहै ४१ इस प्रकार से शोचती और मेरास्मरण
करतीहुई उपकोशाने उसदिन न भोजन किया न रात्रिको सोई
प्रातःकाल ब्राह्मणोंके पूजनके निमित्त धन लेनेके लिये हिरण्य
गुप्त बनियेके यहां अपनी दासी भेजी तब उस बनिये ने उसके
घरपर आकर उपकोशासे एकान्त में यह कहा कि तुम मेरे साथ
संगकरो तो मैं तुम्हारे पतिका धराहुआ धन तुमकोदूं उसके वचन

सुनकर और अपने पतिके रक्खेहुये धनका कोई गवाह न जान कर खेद तथा क्रोधमें भरीहुई उपकोशाने उस पापी बनिये से भी वही बात कहकर रात्रिके चौथे पहरका संकेत करदिया यह सुनकर वह बनिया चलागया ४६ इसके उपरान्त उपकोशाने अपनी दासियों से कस्तूरी आदि अनेक सुगन्धियों से युक्त तेल मिलाहुआ काजल बनवाया और चार बस्त्रके टुकड़ोंपर वहकाजल लिसवाया और एकबड़ी मज़बूत सन्दूक बाहरी कुण्डी लगवाकर बनवाई ४८ इसके उपरान्त रात्रिके पहिले पहर में बड़ी उत्तम पोशाक पहनकर मन्त्री का पुत्र आया छिपकर आये हुए उसे देखकर उपकोशाने कहा कि मैं तुझे बिना न्हाये को नहीं छुऊंगी इससे भीतर जाकर स्नान करआ उसकी बातको मानकर वह मूर्ख दासियों के साथ बहुत गुप्त अँधेरे घरमें गया वहां दासियों ने उसके वस्त्र तथा आभूषण लेकर उन वस्त्रों के टुकड़ों में से एक टुकड़ा लँगोटा बांधने को उसे दे दिया और उबटन के बहाने से शिरसे पैरोंतक वहकाजल उसके शरीर में मल दिया क्योंकि उसे वहां कुछ सूझता न था उसके अंगोंको दासियां मलही रहीथीं कि दूसरे पहरमें पुरोहितजी आगये तब दासियोंने मन्त्री के बेटेसे कहा कि यह वररुचिका मित्र कोई पुरोहित आयाहै इसलिये तुम इस सन्दूक में चलेजाओ ऐसा कहकर दासियोंने सन्दूकके भीतर उस नंगे मन्त्री के बेटेको बैठाकर कुण्डी बन्द करदी ५६ फिर उस पुरोहितको भी स्नान के बहानेसे भीतर लेकर सब वस्त्रादिक ले लिये और वही वस्त्रका टुकड़ा पहनाकर तेलका काजल उतनी देरतक मलती रहीं कि तीसरे पहरमें कोतवाल भी आगये, उसके आने के भयसे दासियोंने उसे भी सन्दूकमें बैठाकर बाहरसे कुण्डी लगादी

फिर स्नानके बहाने से कोतवालकोभी भीतर लेजाकर उसके वस्त्रादिक उतार लिये और उसीप्रकारसे काले वस्त्रका टुकड़ा पहराकर इतनी देरतक उबटना करतीरहीं कि पिछले पहरमें बनियांभी आगया तब दासियों ने उसके आने का भय दिखाकर कोतवालको भी सन्दूकमें बन्द करके कुण्डी बन्द करदी सन्दूक के भीतर वह तीनों परस्पर स्पर्श होनेपरभी मारे डरके नहीं बोले ६३ इसके उपरान्त उपकोशाने घरमें दीपक बालकर उस बनियेको बुलाया और बोली कि वह मेरे स्वामी का धन जो तुम्हारे यहां रक्खाहै मुझे देदो यह सुनकर बनियेने घरको सूना देखकर कहा कि मैं तो कही चुकाहूं कि जो तेरे स्वामीका धन रक्खाहै वह देदूंगा तब उपकोशा सन्दूक को सुनाकर बोली कि हे देवतालोगो ! हिरण्यगुप्त के यह वचन सुनो यह कहकर और दीपक बुझाकर उसेभी औरों केही समान स्नानके बहानेसे भीतर भेजा दासियोंने उसकेभी वस्त्रादिक लेकर और वही काले वस्त्रका टुकड़ा पहनाकर काजलके उबटन लगाने में इतनी देरलगाई कि प्रातःकाल होगया तब दासियोंने कहा चलेजाओ रात्रि व्यतीत होगई यह कहकर ज़बर्दस्ती उसे गर्दना देकर निकालदिया ६८ इसके उपरान्त काजलसे लिपेहुए वस्त्रके टुकड़े को पहनेहुए वह बनिया लज्जित होकर अपने घर पहुँचा घरमें जाकर काजलकी स्याही को धोतेहुए सेवकों के सामनेभी वह नहीं खड़ा होसक्ताथा (क्योंकि ठीकहै अनीति में बड़ा कष्ट होताहै) ७० प्रातःकाल उपकोशा अपनी दासीको साथ लेकर अपने घरवालों के बिना पूछे राजा नन्द के महल में पहुँची और जाकर यह कहा कि हिरण्यगुप्त नाम बनियां मेरे पतिके धरे हुए धनको नहीं देताहै, राजाने इस बातकी जांच करने के लिये

उसे बुलाकर जो पूछा तो उसने कहा कि मेरे पास कुछभी इसके पतिका धन नहीं है तब उपकोशाने कहा कि हे राजा ! मेरा पति सन्दूक में घरके देवताओंको बन्द करगयाहै वह मेरे गवाहहैं उन के आगे इसने धन देना मंजूर किया है उस सन्दूक को मँगाकर आप पूछ लीजिये यह वचन सुनकर राजाने बड़े आश्चर्यपूर्वक बहुतसे आदमियों को भेजकर वह सन्दूक मँगाली ७६ इसके पीछे उपकोशा ने कहा कि हे देवतालोगो ! जो कुछ इस बनियेने कहाहै उसे सत्य २ कहकर अपने २ घरों को जाओ नहीं तो मैं तुम्हें राजाको सौंपूंगी या सभामें खोलदूंगी यह सुनकर सन्दूकमें बैठेहुए वह सब डरकर बोले कि ठीकहै इसने हम लोगोंके सन्मुख धन देने को क़बूल कियाहै, तब तो उस बनिये ने निरुत्तर होकर उसका सब धन देदिया ७९ इसके उपरान्त राजाने उपकोशा से पूछकर बड़े आश्चर्य्य के साथ वह सन्दूक खुलवाया तो उसमें से काजल केसे पुतले तीन पुरुष निकले और राजा तथा मन्त्रियों ने उनको बड़ी कठिनता से पहिचाना जब हँसकर सब लोग आश्चर्य्य से पूछने लगे कि यह क्या बात है तब उपकोशा ने सारा वृत्तान्त साफ़ २ कह सुनाया यह सुनकर सभासदलोगों ने कहा कि शीलवती कुलवती स्त्रियोंका अद्भुतचरित्र है और उपकोशा की बड़ी प्रशंसाकी इसके अनन्तर राजाने पराई स्त्री के चाहनेवाले उन लोगोंका सर्वधन छीनलिया और अपने देशसे निकाल दिया (क्योंकि बुरेस्वभावसे किसीका कल्याण नहीं होता) ८४ तू मेरी बहिनहै यह कहकर राजाने उपकोशाको उसके घर भेज दिया वर्ष तथा उपवर्ष भी इस हालको सुनकर बड़े खुशहुए और उस नगर के सम्पूर्ण निवासी बड़े अचम्भे में होगये इसी बीच में हिमालय

लास पर्व्वत पर मैंने बड़ा तप करके शीघ्र बरदायी शिवजी महाराज को प्रसन्न किया महादेवजी ने प्रसन्न होकर उस पाणिनीय शास्त्रका मेरे हृदयमें भी प्रकाश कर दिया और उन्हीं की कृपा से मैंने उस शास्त्र में जो कमी थी उसे भी पूर्ण किया इसके उपरान्त महादेवजी के मस्तकपर विराजमान चन्द्रमा की अमृतमय किरणों से सींचेहुए मैंने विना परिश्रम घर में आकर माता तथा गुरुओंकी बन्दना और उपकोशाका अत्यन्त अपूर्व्व वृत्तान्तसुना यह सुनकर मुझे आश्चर्य्य पूर्व्वक बड़ा आनन्दहुआ और उपकोशापर मेरा स्नेह तथा आदर बहुत बढ़गया ६१ ॥

इति दृष्टांतप्रदीपिनीचतुर्थभागेपंचमःप्रदीपः ॥ ५ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेषष्ठप्रदीपः ॥

योगयुक्त्यापिलभ्येत द्रव्यंराज्ञिमृतेयथा ॥
तदीयदेहवेशेन योगतःप्रापितंधनम् ॥ १ ॥

अर्थ योगमार्ग की युक्ति से भी द्रव्य प्राप्ति होसक्ती है जैसे-(इन्द्रदत्त) उस मरे राजाके शरीरमें प्रवेशकरके धन प्राप्त करताभया दृष्टान्त पूर्व्वोक्त वररुचि काण भूतका सम्बाद-जैसे ॥

इसकेबाद वर्ष उपाध्यायने मेरे मुखसे नवीनपाणिनीयव्याकरण सुननेकी इच्छाकी तो स्वामिकुमार ने स्वयं उनके हृदयमें उसका प्रकाशकरदिया इसके पीछे व्याड़ि और इन्द्रदत्तने वर्ष उपाध्यायसे गुरुदक्षिणा मांगनेको कहा तब उन्होंने करोड़ अशर्फ़ी मांगी गुरुके वचनको अंगीकार करके उन दोनों ने हमसे कहा कि आवो नन्द राजा के यहां गुरुदक्षिणा मांगनेको चलैं उसके सिवाय और कोई इतना धन नहीं देसक्ता क्योंकि उसके यहां ९९ करोड़ अशर्फ़ियोंकी

आमद है और उसने उपकोशाको अपनी धर्म्म की वहिन कहाथा इसलिये वह तुम्हारा सालाहै तो तुम्हारे गुणोंसेभी कुछ मिलेगा ९६ ऐसा निश्चय करके हम लोग अयोध्या में पड़ेहुए राजानन्द के डेरेमें गये जैसे कि हमलोग वहां पहुँचे वैसेही उस राजानन्द का देह त्याग होगया और राज्यमें कोलाहल मचगया इससे हम लोगोंको वड़ा खेदहुआ ९८ इसके उपरान्त योगकी सिद्धिसेयुक्त इन्द्रदत्तने कहा कि इसमरेहुए राजाके शरीर में प्रवेशकरूं तो वररुचि मेरे पास मांगनेको आवें मैं एककरोड़ अशर्फ़ी देदूंगा और जबतक मैं लौटकर न आऊं तबतक व्याड़ि मेरे शरीरको रक्षाकिया करे यह कहकर इन्द्रदत्तने राजानन्द के मृतकशरीरमें प्रवेश किया और राजा जीउठा फिर राजाके जी उठनेपर वहां वड़ा उत्सव होने लगा तब किसी शून्य देवमन्दिरमें इन्द्रदत्तके शरीरको व्याड़ि के सुपुर्द करके मैं राजा के यहां चला वहां राजाके पास जाके और स्वस्तिबचन कहकर राजा से एक करोड़ अशर्फ़ी गुरुदक्षिणा के लिये मांगी उसने शकटाल नाम राजा के मन्त्री से कहा कि इसे करोड़ अशर्फ़ी दिलादो मरेहुए का फिर जीवन देखके और शीघ्र ही याचकका आना देखकर मन्त्री तत्त्वको जानगया क्योंकि बुद्धिमानोंसे कोई बात छिपी नहीं रहती हे स्वामी! दिलाय देता हूं यह कहकर मन्त्री बिचारनेलगा कि नन्द राजाका लड़का बहुत छोटा है और राज्यमें भी बहुत से शत्रुहैं तो इससमय इसप्रकारसे राजा के शरीर की रक्षा करनी चाहिये ऐसा निश्चय करके उसने वहांके सब मुर्दे जलवादिये १०८ इसबीचमें दूतों ने शून्य देवमन्दिर में इन्द्रदत्त का भी शरीर पाया और व्याड़िसे छीनकर वह भी जला दिया इसीबीच में राजाको अशर्फ़ियों के देनेमें जल्दी करते देख

कर शकटाल ने विचारकर कहा कि उत्सव से सम्पूर्ण लोगों का चित्त अभी सावधान नहीं है क्षणभर यह ब्राह्मण ठहरे मैं अशर्फ़ी दिवाये देताहूं इसके उपरान्त व्याड़िने योगसे बनेहुए राजानन्द के आगे चिल्लाकर कहा कि बड़ा अन्धेर है कि नहीं मरेहुए योग में स्थित ब्राह्मण का शरीर अनाथ मुर्दा कहकर आपके राज्य में जलादिया यह सुनकर योगसे बनेहुए राजानन्द के शोकसेबुरी दशा होगई देहके जलजानेसे उसनन्दको स्थिर जानकर मंत्रीने बाहर आकर मुझे सब अशर्फ़ी देदीं ११२ ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेषष्ठप्रदीपःसमाप्तः ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्तमप्रदीपः ॥

नकार्य्योमंत्रिसार्द्धंवैविरोधःकेनचिद्यथा ॥
शकटालोमृतसुतोपिराजानंचह्यमारयत ७ ॥

(अर्थ)-मंत्रियोंके साथ विरोध कभी किसीकोभी नहीं करना चाहिये जैसे शकटाल मन्त्री राजाकरके कुएँ में उतारागया और उसी पलमें उसके सौ पुत्र भी मरगये पर उसने समयपाय बदला लेकर राजाको मारही दिया-जैसे—

इसके अनन्तर योग से बने हुए नन्द ने एकान्त में शोक युक्तहोकर व्याड़िसे कहा कि मैं ब्राह्मण से शूद्र होगया इस धनसे क्या लाभहोगा यह सुनकर व्याड़ि ने उसी समय के माफिक समझाकर कहा कि शकटाल तुझे जानगया तो अब शोचो कि यह तुम्हारा मुख्य मंत्रीहै थोड़ेदिनोंमें तुम्हें मरवाकर नन्दके पुत्र चन्द्रगुप्तको यहां का राजा बनावेगा इसलिये वररुचिको अपना मुख्य मन्त्री बनाओ उसकी बड़ी प्रभाववाली बुद्धिसे तुम्हारा राज्य स्थिर

होजायगा यह कहकर व्याड़ि तो गुरुदक्षिणा देने को चलागया और उसने मुझे बुलाकर अपना मंत्रीबनाया तब मैंने उससे कहा कि तुम्हारा ब्राह्मणत्व तो चलाही गयाहै परन्तु शकटाल जबतक जीता है तबतक राज्यको भी स्थिर न समझो इसलिये इसका युक्ति पूर्व्वक नाश करनाचाहिये मेरे इसमंत्रको सुनकर योगसे बनेहुए नन्दने शकटालको उसके सौपुत्रों समेत अन्धे कुएं में गिरवा-दिया और जीतेहुए ब्राह्मणको इसने मरवाडाला इस बदनामी के डरसे एकप्यालेभरसत्तू और प्यालेभर पानी इन सबके लिये प्रति-दिन बँधवादिया तब शकटालने अपने पुत्रों से कहा कि इतने में एक का भी पेट नहीं भरेगा बहुतों की कौनकहे इसलिये एक ही हममें से वह मनुष्य इसको रोज खायाकरे जो कि योग से बने हुए इस राजा नन्दसे अपना बदलालेसके १२४ तब उसके पुत्रों ने कहा कि आपही इस कामको करसकेंगे इससे आपही इसेखा-इये क्योंकि धीर पुरुषोंको शत्रुओं से बदलालेना प्राणों से भी बढ़करहै १२५ तब शकटाल उससत्तू और जलसे अपने प्राणों की रक्षाकरनेलगा क्योंकि जीतनेकी इच्छा करनेवाले बड़े क्रूरहोते हैं अन्धेकुएंमें पड़ेहुए शकटाल ने अपने पुत्रोंको मरताहुआ देख-कर यहशोचा कि कल्याण चाहनेवाला मनुष्यस्वामियोंके चित्त को बिनाजाने और बिश्वासहोने बिना उनके साथ कभी अपनी इच्छाके अनुसार व्यवहार न करे इसके उपरान्त शकटाल के देख-तेही देखते उसके सब पुत्र मरगये और वह उनके हाड़ों के पां-जरों से घिराहुआ अकेला जीतारहा इतने में योग से होनेवाले राजा नन्दकाभी राज्य जमगया और गुरुको दक्षिणा देकर लौटे हुए व्याड़िने आकर उससे कहा कि हे मित्र! तुमको राज्यमें सुख

होय अब मैं तुमसे पूंछकर कहीं तप करने जाताहूं यह सुनकर राजा गद्गद वचन करके बोला कि तुम भी राज्य में सुखका भोग करो और मुझे छोड़कर कहीं न जाओ तब व्याड़ि ने कहा कि हे राजा!इस क्षणभंगुर शरीर में और इसीप्रकार की अन्य असार वस्तुओं में कौनबुद्धिमान् अपने को डुबावे लक्ष्मीरूपी मृगतृष्णा बुद्धिमान् मनुष्यको नहीं मोहित करती है यह कहकर व्याड़ि निश्चयकरके तप करने को चलागया १२४ इसके उपरान्त वह राजा सम्पूर्ण सेना को लेकर मुझ समेत पाटलिपुत्रनाम अपने नगर में आनन्दपूर्वक सुख भोगने के लिये चलाआया वहां राजा के मंत्रियों में मुख्यहोकर और बहुतसी लक्ष्मी पाकर अपनी माता तथा गुरुओं के साथ उपकोशा से सेवन कियाहुआ मैं बहुत दिन तकरहा फिर तपसे प्रसन्नहुई गंगाजी ने प्रतिदिन मुझे बहुतसा सुवर्ण दिया और शरीरधारण कियेहुये श्री सरस्वतीजी ने मुझे साक्षात् दर्शनदेकर मेरे कार्य्यों में उत्तम उपदेश दिया १२७॥

इसप्रकार से कहकर वररुचिने फिर यह वर्णन किया कि समय पाकर योग से बनाहुआ राजा नन्द कामादि के वशीभूतहोकर मतवाले हाथी के समान किसी की अपेक्षा न करनेलगा एकाएकी आईहुई लक्ष्मी किसको नहीं मोहित करती है इसके उपरान्त मैंने विचार किया कि राजा तो उद्दंडहोगया और उसके कार्यों को बिचारते २ मेरा धर्म्म भी नहीं सधता इसलिये सहायताकेलिये शकटाल को निकलवाऊं तो अच्छाहोय जो वह विरुद्ध करनाचाहैगा तौ मेरे होतेहुए वह कुछ नहीं करसक्ताहै ऐसा निश्चय करके मैंने राजा से प्रार्थना करके शकटालको कुएं में से निकलवाया क्योंकि ब्राह्मणलोग बड़े कोमल होते हैं ५ कुएं से

निकलेहुए शकटाल ने यह विचारा कि जबतक वररुचिहै तबतक इस राजाको कोई नहीं जीतसक्ता इससे समय का इन्तिज़ार कर ने के लिये बेत के समान नम्र वृत्ती को अख़्तियारकरूं ऐसाशोच कर बुद्धिमान् शकटाल फिर मंत्री होकर मेरी इच्छा के अनुसार राज्यके कार्य्य करनेलगा एकसमय राजा नगर से बाहर सैरकरने को गया था वहां उसने गंगाजी के भीतर से निकलाहुआ एक ऐसा हाथ देखा जिसकी पांचों अँगुली मिलीहुई थीं उसे देखकर उसने मुझे बुलाकर पूछा कि यह क्या है मैंने उसहाथ की तरफ़ अपनी दो अँगुली उठाईं उन अँगुलियों को देखकर वह हाथ अन्तर्द्धान होगया फिर राजा ने मुझ से आश्चर्य्यपूर्व्वक पूछा कि बताओ यह क्या था तब मैंने कहा कि इस हाथका यह अभिप्राय था कि इस संसार में पांच आदमी मिलकर कौनसी बात नहीं सिद्धकरसक्ते हैं तब मैंने दो अँगुली इस अभिप्राय से दिखलाईं कि दोही के एक चित्तहोजाने पर कोई बात असाध्य नहीं है इस छिपेहुए विज्ञान को सुनकर राजा बहुत प्रसन्नहुआ और शकटाल मेरी दुर्जय बुद्धिको देखकर अप्रसन्न हुआ १३ एक समय राजाने देखा कि मेरी रानी झरोखे से किसी ऊपर शिरउठानेवाले अतिथि ब्राह्मणको देखरही है इतनीही बातसे क्रोधितहोकर राजा ने उस ब्राह्मणके मारडालने का हुक्मदिया क्योंकि ईर्षा से विचार नहीं रहताहै उस ब्राह्मण को मारने के लिये जाते देखकर बाज़ार में रक्खीहुई मरी मछली भी हँसनेलगी राजा ने यह देखकर उस ब्राह्मण का मारना उस दिन बन्दकरवादिया और मुझे बुलाकर उस मछली के हँसने का कारण पूछा १७ मैंने कहा कि शोचकर इसका उत्तर दूंगा यह कहकर एकान्त में ध्यानकरतेहुये सरस्वती

जी ने मुझ से कहा कि रात्रिके समय तुम इस ताड़ के वृक्षके ऊपर छिपकर बैठे तो यहां तुम्हें निस्सन्देह इस मछली के हँसने का कारण सुनाई पड़ेगा यह सुनकर मैं रात्रिके समय उसताड़ के वृक्षके ऊपर बैठा तो वहां अपने छोटे २ बालकों को साथलिये एक बड़ी घोर राक्षसी आई भोजन मांगते हुए अपने बालकों से उस ने कहा कि ठहरजाओ मैं प्रातःकाल तुम्हें ब्राह्मण का मांस दूंगी क्योंकि आज वह मारा नहींगयाहै बालकों ने पूछा वह क्यों नहीं मारागया तो उसने कहा कि उसे देखकर मरीहुई मछली हँसी थी लड़कों ने पूँछा कि वह मछली क्यों हँसी थी तब उस राक्षसी ने कहा कि राजा की सब रानियां बिगड़गईं सब महलों में स्त्रियों का भेष किये पुरुषरहते हैं और निरपराधब्राह्मण मारा जाताहै इस लिये मछली हँसी थी राजाके अत्यन्त बिचार रहित होने से जब जीव हँसते हैं तब सब महलों के रहनेवालों की यहीदशा होती है उसके यह वचनसुनकर वहांसे मैं चलाआया और प्रातःकाल राजाके पास आकर उस मछली के हँसनेका कारण बतलाया २६ तब राजा महलों में गया और स्त्रीरूपधारी पुरुषों को पाकर मेरे ऊपर बहुत प्रसन्न हुआ और ब्राह्मण को बधसे छुड़वादिया राजाकी ऐसी २ करतूत देखकर मैं बहुत खिन्नरहता था एक समय वहां कोई नवीन तसवीर बनानेवाला आया उसने राजा और राजा की पटरानी इन दोनों की एक तसवीर बनाई वह तसवीर ऐसी उत्तम बनी कि वाणी और चेष्टा के न होनेपर भी जीवतीहुई सी मालूमहोती थी राजाने प्रसन्नहोकर उस तसवीरवाले को बहुतसा धनदिया और वह तसवीर अपने घर में दीवार पर लगवाली ३० एक समय राजा के घर में जाकर मैंने तसवीर में लिखी हुई सब

लक्षणों से भरीहुई राजाकी रानी देखी और उसके दूसरे लक्षणों के सम्बन्ध से और अपनी समझ से उसकी कमरमें एक तिल बना दिया इससे उसके लक्षणों को पूरा करके मैं वहांसे चलाआया इस के उपरान्त राजा ने वहां जाकर वह तिलदेखा और सेवकोंसे पूछा कि यह किसने बनायाहै उन लोगों ने तिलका बनानेवाला मुझे वतलाया राजाने शोचा कि रानी के गुप्तस्थानके इस तिलको मेरे सिवाय और कौन जानसकताहै इसको वररुचि कैसे जानगया मालूम होता है कि इसने छिपकर महलों को बिगाड़ाहै इसी से वहां उसने स्त्रीरूपधारी पुरुष देखे यह शोचकर राजाको बड़ा क्रोध हुआ (ठीकहै मूर्खों के बिचार भी मूर्खता के ही होते हैं) ३७ इसके उपरान्त राजाने एकान्त में बुलाकर शकटाल से कहा कि तुम वररुचि को मरवाडालो क्योंकि इसने महलों को बिगाड़ाहै शकटाल ने कहा कि जैसा आपका हुक्महै वैसाही करूंगा यह कहकर बाहर चलाआया और शोचनेलगा कि मैं वररुचिको नहीं मारसकताहूं क्योंकि वह बड़ा बुद्धिमान्है और उसीने मुझेआपत्तियों से छुड़ायाहै और वह ब्राह्मणभी है तो यह अच्छाहोगा कि मैं उसे छिपाकर अपने यहां रक्खूं ऐसा बिचारकर शकटाल राजा के कोपका कारण और बधका हुक्म वररुचि से कहा और फिर बोला कि मैं कहने सुनने के लिये और किसीको मारडालताहूं तुम छिपकर मेरे यहां रहो नहीं तो राजा मेरे ऊपर भी खफ़ाहोगा इसके यह वचन सुनकर मैं छिपकर उसके घरमें रहनेलगा और उसने मेरे नाम से रात्रि के समय किसी और को मारडाला ४३ तब इस प्रकार नीति करनेवाले शकटाल से मैंने कहा कि तुम बड़े योग्य मन्त्री हो क्यों कि तुमने मेरे मारनेकी तदवीर नहीं की

एक राक्षस मेरा परममित्र है इससे कोई मुझे मार नहीं सक्ता जो मैं ध्यानकरके उसे बुलाऊं और चाहूं तो वह सब संसार का नाश करदेवे और राजाको मैं इसलिये नहीं मरवाताहूं कि वह मेरा मित्रहै और ब्राह्मणहै यह सुनकर शकटाल ने कहा कि मुझे उस राक्षस को दिखाओ तब मैंने ध्यान से उसे बुलाया और वह शकटाल उस राक्षसको देखकर डरा और आश्चर्ययुक्त हुआ राक्षस के चले जानेपर शकटाल ने फिर मुझ से पूँछा कि तुम्हारी मित्रता राक्षस के साथ कैसेहुई तब मैंने कहा कि एक समय नगरकी रक्षाके लिये घूमताहुआ एक पुरुष हररात्रि में मर जाता था यह बात सुनकर राजा ने मुझको नगरकी रक्षाकेलिये भेजा मैंने घूमते २ रात्रिके समय एक राक्षसको देखा और उसने मुझसे पूँछा कि बताओ इस नगर में कौनसी बड़ी रूपवती है तब मैंने हँसकरकहा कि हे मूर्ख! जो जिसको अच्छीलगे वही उस को रूपवती है तब यह सुनकर राक्षस बोला कि केवल तुमनेमुझे जीतलिया प्रश्नका उत्तर देने के कारण बधसे बचेहुए मुझ से फिर राक्षसबोला कि मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहूं तुम मेरे मित्र होगये जब तुम मुझे याद करोगे तभी मैं आऊंगा ५२ यह कहकर राक्षसके अन्तर्द्धान होजानेपर मैं ज्योंकात्यों अपने घरको लौटआया इसप्रकार से वह राक्षस मेरा मित्रहुआहै इसके उपरान्त शकटाल की प्रार्थना से ध्यान से आई हुई श्री गङ्गाजी का दर्शन मैंने शकटाल को कराया और फिर स्तुतियों से गङ्गाजी को प्रसन्नकर के बिदाकिया मेरी इनबातों को देखकर शकटाल भी मेराबड़ा सहायक होगया ५६ एक समय एकान्तमें उदासीन बैठेहुए मुझ से शकटाल बोला कि तुम सर्वज्ञ होकर भी इतना खेद क्योंकिया

करते हो क्या तुम नहीं जानते हो कि राजा लोगोंकी बुद्धि में बिचार नहीं होता थोड़े दिनों में तुम्हारा यह कलंक छूटजायगा इस बात पर मैं तुम्हें एक कथा सुनाताहूं पहले इस नगर में आदित्यवर्म्मा नाम राजाथा और शिववर्म्मा नाम बड़ा बुद्धिमान् उसका मंत्री था एक समय उस राजाकी एक रानी गर्भवती हुई यह सुनकर राजाने अपने महल के रक्षकों से पूछा कि दो वर्ष से मैं महलों में नहीं गयाहूं यहगर्भ कहांसे आया तब वहलोग बोले कि हे राजा! शिववर्मानाम मन्त्री के सिवाय यहां और कोई पुरुष नहीं आता यह सुनकर राजाने बिचारा कि निस्सन्देह यह मंत्री ही मेरा बैरी है परन्तु जोमैं इसे ज़ाहिर में मरवाडालूंगा तो दुनियां में मेरी बदनामी होगी यह बिचारकर उस राजा ने शिववर्मा को भोगवर्म्मानाम एक अपने मित्र राजाके यहां भेजदिया और पीछे से एक हलकारे के हाथ एक चिट्ठी भेजी जिसमें कि शिववर्मा के मारडालने का सँदेशा लिखाथा मन्त्री के चलेजाने के सात दिन पीछे वह रानी स्त्री वेषधारी किसी पुरुषके साथ भागी चली जा रहीथी वह राजाके आदमियों को मिली और वह उसे पकड़लाये राजाने यह देख सुनकर बड़ापश्चात्ताप किया और कहा कि देखो मैंने निष्कारण ऐसा बड़ा बुद्धिमान् मंत्री नाहक मरवाडाला इसी बीच में शिववर्मा और राजाका हलकारा राजा भोगवर्म्मा के यहां पहुँचे राजाने उस चिट्ठीको पढ़कर शिववर्मा से कहा कि तुम्हारे मारने का हुक्म आया है यह सुनकर शिववर्मा बोला कि आप मुझे मरवाडालिये नहीं तो मैं खुद मरजाऊंगा तब राजा बड़े आश्चर्य्यपूर्व्वक शिववर्म्मा से बोला कि तुम्हें हमारी क़सम है तुम सत्य २ बताओ कि इसका क्या कारणहै मन्त्री ने कहा कि हे

राजा ! जिस राज्यमें मैं माराजाऊंगा उसराज्य में बारह वर्षतक पानी नहीं वरसेगा यह सुनकर भोगवर्म्मा ने अपने मन्त्रियों के साथ सलाह की कि यह दुष्ट राजा हमारा राज्य नष्ट किया चाहता है क्या उसके राज्य में छिपकर मारनेवाले न थे इससे इस मन्त्री को मारना न चाहिये यह सलाह करके भोगवर्म्मा ने शिववर्म्मा को रक्षकों के साथ अपने देशसे उसी समय भेज दिया इसप्रकार वह मन्त्री अपनी बुद्धिके वल से लौट आया और उसका कलंक भी छूटगया (क्योंकि धर्म्म मिथ्या नहीं होता) ७६ इस से हे वररुचि इसीप्रकार से तुम्हारा भी कलंक छूट जायगा तुम हमारे घरमें रहाकरो कुछ दिनमें तुम्हारे बिना भी इस राजाको पश्चात्ताप होगा शकटाल के ऐसे वचन सुनकर मैं उसके यहां रहकर समयकी बाट देखताहुआ दिन बितानेलगा ७८ इसके उपरान्त हे काणभूत! योगसे वनेहुए राजानन्दका हिरण्यगुप्त नाम पुत्र शिकार खेलने को गया घोड़ेके वेग से बहुत दूर निकलजाने पर उस अकेले राजपुत्रको वनहीमें सायंकाल होगया तब रात्रि के व्यतीत करने को वह राजा का पुत्र किसी वृक्षपर चढ़गया उसी समयउसवृक्षपर किसी सिंहका भगायाहुआ एक रीछभी चढ़आया उस रीछने अपने से डरेहुए राजपुत्र से मनुष्यभाषा में कहा कि तुम मतडरो तुम हमारे मित्रहो रीछके ऐसे वचनोंको सुनकर विश्वाससे जब राजाका पुत्र सोगया और रीछ जागतारहा तब नीचे खड़ेहुए सिंहनेकहा कि हे रीछ!तू इसमनुष्यको नीचे डालदे मैं इसे लेकर चलाजाऊं यह सुनकर रीछनेकहा कि मैं मित्रके साथ विश्वासघात नहीं करूंगा ८४ इसके उपरान्त जब रीछके सोनेकी और राजाके पुत्रके जागनेकी वारीआई तब फिर सिंहने राजाके पुत्रसे

कहा कि हे मनुष्य! इस रीछको नीचे डालदे यह सुनकर अपने डरसे और सिंहको प्रसन्न करनेके लिये राजपुत्र उसे ढकेलनेलगा भाग्य-वश से रीछ गिरा तो नहीं किंतु जगपड़ा और जगकर यह शाप दिया कि हे मित्रद्रोही ! तू सिड़ी होजायगा और शापकी यह अवधि करदी कि जबतक तू इस वृत्तान्त को नहीं सुनेगा तबतक सिड़ी रहेगा इसके उपरान्त प्रातःकाल राजाका पुत्र अपने घरमें आकर सिड़ी होगया और राजा नन्दको यह देखकर बड़ा दुःख होगया ८८ राजा ने कहा कि इससमय जो वररुचि जीता होता तो इसके सिड़ी होनेका सम्पूर्ण कारण मालूम होजाता धिक्कारहै मेरी चतुरता पर मैंने नाहक उसे मरवाया ८६ राजा के यह वचन सुनकर शकटाल ने यह विचारा कि यह वररुचि कि वररुचिके प्रकट करनेका यहमौकाहै क्योंकि वररुचि तो अब यहां रहैगानहीं और राजाका मेरे ऊपर विश्वास बढ़जायगा ऐसा शोचकर राजा से अभय मांगकर शकटाल बोला कि हे राजा ! खेद मतकरो वर-रुचि अभी जीताहै यह सुनकर राजाने कहा कि जल्दी उसेलाओ तब शकटाल मुझे बड़े हउसे राजा के पास लेगया वहां जाकर राजा के पुत्रके सिड़ी होनेका सब वृत्तान्त सरस्वतीजी की कृपासे मैंने जान लिया और इसने मित्रके साथ द्रोह कियाहै यह कहकर वह सब वृत्तान्त राजासे भी कहदिया इसके अनन्तर शापके छूट जाने पर राजा के पुत्रने मेरी बड़ी स्तुतिकी और राजाने मुझसे पूछा कि तुमने यह वृत्तान्त कैसे जाना ६५ तब मैंने कहा कि हे राजा! लक्षण अनुमान और सूझबूझसे बुद्धिमान् लोग सब बातों को जान लेते हैं जैसे कि मैंने तुम्हारी रानीकी कमरका तिल जान लिया था मेरे इस वचन से राजा बहुत लज्जित होकर पछताने

लगा इसके उपरान्त राजा के आदर को छोड़कर और कलङ्क के छूटजानेसे अपनेको कृतकृत्य मानकर अपने स्थानपर चला आया क्योंकि शुद्धचरित्रही विद्वान् लोगों का धन है मेरे वहां आजाने पर सब लोग रोने लगे और उपवर्ष मेरे सुसरने मुझसे कहा तुम्हे राजा से मारागया सुनकर उपकोशा अग्नि (आग) में जलगई और तुम्हारी और तुम्हारी माताका हृदय शोकसे फट गया १०० यह सुनकर एकाएकी हुए शोकके वेगसे मुझे मूर्च्छा आगई और वायुसे टूटेहुए वृक्षके समान मैं पृथ्वीपर गिरपड़ा क्षणभर में उठकर बड़ा विलाप करने लगा क्योंकि प्यारे बन्धुओं के शोकसे उत्पन्न हुआ शोक किसको सन्तप्त नहीं करता तब वर्ष उपाध्यायने आकर मुझे समझाया कि इस जगत् में आवागमनपर्य्यन्त एक अनित्यता जो है वही नित्यहै तो तुम ईश्वरकी इसमायाको जानकरभी क्यों मोहित होते हो तत्त्व के बोध करानेवाले वर्षउपाध्यायके इन वचनोंसे मुझे कुछ धैर्य हुआ १०४ इसके उपरान्त वैराग्यसे सम्पूर्ण संसारी बन्धनों को छोड़कर मैं तपोवन को चलागया कुछ दिनों के व्यतीत होने पर उस तपोवनमें अयोध्यासे एक ब्राह्मण आया उससे मैंने योगसे बनेहुए राजा नन्दका वृत्तान्त पूंछा उसने मुझे पहचानकर बड़े शोक से कहा कि राजा नन्दका वृत्तान्त सुनिये तुम्हारे वह.से चलेआने पर शकटाल को बहुत दिनके बाद मौक़ा मिला तब वह राजा के मारने का उपाय शोचने लगा एक दिन मन्त्री ने रास्ते में पृथ्वी को खोदतेहुए किसी चाणक्य नाम ब्राह्मणको देखकर उससे पूंछा कि क्यों पृथ्वीको खोदरहेहो तब उसने कहा कि यह कुश मेरे पैरों में लगगया है इससे इसको खोद रहाहूं यह सुनकर मन्त्रीने उसक्रोधी और क्रूर ब्राह्मण कोही राजा

के मारनेका उपाय समझा १११ उसका नाम पूंछकर मन्त्रीनेकहा कि हे ब्राह्मण! राजा नन्दके यहां मैं तुझे त्रयोदशी को श्राद्ध भोजन करवाऊंगा वहां तुझको एक लाख अशर्फ़ी दक्षिणा में दिलवाऊंगा और सब ब्राह्मणोंमें मुख्य तुमको करूंगा आओ तबतक हमारे घरमें रहो यह कहकर शकटाल उस चाणक्यको अपने घर लिवालाया और श्राद्धवाले दिन राजासे उसकी मुलाक़ात करवाई इसके उपरान्त चाणक्य श्राद्धमें जाकर सबके आगे बैठा और सुबन्ध नाम ब्राह्मण ने भी चाहा कि मैं सबका अग्रगण्य होऊं तब शकटालने जाकर यह हाल राजा से कहा राजाने हुक्म दिया कि और कोई ब्राह्मण योग्य नहीं है सुबन्धु ब्राह्मण आगे बैठे फिर शकटालने लौटकर बहुत भयपूर्व्वक चाणक्यसे कहा कि हे महाराज ! चाणक्यजी मेरा कोई अपराध नहीं है राजाकी ऐसी इच्छाहै यह सुनकर चाणक्य मारे क्रोधके जलनेलगा और उसने अपनी शिखा खोलकर यह प्रतिज्ञा करी कि मैं निस्सन्देह सात दिनके भीतर इस राजाको मारडालूंगा और तभी क्रोध शान्त होजानेपर शिखा बांधूंगा ११९ यह सुनकर राजानन्दके कुपित होनेपर भागे हुए चाणक्यको शकटाल ने अपने घरमें छिपारक्खा २० इसके पीछे शकटाल से सम्पूर्ण सामग्रीको लेकर चाणक्य कहीं जाकर कृत्य (मारणप्रयोग) करने लगा उसके प्रभाव से राजाको ज्वर आया और सातवें दिन मरगया इसके उपरान्त शकटाल ने योग से बने हुए राजानन्द के हिरण्यगर्भ नाम पुत्रको मारकर पहले राजा नन्द के पुत्र चन्द्रगुप्त को राज्यपर बैठा दिया और बृहस्पति के समान बुद्धिवाले चाणक्य को चन्द्रगुप्त का मन्त्री बनाया फिर योगसे बने हुए राजा नन्द से बैरका बदला लेकर

पुत्र के शोक से उदासीन होके शकटाल वनको चला गया ॥

इति दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्तमः प्रदीपः ७ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेऽष्टमःप्रदीपः ॥ ८ ॥

दैवेऽनुकूलेतुद्रव्यं किंचित्तो बहुजायते ॥
मूसासाहोबहुद्रव्यमलभन्मृतमूषकात् ॥ ८ ॥

(अर्थ) दैव सुलटाहो तब थोड़े तुच्छ पदार्थसे भी भारी द्रव्य उत्पन्न होताहै-जैसे (मूसासाह) एक वणिक्ने मरेभये मूससेही बहुतसा धन प्राप्त किया तिसका दृष्टान्त —

कहीं बनिये लोग अपने २ रोज़गारोंकी तारीफ़ कररहेथे उनमें से एक बनियां बोला कि धनसे तो धन सबही पैदा करते हैं इसमें कौन बड़ी बात है मैंने पहले विनाही धनके लक्ष्मी उत्पन्न की थी जब कि मैं गर्भमेंही था तब मेरा पिता मरगया और पापी भाइयों ने मेरी माता से सब धन छीन लिया २६ तब मेरी माता भय से गर्भके बचानेकी इच्छा करतीभई मेरे पिताके मित्र कुमारदत्तनाम बनिये के यहां रही वहां जाकर मेरा जन्म हुआ और मेरी माता बड़े २ कठिन कार्य्यों को करके मेरा पालन करनेलगी ३१ इसके उपरान्त उपाध्याय से प्रार्थना करके मेरी माताने मुझे हिसाब किताब लिखना पढ़ना आदि सिखलाया फिर मेरी माताने मुझ से कहा कि बेटा तुम बनियें के पुत्रहो अब कुछ रोज़गारकरो इसदेश में विशाखिल एक बड़ा धनवान् बनियां रहताहै वह कुलीन दरिद्रियोंको रोज़गार करनेको अपना धन देताहै जाओ उससे जाकर धन मांगो तब मैं उसके यहां गया उससमय वह किसी बनियें के पुत्र से क्रोधपूर्वक कहरहाथा कि यह जो मराहुआ चूहा पड़ा

है इससे भी चतुर मनुष्य धन पैदा करसक्ते हैं तुझे तो मैंने बहुत सी अशर्फ़ी दी हैं उनका बढ़ाना तो अलग रहा तू उनको भी न रखसका ३७ यह सुनकर मैंने मूसा लेलिया और उसकी बही में लिखवाकर चला तब वह बनियां हँसनेलगा इसके उपरान्त वह मूसा दो मुट्ठी चने लेकर किसी बनियेंके हाथ बिल्ली के लिये बेच डाला फिर उन चनोंको भुनवाकर और पानीके घड़ेको लेकरशहर के बाहर किसी चबूतरे पर छाया में जाबैठा वहां थकेहुए काष्ठके बोझेवाले आतेथे उनको मैं शीतल जल और चने बड़ी नम्रतासे देनेलगा तब हरएक बोझेवालेने मुझसे प्रसन्न होकर दो२ लकड़ियां दीं वह लकड़ियां मैंने लाकर बाज़ारमें बेचीं उससे जो धन मिला उससे फिर चने खरीदे और उसीप्रकार फिर बोझेवालों को दिये इसप्रकार थोड़े दिनकरके जब कुछ धन इकट्ठा होगया तब मैंने तीन दिनतक सब लकड़ी आप खरीदलीं४५एकसमय बहुत पानी के बरसने से वह लकड़ी बिकनेको नहीं आई तब मैंने वही लकड़ी कई सौ रुपयेकी बेचीं फिर उस धनसे दुकान करली इसी प्रकार धीरे २ रोज़गार करते २ मैं बड़ा धनवान् होगया तब मैंने सोनेका मूसा बनवाकर विशाखिलको जाकरदिया और उसने भी अपनी कन्या मुझे ब्याहदी इसीसे लोक में मुझे मूसासाह करके बोलते हैं इसप्रकार मैंने निर्धन होकर भी लक्ष्मी पाई है यह सुनकर उन सब बनियोंको बड़ा आश्चर्यहुआ चित्र अर्थात् विलक्षण कामोंसे बुद्धिही बिना दीवारके चित्र बनाई जाती है ५० ॥

इति दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेऽष्टमःप्रदीपः ॥ ८ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेनवमःप्रदीपः ॥ ९ ॥

नाऽप्रसक्तंप्रयुञ्जीयादप्रसंगेयथाद्विजः ॥
प्रयुज्यमानोवेश्याग्रेसामआसीत्प्रधर्षितः ९ ॥

(अर्थ)-किसी भी प्रसंगरहित अर्थात् विन मौक़े के कामको न करे। जैसे एक वेदपात्र ब्राह्मण ने वेश्याके आगे सामवेद का पाठ किया तो तिसने तहां से अप्रतिष्ठापाई अर्थात् निकाला गया-दृष्टान्त-

कहीं किसी वैदिक ब्राह्मणने दानमें एक अशर्फ़ीपाईथी उससे किसी छली दिल्लगीबाजने कहा कि ब्राह्मणपनेसे तुम्हारा भोजन चलता है तो तुम इस अशर्फ़ी को खर्चकरके चतुर होने के लिये दुनियांदारी की बातें सीखो उसने कहा कि मुझे कौन सिखावेगा तव वह दिल्लगीबाज बोला कि यह जो चतुरकानामवेश्याहै इसके यहां तुम जाओ ब्राह्मणने कहा कि मैं वहां जाकर क्या करूं तब वह बोला कि अशर्फ़ी देकर उसके प्रसन्न करनेको साम (सामवेद अथवा मिलाप) का बर्त्तावकरना यह सुनकर वेदपाठी ब्राह्मण चतुरका के मकानमें जाकर बैठगया और चतुरकाने उनका आदर किया फिर ब्राह्मणने चतुरकाको अशर्फ़ी देकरकहा कि मुझे दुनियांदारी सिखाओ यह सुनकर जब वहांके लोग हँसनेलगे तब वह ब्राह्मण कुछ शोचकर हस्तस्वरसमेत सामवेदका गान इतने ज़ोर से करनेलगा कि वहां बहुत से दिल्लगीबाज देखनेके लिये इकट्ठे होगये और बोले कि यह स्यार यहां कहां से घुसआया है जल्दी से इसके गले में अर्द्धचन्द्र (गर्दना) देकर इसे निकाल दो ब्राह्मण अर्द्धचन्द्रका अर्थ एक प्रकारका बाण समझकर शिर कटने

के भयसे मैंने सब दुनियांदारी सीखली यह कहताहुआ भागा ६० और उसके पास जाकर जिसने कि इसे भेजाथा सब वृत्तान्त सुनाया तब उसने कहा कि मैंने तो तुमसे साम अर्थात् मेल की बात कहीथी वहां वेद पढ़नेका कौन मौक़ाथा क्या वेद पढ़नेवालों में सदैव जड़ताही बनी रहती है इसप्रकार हँसकर वह वेश्या के यहां गया और बोला कि इस दो पैरके पशुका तुम सुवर्णरूपी चारा देदो यह सुनकर उसने भी हँसकर उसकी अशर्फ़ी फेर दी अशर्फ़ी को पाकर ब्राह्मण अपना नया जन्मसा मानकर घर लौट आया ॥

इतिदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेनवमःप्रदीपः ॥ ९ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे दशमः प्रदीपः ॥ १० ॥

सातवाहनराज्ञोपि प्रसिद्धिर्नामतः कथम् ॥
अस्योत्तरंगुणाढ्येनकाणभूत्यग्रवप्राकथि॥१०।

(अर्थ) राजा (सातवाहन के नामकी प्रसिद्धि के बिषय में गुणाढ्य) ब्राह्मणने प्रमाणपूर्व उत्तर काणभूति के आगेकहा १ ॥

तब गुणाढ्य बोला कि सुनो मैं कहता हूं कि पहले दीपकर्णि नाम एक बड़ा बलवान् राजाथा उसके शक्तिमती नाम बड़ी प्यारी रानीथी एक समय भोग करने के पीछे बगीचे में सोतीहुई रानी को सर्पने काटा और वह मरगई यद्यपि राजाके कोई पुत्र नहीं था तथापि राजाने उसके प्रेम से दूसरा कोई बिवाह नहीं किया ६० एक समय राज्यके योग्य पुत्र के न होने से दुःखितहुये राजा को स्वप्न में श्रीशिवजी ने यह आज्ञा दी कि वनमें सिंहपर चढ़े हुये किसी बालकको तुम देखोगे उसको घरले आना वही तुम्हारा पुत्र

होगा इसके उपरान्त जगकर उस स्वप्नको स्मरण करके वह राजा अत्यन्त प्रसन्न हुआ और एक समय शिकार खेलने के लिये वन में बहुत दूर चलागया वहां राजाको मध्याह्नके समय किसी तालाबके किनारे सूर्य्य के समान तेजवाला सिंहपर चढ़ाहुआ एक बालक दिखाई दिया वह सिंह बालक को उतारकर जल पीने के लिये तालाब पर चला तब राजाने स्वप्नको स्मरण करके उस सिंह के एक बाण मारा बाणके लगने से वह सिंह पुरुष होगया तब राजाने उससे पूछा कि बताओ यह क्या बातहै वह बोला हे राजा! मैं कुबेरका मित्र सातनाम यक्ष हूं मैंने एक समय गंगा में स्नान करतीहुई एक ऋषिकी कन्या देखी और उस कन्या ने मुझे देखा परस्पर देखने से हम दोनों को कामका वेग उत्पन्न हुआ तो मैंने उसके साथ गान्धर्व विवाह कर लिया ६८ उसके भाइयों ने यह बात सुनकर क्रोध से शाप दिया कि तुम दोनों बड़े स्वेच्छाचारी हो इससे सिंह होजाओ मुनियों ने पुत्रजन्मपर्य्यन्त मेरी स्त्री के शापकी अवधि करदी और तुम्हारे बाण लगने तक मेरे शापकी अवधि करदी इसके उपरान्त हम दोनों इसवनमें आकर सिंह और सिंहनी होगये समयपाकर सिंहनी गर्भिणी हुई और इस पुरुष बालक को उत्पन्न करके मरगई मैंने अन्य सिंहिनियों के दूध से इस बालककी पालना की आज तुम्हारे बाणके लगने से मैं भी शापसे छूटगया इस बड़े बलवान् बालकको मैं तुम्हें देताहूं इसे ले जाओ और मुनिलोगों ने भी हम से यह बात पहलेही कहदी थी यह कहकर उस सिंहसे मनुष्यरूप होनेवाले यक्षके अन्तर्द्धान हो जानेपर राजा उस बालकको लेकर अपनेघर चलाआया सातनाम यक्ष उसका बाहन हुआथा इस हेतु से उसका सातवाहन नाम

रक्खा और उसे अपना राज्य देकर राजदीपकर्णि वनको चला गया तब सातवाहन चक्रवर्त्ती राजाहुआ १०६ ॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेदशमःप्रदीपः ॥ १० ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे एकादशः प्रदीपः ॥ ११ ॥

लज्जितस्यभवेद्विद्या प्राप्तिर्झटितिरुत्तमा ॥
सद्योविद्यांसमापन्नोलज्जितःसातवाहनः ॥ ११ ॥

(अर्थ) लज्जितहुए को विद्याकी उत्तम प्राप्ति शीघ्रही हो-जाती है जैसे स्त्री करके (मोदकैस्ताडय) ऐसे कहे राजा (सातवाहन ने) उसपर लड्डू फेंके तो तिस स्त्री ने (माउदकैस्ताडय) ऐसी संधि कहके राजाको लज्जितकिया तो तिसने शीघ्र सब व्याकरण विद्या पढ़ी ॥ ११ ॥

इसप्रकार काणभूति के पूँछने से बीच में इस कथाको कहकर वह गुणाढ्य फिर अपनी कथाको कहनेलगा एक समय राजा सातवाहन वसन्त के उत्सव में देवीजी के उस बगीचे में नन्दन वनमें इन्द्रके समान गया नन्दनवन में इन्द्रके समान उसबगीचेमें विचरताहुआ राजा जलक्रीड़ा करने के लिये स्त्रियोंसमेत बावड़ी में उतरा और बावड़ी में स्त्रियों पर छीटें डालनेलगा हाथीपर हथि-नियों के समान वह स्त्रियाँ भी उसपर जलडालनेलगीं स्त्रियों के नेत्रों का अंजन छुटगया और जलके पड़ने से वस्त्र अंगोंमें ऐसे चिपटगये कि सब उनके अङ्ग साफ़ २ दिखाई देनेलगे इस्से वह स्त्रियां राजाके मनको हरनेलगीं वायुके समान उसराजाने तिलक-रूपी पत्रोंसे रहित और गिरेहुए आभूषणरूप पुष्पोंवाली लताओं के समान सब रानियां करदीं ११२ इसके उपरान्त एक उनमें से

बड़े कोमल शरीरवाली रानी राजा से बोली कि हे नाथ! मोदकै-स्ताड्य (अर्थात् मेरे ऊपर जल मतडालो) यह सुनकर राजा ने बहुतसे लड्डू मँगवाये तब फिर वह रानी हँसकरबोली हे राजा! यहां जलक्रीड़ा में मोदकों का क्याकामहै मैंने तुमसे यह कहा था कि मेरे ऊपर जलमतडालो तुम मा शब्द और उदक शब्द की संधि भी नहीं जानतेहौ और मौके को भी नहीं समझते तुम बड़े ही मूर्ख हो व्याकरण की जाननेवाली रानीने जब इस प्रकारसे कहा और सब स्त्रियां हँसनेलगीं तो राजा को बड़ी लज्जाहुई तब जल-क्रीड़ा छोड़कर और अभिमानरहित होके राजा अपने अपमानसे दुःखितहोकर अपने मकानको चलागया ११९ फिर भोजनको भी परित्याग करके चिन्ता से महाव्याकुल राजा चित्र में लिखीहुई तसवीर के समान पूछने से भी कुछ नहीं बोला तब वह राजा या तो पण्डित हूंगा या मरजाऊंगा ऐसा निश्चय करके पलँग पर पड़े २ महाक्लेशयुक्त होने लगा एकाएकी राजा की ऐसी हालत देखकर लोगों को बड़ा सन्देह हुआ यह खबर धीरे २ मुझे और शर्वशर्म्मा को भी मिली उससमय दिन थोड़ा रहाथा और राजा भी सावधान न था यह बिचारकर हम लोगोंने राजहंसनाम राजाके सेवकको बुलाकर राजाका हाल पूंछा तब वह बोला कि मैंने ऐसा व्याकुल राजाको कभीनहीं देखा जैसा कि इससमय होरहाहै और सम्पूर्ण रानी यह कहतीहैं कि विष्णुशक्तिकी कन्या ने राजा को कुछ कहकर व्याकुल कियाहै उसके यह वचन सुनकर हम दोनों सन्देह से शोचनेलगे कि जो कोई शारीरिक रोग होता तो वैद्यों को भेजते और मानसी रोग राजाको हो नहीं सक्ता क्योंकि इस राजा का कोई शत्रु नहीं है और इसकी सब प्रजा इससे अत्यन्त

स्नेह करतीहै तो किस सबबसे एकाएकी इसको ऐसा खेद उत्पन्न हुआहै इसप्रकार शोचनेसे बुद्धिमान् शर्वशर्म्मा बोला कि मैं राजा के दुःखकाकारण समझगया वह अपनी मूर्खताके दुःखसे व्याकुल होरहा है मैं पहिलेही से उसके चित्तको जानता हूं कि वह सदैव अपने को मूर्ख समझकर पण्डित होने की इच्छा किया करता है और मूर्खताहीके कारण रानीने भी इसे डाटाहै यह मैंने सुनाहै इस प्रकार विचार करके उसरात्रि के व्यतीत होजाने पर प्रातःकाल हम दोनों राजाके पास पहुँचे वहां यद्यपि कोई नहीं जानेपाताथा तथापि मैं चलागया और मेरे पीछे २ शर्वशर्म्मा भी चलागया १३४ वहां राजा के निकट बैठकर मैंने कहा कि आज आप बिना कारण के उदासीन क्यों हैं यह सुनकर भी राजा कुछ नहीं बोला तब शर्वशर्म्मा ने यह अद्भुत वाक्यकहा कि हे स्वामी! मैं आपसे पहले कहचुकाहूं कि मैंने स्वप्नमाणवक नाम एक प्रयोग कहीं से पायाहै आजरात्रिको मैंने वह प्रयोग किया था उससे मुझे स्वप्न में यह दिखाई पड़ा कि एक कमल का फूल आकाश से गिरा उसे किसी दिव्य बालक ने प्रकाशित किया तब उसमें से एक श्वेत वस्त्रधारण किये स्त्री निकली वह स्त्री आप के मुख में चलीगई इतना देखकर मेरी निद्राखुलगई मुझे मालूमहोता है कि वह स्त्री साक्षात् सरस्वतीथी जो आप के मुखमें चलीगई १४० इस प्रकार स्वप्नको सुनकर राजा मुझसे बोला कि यह यत्नपूर्व्वक सिखाने से मनुष्य कितने दिनों में पंडित होसक्ताहै मुझे पाण्डित्यके बिना यह राज्यलक्ष्मी अच्छी नहीं मालूमहोती जैसे काष्ठको आभूषण वैसेही मूर्ख को ऐश्वर्य्य है तब मैंने कहा हे राजा! सम्पूर्ण विद्याओं का मुखरूपी व्याकरण सब मनुष्यों को बारहवर्षमें आताहै आपको

छः वर्ष में ही सिखादूंगा यह सुनकर शर्वशर्मा ने ईर्षा से कहा कि सुखकरनेवाला मनुष्य इतना श्रम कैसे करसक्ताहै हे राजा! मैं आप को छैही महीने में व्याकरण सिखासक्ताहूं यह असम्भव वचन सुनकर मैंने क्रोधसे कहा कि जो तुम छःमहीने में राजाको व्याकरण सिखादो तो मैं संस्कृत प्राकृत और अपने देशकी बोली यह तीनों भाषा जिनको कि मनुष्य बोलसक्ते हैं बोलना छोड़दूं तब शर्वशर्माने कहा कि जो छःमहीने में इसे व्याकरण न पढ़ादूं तो बारहवर्षतक तुम्हारी खड़ाऊं अपने शिरपर रक्खूं १४६ यह कहकर उसके चलेआने पर मैं भी अपने घरको चलाआया और राजा भी अपना दोनों तरफ़से मतलब समझकर सावधानहोगया शर्वशर्मा ने उस अपनी प्रतिज्ञा को दुस्तर समझकर पश्चात्ताप युक्तहो के अपनी स्त्री से सब वृत्तान्तकहा तब वह बोली कि हे स्वामी! ऐसे संकटके समय में स्वामिकुमार के सिवाय और कोई उपाय नहीं है उसके वचनको ठीक समझकर शर्वशर्म्मा प्रातःकाल भोजन किये विनाही घर से चलागया फिर दूत के मुखसे शर्वशर्म्मा के जाने के वृत्तान्त को सुनकर मैंने राजा से भी जाकर उसके स्वामिकुमारके यहां जानेका वृत्तान्त कहा कि देखो क्या होताहै १५४ इसके उपरान्त सिंहगुप्त नाम किसी राजपुत्रने राजासे कहा कि हे राजा! उस समय आपको दुःखी देखकर मुझे अत्यन्त खेदहुआथा तब मैंने आपके कल्याण के लिये नगरके बाहरजाकर चंडिका भगवती के आगे अपना शिरकाटकर चढ़ाना चाहा उससमय यह आकाशवाणी हुई कि शिरमतकाटो तुम्हारे राजाकी इच्छा पूर्णहोगी इस से मैं जानताहूं कि आपका मनोरथ सिद्धहोगा यह कहकर राजा से पूछकर उसने दो दूत शर्वशर्म्मा के पीछे भेजे शर्वशर्म्मा भी

निराहार और मौनव्रतसाधकर स्वामिकुमार के निकट पहुँचा वहां उसने अपने शरीरको न समझकर ऐसा तपकिया कि जिस से प्रसन्नहोकर भगवान् स्वामिकुमारने उसका मनोरथ पूर्णकिया १६० यह बात सिंहगुप्त के भेजेहुए दूतोंने आकर कही उनदूतों के वचन सुनकर मुझे खेदहुआ राजाको आनन्दहुआ और शर्वशर्म्मा ने आकर स्वामिकुमार की कृपा से केवल ध्यान करने ही से प्राप्तहुई सम्पूर्ण विद्या राजा को देदीं और उसी समय राजाको सम्पूर्ण विद्याओं का ज्ञान होगया (ईश्वरकी कृपा से क्या नहीं होताहै) इसके उपरान्त राजाके पंडितहोने की खबरको सुनकर राज्य भरमें बड़ा उत्सव होनेलगा उसीसमय नवीन लगाईगई और वायु से हिलतीहुई पताका मानों नगर भरे में नृत्यकररहीथीं राजाने शर्व-शर्म्मा को अपना गुरू समझकर बड़े २ रत्नों से उनका पूजन किया और नर्मदानदी के तीर पर बसेहुए भरुकच्छ नाम देश का राज्य उसे देदिया जिससिंहगुप्त नाम राजपुत्र ने दूतों के मुख से पहले स्वामिकुमार के वर देनेकी खबर सुनाई थी उसे धनदेकर अपने समान करलिया और विष्णुशक्ति नाम राजा की कन्या जिसरानी ने विद्या के लिये उसे उत्साह दिलाया था उसे सब रानियों में पटरानी बनाया॥

इसके उपरान्त मौनहोकर राजा के निकट गया वहां किसी ब्राह्मण ने अपना बनाया हुआ एक श्लोक पढ़ा और राजा ने आपही उस श्लोक की व्याख्या संस्कृत में की यह देखकर वहां के सम्पूर्ण लोग बहुत प्रसन्नहुए फिर राजा ने शर्वशर्मा से पूछा कि कहो तुम्हारे ऊपर स्वामिकुमारने किस प्रकार से कृपाकी यह सुनकर शर्वशर्म्मा बोला कि हे राजा! मैं यहां से

निराहार और मौन होकर चला तो कुछ थोड़ाही मार्ग बाक़ी रहाथा कि मैं मारे क्लेश के मूर्च्छा खाकर पृथ्वीपर गिरपड़ा तब शक्ति को लियेहुए किसी पुरुष ने मुझसे आकरकहा कि हे पुत्र ! उठ तेरा सब मनोरथ पूराहोगा उसके अमृतरूपी वचनों से सींचा हुआ मैं उसीसमय उठबैठा और मेरी भूख प्यास सब चलीगई इसके उपरान्त स्वामिकुमार के मन्दिर में पहुँचकर स्नान करके मैं मन्दिर के भीतर गया तब साक्षात् स्वामिकुमार ने मुझे दर्शन दिये और मेरे मुख में साक्षात् सरस्वती का प्रवेशहुआ इसके उपरान्त भगवान् स्वामिकुमारजी छहों मुखों से सिद्धोवर्ण समाम्नायः यह सूत्र बोले १० यह सुनकर मैंने भी चपलतासे इसके आगेका सूत्रबोल दिया यह सुनकर स्वामिकुमारने कहा कि जो तुम बीचमें न बोलते तो यह शास्त्र पाणिनीय शास्त्र से भी बढ़कर होता अब छोटा होने के कारण कातंत्र नाम होगा और कलाप नाम मेरे वाहनके नाम से इसका कालापक भी नाम होगा इसप्रकार छोटेसे व्याकरणको कहकर फिर बोले कि तुह्यारा राजा पूर्व्वजन्म में भरद्वाज मुनिका शिष्य कृष्णनाम मुनिथा एकसमय किसी मुनिकी कन्याको देख कर इसे और उसे दोनों को कामकी बाधाहुई तब ऋषियों ने इन दोनों को शाप देदिया वह ऋषि तो तुम्हारा राजा हुआहै और ऋषिकी कन्या राजाकी रानीहुई है इसप्रकारसे तुम्हारा राजा मुनि का अवतारहै तुम्हारे देखनेहीसे उसे सम्पूर्ण विद्या प्राप्तहोजायँगी (महात्मा लोगोंके मनोरथ जन्मान्तर में इकट्ठे कियेहुए उत्तम संस्कारों के द्वारा बिना परिश्रमही सिद्ध होजाते हैं) यह कहकर भगवान् स्वामिकुमारके अन्तर्द्धान होजानेपर मैं बाहर चलाआया तब वहांके पंडोंने मुझे थोड़ेसे चावलदिये रास्तेमें रोज़ खानेपर भी

वह चावल ज्योंके त्यों बनेरहे २१ इसप्रकार अपने वृत्तान्तको कह कर शर्वशर्म्मा के निवृत्त होजाने पर राजा प्रसन्न होकर स्नान के लिये उठा तब मौन होने के कारण सम्पूर्ण व्यवहारोंसे रहित होकर मैंने नहीं इच्छा करतेहुए भी राजासे केवल प्रणाममात्रकेही द्वारा पूंछकर दो शिष्यों समेत नगरके बाहर गमन किया और तप करने का निश्चय करके विन्ध्यवासिनी के दर्शनोंको आया स्वप्नमें भगवती की आज्ञासे तुम्हारे देखने के लिये इस विन्ध्याचल के वन में आया तब किसी भीलके कहने से यात्रियों के समूहके साथ यहां आकर मैंने बहुत से यह पिशाच देखे दूरसे इन लोगों की परस्पर बातोंको सुनकर मैंने भी पिशाच भाषाको जानकर सुना कि तुम उज्जयिनीको गयेहो इससे अबतक तुम्हारे आने की बाट देखता रहा तुम्हें देखकर और पिशाची भाषा में तुम्हारा शिष्टाचार करके मुझे अपने पूर्व्वजन्म का स्मरण आगया यह मेरा इस जन्म का वृत्तान्तहै गुणाढ्यके ऐसे वचन सुनकर काणभूत बोला कि आज रात्रिको मैंने जिस प्रकार तुम्हारे आने का वृत्तान्त जाना वह सुनो ३० भूतिवर्म्मा नाम दिव्यदृष्टिवाला एकराक्षस मेरा मित्र है उससे मिलने को मैं उज्जयनी गया था वहां मैंने इससे पूँछा कि मेरे शापका कब अन्त होगा तब उसने कहा कि दिनको हमारी सामर्थ्य नहीं है रात्रिको हम तुम्हें बतावैंगे रात्रि होनेपर भूतों को प्रसन्न देखकर मैंने उससे पूँछा कि रात्रिमें भूतों के अधिक पराक्रमी और आनन्द होनेका क्या कारणहै तब भूतिवर्म्मा राक्षसबोला कि पहले ब्रह्माजी से जैसा शिवजी ने कहाहै वह मैं तुमसे कहता हूं दिन में सूर्य्य के तेजसे ध्वस्तहुए यक्ष-राक्षस और पिशाचों का प्रभाव नहीं होता इससे यह रात्रिमें प्रसन्न रहते हैं और बली होते

हैं जहां देवता और ब्राह्मणोंका पूजन होता है और जहां विधि-पूर्व्वक भोजन नहीं होताहै वहां इनका जोर होताहै-जहां मांस भक्षण नहीं किया जाता है और साधूलोग रहते हैं वहां यह नहीं जाते पवित्र शूर और जागतेहुए मनुष्योंको यह कभी पीड़ा नहीं देते यह कहकर भूतिवर्म्मा फिर बोला कि जाओ तुम्हारे शापके छूटने का कारण गुणाढ्य आगया यह सुनकर मैं यहां आया और तुम्हारे दर्शन मुझे मिले अब मैं तुमसे पुष्पदन्तकी कथा कहताहूं परन्तु एकबात सुनने की मुझे और इच्छा है कि—

इतिश्री दृष्टांतप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकादशःप्रदीपः ॥ ११ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेद्वादशप्रदीपः ॥ १२ ॥

पुष्पदन्तोदन्तपुष्पत्रोटनंज्ञातवान्नहि ॥ पुष्प दन्तइतिख्यातोमाल्यमान्स्रुस्त्रजर्चनात् ११ ॥

(अर्थ) पुष्पदंत गन्धर्व ने पूर्व्वजन्म में अपने पर आसक्तभई राजकन्या के दांतों से पुष्प तोड़ने के संकेत को नहीं समझा इससे वह (पुष्पदंत) ऐसे विख्यातहुआ और माल्यवान् ने श्रेष्ठ मालाओं से शिवजी की पूजा की इस से वह (माल्यवान्) गण भया इनकी कथा काणभूति ने इनसे पूछी तब माल्यवान् ने कही है ११॥ जैसे काणभूति पूछताहै कि, किस कारण से तुम्हारा और पुष्पदन्त का माल्यवान् और पुष्पदन्त नाम हुआ सो कहो ४० काणभूति के यह वचन सुनकर गुणाढ्य बोला कि गंगाजी के तटपर बहु सुवर्णक नाम गांवहै उसमें गोविन्ददत्त नाम एक बहु-श्रुत ब्राह्मण रहताथा उसकी बड़ी पतिव्रता अग्निदत्ता नाम स्त्री थी समय पाकर उस ब्राह्मण के पांच पुत्रहुये वह पांचो महा मूर्ख बड़े स्वरूपवान् और महाअभिमानी थे एक समय गोविन्ददत्त

के यहां एक वैश्वानर नाम ब्राह्मण अतिथि होकर आया उस समय गोविन्ददत्त घर में नहीं था इस लिये उस ब्राह्मणने उसके पुत्रों को नमस्कार किया परन्तु उन मूर्खों ने उसको प्रणाम तो नहीं किया किन्तु हास्य करने लगे इससे वह अप्रसन्न और क्रोधित होकर जैसे कि जानेलगा वैसेही गोविन्ददत्त ने आकर उससे सम्पूर्ण वृत्तान्त पूंछकर उसकी बड़ी विनती करी इतने पर भी वह ब्राह्मण क्रोध से बोला कि तेरे पुत्र बड़े मूर्ख और पतितहैं और इनके संपर्क से तू भी ऐसाही होगया है इस्से मैं तुम्हारे यहां भोजन नहीं करूंगा चाहे मुझे प्रायश्चित्त भी होजाय ४८ इसके उपरान्त गोविन्ददत्त ने शपथ खाकर कहा कि मैं इन दुष्टोंका कभी स्पर्शभी नहीं करताहूं और उसकी स्त्रीनेभी आकर इसीं प्रकार से कहा तब वैश्वानर ने उसके घर में बड़ी कठिनता से भोजन किया यह देखकर उसका देवदत्त नाम एक पुत्र अपने पिता की अपने ऊपर ऐसी घृणा देखकर बड़ा दुःखी हुआ माता पिता से त्याग किये हुए का जीना ही व्यर्थ है ऐसा सोचकर वह तप करने को बदरिकाश्रम में चलागया ५२ फिर वहां देवदत्त बहुत दिनतक पत्ते खाकर बहुत कालतक धूम्रपान करके महादेवजीके प्रसन्न करने को तप करता रहा उसके बड़े कठिनतप से प्रसन्न होकर महादेवजीने दर्शन देकर कहा कि वर मांगो उस ने यह वर मांगा कि मैं आपका दासरहूं तब शिवजी बोले कि पहले विद्याओंको पढ़ो और पृथ्वीमें सब आनन्दों को भोगो तब तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा ५५ इसके उपरान्त वह देवदत्त विद्या के निमित्त पाटलिपुत्र नगर में जाकर वेदकुम्भनाम उपाध्यायका विधिपूर्वक सेवन करने लगा एकदिन उपाध्यायकी स्त्री काम से

पीडित होकर देवदत्त से सम्भोग करने के लिये हठ करने लगी क्योंकि (स्त्रियोंकी चित्त की वृति बड़ी चंचल होती है इसकारण से उसदेशको छोड़कर कामदेवके विकारसे युक्त वह देवदत्त प्रतिष्ठान देशको चलाआया ६८ उस देशमें वृद्धस्त्रीवाले मन्त्रस्वामी नाम वृद्ध उपाध्याय से अच्छेप्रकार विद्या पढ़ने लगा और बड़ा पण्डित होगया विद्या पढ़ने के उपरान्त सुशर्म्मा नाम राजा की श्रीनाम कन्याने उसे देखा और उसने भी उस झरोखों में खड़ीहुई देखा वह कन्या न थी मानों विमानपर चढ़ीहुई चन्द्रलोक की देवता थी कामदेवकी जंजीररूपीदृष्टि से परस्पर बँधेहुए वह दोनों वहां से हटने को नहीं समर्थ हुए तब राजाकी कन्याने अपनी एक उँगलीसे इशारा किया कि यहां आओ वह उँगली नहीं मानों मूर्ति धारण किये हुए कामदेवकी आज्ञाथी जब देवदत्त महलके भीतर होकर उसके निकटगया तब उस कन्याने दांतसे फूल उठाकर उस की तरफ़ फेंका राजकन्या के इस छिपे हुए इशारे को न जानकर देवदत्त उपाध्याय के घर में आकर पृथ्वी में लोटनेलगा और ताप से व्याकुलहोकर कुछ भी न कहसका ६६ बुद्धिमान् उपाध्यायने काम से हुए चिह्नोंको देखकर उससे युक्तिपूर्व्वक पूछा तो उस ने सब हाल कहदिया यह सुनकर उपाध्याय तो चतुरथा और वह उस इशारेको समझकर इससे बोला कि दांत से फूलको फेंककर उसने यह इशारा किया है कि पुष्पदन्तनाम देवमन्दिर में जाकर हमारी बाट देखना अभी तुम यहां से जाओ इसप्रकार इशारेका मतलब समझकर उसने शोचको त्याग दिया और वह देवमन्दिर में जाबैठा ७० फिर अष्टमीके बहानेसे राजकन्या भी अकेली देवमन्दिर के भीतर आई और देखा कि द्वारके पीछे अपना प्रिय खड़ा

है देवदत्तनेभी उसे देखकर जल्दीसे कण्ठमें लगालिया राजकन्या ने देवदत्त से पूछा कि उस गुप्त इशारेको तुमने कैसे जाना तब उस ने कहा कि मैं नहीं समझा था परन्तु हमारे उपाध्याय ने उसे समझलिया तब मुझे छोड़ दे तू मूर्ख है यह कहकर मन्त्र भेदके डर से वह कन्या वहांसे चलीआई और देवदत्त से एकान्तमें मिलकर चलीगई उस प्रियाका स्मरण करताहुआ वियोग की अग्नि से मरगया महादेवजी ने उसे मरा देखकर पंचशिख नाम गण को आज्ञादी कि तू जाकर इसका मनोरथ पूर्णकर ७६ तब पंचशिख ने उसे जिलाकर उससे कहा कि तुम स्त्रीकासा वेष बनाओ और पंचशिख ने अपना वृद्धब्राह्मणकासा वेष बनाया तब देवदत्त को अपने साथ में लेकर सुशर्मा नाम राजा के यहां जाकर बोला कि हे राजा ! मेरा पुत्र कहीं चलागयाहै उसे ढूंढ़नेको मैं जाताहूं तुम मेरी बहूको अपने यहां रखलो यह सुनकर शापके डर से सुशर्म्मा ने स्त्री वेषधारी पुरुषको अपनी कन्या के महल में रक्खा ८० इसके उपरान्त पंचशिख नाम गण के चलेजानेपर देवदत्त स्त्री के वेषमें अपनी प्रियाके यहां रहते२ उसका बड़ा विश्वासपात्र होगया एक समय राजकन्या को बहुत उत्कण्ठित देखकर देवदत्त ने अपना स्वरूप प्रकट किया और उससे गान्धर्व विवाह करलिया फिर कुछ दिनके बाद राजकन्याके गर्भवती होनेपर स्मरणमात्रसे आयाहुआ शिवजीका गण इसे गुप्तरीति से लेगया और देवदत्त को अपने साथ में लेकर सुशर्मा राजाके घरगया और बोला कि हे राजा ! आज मेरा पुत्र आगया मेरी बहू मुझे देदो तब राजाने यह सुन कर कि वह रात्रिको कहीं भाग गई और ब्राह्मणके शापसे डरकर मन्त्रियों से यह कहा कि यह ब्राह्मण नहीं है मेरे ठगने के लिये

कोई देवता आयाहै क्योंकि ऐसी बातें बहुधा हुआ करती हैं देखो पूर्वसमय में बड़ा तपस्वी दयालु दाता और धीर राजा शिबि संपूर्ण प्राणियों का रक्षा करनेवाला हुआ था उसको ठगने के लिये इन्द्र बाज के स्वरूप को धारणकरके कबूतर के रूप को धारण किये धर्म के पीछे दौड़ा वह कबूतर मारे डरके राजा शिबिकी गोदी में जापड़ा तब उस बाजने मनुष्यों कीसी वाणी में राजा शिबि से कहा कि हे राजा ! मैं बहुत भूखाहूं तुम इस मेरे भक्ष्य कबूतर को छोड़दो नहीं तो मैं मरजाऊंगा तो तुम्हें क्या धर्म होगा ६१ तब राजा शिबि ने कहा कि यह हमारी शरण में आयाहै हम इस को नहीं त्यागेंगे इसके समान अन्य किसी जीव का मांस तुम लेलो बाज ने कहा अगर ऐसाही आप कहते हैं तो अपनाही मांस मुझे दो राजाने प्रसन्न होकर यह बात स्वीकार करली फिर जैसे २ राजा अपने मांस को तराजू में उसके बराबर करने को काट काट चढ़ाताजाताथा वैसेही वैसे वह कबूतर अधिक भारी होता चला जाताथा तब राजाने अपना सम्पूर्ण शरीर तराजूपर रखदिया उस समय राजा धन्य है २ यह आकाशवाणी हुई फिर इन्द्र और धर्म ने अपना २ स्वरूप धारण करके राजाकी बड़ी स्तुतिपूर्वक उसका शरीर ज्योंका त्यों करदिया ६६ इसके उपरान्त और भी बहुत से राजाको वरदानदेकर इन्द्र और धर्म दोनों अन्तर्द्धान होगये इसी प्रकार मेरीभी परीक्षा करनेको यह कोई देवता आयाहै मन्त्रियों से यह बात कहकर डरताहुआ राजा ब्राह्मण से बोला कि क्षमा कीजिये आज रात्रिको आपकी बहू रात्रि दिन रक्षा करनेपर भी कहीं चलीगई तब वह ब्राह्मण दया करके बोला कि जो मेरी बहू कहीं चलीगई है तो अपनी कन्या मेरे पुत्रको देदे यह सुनकर शाप

से डरेहुए राजाने अपनी कन्याका विवाह देवदत्तसे करदिया देव-देत्त भी उस अपनी प्रियाको पाकर अपने श्वशुर के राज्यका अ-धिकारी हुआ क्योंकि उसके और कोई सन्तान न थी समयपाकर राजा सुशर्मा देवदत्त के पुत्र महीधर नाम अपने दौहितेको राज्य देकर वनको चलागया पुत्र के ऐश्वर्य को देखकर कृतार्थ होने वाला देवदत्त भी राज्यकन्या समेत बनको चलागया और बनमें शिवजी का आराधन करके इस शरीर को त्याग कर श्रीशिवजी की कृपा से उन्हींका गण होगया १०५ प्रियाके दांतों से फेंकेगये पुष्पोंके इशारे को वह नहीं समझाथा इसीसे इसका नाम पुष्पदंत हुआ और इसकी स्त्री जया नाम पार्वतीजीकी दाशीहुई इसप्रकार मैंने पुष्पदन्त के नाम का कारण कहा अब मैं अपने नाम का कारण कहता हूं उसको सुनो वह गोविन्ददत्त नाम ब्राह्मण जि-सका कि पुत्र देवदत्त था उसी के पुत्रों में से एक सोमदत्त नाम मैं भी था और जिस कारण से देवदत्त चलागया था उसी कारण से मैं भी घर में से निकल करहिमालय पर्वत पर बहुतसी मालाओं को पहिनाकर शिवजी महाराज का पूजन करके तप करने लगा तब प्रसन्नहोकर प्रकट हुए महादेव जी मुझ से बोले कि वरमागो तब मैंने अन्य सब भोगों को छोड़कर आपका गण होजाऊं यही वर मांगा यही सुनकर श्री शिवजी बोले कि बड़ी कठिन पृथ्वी के उत्पन्नहुए पुष्पों की माला से जो तुमने मेरा पूजन किया है इसलिये तुम माल्यवान् नाम हमारे गण होगे इसके उपरान्त म-नुष्यके शरीरको छोड़कर मैं शीघ्रही शिवजीका गण होगया इस प्रकार यह श्रीमहादेवजी ने मेरा माल्यवान् नाम रक्खाहै हे काण-भूति वही मैं पार्वती जी के शापसे फिर मनुष्य हुआहूं तो अब

पुष्पदन्त की कही हुई कथा मुझ से कहो जिससे कि हमारा और तुम्हारा दोनों का शाप छूटे ॥ ११२ ॥

इति श्री दृष्टान्त प्र० च० भा० ११ प्रदीपः ॥

अथ दृष्टान्त प्र० च० भागे द्वादशप्रदीपः ॥

स्वेच्छाऽगतस्यापरीक्षाऽस्वीकारेस्यान्महत्क्षतिः ॥ पिशाचीयकथांत्यक्त्वा राजासीद्दुःखितो यथा ॥ १२ ॥

(अर्थ)-निज इश्वरेच्छासे जो पदार्थ आप प्राप्तहो फिर उसके विना विचार त्यागने अर्थात् लौटाने से महाभारी हानि तथा दुःख होता है जैसे पिशाचभाषा से बनी रुधिर से लिखी कथा को विन विचारकर ही राजा ने उलटी भेजदी तो तिसे पश्चात्ताप हुआ इस पर दृष्टान्त—जैसे ॥

इस प्रकार गुणाढ्य के कहने से काणभूति ने वह कथा अपनी भाषा में कही और गुणाढ्य भी उसी पिशाचीभाषा में उसी कथा को सात लाख श्लोकों में सात वर्षों में पूर्ण किया इस कथा को विद्याधरों के लेजाने के डरसे बनमें स्याही न मिलने के कारण गुणाढ्य ने अपने रुधिर से यह कथा लिखी उस दिव्य कथा के सुनने के लिये आयेहुए सिद्ध और विद्याधरोंकी ऐसी भीड़ इकट्ठी होगई मानों आकाश में शामयाना ही होगया है गुणाढ्य की बनाई हुई उसकथा को देखकर काणभूति अपने शाप से छूटकर अपनी सद्गति को प्राप्त होगया और जो २ पिशाच वहां उस दिव्य कथा को सुनरहे थे वह भी स्वर्ग को प्राप्तहुआ ६ इसके उपरान्त भगवती ने मुझ से यह बातभी कहीथी कि इस कथाको जब तुम पृथ्वी में प्रकाशित करोगे तब तुम्हारे शाप का अन्त होगा सो मैं

इस कथा को किसके पासभेजूं यह शोचकर गुणाढ्य ने अपने साथ आयेहुए गुणदेव और नन्दिदेव नाम शिष्यों से कहा कि इस काव्य के देने योग्य केवल राजा सातवाहनहै वह बड़ा रसिक है जैसे वायु पुष्पों की सुगन्धि को इधर उधर लेजाती है उसी प्रकार वह राजा भी इस काव्यको पृथ्वी में प्रकाशित करेगा ऐसा विचार करके गुणाढ्य तो वहां से आकर देवजी के बग़ीचेमें ठहरे और अपने शिष्यों को पुस्तक लेकर राजाके पास भेजा वह शिष्य इस कथा को लेकर राजाके यहां गये और बोले कि हे राजा! यह गुणाढ्य का बनाया हुआ काव्यहै इसको आप लीजिये राजा उस पिशाची भाषा को सुनकर और उन शिष्यों की आकृति पिशाचों की सी देखकर विद्या के अभिमान से तिरस्कारपूर्व्वक बोला कि सातलाख श्लोकों की यह पिशाची भाषा का नीरस ग्रन्थ है और रुधिर से अक्षर लिखेहुए हैं इस पिशाचों की कथा को धिक्कार है १५ तब वह दोनों शिष्य उस पुस्तक को लेकर गुणाढ्य के पास चलेगये और राजा का सब वृत्तान्त वर्णन करते भये यह सुनकर गुणाढ्य को भी बड़ा खेदहुआ क्योंकि समझदारके अनादर से किसको खेद नहीं होता इसके उपरान्त गुणाढ्य ने अपने शिष्यों को लेकर और वहां से कुछ दूरजाकर किसी पहाड़ी के बड़े उत्तम स्थान पर एक अग्नि का कुंड बनाया और उस कुंड में अग्नि जलाकर गुणाढ्य पशु और पक्षियों को सुना २ कर उस पुस्तक का एक २ पत्रा अग्निमें हवन करनेलगा सम्पूर्ण ग्रन्थ को हवन करदिया परन्तु अपने शिष्यों के लिये एकलाख श्लोकों का ग्रन्थ नरवाहनदत्त का चरित्र बचा रक्खा क्योंकि वह शिष्यों को बहुत प्यारा था जिस समय गुणाढ्य उस कथा को

पढ़ २ कर हवनकरते थे उस समय अपने २ चारा घासआदि को छोड़ २ कर भैंसा शूकर तथा सारंग आदिक पशु पक्षी उनके निकट आकर उनको घेर कर निश्चल बैठते थे और उस कथाको सुन २ कर आंसू बहाते थे २२ इसी बीच में राजा सातवाहन कुछ बीमारहुआ वैद्यों ने देखकर कहा कि राजा को सूखे मांसखाने से यह रोग हुआ है तव रसोईदार बुलाये गये तव वह बोले कि महाराज हमको बहेलिये ऐसाही मांस रोज़ देते हैं इसके उपरान्त जब बहेलियों से पूछागया तो उन्हों ने कहा कि यहां से थोड़ीदूर एकपर्वत पर कोई ब्राह्मण पढ़ २ कर एक २ पुस्तक का पत्रा अग्नि में हवन करताहै उसके सुनने के लिये सब जङ्गल के पशु पक्षी अपने २ चारों को भी छोड़कर वहां जाते हैं और वहां से हटतेनहीं हैं इसी से भूखके मारे उनके मांस सूखरहे हैं बहेलियों के ऐसे वचन सुनकर उन्हीं के साथ राजा बड़े आश्चर्य्य में भराहुआ गुणाढ्य के पास पहुंचा और वनके बासकरनेसे बड़ी २ जटावाले गुणाढ्य के दर्शन किये वह जटायें नहीं थीं मानों बुझने से कुछ बची हुई उसके शापरूपी अग्नि का यह धुआं सब ओर से फैला था २८ इसके उपरान्त रोतेहुए पशु पक्षियों के मध्य में बैठेहुए गुणाढ्य को पहिंचानकर उनको राजा ने प्रणाम किया और सब वृत्तान्त पूंछा २९ तब गुणाढ्य ने अपने और पुष्पदन्त के शाप की सम्पूर्ण कथा जो कि इस कथा के उत्पन्नहोने की कारण थी वर्णन की फिर गुणाढ्य को महादेवजी के गणका अवतार समझ कर राजा पैरोंपर गिरपड़ा और महादेव जी के मुखसे निकलीहुई इस दिव्यकथा को मांगनेलगा उस समय गुणाढ्य बोले कि छः लाख श्लोकों की छः कथा तो हमने हवन करदीं अब एक लाख

श्लोक की एक कथा बाक़ी है इसे लेलो और यह दोनों हमारे शिष्य इस कथा को तुम्हें समझावेंगे इस प्रकार राजासे सब वृत्तान्त कहकर और योग से अपने शरीर को त्यागकर वह शाप से छूटे हुए गुणाढ्य अपनी पदवी पर पहुंचे इसके उपरान्त गुणाढ्य की दीहुई बृहत्कथा नाम नरवाहनदत्त की एक लाख श्लोकों की कथाको लेकर राजा अपने नगरको चलाआया और गुणदेव तथा नन्दिदेव नाम गुणाढ्य के शिष्यों को पृथ्वी सुवर्ण वाहन वस्त्र आदि अनेक पदार्थ देताभया फिर उन्हीं दोनों शिष्यों के साथ राजा सातवाहन उस कथा को प्रकाशित करने के लिये इसकथा का कथापीठ भी पिशाचीभाषा में बनाता भया देवताओं की भी कथाओं को भुलाने वाली विचित्र रसों से भरीहुई यह दिव्य कथा सम्पूर्ण सुप्रतिष्ठितनाम नगर में प्रसिद्ध होकर तीनों लोकों में फैलगई॥

इति दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेत्रयोदशःप्रदीपः ॥ १३ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेचतुर्दशःप्रदीपः ॥ १४ ॥

अभिलाषोरभिलाषाऽश्रवणाद्दुःखम्प्रजायतेपुंसाम् । कामुकिन्नेश्या शापाद्वियोगमाप्तो नृपो राज्याः ॥ १४ ॥

(अर्थ) अभिलाषवाले की अभिलाषा न सुनने से जनों को अत्यन्त दुःख होजाता है। जैसे—कामवती तिलोत्तमा अप्सराकर के शाप होने से राजा (सहस्रानीक) निज रानीसे चौदह वर्ष के महाभारी वियोग को प्राप्त हुआ॥ १४ ॥

वत्सनाम एक बड़ा सुन्दर देश है जिसे कि ब्रह्मा ने स्वर्ग की नक़लही करके मानो इस पृथ्वी पर बनाया है उस देश

के मध्य में कौशाम्बी नाम बड़ी उत्तम नगरी है वह नगरी नहीं है मानो पृथ्वी रूपी कमल की कर्णिका (भूमका) है उस नगरी में पाण्डवों के वंश में शतानीक नाम एक राजा हुआ जिसका कि पिता जनमेजय पितामह परीक्षित प्रपितामह अभिमन्यु और आदिपुरुष श्रीशिवजी के साथमें भी युद्ध करनेवाला अर्जुन था उस राजा शतानीक की रानीका नाम विष्णुमती था यद्यपि पृथ्वी से राजा को अनेक २ प्रकार के रत्न प्राप्त होते थे तथापि वह अपनी रानीके किसी पुत्रके न होनेसे अप्रसन्न रहताथा एक समय राजा शिकार खेलने गया था वहां उसे शांडिल्यमुनि ने राजा के साथ आकर मन्त्रसे पवित्र की हुई खीर रानी को खिलाई तब राजा के सहस्रानीक नाम पुत्र उत्पन्न हुआ जैसे विनयसे गुण की शोभा होतीहै उसी प्रकार उस पुत्रसे राजा की बहुत शोभा हुई थोड़ेही दिनों में राजाने सहस्रानीक को युवराज बनाकर उसे सम्पूर्ण पृथ्वीका भार सौंप दिया और आप राज्यके सुख भोगने लगा १२ इस के उपरान्त किसी समय देवता और दैत्यों के युद्ध में इन्द्रने सहायता के लिये राजाके बुलाने को मातलि सारथी को रथ लेकर भेजा तब राजा शतानीक युगन्धर नाम मंत्री और सुप्रतीक नाम मुख्य सेनापति को अपना राज्य तथा पुत्र सौंपकर मातलि के साथ दैत्योंके मारने को स्वर्ग को चलागया वहां जाकर राजा ने इन्द्रके देखतेही देखते यमदंष्ट्रा आदिक अनेक दैत्यों को मारा और आपभी युद्धमें मारागया इस मरेहुए राजा के शरीर को मातलि उसके पुत्रके पास लेआया तब राजा की रानी उसके साथ सती होगई और उसका पुत्र सहस्रानीक राजा हुआ सहस्रानीक के सिंहासन पर बैठतेही सब उसके शत्रु राजालोग दबगये इसके

उपरान्त इन्द्रने दैत्यों के जीतनेके लिये मातलि को रथसमेत भेज कर सहस्रानीकको बुलवाया स्वर्गमें जाकर नन्दनवनमें अपनी २ स्त्रियों के साथ विहार करते हुए देवताओं को देखकर राजा सहस्रानीक को अपने योग्य स्त्री के मिलने के लिये बड़ी चिन्ता हुई राजाके इस अभिप्राय को जानकर इन्द्र बोले कि हे राजा! सन्देह मत करो तुम्हारा मनोरथ पूर्णहोगा २१ तुम्हारे समान स्त्री पृथ्वी में उत्पन्न होचुकी है उसका वृत्तान्त भी मैं तुम्हारे आगे वर्णन करताहूं २२ एक समय ब्रह्मा से मिलने के लिये मैं ब्रह्मलोक को गयाथा वहां विधूमनाम एक वसुभी मेरे पीछे २ चलागयाथा हम लोग वहां बैठेही थे कि ब्रह्मा से मिलने को एक अलम्बुषा नाम अप्सरा आई वायु से हिलते हुए वस्त्रवाली उस अप्सराको देखकर ब्रह्माने मेरी ओर देखा तब मैंने ब्रह्मा का अभिप्राय समझकर उन दोनों को यह शाप दिया कि तुम दोनों मृत्युलोक में उत्पन्न हो जाओ और वहां तुम दोनों स्त्री पुरुषहोगे सो हे राजा! वह वसु तो चन्द्रवंश में तुम उत्पन्न हुएहो और वह अप्सरा अयोध्या में कृतवर्मानाम राजा की कन्या मृगावती नाम से उत्पन्नहुई है वही तुम्हारी स्त्री होगी इस प्रकार इन्द्रके वचनरूपी वायुसे स्नेहयुक्त राजा के हृदयमें कामरूपी अग्नि जलनेलगी इसके उपरान्त इन्द्रने राजा को आदरपूर्वक अपने रथपर बैठाल कर मातलि के साथ उसकी पुरी को भेजा चलते समय राजा से तिलोत्तमानाम वेश्या बोली कि हे राजा! ज़रा ठहरजाओ मैं तुमसे कुछ कहूंगी राजा मृगावती के ध्यान में तू मेरे वचन को सुनकर चलागया तब तिलोत्तमाने लज्जित होकर उसे शापदिया कि जिसके ध्यानसे तू मेरे वचनको नहीं सुनताहै उसके साथ तेरा चौदह वर्षतक वियोग होगा २४

सातलिने यह शाप सुनलियाथा प्रियाके ध्यानमें लगाहुआ राजा रथके द्वारा कौशाम्बी नगरी में पहुंचा ३५ इसके उपरान्त राजा ने इन्द्र से सुनाहुआ मृगावती का वृत्तान्त अपने युगन्धरादि मन्त्रियों को सुनाया और कृतवर्म्मा राजा से उस कलावती कन्या के मांगने को दूत भेजा कृतवर्म्मा ने दूत के मुख से यह वृत्तान्त सुनकर अपनी कलावती नाम रानी से सब हाल कहा तब कलावती बोली कि हे राजा! सहस्रानीक को मृगावती अवश्य देनी चाहिये यही बात मुझसे किसी ब्राह्मण ने स्वप्न में कही है रानी के वचन सुनकर राजा ने प्रसन्न होकर मृगावती का अत्यन्त सुन्दर स्वरूप और नृत्यगीत आदि की चतुरता दूत को दिखाई ४० इस के उपरान्त सहस्रानीकके साथ अत्यन्त सुन्दर चन्द्रमा की किरण के समान रूपवान् अपनी मृगावती का बिवाह करदिया परस्पर समान गुणवाले सहस्रानीक और मृगावती इन दोनों का समागमहुआ इसके उपरान्त थोड़ेही दिनों में राजा के मंत्रियों के पुत्र हुए युगन्धर के यौगन्धरायणनाम पुत्रहुआ सुप्रतीकके रूमण्वान् नाम पुत्रहुआ और राजा के मित्र के वसन्तक नाम पुत्र उत्पन्न हुआ फिर थोड़े दिनों के उपरान्त राजा की रानी मृगावती भी गर्भवतीहुई फिर गर्भवती रानी का इस बातपर मन चला कि रुधिरसे भरीहुई बावड़ी में स्नानकरूं रानीकी इच्छा को पूर्ण करने के लिये धार्मिक राजाने लाख आदि के रससे बावड़ी भरवादी उस बावड़ी में स्नान करती हुई रानी को मांस के धोखे से गरुड़ के वंश में उत्पन्नहुआ कोई पक्षी उठालेगया पक्षी से हरीगई रानी को मानों ढूँढ़ने के लिये उसीसमय सहस्रानीकका धैर्य्य भी जाता रहा अर्थात् राजा को धीरज नहीं रहा प्रिया में लगेहुए राजा के

चित्तको भी मानों पक्षी हरलेगया जिससे कि रानी के जातेही राजा मूर्च्छित होकर गिरपड़ा ५० क्षणभरमें राजाकी मूर्च्छा जगने पर राजाके वृत्तान्त को अपने प्रभाव से जानकर मातलि स्वर्ग से इसके पास आया और उसने राजाको समझा कर तिलोत्तमा का चौदहवर्षका शाप सुनाया और यह कहकर स्वर्ग को चलागया हे प्रिये ! आज उस पापिनी तिलोत्तमा का मनोरथ पूर्णहुआ यह कहकर राजा वारम्वार विलाप करनेलगा फिर शाप के वृत्तान्त को सुनकर मंत्रियोंने समझाया तव राजा फिर मिलने की आशा से किसीप्रकार सावधानहुआ इतने अन्तरमें वह पक्षी रानी मृगावती को लेकर उदयाचल पर गया और उसे जीती हुई जानकर वहीं छोड़कर उड़गया उस पक्षी के चलेजानेपर और पर्व्वत पर अकेली अपने को देखकर शोक और भयसे वह रानी अत्यन्त व्याकुलहुई फिर एक वस्त्र पहनेहुए रोतीहुई अकेली रानी को कोई वड़ाभारी अजगर सर्प निगलनेलगा तव उस अजगर को मारकर और उस रानी को उससे छुड़ाकर कोई दिव्य पुरुष चला गया ५८ इसके उपरान्त रानी मरने की इच्छासे किसी मतवाले हाथी के सामने आप चलीगई उसने भी दया से उसे छोड़ दिया यह वड़े आश्चर्य की वातहै कि पशु भी अपने सन्मुख आईहुई रानी को छोड़कर चलागया अथवा कोई आश्चर्य नहीं है क्योंकि (ईश्वर की इच्छा से क्या नहीं होसक्ता) इसके उपरान्त गर्भ के भारसे व्याकुल पर्व्वतपर से गिरतीहुई रानी अपने पतिका स्मरण करके चिल्लाकर रोनेलगी यहसुनकर कोई मुनिका वालक जोकि वहां फल मूल लेने के लिये आयाथा रानी के निकट आया वह रानी को देखकर और समझाकर दयासे जमदग्निजी के आश्रम

को ले आया ६३ वहां रानी ने अपने तेज से सूर्य्यके समान वि-
राजमान जमदग्निजी के दर्शन किये और प्रणाम किया तब पैरों
पर गिरीहुई रानीको देखकर दिव्यदृष्टिवाले जमदग्निजी वियोग
से महाव्याकुल होनेवाली रानी से बोले कि हे पुत्री! यहां तेरे
वंशका चलानेवाला पुत्र उत्पन्न होगा और तेरापति भी तुझे मि-
लेगा शोक मतकरो मुनिजीके यह वचन सुनकर पति के मिलने
की आशा से रानी वहीं रहनेलगी इसके पीछे कुछ दिनोंमें रानी
के एक बड़ा सुन्दर पुत्र उत्पन्नहुआ उस समय आकाश से मृगा-
वती के चित्तको प्रसन्न करनेवाली यह आकाशवाणी हुई कि यह
उदयननाम बड़ा यशस्वी राजा होगा और इसका पुत्र सम्पूर्ण
विद्याधरों का राजा होगा ७० धीरे २ यह उदयननाम बालक
जमदग्निजी के आश्रम में अपने गुणों समेत बढ़नेलगा जमद-
ग्निजी ने उसको क्षत्रियोंके योग्य सम्पूर्ण संस्कार करके सम्पूर्ण
विद्याओं समेत धनुर्वेद सिखाया कभी प्रसन्नता से मृगावती ने
उस बालक के स्नेह से राजा सहस्रानीक के नाम से युक्त कड़ा
अपने हाथ से उतारकर उस के हाथ में पहरा दियाथा एक समय
उदयन शिकार के खेलने को गयाथा तो वहां देखा कि कोई
मदारी एक बड़े सुन्दर सर्प को ज़बरदस्ती पकड़े लिये जाता
है उदयन ने दयापूर्वक उससे कहा कि हमारे कहने से इस सर्पको
छोड़दो ७५ तब मदारी बोला कि हे स्वामी! यह तो मेरी जीविका
है मैं बड़ा ग़रीब हूं सदैव सर्पों का तमाशा दिखा २ अपने पेटको
भरता हूं पुराने सर्पके मरजाने पर बहुत ढूंढ़ते २ इस वनमें मन्त्र
और औषधियों के बलसे यह सर्प मैंने पायाहै उसके यह वचन
सुनकर उदयन ने माता का दियाहुआ कड़ा उसे देकर सर्प छुड़वा

दिया तब प्रणाम करके कड़ेको लेके मदारी के चलेजाने पर वह सर्प उदयन पर प्रसन्न हो वीणाधारी मनुष्य होकर बोला कि मैं वासुकि का बड़ा भाई वसुनेमि नाम हूं तुमने मेरी रक्षाकी है इस-लिये तारों से बड़े सुन्दर शब्दवाली और सुन्दरियों से जड़ाऊ बड़ी उत्तम यह वीणालो और ताम्बूल तथा कभी न मुरझाने वाली पुष्पों की माला लो यह देकर उस सर्प ने कभी मैले न होनेवाले तिलक की युक्तिभी बताई इसके उपरान्त वह उदयन उन सब पदार्थों को लेकर जमदग्नि के आश्रम में अपनी माता के निकट आया इस बीच में वह मदारी उदयन के दियेहुए उस कड़े को लेकर राजा सहस्रानीक के राज्यमें बेचने को आया राजा के मनुष्य राजा के नाम से युक्त उस कड़े को देख कड़े समेत उस मदारी को राजा के समीप ले आये–८४ शोक से विकल राजा सहस्रानीक ने उस मदारी से अपने आप पूंछा कि तुम यह कड़ा कहां से लाये तब उस मदारी ने उदयन से कड़ा पानेका सम्पूर्ण वृत्तान्त राजा का कह सुनाया मदारी के वचन को सुनके और अपनी स्त्री के कड़े को पहचान के राजा के चित्तमें बड़ा सन्देह हुआ उसीसमय यह आकाशवाणी हुई कि हे राजा! तुम्हाराशाप अब जाता रहा पुत्र समेत तुम्हारी मृगावती रानी उदयाचल पर्व्वत पर जमदग्नि के आश्रम में हैं जैसे गरमी से व्याकुल मोर को जल की वृष्टि से प्रसन्नता होती है उसी प्रकार वियोग से व्याकुल राजा आकाशवाणी से प्रसन्न हुआ इसके अनन्तर उस दिवस के किसी प्रकार व्यतीत होने पर उस मदारी को साथ में लेकर राजा सहस्रानीक अपनी प्रियासे मिलने के लिये सेनाओं समेत उदयाचल को चला ६०. इस के उपरान्त राजा बहुत दूर

जाकर उस दिन किसी जंगली तालाब के पास टिका वहां शयन के समय सेवा करने के लिये आये हुए संगतक नाम किसी कथक अर्थात् किस्सेबाज़ से राजा बोला कि मृगावती के मुख रूपी कमल के दर्शन करने की इच्छा करनेवाले मुझसे कोई मनोहर कथा कहो तव संगतक बोला कि हे राजा ! आप वृथा सन्ताप करते हो क्योंकि शापका अन्त होचुका है अव आप से रानी का समागम हुआही चाहता है और संयोग वियोग तो मनुष्यों को हुआही करते हैं इसी विषयमें आप से एक कथा कहताहूं उसे आप सुनिये ॥

इति दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे १४ प्रदीपः ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभाग १५ पञ्चदशप्रदीपः ॥

वियोगेसंप्यथसंयोगोजायतेकालतोयथा ॥ श्रीदत्तःस्वीयपत्न्याहिवियुक्तोऽथयुतोऽभवत् ॥ १५ ॥

(अर्थ) वियोग होजाने पर संयोग भी काल पाकर होही जाता है जैसे श्रीधर निज स्त्रीसे वियुक्त हो फिर उसी से संयोग को प्राप्त हुआ—जैसे—मालव देश में यज्ञसोम नाम ब्राह्मण के कालनेमि और विगतभय नाम दो पुत्र थे उन पुत्रों पर वहां के निवासी बहुत प्रेम करते थे पिताके मरजाने पर युवावस्थाको प्राप्त वह दोनों पुत्र विद्या पढ़ने के लिये पाटलिपुत्र नाम नगर में गये वहां देवशर्म्मा नाम उपाध्याय से बहुत सी विद्या पढ़ीं तव उपाध्यायने प्रसन्न होकर अपनी दोनों कन्या उन दोनों को व्याहदीं इसके उपरान्त कालनेमि अन्य गृहस्थी लोगों को बहुत धनाढ्य देखकर ईर्षा से लक्ष्मी मिलने के लिये अग्नि में हवन करनेलगा

हवन से प्रसन्न होके साक्षात् लक्ष्मीजी प्रकट होकर बोलीं कि तुझे बहुतसा धन मिलेगा और तेरा पुत्र राजा होगा परन्तु अन्त में तू चोर के समान मारा जायगा क्योंकि तैंने ईर्षा से हवन कियाहै यह कह कर लक्ष्मी जी तो अन्तर्द्धान होगई और कालनेमि धीरे २ बड़ा धनवान् होगया और कुछ दिन में उस के एक पुत्र भी उत्पन्न हुआ १२ उसका नाम उसने श्रीदत्त रक्खा क्योंकि वह लक्ष्मी जी की कृपा से हुआ था धीरे २ वह श्रीदत्त बड़ा होकर ब्राह्मण होनेपर भी अस्त्र विद्या और बाहुयुद्ध में बड़ा प्रवीण हुआ इसके उपरान्त कालनेमिके भाई विगतभयकी स्त्रीको सर्प ने काट खाया इसी से वह तीर्थयात्रा के लिये परदेश चलागाया फिर वहांके गुणग्राही वल्लभशक्ति नाम राजाने श्रीदत्त को विक्रमशक्ति नाम अपने पुत्र का मित्र बनाया इसके उपरान्त अवन्ती देश के दो क्षत्री बाहुशाली और वज्रमुष्टि नाम उस श्रीदत्त के मित्रहुए फिर श्रीदत्त से बाहुयुद्ध के द्वारा जीतेगये अन्य गुणज्ञ दक्षिणी लोग और महाबल व्याघ्र भट उपेन्द्र बल तथा निष्ठुरकनाम मंत्रियों के पुत्र इसके मित्रहुए एक समय वर्षाऋतु में श्रीदत्त सब अपने मित्रों को साथ लेकर राजपुत्र समेत गङ्गातटपर खेलने को गया वहां जाकर खेल में राजा के सेवकों ने राजा के पुत्र को अपनी ओरका राजा बनाया और श्रीदत्त के मित्रोंने श्रीदत्त को अपनी ओरका राजा बनाया २२ यह देखकर क्रोधित हुए राजाके पुत्रने श्रीदत्तको लड़नेकेलिये बुलाया तब श्रीदत्तने मल्ल-युद्ध करके राजाके लड़के को पछाड़ दिया इस कारण राजाके पुत्र ने अपनें चित्तमें यह विचार किया कि मैं इसे मरवाडालूं राजाके पुत्रका अभिप्राय समझकर श्रीदत्त अपने मित्रों समेत वहां से

आगआया तब भागते २ मार्ग में यह देखा कि समुद्र में बहतीहुई लक्ष्मी जी के समान गङ्गाजी में वहतीहुई स्त्री जारही है यह देखके उसके निकालने के लिये अपने मित्रोंको गङ्गाके किनारेपर छोड़ कर श्रीदत्त ने भी गोतामारा पानी में गोता मारकर क्षणभरमें ही श्रीदत्त ने देखा कि न कहीं पानी है और न वह स्त्री है केवल एक सुन्दर शिवजीका दिव्य मंदिर बना हुआहै यह देखकर बड़े आश्चर्य्य से युक्त थकाहुआ श्रीदत्त श्रीशिवजी को नमस्कार करके उसी मंदिर में रात्रि भर रहा २१ प्रातःकाल सम्पूर्ण गुणों से युक्त मूर्ति को धारण किये लक्ष्मी के समान वह स्त्री शिवजी का पूजन करने को वहां आई श्री शिवजी का पूजन करके वह स्त्री अपने घर को चली गई और भीतर जाके अपने कमरे में पलँग पर लेटगई वहां सैकड़ों स्त्रियां उसकी सेवा करने को मौजूद थीं श्रीदत्त वहीं जाकर उसके निकट बैठगया इसके उपरान्त वह स्त्री एकाएकी रोदन कर २ आंसू बहाने लगी उससमय श्रीदत्त के चित्त में बड़ी दयाहुई और बोला कि तुम कौन हो और क्यों रोती हो मुझ से कहो मैं तुम्हारे दुःख को दूर करूंगा २८ तब वह बोली कि हम सब एक हज़ार दैत्यों के स्वामी बलि की पोती हैं इन सब में मैं बड़ी हूं और मेरा विद्युत्प्रभा नाम है हमारे बाबा बलिको तो विष्णुजी ने बहुत दिन से बांध रक्खाहै और पिताको भी विष्णुही ने बाहुयुद्ध में मारकर हमें हमारे पुर से निकाल दिया है और हमारे रोकने के लिये एक सिंह वहां बैठाल दिया है इस से हम अपने पुर में नहीं जा सक्ती हैं यही हमको बड़ा दुःख है जब हमने विष्णुसे अपने पुर में जानेका उपाय पूंछा तब उन्हों ने यह कहा था कि कुबेर के शापसे यक्ष सिंह होगया है जब कोई मनुष्य

इसे मारेगा तब इसका शाप छूटेगा इससे तुम हमारे शत्रुरूप उस सिंह को मारो क्योंकि इसीलिये मैं तुमको यहां लाई हूं उस सिंह के मारने से तुमको मृगाङ्कनाम खड्ग मिलैगा जिसके प्रभाव से तुम सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतकर राजा होजाओगे ४५ यह सुन कर श्रीदत्तने वह दिनतो वहीं व्यतीत किया और दूसरेदिन दैत्य की सब कन्याओं को साथ लेकर उस पुरको चला ४६ वहांजाकर श्रीदत्त ने बाहुयुद्ध से सिंह को जीत लिया तब उस सिंह का रूप पुरुष का सा होगया और वह प्रसन्न होकर शाप के छुटाने वाले श्रीदत्त को अपना खड्ग देकर अन्तर्द्धान होगया और दैत्य की सब कन्याओं का दुःख दूर होगया इसके उपरान्त श्रीदत्त सब कन्याओं समेत उस पुर के भीतर गया और वहां उस विद्युत्प्रभा कन्यापर मोहितहुआ तब वहकन्या युक्तिपूर्व्वक श्रीदत्तसे बोली कि मगरके भयके दूर करनेवाले इस खड्गको लेकर तुम बावड़ीमें गोता मारो उसके कहने से जब श्रीदत्त ने गोता मारा तो गङ्गा जी के उसी तटपर जा निकला जहां से कि यह कूदा था ५२ इस प्रकार दैत्य की कन्या से छला गया श्रीदत्त खड्ग और अँगूठी समेत पाताल से निकलकर आश्चर्य्य और खेद दोनों से युक्त हो गया फिर अपने मित्रों के ढूंढ़ने के निमित्त अपने घरकी तरफ़ चला रास्ते में कुछ दूर चलकर निष्ठुरकनाम मित्र उसको मिला निष्ठुरक उसको प्रणाम करके और एकान्त में जाकर उससे बोला कि गङ्गा में डूबे हुए तुमको बहुत दिनों तक ढूँढ़कर हम लोग अपना शिर काटने को तैयार हुएथे कि यह आकाशबाणी हुई कि हे पुत्र ! अपनाशिर मतकाटो तुम्हारा मित्र तुम्हें मिलजायगा उस आकाशबाणी को सुनकर हम लोग तुम्हारे पिता से यह वृत्तान्त

कहने को चले थे कि मार्ग में किसी पुरुषने जल्दी से आकर यह कहा कि तुमलोग अभी इसनगर में मत जाओ क्योंकि यहां का राजा बल्लभशक्ति मरगया और मन्त्रियों ने उसके पुत्र विक्रम शक्ति को राज्य देदिया राज्य मिलने के दूसरे दिन विक्रमशक्ति ने यह कहकर कि इसने अपने पुत्रको छिपा रक्खा है उस तुम्हारे पिता को शूलीपर चढ़ादिया ६२ यह देखकर तुम्हारी माता का हृदय आपही फटगया ठीकहै कि दुष्टों के पाप बहुत अन्य २ पापों से और भी भारी होजाते हैं ६३ अब वह विक्रमशक्ति श्रीदत्त और श्रीदत्त के मित्रों को भी मारने को ढूंढ़ताहै उस पुरुषके ऐसे वचन सुनकर बाहुशालि आदिक तुम्हारे पांच मित्र तो उज्जयिनी को चलेगये और मुझे तुम्हारे लिये यहां छिपाकर छोड़ गये हैं तो चलो जहां वह हमारे पांचों मित्र हैं वहीं चलें निष्ठुरक के पास ऐसे वचन सुनकर अपने माता पिताका बड़ा शोक करके बदला लेने के लिये श्रीदत्त अपने खड्ग को देखने लगा फिर समय को विचारकर निष्ठुरक के साथ अपने मित्रों से मिलने के लिये श्रीदत्त उज्जयिनी को चला ६८ फिर अपने सम्पूर्ण वृत्तान्त को मित्र से कहतेहुए श्रीदत्त ने मार्ग में रोतीहुई एक स्त्री देखी तब पूंछने से वह बोली कि मैं मालव देशको जाती थी सो मार्ग्ग भूलगई हूं उसके यह वचन सुनकर दया से उन दोनों ने उसे भी अपने साथ में लेकर उस दिन सायङ्काल के समय किसी उजड़ेहुए गाँव में निवास किया वहां एकाएकी रात्रिमें जगेहुए श्रीदत्त ने देखा कि वह स्त्री निष्ठुरक को मारकर उसका मांस बड़ी प्रसन्नता से खा रही है तब श्रीदत्त अपने मृगाङ्कक को लेकर उठा और स्त्री भी राक्षसी होगई जब श्रीदत्तने उसको मारने के लिये उसके

शिरके बाल पकड़े तब उसका दिव्य स्वरूप होगया और बोली कि हे महाभाग ! मुझे मत मारो मैं राक्षसी नहींहूं मुझको विश्वामित्र का यह शाप था ७५ एकसमय कुवेर के अधिकार के लेने के लिये तप करतेहुए विश्वामित्रके तप में विघ्न करनेके निमित्त कुवेर ने मुझे भेजा वहां सुन्दर रूपसे जब मैं विश्वामित्रको अपने वशमें न करसकी तब भयङ्कर रूप करके मैं उनको डराने लगी यह देखकर विश्वामित्रने मुझे शापदिया कि हे पापिन! तू मनुष्यों की मारनेवाली राक्षसी होजाय फिर मेरे प्रार्थना करनेपर विश्वामित्र ने यह भी कहा कि जब श्रीदत्त तेरे बाल पकड़ेगा तब तेरा शाप छूटेगा तभी से मैं राक्षसी होगई हूं और मैंनेही बहुत दिनों से इस नगर को ग्रस रक्खा था अब तुम्हारी कृपा से मेरा वह शाप छूटगया तुम जो चाहो मुझसे वरमांगों श्रीदत्त ने यही वरमांगा कि मेरा मित्र जीजावे उसने कहा ऐसाही होगा यह कहकर चली गई और निष्ठुरक जीउठा ८२ इसके उपरान्त निष्ठुरक को साथ लेकर श्रीदत्त धीरे २ उज्जयिनी को पहुंचा जैसे कि मेघको देख कर नीलकंठ प्रसन्न होते हैं उसीप्रकार श्रीदत्त और निष्ठुरक को देखकर उसके मित्र प्रसन्नहुए फिर बाहुशाली नाम मित्र श्रीदत्त को सत्कारपूर्व्वक अपने घर लेगया और श्रीदत्त ने उस से अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कहा बाहुशाली के घरमें उसके माता और पिता से सेवन कियाहुआ श्रीदत्त अपने सम्पूर्ण मित्रों समेत प्रसन्नता पूर्व्वक रहनेलगा ८६ एक समय वसन्त के उत्सव में श्रीदत्त आपने मित्रों समेत किसी बगीचे की सैर को गया वहां बिम्बकनाम राजा की मृगांकवतीनाम कन्याको साक्षात् वसन्तऋतुकी लक्ष्मी के समान देखकर श्रीदत्त काम के वशीभूत होगया और श्रीदत्त

को देखकर वह कन्या भी उसपर आसक्त होगई उस कन्या को वृक्षों की आड़में चलीगई देखकर श्रीदत्त बहुत बिकल होगया श्रीदत्त की यह दशा देखकर बाहुशाली बोला कि हे मित्र! मैं तुम्हारे चित्तका हाल जानगया मुझसे मत छिपाओ चलो वहीं चलें जहां वह राजकन्या गईहै बाहुशाली के यह वचन सुनकर श्रीदत्त बाहुशाली के साथ जहां वह राजकन्या गईथी वहीं गया उससमय यह चिल्लाहट सुनाई पड़ी कि हाय २ राजकन्या को सर्प ने काट खाया ६४ तब बाहुशाली ने उसके कंचुकी अर्थात् ख्वाजेसराय से कहा कि हमारे मित्र के पास विषनाशक अँगूठी और विद्याहै यह सुनकर वह कंचुकी श्रीदत्त के पैरोंपर गिरकर उसको राजकन्या के पास लेगया श्रीदत्त ने वहां जाकर अपनी अँगूठी राजकन्याकी अँगुली में पहरादी और मन्त्र पढ़नेलगा इससे वह राजकन्या जी उठी और सब लोग श्रीदत्त की प्रशंसा करनेलगे इस वृत्तान्त को सुनकर उस कन्याका पिता राजाबिम्बक भी वहां आया इससे श्रीदत्त अपने मित्रों समेत अँगूठी को विना लिये वहां से चला आया राजा ने प्रसन्न होकर जो कुछ सुवर्णादिक पदार्थ श्रीदत्त को भेजे वह सब अपने बाहुशाली के पिता को दे दिये १०० इसके उपरान्त उस राजकन्या की याद करके श्रीदत्त को इतना खेद हुआ कि जिसके देखने से उसके मित्र लोग भी बहुत व्याकुल हुए तब भावनिका नाम राजकन्याकी एक प्यारी सखी अँगूठी देनेके बहाने से आई और बोली कि हे श्रीदत्त! हमारी राजकन्या का यह निश्चय बिचार है कि यातो तुमसे विवाह करेगी या शरीर को त्यागदेगी भावनिका के यह बचन सुनकर श्रीदत्त बाहुशाली भावनिका और अन्य सम्पूर्ण मित्र मिलकर यह सलाह

करनेलगे कि राजकन्या को हम सबलोग यहां से हरलेचलें और मथुरा में जाकर रहें १०५ ऐसी सलाह होजाने पर भावनिका वहां से चलीगई दूसरे दिन बाहुशाली अपने तीन मित्रों समेत रोज़गार के बहाने से मथुरा को चलागया यहां श्रीदत्तने कन्यासमेत किसी स्त्री को मद्य पिलवाकर राजकन्या के घरमें रखदिया तब दीपक बालने के बहाने से उस घरमें आग लगाकर राजकन्या भावनिका समेत बाहर निकल आई ११० उसी समय बाहर खड़े हुए श्रीदत्त ने अपने दो मित्रोंसमेत राजकन्या को आगे करके गये हुए बाहुशाली के पास भेजदिया और राजकन्या के मकान में वह कन्या समेत स्त्री जलगई लोग यह समझे कि राजकन्या अपनी सखी समेत जलगई श्रीदत्त उसी प्रकार प्रातःकाल तक वहां रहा और दूसरे दिन अपने मृगाङ्क नाम खड्ग को लेकर अपनी प्रियाके पास चला रात्रिभर में बहुत से मार्ग को उल्लंघन करके श्रीदत्त पहरभर दिन चढ़े विन्ध्याचल के वनमें पहुँचा वहां उसे बहुत से दुश्शकुन हुए और पीछे से उसने देखा कि भावनिका समेत उसके सम्पूर्ण मित्र वहां घायल पड़े हैं वह सब श्रीदत्त को देखकर बोले कि आज बहुतसे घुड़सवारोंने हमको लूटलिया और हम लोगों के घायल होजानेपर एक घुड़सवार राजकन्याको अपने घोड़ेपर सवार कराके लेगया जबतक वह उसे दूर न लेजाय तबतक दौड़कर उसे पकड़लाओ और हमारेपास मतठहरो क्योंकि वही उन सबमें मुख्य है ११६ उनमित्रों के ऐसे बचन सुनकर श्रीदत्त वेगपूर्व्वक वहां से चला और बहुतदूर जाकर उसने देखा कि एक घुड़सवारों की फ़ौज चलीजाती है और उस सेना के बीच में कोई तरुण क्षत्री अपने घोड़े पर राजकन्या को बैठाये हुए चला

जाताहै यह देखकर वह उसक्षत्री के पासगया और समझाकर राज-कन्याको मांगनेलगा जब वहसमझाने से भी न माना तब श्रीदत्त ने उसका पैर पकड़कर घोड़ेपर से खींचलिया और उसे मारडाला और उसी घोड़ेपर चढ़कर अन्य आनेवाले बहुत से घुड़सवारोंको मारनेलगा फिर जो कुछ कि मारनेसे बचे वह उसके दिव्यबलको देखकर भयखाकर भाग गये १२५ फिर श्रीदत्त राजकन्या समेत घोड़ेपर सवार होकर अपने मित्रों के पास चला थोड़ीदूर चलकर लड़ाई में बहुत घायल होनेवाला वह घोड़ा श्रीदत्त के उतर आने पर गिरकर मरगया उस समय मृगाङ्कवती डर और कामसे बहुत थकीहुई होके प्यासीहुई तब राजकन्या को वहीं बैठालकर श्रीदत्त पानी लेनेके लिये बहुतदूर चलागया पानी ढूंढ़तेही ढूंढ़ते उसे शाम होगई फिर जलके मिलने पर भी मार्ग भूल जानेके कारण श्रीदत्त रात्रिभर उसी जङ्गलमें चिल्लाया किया प्रातःकाल जहां वह घोड़ा मरा पड़ाथा वहां आया और राजकन्याको वहां न पाया तब वह अपने मृगाङ्क नाम खड्गको वृक्षके नीचे रखकर राजकन्या को देखने के लिये वृक्षपर चढ़गया १३२ उसी समय उस रास्ते से कोई लुटेरों का राजा आया और आकर उसने वृक्षके नीचे उतर कर उससे यह बात पूंछनेलगा कि तुमको कोई स्त्री तो नहीं मिली है तब वह बोला कि मेरे गांव को जाओ वहीं वह भी गई है और वहीं आकर मैं तुझे यह खड्ग भी दूंगा यह कहकर उसने श्रीदत्त को अपने आदमियों के साथ अपने गांवको भेजदिया १३६ उस गांव में जाकर उन मनुष्यों ने उससे कहा कि थोड़ी देर सुस्तालो तब श्रीदत्त थका तो थाही लुटेरों के राजा के घरमें क्षणभर सोगया फिर जगकर क्या देखता है कि उसके पैरों में बेड़ी पड़ीहुई हैं इसके

उपरान्त क्षणभर सुख देनेवाली और क्षणभर में ही दुख देनेवाली दैवकी गति के समान अपनी प्रियाको शोचने लगा एक दिन मोचनिका नाम कोई दासी वहां आकर उससे बोली कि यहां तुम अपने प्राण देनेके लिये क्यों आयेहो लुटेरोंका राजा अभी किसी काम के लिये कहीं गया है लौटकर तुम्हें भगवती को बलिदेगा इसीलिये तुमको यहां युक्तिपूर्व्वक भेजा है और इसी से तुम्हारे पैरों में वेड़ी भी डालीगई हैं उसने तुमको भगवती के बलिदान के लिये भेजा है इसीसे यह लोग तुम्हारी खाने पीने की बड़ी खातिर करते हैं १४३ तुम्हारे छूटनेका एक उपाय है जो तुम मानो तो इस लुटेरों के राजाकी लड़की सुन्दरी नामहै वह तुम्हें देखकर अत्यन्त कामातुर हुई है अगर तुम उसके साथसंभोग करोगे तो तुम्हारे प्राण बचजायँगे उसके यह वचन सुनकर श्रीदत्तने छुपकर उस सुन्दरी के साथ अपना गान्धर्व विवाह करलिया रोज़ रात्रि के समय उस की वेड़ी को खोलकर वह सुन्दरी उस के साथ अपना भोग किया करतीथी और फिर वेड़ी डाल देती थी इसके उपरान्त थोड़े ही दिनों में सुन्दरी गर्भवती हुई और यह सम्पूर्ण वृत्तान्त उस की माता मोचनिका नाम दासी के मुखसे सुनकर दामाद के प्रेम से एकान्त में श्रीदत्तके पासगई और बोली कि हे पुत्र ! श्रीचण्डनाम इस सुन्दरी का पिता जो इस वृत्तान्त को जानेगा तो तुम्हें मारे विना न छोड़ेगा इसलिये तुम यहां से चले जाओ और सुन्दरीको न भूलना १४८ यह कहकर उस की सासने उसे वहांसे छुड़वा दिया तब श्रीदत्त सुन्दरी से यह कहकर कि मेराखड्ग तेरे पिताके पासहै वहांसे चलाआयाहै फिर मृगाङ्कवतीके ढूंढ़नेके लिये चिन्ता से व्याकुल उसी बन में घुसा और वन में घुसने के समय इस को

अच्छे २ शकुन हुए उन उत्तम शकुनों को देखकर जहां इस का घोड़ा मराथा और मृगाङ्कवतीखोईथी वहां आया और उस जगह सामने आतेहुए एक वहेलिये से भी उसी मृगाङ्कवतीको पूछा तव उसने कहा कि क्या तुम्हारा श्रीदत्त नाम है फिर वह बोला कि सुभागा श्रीदत्त मैंहीहूं तव वह बोला कि सुनो मैंने यहां रो २ कर तुम्हें ढूंढ़तीहुई तुम्हारीस्त्रीको देखकर और सम्पूर्ण वृत्तान्तभी उससे पूछ कर उसेसावधान किया और फिर दयापूर्वक इसवनसे उसको अपने गांव में लेगया फिर गांव में जवान २ वधिकों को देखकर मथुराके निकट नागस्थल नाम गांव में विश्वदत्तनाम एक वृद्ध ब्राह्मणके यहां मैंने उसे सुपुर्द करदिया फिर तुम्हारी स्त्री से तुम्हारे नाम को पूछकर मैं तुमको तलाश करने यहां आयाहूं अब तुम शीघ्र नागस्थल में जाकर अपनी स्त्रीको लेलो १४६ उसके यह बचन सुन कर श्रीदत्त वहांसे चला और दूसरे दिन नागस्थलमें पहुँचा और विश्वदत्त ब्राह्मणके घर में जाकर श्रीदत्त यह वचन बोला कि वहेलियेकी सुपुर्द कराई हुई हमारी स्त्रीको तुम देदो यह सुनकर विश्वदत्त ने कहा कि मथुरा में राजा सूरसेनका उपाध्याय तथा मंत्री एक ब्राह्मण मेरा मित्र है उसी के यहां मैंने तुम्हारी स्त्री को भेज दियाहै क्योंकि इस निर्जन गांव में उसकी रक्षा नहीं होसकतीथी तो प्रातःकाल तुम वहीं जाना आज यहां हीं रहौ विश्वदत्त के कहनेसे श्रीदत्त रात्रिभर वहांरहा और प्रातःकाल मथुराको चला फिर दूसरे दिन मथुरा के निकट पहुँचकर बहुत मार्ग चलने से चेष्टा मैली होगई थी इसलिये निर्मल जलवाली एक बावड़ी में स्नान करनेलगा वहां जल के भीतर चोरों का रक्खाहुआ एक वस्त्र मिला जिसके कि किनारों में रत्नों का हार बँधाहुआ था तब

वह उसवस्त्रको लेकर हारको विना देखे श्रीदत्त मथुरा में घुसा वहां उसवस्त्रको पहचानकर और उसमें रत्नोंका हार बँधा देखकर राजाके सिपाही उसे चोर कहकर बांधके कोतवाल के पास लेआये कोतवाल ने राजासे कहा और राजाने उसके मारनेका हुक्म दे दिया १७० तव मारने के लिये वध करने के स्थान में राजाके सिपाही ढिंढोरापीटतेहुए श्रीदत्तको लेचले इसप्रकारसे जातेहुए श्रीदत्तको मृगाङ्कवतीने देखा और जिसके घरमें रहतीथी उस मन्त्रीसे बोली कि यही मेरा पतिहै जिसको मारने के लिये राजाके सिपाही लिये जाते हैं यह सुनकर मंत्री ने उन वध करनेवालों को रोक दिया और राजा से जाकर कह बधसे उसे छुड़वादिया और अपने घरमें ले आया–इसके उपरान्त श्रीदत्त मंत्री को देखकर अपने चित्तमें शोचनेलगा कि यह वही मेरा विगतभय नाम चचाहै जो कि परदेशको चलागयाथा और भाग्यवश से यहां आकर मंत्री हुआ इसप्रकार उसे पहचानके और पूछकर उसके पैरों में गिरपड़ा १७५ विगतभयभी अपने भाईके पुत्रको पहचानकर और उसेकंठमें लगाकर सम्पूर्ण वृत्तान्त पूंछनेलगा तव श्रीदत्तने अपने पिताकी मृत्यु से लेकर अपना सब वृत्तान्त अपने चचाको सुना दिया उस श्रीदत्तका सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनकर विगतभयके आंसू निकल आये और एकान्तमें अपने भतीजेसे बोला कि हे पुत्र! धीरजधरो मुझे यक्षिणी सिद्धहै उसने मुझे पांचहज़ार घोड़े और सात करोड़ अशर्फ़ी दी हैं वह सबधन तुम्हाराही है क्योंकि मेरे कोई पुत्र नहीं है यह कह कर उसने श्रीदत्तकी स्त्री श्रीदत्तके सुपुर्द करदी और श्रीदत्तनेभी बहुतसा ऐश्वर्य्य पाकर उसके साथ अपना बिवाह करलिया जैसे कि रात्रिसे चन्द्रमा की शोभा होती है उसी प्रकार वहां रहते हुए

श्रीदत्तकी शोभामृगाङ्कवतीसे हुई यद्यपि श्रीदत्तको ऐसा ऐश्वर्य प्राप्त भी हुआथा तथापि उसके चित्त में बाहुशाली आदिक मित्रों की चिन्तावनीही रहती थी एक समय विगतभय ने श्रीदत्त को एकान्तमें बुलाकर कहा कि पुत्र यहांके राजा शूरसेनकी कन्याको राजाकी आज्ञासे किसीके देनेकेलिये उसे लेकर मैं अवन्तीदेश को जाऊंगा तो इसी बहाने से उस कन्याको मैं तुम्हें देदूंगा तब उस कन्याके साथ जो फ़ौजहोगी वह और मेरी सब फ़ौजको लेकर जो राज्यलक्ष्मीजी की कृपासे तुम्हैं मिलनेवाला है वह शीघ्रही तुम्हैं मिलजायगा १८५ यह निश्चय करके सेना और अपनी मृगांकवती आदि घरके लोगों के समेत वह दोनों चचा भतीजे उस कन्याको लेकर वहांको चले इसके उपरान्त जब विन्ध्याचल पर यह दोनों पहुँचे तब बहुतसी डाकुओंकी सेना वहां आई और इन्हैं रोककर बाणों से मारनेलगी तब श्रीदत्तकी सम्पूर्ण सेना के भाग जानेपर प्रहारसे मूर्च्छितहुये श्रीदत्तको बांधकर और उसका सम्पूर्णधन लेकर डाकू अपने गांवोंको चलेगये फिर सम्पूर्ण डाकू श्रीदत्तको बलिदान देनेके लिये भगवती के मन्दिरमें चलेगये और घंटा बजानेलगे फिर वहां अपने लड़केसमेत आईहुई सुन्दरीनाम भीलों के राजाकी कन्याने श्रीदत्तको देखा और सब डाकुओंको हटाकर श्रीदत्तको लेकर बड़े आनन्दपूर्वक देवी के मन्दिर में गई इसके उपरान्त भीलों का राजा जो मरतेसमय अपना सब राज्य अपनी कन्या को देगयाथा वह श्रीदत्त को मिला क्योंकि उसके कोई पुत्र न था और वह सम्पूर्ण डाकुओं का लियाहुआ धनभी चचा तथा मृगांकवती समेत श्रीदत्तको मिलगया फिर उस कन्या से मृगांककनाम अपने खड्गको पाकर और शूरसेन नाम राजाकी

कन्यासे विवाह करके श्रीदत्त वहांका बड़ाभारी राजाहोगया तब श्रीदत्तने अपने दोनों सुसर बिम्बक और शूरसेनके पास दूतभेजे तब वह दोनों यहसुनकर अपनी २ सेनालेकर अपनी२कन्याओं के स्नेह से वहां आये फिर बाहुशाली आदिक मित्र भी घावों के अच्छे होजानेपर श्रीदत्तके सब वृत्तान्तको सुनकर वहांआये इसके उपरान्त सुसरोंसमेत श्रीदत्तने पिताके मारनेवाले राजाविक्रमशक्तिको जाकर मारा और मृगांकवती समेत सम्पूर्ण पृथ्वीका राज्य पाकर विरहके उपरान्त श्रीदत्त अत्यन्त प्रसन्न हुआ इसप्रकार से राजा बड़ेवियोग और नाना आपत्तिरूपी समुद्रको पारहोकर धीर पुरुष आनन्द कोपाते हैं संगतककथक से इस कथा को सुनकर राजा सहस्रानीकने वह रात्रि मार्ग में व्यतीतकी फिर प्रातःकाल पहले तो मनोरथोंपर चढ़कर राजाका चित्तचला फिर पीछे राजा सहस्रानीक चला थोड़े दिनों में राजा महर्षि जमदग्निजी के आश्रममें पहुँचा वह ऐसा उत्तम आश्रमथा कि जिसमें पशु पक्षी भी अपनी चपलताको छोड़कर शान्तवृत्ती में रहते थे वहां अतिथियों के सम्पूर्ण सत्कार करनेवाले जमदग्निजी को देखकर राजाने प्रणामकिया तब अपने दर्शन से मनुष्योंको पवित्र करनेवाले तपके समूह महर्षि जमदग्नि जीने बहुत दिनसे छूटीहुई पुत्रसमेत रानी मृगावती राजाको देदी २०५ शापके अन्तमें परस्पर देखने से उन दोनों के जो आंसू आगये थे वह आंसू न थे मानो अमृतकी वृष्टि थी राजाने अपने उदयननाम पुत्रको प्रथमही देखकर आलिङ्गन करके बहुत देरमें छोड़ा इसके अनन्तर जमदग्निजी से पूँछकर उदयन समेत अपनी रानी मृगावतीको लेकर राजा आश्रमसे चला उससमय राजाके भेजनेको आंसू भरेहुये मृगभी तपोवनतक चले

आये २०८ रानी के विरहकी बातोंको सुनता हुआ और अपने विरहकी बातोंको कहताहुआ राजा सहस्रानीक अपनी कौशाम्बी नगरी में पहुँचा रानी और पुत्रसमेत राजाको आयाहुआ देखकर प्रजाके सम्पूर्ण लोग अत्यन्त प्रसन्नहुये राजाने अपने पुत्रके गुणोंको देखकर उसे युवराजपदवी देदी और अपने मन्त्रियों के पुत्र जिनका कि वसन्तक रुमणवान् और यौगन्धरायण नामथा उन तीनोंका उसको मन्त्री बनादिया उससमय पुष्पवृष्टि संयुक्त आकाश से बाणीहुई कि इन मन्त्रियों के साथ उदयन सम्पूर्ण पृथ्वी का राजाहोगा। इसके उपरान्त अपने पुत्रको राज्यका भार सौंपकर राजा मृगावती समेत संसारका सुख भोगनेलगा कुछ दिनके उपरान्त राजा कानकेपासके बालोंको श्वेत देखकर शान्त होगया और विषय भोगकरने की सब इच्छा जातीरही तब उदयन नाम अपने पुत्रको राज्यदेकर अपने मन्त्री और मृगावती समेत राजा सहस्रानीक तप करने के लिये हिमालयको चलागया २१७ ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभाग १५ प्रदीपः ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे षोड़श प्रदीपः ॥

विचार्याचरतिप्राज्ञ अविचार्य्ययथोदयन् ॥
वीणासक्तोयथाबद्धो नरहस्तिछलाद्द्रुतम् ॥

(अर्थ) बुद्धिमान् जन बिचार करके काम करें जैसे बिन बिचार कर करता (उदयन राजपुत्र) मनुष्य मय हस्ती के छलसे शीघ्र बांधागया—१६ ॥

इसके उपरान्त राजा उदयन वत्सदेशके राज्यको पाकर अच्छे प्रकारसे प्रजाओंका पालन करने लगा—फिर धीरे २ यौगन्धरायण

आदिक मन्त्रियों पर राज्य के भारको छोड़कर केवल सुख का भोग करने लगा—सदैव शिकार करता था और वासुकि की दी हुई वीणाको रात्रि दिन बजाया करता था वीणाके मधुर शब्दको सुनकर वशीभूत हुए मतवाले वनके हाथियोंको बँधवाकर लेआ-ताथा और मन्त्रियों के सन्मुख वेश्याओं के साथ मद्य पीताथा राजाको केवल यह चिन्ता लगी रहती थी कि मेरे कुल और स्व-रूपके अनुरूप स्त्री कहीं नहीं है एक वासवदत्ता नाम कन्या सु-नाई देती है सो वह कैसे मिलसक्ती है और उज्जयिनीमें उसकन्या का पिता राजा चण्डमहासेनभी यह विचार करताथा कि मेरीकन्या के अनुरूप पति संसार भरमें कोई नहीं है एक उदयन नाम है सो वह सदैवका हमारा शत्रुहै तो किसप्रकार से उदयन हमारे वशी-भूत होकर इस कन्याको ग्रहण करे एक उपायहै कि उदयन बनमें अकेला शिकारके शौक से सदैव हाथियों को पकड़ा करताहै वहीं से युक्ति पूर्वक उसको बँधवा मँगवाऊं और उससे अपनी कन्याको गान सिखवाऊं तब वह आप आपही मेरी कन्याको देखकर मो-हित होगा इसप्रकार से बशीभूत होकर मेरा दामाद होजायगा इस के सिवाय उसके वश करनेका कोई दूसरा उपाय नहीं है १२ यह शोचकर राजा भगवती के मन्दिरको गया और भगवतीकी पूजा तथा स्तुतिकरके अपनी कन्याके लिये वही राजा उदयन वरमांगा तब उस मन्दिर से यह आवाज़ आई कि राजा तुम्हारा यह मनोरथ थोड़ेही दिनों में पूरा होजायगा यह सुनकर प्रसन्न हुआ राजा बुद्धि-दत्तनाम अपने मन्त्री से भी यही विचार करने लगा कि उदयन बड़ा मानी निर्लेश तथा महाबलवान् है और उस के मन्त्री आदि सेवकभी उससे बड़ा अनुराग करते हैं इससे यद्यपि उसके

साथ कोई उपाय नहीं चलसक्ता है परन्तु पहिले साम करना चाहिये यह सलाह करके राजाने एक दूत से कहा कि तुम वत्सदेश के राजासे जाकर यह कहो कि हमारी कन्या तुमसे गान विद्या सीखना चाहती है जो तुम्हें हम लोगोंपर स्नेह होय तो उसे यहां आनकर सिखाओ राजाके यह वचन सुनकर वहांसे चला हुआ दूत कौशाम्बी में आया और सम्पूर्ण अपने राजाका सँदेशा उदयन राजासे कह सुनाया दूत से यह अनुचित वचन सुनकर उदयन एकान्त में अपने मन्त्री यौगन्धरायणसे बोला कि उस राजा ने अभिमान पूर्वक हमारे पास यह क्या सँदेशा भेजाहै और इस से उसका क्या अभिप्रायहै २१ उदयनके यह वचन सुनकर अपने स्वामी के हितका चाहनेवाला महामन्त्री यौगन्धरायण बोला कि हे महाराज ! संसार में लताके समान जो आपके शौककी शोहरत फैलरही है उसीका यह बुरा फलहै वह तुम्हें शौकीन समझ कर कन्याके लोभसे बुलाकर पकड़ना चाहताहै इसलिये तुम शौकों को छोड़दो क्योंकि गड्ढे में पड़ेहुए वनके हाथियों के समान शौकों में डूबेहुए राजाओं को शत्रुलोग पकड़ लेतेहैं मन्त्री के यह वचन सुनकर उदयनने राजा चण्डमहासेन के पास अपने दूतके द्वारा यह सँदेश भेजाहै कि जो तुम्हारी कन्या हमसे गान विद्या सीखना चाहतीहै तो उसे यहांही भेजदो इसके उपरान्त उदयनने अपने मन्त्रियोंसे यह कहा कि अब हम जाकर राजा चण्डमहासेन को यहां बांधलाते हैं यह सुनकर महामन्त्री यौगन्धरायण बोला कि यह नहीं किया जासक्ता और योग्यभी नहीं है क्योंकि उस राजाका बड़ा प्रभावहै तुमको भी उससे मेल करना चाहिये सुनो मैं वहांका सब हाल तुम से कहता हूं २० अपने बड़े २ श्वेत प्र-

कानोंसे मानों स्वर्गको भी हँसतीहुई उज्जयिनी नाम नगरी है जिसमें श्रीशिवजी कैलास के निवासको छोड़कर महाकाल के स्वरूपको धारण करके निवास करते हैं उस नगरी में महेन्द्रवर्म्मा नाम बड़ा श्रेष्ठ राजाहुआ था उसके जयसेन नाम पुत्रहुआ और उसके बड़ा बलवान् महासेननाम राजा हुआ उस राजा ने अपने राज्य करते २ एक समय यह शोचा कि मेरे पास न मेरे लायक कोई खड्गहै और न कोई मेरे योग्य कुलीन स्त्रीहै यह शोचकर राजा भगवती चण्डिकाजी के मन्दिरमें गया और निराहार होकर बहुत दिन भगवती का भजन करता रहा और पीछे से अपने मांस को काट काट कर हवन करनेलगा तब प्रसन्न होकर साक्षात् भगवती ने उससे कहा कि हे पुत्र! तेरे ऊपर मैं प्रसन्नहूं तू इस मेरे खड्गकोले इसके प्रभावसे कोई शत्रु तुझको जीत न सकेगा और अंगारकासुर की अत्यन्त सुन्दर अंगारवती नाम कन्या तुझे शीघ्र ही मिलेगी तूने यह बड़ा प्रचण्ड अर्थात् घोर कर्म्म कियाहै इससे तेरा नाम चण्डमहासेन होगा ४० यह कहकर और खड्ग देकर भगवती अन्तर्द्धान होगई तब वह राजा अत्यन्त प्रसन्न होगया जैसे इन्द्रके पास वज्र और ऐरावत हाथी है उसीप्रकार उस राजाके पास भगवतीका दियाहुआ खड्ग और नड़ागिरिनाम हाथी है इन दोनों के प्रभाव से सुख पूर्व्वक राज्य करताहुआ वह राजा किसी समय शिकार खेलने को बनमें गया वहां जाकर दिनके प्रभावसे इकट्ठेहुए अन्धकारके समान श्यामरंगवाला एक बड़ाभारी सूअर दिखाईपड़ा तब राजाने उसके बहुतसे बाणमारे तिसपर भी उसकी देह में कोई घाव नहीं हुआ और राजाके रथ में टक्कर मारकर वह अपने भिटे में चलागया तब राजा भी रथको छोड़कर धनुषबाण

लेकर उसके पीछेही उस भिटेमेंघुसा वहुत दूर जाकर वहां एक वड़ा उत्तम पुर दिखाई पड़ा राजा वहां जाकर आश्चर्य्यकरके किसी बावड़ी के किनारेपर बैठगया—वहां राजाने सैकड़ों स्त्रियों सेघिरीहुई और धीरोंके भी धीर के छुटानेवाली एक कन्यादेखी ४८ यह कन्या भी राजाको वड़े प्रेम पूर्व्वक देखकर धीरे से वोली कि हे सुन्दर!तुम कौनहो और किसलिये यहां आयेहो तब राजाने अपना सम्पूर्ण हाल कहदिया यह सुनकर वह कन्या अधीर होकर रोनेलगी तव राजाने उससे पूँछा कि तुम कौनहो और किसलिये रोतीहो यह सुनकर उसने कामके वशीभूत होकरकहा कि यह जो सूअर तुमने देखाथा वह अंगारक नाम दैत्यहै और मैं उसकी अंगारवती नाम कन्याहूं मेरे पिताका शरीर वज्रकाहै राजाओंके घरसे सौराजकन्या लाकर उसने मेरी दासी बनाईं शापके दोपसे राक्षस होनेवाले मेरे पिताने तृपा और परिश्रम से व्याकुल होकर तुम्हैं पाकर भी छोड़ दियाहै इससमय वह शूकरके रूपको त्यागकर सोरहाहै जव सोकर उठेगा तो अवश्य तुम्हें मारेगा इसीसे तुमको देख २ कर मेरे वार२ आंसूआरहे हैं ५७ अंगारवती के यह वचन सुनकर राजा बोला कि जो हमारे ऊपर तुम्हारा स्नेहहै तो तुम यह हमारा कहनाकरो कि जब तुम्हारा पिता सोकर उठे तब तुम उसके आगे रोनेलगना तब वह जरूर तुमसे दुःखका कारण पूँछेगा उससमय तुम उससे कहना कि अगर तुमको कोई मारडाले तौ मेरी कौन गतिहोगी यही मुझे दुःखहै ऐसा करने से हमारा और तुम्हारा दोनों का कल्याणहोगा राजाके इनवचनोंको मानकर और राजाको छिपाकर अंगारवती जहां उसका पिता सोताथा वहां चलीगई जब वहदैत्य उठा तव वह रोनेलगी उसे रोते देखकर उसने पूँछा कि हे कन्या! तू

क्यों रोरही है उसनेकहा कि अगर तुमको कोई मारडाले तो मेरी क्या गतिहोगी इसी दुःखसे मै रोरहीहूं तब वह हँसकर बोला कि मुझे कौन मारसक्ताहै मेरा शरीर वज्रकाहै मे रे बायेंहाथमें एक छिद्र है उसे मैं धनुष से छिपाये रहता हूं इसप्रकार उस दैत्यने अपनी कन्याको समझाया और यह सब बातें इस छिपेहुए राजाने सब सुन लीं इसके उपरान्त वह दैत्य स्नानकरके मौनहोकर श्रीमहादेवजी का पूजन करनेलगा उससमय प्रगट होकर धनुष चढ़ायेहुए राजा ने उसे युद्ध करनेके लिये बुलाया तब उस दैत्यने बायें हाथको हटाकर यह इशाराकिया कि क्षणभर ठहरजाओ राजाने उसीसमय उस दैत्यके उसी छिद्रमे बाणमारा तब मर्म्मस्थान में चोटलगने से बड़ा घोर शब्दकरके वह दैत्य पृथ्वी में गिरपड़ा और यह कहकर मरगया कि जिसने मुझ प्यासेको मारहै वह जो हरसाल मुझको जलसे तृप्त न करेगा तो उसके पांच मंत्री मरजायँगे तब राजा उस कन्याको लेकर उज्जयिनी अपनी नगरीको चलाआया और वहां आकर उसके साथ विवाहकिया तब उसके दो पुत्र उत्पन्नहुए एक गोपालक और दूसरा पालक उनके उत्पन्न होने में राजाने बड़ा इन्द्रोत्सव किया यह स्वप्न में राजासे इन्द्रने कहा कि हमारी कृपासे तुम्हारे एक बड़ी अपूर्व कन्या उत्पन्नहुई और उससमय यह आकाशवाणी हुई कि कामदेवका अवतार इस कन्याका पुत्र होगा और वह सम्पूर्ण विद्याधरोंका राजा होगा फिर राजाने यह कन्या इन्द्रकी दीहुई इसकारण उसका नाम वासवदत्ता रक्खा अब समुद्र में लक्ष्मी के समान उस राजाके यहां वह कन्या उसीके देनेही के लिये है हे राजा! इसप्रकार के प्रभाववाला वह चण्डमहासेन राजा जीतने के योग्य नहीं है परन्तु वह राजा अपनी कन्या तुम्हीं को

देना चाहता है और वह अभिमानी है इसलिये अपने पक्षकी श्रेष्ठता भी चाहता है मुझे मालूम होता है कि वासवदत्ता का विवाह अवश्य तुम्हारेही साथ होगा मन्त्री के यह बचन सुनकर राजा उदयन का चित्त वासवदत्ता में लगगया—

इस बीचमें उदयन के दूत ने चण्डमहासेन से सम्पूर्ण वृत्तान्त जाकरकहा यह सुनकर इसनेसोचा कि उदयनतो यहां आतानहीं है और कन्या वहां भेजनी नहीं है तो युक्तिसे उसे बँधवाकर यहां लाना चाहिये ऐसा विचारकर और मन्त्रियोंसे सलाहकरके अपने हाथी के समान एक बड़ा भारी यन्त्र का हाथी बनवाया और उस हाथी के भीतर बहुतसे वीर पुरुष बैठालकर वह हाथी वि-न्ध्याचल के बन में रखवादिया फिर उस हाथीको हाथी पकड़ने के बड़े शौक़ीन राजा उदयन के गोयन्दे लोगोंने देखा और राजा से आकर कहा कि हे राजा बिन्ध्याचल के वनमें एकहाथी हम लोगों ने ऐसादेखा है कि जैसा इस संसार भरमें और कहीं नहीं है वह इतना बड़ा है और ऐसा मालूम होता है कि मानो चलने वाला दूसरा विन्ध्याचलही है उन गोयन्दों के ऐसे बचन सुनकर राजाने प्रसन्नहोकर तुम्हें एकलाख अशर्फी दीं फिर राजा यह शोचनेलगा कि अगर नड़ागिरिके समान हाथी मुझे मिलजा-यगा तो राजा चण्डमहासेन मेरे वशहोजायगा और वासवदत्ता को अपने आप मुझे देदेगा ऐसा विचार करते २ वह रात्रि व्यतीत होगई प्रातःकाल मंत्रियोंके वचनोंको न मानकर हाथी के लोभसे राजा गोयन्दों को साथ लेकर बिन्ध्याचल के बनको चला और ज्योतिषियों ने प्रस्थान की लग्नका फल यह कहा था कि बन्धन होगा और कन्या मिलेगी इसका भी राजा ने कुछ विचार न

किया विन्ध्याचल के वनमें पहुंचकर हाथी के भागजाने के डरसे राजाने अपनी सेना दूर पर छोड़दी और गोयन्दों को साथ ले वीणा लिये राजा विन्ध्याचल के वन में घुसा वहां विन्ध्याचल के दक्षिण की ओर गोयन्दोंके द्वारा दिखायेहुए उस नक़ली हाथी को राजाने सच्चे हाथी के समान देखा अकेला राजा वीणा को बजाकर मधुर २ शब्द गाताहुआ और उसके पकड़ने का उपाय शोचता हुआ उसके पासतक चलागया गाने के ध्यान से और सन्ध्या के अन्धकार से राजाने उस नक़ली हाथीको नहीं पहचाना वह हाथी भी मानों गीत के रस से अपने कानों को उठाताहुआ राजाके पास आन २ कर बिचकताहुआ बहुत दूरतक राजाको लेगया इसके उपरान्त उस हाथी में से एकाएकी बहुत से हथियारबन्द पुरुषों ने राजा को घेरलिया उनको देखकर राजा क्रोध से चक्कूनिकालकर जैसे कि अपने आगेवालोंसे लड़नेलगा वैसेही पीछेसे और लोगों ने आकर उसे पकड़लिया फिर इशारेसे आयेहुए अन्य लोगों के साथ उदयन को पकड़कर चण्डमहासेन के पास लेगये राजा चण्डमहासेन बड़े आदर पूर्व्वक पुरके बाहर आकर उदयन को अपने साथ उज्जयिनी पुरीमें लेगया फिर अपमान से कलंकित नवीन चन्द्रमा के समान उदयन को पुरवासियों ने भी बड़े आनन्द से देखा उसके गुणसे प्रसन्नहुए पुरवासियों ने उसके मारेजाने के सन्देह से सबने मिलकर यह कहा कि जो यह माराजायगा तो हम सब भी अपना प्राण देदेंगे तब राजा चण्डमहासेन ने उनको यह कहकर समझाया कि हम इन्हें मारैंगे नहीं किन्तु इनसे सन्धिकरैंगे इसके उपरान्त राजाचण्डमहासेन ने गान्धर्व विद्या सीखने के लिये वासवदत्ता नाम कन्या उस

वत्सराज राजा उदयनको सुपुर्द करदी और यहबातभी कहदी किहे उदयन ! तुम इसको गान्धर्व विद्या सिखलाओ तो तुम्हारा कल्याण होगा और खेद मतकरो वासवदत्ताको देखकर उदयन के चित्तमें ऐसा स्नेह उत्पन्न हुआ कि उसका सम्पूर्ण क्रोध जातारहा उदयन को देखकर वासवदत्ता के नेत्र और मन दोनों उदयनमें लगगये नेत्र तो लज्जा से हटगये परन्तु मन न हटसकी इसके उपरान्त वासवदत्ता को गान सिखाता हुआ वह वत्सराज गान्धर्वशाला में रहनेलगा उस चित्तकी प्रसन्न करनेवाली वासवदत्ता के सन्मुख वीणा बजा २ कर वत्सराज गाया करताथा और वासवदत्ता भी वन्धन में पड़ेहुए वत्सराज की वड़ी सेवा किया करती थी इसबीच में जो उदयनके साथी लोग लौटकर कौशाम्बी पुरी में आये तो वहां की प्रजा उदयन के प्रेमसे क्रोधितहोगई और उज्जयिनी पर चढ़ाई करने की इच्छा करनेलगी यह देखकर रूमरावान् मंत्री ने सबको समझाया कि चण्डमहासेन बलसे जीतने के लायक़ नहीं है और वहां पर चढ़ाई करने से उदयन के भी शरीर की कुशल नहीं इसलिये वहां चढ़ाई न करनी चाहिये इस काम को बुद्धिसे ही करना चाहिये तब सम्पूर्ण प्रजाका राजा पर ऐसा अनुराग देखकर यौगन्धरायण ने रूमरावान् आदिक मंत्रियों से कहा कि तुम लोग यहांही रहो और इस राज्यकी रक्षाकरो समय पाकर अपना पराक्रम करना मैं बसन्तक को साथ में लेकर यहांसे जाकर अपनी बुद्धिसे उदयनको छुड़ालाऊंगा जैसे जलके लगनेसे बिजली की आग ज्यादह चमकती है उसीप्रकार आपत्ति में जिसकी बुद्धि अधिक तेजी दिखाती है वही धीर पुरुष है और परकोटे का तोड़ना बेड़ियों का खोलना और अदृष्टि होजाना इन

सब बातों की सब रीति मुझे मालूम है यह कहकर और सम्पूर्ण राज्य का कार्य्य रुमण्वान् को सौंपकर यौगन्धरायण दूसरे बसन्तकनाम मंत्री को साथ लेकर कौशाम्बी से चला और बड़े भयंकर प्राणियों से युक्त अत्यन्त दुर्गम विन्ध्याचलके बनमें घुसा वहां विन्ध्याचल के पूर्व्वदिशामें रहनेवालेउदयन के मित्र पुलिन्दकनाम किसी म्लेच्छों के राजा के यहां गया और उससे कहा कि तुम बहुतसी सेनाको अपने यहां तैयार रक्खो क्योंकि हम इसी मार्ग होकर उदयन को लेकर आवैंगे फिर वहां से चलकर बसन्तक समेत यौगन्धरायण उज्जयिनी में पहुंचा और वहां जाकर मुर्दोंकी गन्धिसे युक्त बेताल भूतादिकों से व्यास महाकालके श्मशान में गया वहां के बेतालादिभूत ऐसे काले थे कि दूरसे देखने में चिता के धुएं के ढेरसे मालूम होते थे उस श्मशान में यौगन्धरायण को देखकर प्रसन्न हुए योगेश्वरनाम ब्रह्मराक्षस ने आकर यौगन्धरायणसे मित्रताकरली उस ब्रह्मराक्षस की बताईहुई युक्तिसे यौगन्धरायण ने अपना स्वरूप बदलकर कुबड़ा बुड्ढा मतवाला तथा गंजा धारण करलिया जिससे कि सबलोग उसे देखकर हँसनेलगे और उसी युक्तिसे बसन्तक का भी रूप बदल दिया और उसका पेट ऐसा फूलाहुआ बनाया कि उसके पेटकी सब नसें दिखाईदेने लगीं और उसका मुख बिगाड़कर बड़े२दांत बनादिये इसके उपरान्त खाली बसन्तकको राजाका महलके पास भेजकर नाचता गाताहुआ और लड़कों से घिराहुआ यौगन्धरायण उज्जयिनी में घूमता २ राजा के महल के पास पहुँचा वहां उसने अपने खेल तमाशे से रानियों को बहुत खुश किया यह बात वासवदत्ताने भी सुनी और दासी भेजकर उसे अपने पास बुलवाया क्योंकि लड़-

कपन में खेल बहुत अच्छा मालूम होताहै वहां जाकर बँधेहुये उदयन को देखकर यौगन्धरायणके आंसू निकल आये और उसने राजा से कुछ इशारा किया और राजाभी उसे छिपेहुए वेषमें पहचान गया इसके उपरान्त यौगन्धरायणने एक ऐसी युक्ति की कि वासवदत्ता और वासवदत्ताकी सब सखियां उसे न देखनेलगीं केवल राजाही उसको देखताथा तब वह सम्पूर्ण बोलीं कि वह मतवाला एकाएकी कहीं चलागया उनके यह वचन सुनकर और उसे आगे देखकर राजाने जाना कि इसने यह बात योगबलसे की है यह जानकर उसने वासवदत्तासे कहा कि जायके सरस्वती के पूजन की सामग्री ले आओ यह सुनकर वह अपनी सखियोंसमेत वहांसे चलीगई तब राजाको अकेला पाकर यौगन्धरायणने बेड़ी काटने की युक्ति और बीणा के द्वारा वासवदत्ता के वशीकरणकी युक्ति राजाको बताई और कहा कि हे राजा ! द्वारेपर बसन्तक वेष बदले हुए खड़ाहै उसे भी आप भीतर बुलवालीजिये जब वासवदत्ता आप पर विश्वास करनेलगेगी तब मैं जैसा कहूंगा वैसाकरना कुछ दिन ठहरजाओ यह कहकर यौगन्धरायण तो चलागया और वासवदत्ता सरस्वती के पूजन की सब सामग्री लाई तब राजा उदयनने उससे कहा कि दरवाजे पर कोई ब्राह्मण खड़ाहै उसे सरस्वती के पूजन की दक्षिणा के लिये बुलवाओ उसके कहने से वासवदत्ता ने उसे द्वारपालसे बुलवाया तब बसन्तक वहां आकर राजाको देखकर शोक से रोनेलगा तब राजाने भेदको छुपाने के लिये उससे कहा कि हे ब्राह्मण! मैं तुम्हारे रोग से बिगड़ेहुए सब शरीर को अच्छा करदूंगा मतरोओ तुम हमारेपास यहांही रहाकरो यह सुनकर बसन्तकने कहा कि यह आपकी बड़ी कृपाहै उसके वि-

गड़ेहुए स्वरूपको देखकर राजाको हँसीआगई तब राजाको हँसता हुआ देखकर और उसके मतलबको समझकर वसन्तक भी अपने स्वरूपको बहुत बिगाड़कर हँसनेलगा उसे हँसते देखकर और अपने एक खिलौने के समान समझकर वासवदत्ता भी हँसी और बहुत खुशहुई वासवदत्ताने खेलही में उस वसन्तकसे पूँछा कि तू क्या काम जानताहै उसनेकहा कि मैं कथा कहना जानताहूं तब वासवदत्ता बोली कि अच्छा कोई कथा कहो तब वासवदत्ता को प्रसन्न करने के लिये हँसी और आश्चर्य्य से युक्त एक रसीली कथा वसन्तक कहनेलगा॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेषोडशःप्रदीपः १६॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्तदशःप्रदीपः॥ १७॥

शठंप्रतिचरेत्शाठ्यंयथामकरदंष्ट्रया॥
विष्ठाकूपेपातितोसौलोहजंघस्तथाकरोत् १७॥

(अर्थ) शठ के साथ शठताही करनी जैसे मकरदंष्ट्रा—रूपणिका नाम वेश्याकी माताने (लोहजंघ) नामी किसी निर्धन को विष्ठाके कूप में गिराया तो तिसने भी फिर तैसाही किया अर्थात् उसका मूंड़ मुड़ाया कालाकरवाय उसे डाकिनी बनाय ऊँचे चक्रपर चढ़ाय गिराय करके मरवाई १७॥ जैसे—

मथुरामें रूपणिका नाम एक बड़ी सुन्दर वेश्या रहतीथी और यमदंष्ट्रा नाम एक बुढ़िया उसकी माताथी जो तरुण लोग उस वेश्याके पास आते थे उनको उसकी मातासे बड़ी तकलीफ़ मिलती थी एक समय रूपणिका पूजन करनेके लिये किसी मन्दिर को जारही थी वहां उसने दूरसे एक पुरुष देखा उसे देखकर उस का चित्त उसपर चलायमान होगया और अपने माताके सम्पूर्ण

उपदेश भूलगई तब उसने अपनी दासी से कहा कि इस पुरुष से जाकर कहदो कि तुम हमारे मकान पर आना दासी ने उससे उसीप्रकार से कहा तब वह पुरुष थोड़ा शोचकर बोला कि मैं लोह-जंघ नाम निर्धन ब्राह्मणहूं रूपणिकाके यहां तो धनवानों को आना चाहिये मैं आकर क्या करूंगा यह सुनकर दासीने कहा कि वह तुमसे धन नहीं लेना चाहती है तब उसने कहा किबहुतअच्छा मैं आऊंगा दासी के मुखसे इस बातको सुनकर रूपणिका अपने घरमें जाकर उसका इन्तिज़ार करने लगी क्षणभर में लोहजंघ भी वहां आ पहुँचा तब उसकी माताने देखा कि यह आज निर्धन पुरुष कहां से आयाहै उसे आया देखकर रूपणिकाने बड़ी प्रसन्न-तासे उसे अपने गले में लगा लिया और बड़े आदरसे उसे भीतर लेगई लोहजंघके पुरुषार्थसे वशीभूत हुई रूपणिका ने अपने जन्मको धन्य जाना इसके उपरान्त रूपणिका ने और २ लोगों का संग छोड़दिया और सुखपूर्वक उसी तरुण पुरुष के साथ संभोग करने लगी यह देखकर सब वेश्याओं की शिक्षा देनेवाली मकरदंष्ट्रा नाम उसकी माताने उससे एकान्त में कहा कि हे पुत्री ! तुम इस निर्धन पुरुष की सेवा क्यों करतीहो सज्जन लोग चाहैं मुर्दे को तो छूभी लेते हैं परन्तु वेश्या निर्धन को कभी नहीं छूतीं क्या तुम इस बातको भूलगई हो कि कहां तो प्रेम और कहां वेश्या-पन प्रेमयुक्त वेश्याका बहुतकाल तक उरूज नहीं रहता वेश्याको चाहिये कि नटनी के समान ऊपरी प्रेम दिखावे इससे तुम इस कङ्गाल को छोड़दो और अपने को खराब मतकरो माता के यह वचन सुनकर रूपणिका बड़े क्रोधसे बोली कि खबर्दार ऐसा कभी मत कहो यह मुझे प्राणों से भी अधिक प्यारा है मेरे पास बहुतसा

धनहै में और धन लेकर क्याकरूंगी इससे हे माता! अब ऐसे वचन कभी मुझसे मत कहना यह सुनकर वह मकरदंष्ट्रा उस लोहजंघ के निकालने की तदबीर शोचनेलगी एकसमय मकरदंष्ट्राने किसी ऐसे राजपुत्र को देखा जिसका कि खज़ाना खाली होगया है और शस्त्रधारीपुरुष उसके साथमेंहैं उसको एकान्तमें लेजाकर मकरदंष्ट्रा ने कहा कि कोई निर्धन कामी पुरुष मेरे घरमें रहता है आज तुम आकर उसे निकालदो और मेरी लड़की को लो यह सुनकर वह राजपुत्र उसके यहां गया उस समय रूपणिका किसी देवमंदिर में गई थी और लोहजंघ बाहर कहीं बैठाथा क्षणभर में बेखटके लोहजंघ वहां आया तब राजा के नौकरों ने उसे पकड़कर खूब लातों से पीटकर किसी विष्ठाके गढ़े में ढकेलदिया तब लोहजंघ किसी रीति से उसमें से निकलकर भागा इसके उपरान्त वहां आई हुई रूपणिका यह दशा देखकर बहुत व्याकुल होगई और राजपुत्र भी वहांसे चलागया लोहजंघ भी उस कुट्टनीसे ऐसा दुःखीहोकर किसी तीर्थपर प्राण देनेको चला चलते २ किसी वनमें धूप से बहुत व्याकुल होकर कहीं छाया ढूंढ़ने लगा वहाँ उसको कोई वृक्षतो नहीं मिला परंतु किसी हाथीका मृतक शरीर पड़ाथा जिसको कि स्यारोंने नोच २ मांसखाकर भीतरसे खाली करदियाथा उसमें वह घुसकर बहुत थकाहुआ लोहजंघ सो गया क्योंकि उसमें बड़ी शीतल वायु आरहीथी इसके उपरान्त क्षणभरमें वहां बड़ा जल बरसनेलगा उससे उस चमड़ेका मुख सुकड़कर बंदहोगया और क्षणभरहीं में वहां इतना पानी बढ़ा कि वह सब चमड़ा बहकर गंगाजी में चलागया और गंगा में बहताहुआ समुद्र में पहुंचगया वहां उस चमड़े को मांस समझकर गरुड़के वंशका

कोई पक्षी उसे उठाकर समुद्रके पारलेगया वहां जाकर उस पक्षीने उसे अपनी चोंचों से फाड़ा और उसके भीतर मनुष्य बैठाहुआ देखकर वहांसे उड़ गया तब लोहजंघने अपने को समुद्रके पार देखकर वह सब दशा उसने जागते हुए स्वप्नकी समान जानी इसके उपरान्त वहां दो बड़े भयंकर राक्षसों को देखकर लोहजंघ बहुत डरा और उसे देखकर वह राक्षसभी बहुत चकितहुए फिर रामचन्द्रजी की कथाका स्मरणकरके और समुद्र के पार आया हुआ मनुष्य देखकर उन दोनों राक्षसों के हृदयमें बड़ा डर उत्पन्न हुआ उन दोनों में से सलाहकरके एकने जाकर विभीषणसे यह हाल कहा विभीषणने भी भयखाकर उस राक्षससे कहा कि जाकर उस मनुष्य से कहो कि कृपाकरके हमारे पासआवे तब उस राक्षसने अपने स्वामीकी प्रार्थना लोहजंघ को सुनाई उसकी बात को मानकर लोहजंघ उसके साथ लंका को चला वहां अनेक २ प्रकार के सुवर्ण के स्थानों को देखता हुआ विभीषण के समीप पहुँचा और विभीषण को देखा विभीषण ने उसका अच्छेप्रकारसे अतिथिसत्कार करके पूछा कि हे ब्राह्मण ! तुम यहां किसरीति से आगये हो तब उस छली ने कहा कि मैं लोहजंघ नाम ब्राह्मण मथुरा में रहता हूं एक समय दरिद्र से व्याकुल होकर मैंने किसी मंदिरमें जाकर नारायण के सम्मुख निराहार होकर तप किया तब स्वप्न में मुझसे भगवान् ने कहा कि तुम विभीषणके पास जाओ वह मेरा बड़ा भक्तहै वह तुम्हें बहुत सा धन देगा तब मैंने कहा कि कहांतो विभीषण और कहां मैं वहां कैसे जाऊं यह सुनकर भगवान्ने कहा कि जाओ तुम आजही विभीषणको देखोगे भगवान् के यह कहनेपर शीघ्र मेरी नींद खुलगई और मैंने समुद्रपार अपने

को देखा उसके यह वचन सुनकर लंका में आना कठिन समझ कर विभीषण ने जाना कि यह बड़ा सिद्धहै और उससे कहा कि ठहरो हम तुमको धन देंगे तब विभीषणने यह शोचा कि मनुष्यों के मारनेवाले राक्षसों के साथ इसको नहीं भेजना चाहिये ऐसा विचारकर राक्षसों को भेजकर गरुड़ के वंश में उत्पन्नहुए किसी पक्षी के बच्चे को मँगवाया और वह पक्षी लोहजंघ को बुलाकर इसलिये दिया कि वह अपने मथुरा जाने के लिये अपने वश में करके उसे वाहन बनाके साथले तब लोहजंघ भी उसपर चढ़ता हुआ कुछ काल तक लंकामें रहा एक दिन लोहजंघने विभीषण से पूछा कि मथुराकी सम्पूर्ण पृथ्वी काष्ठमय क्यों है यह सुनकर विभीषण ने कहा कि सुनो पहले एकसमय कश्यप के पुत्र गरुड़ जी प्रतिज्ञा से नागोंकी सेवा करती हुई अपनी माताको सेवकाई से छुड़ाने के लिये सेवकाई के मूलरूप अमृत को देवताओं से लाने को तैयार हुए और इसीलिये अपने पिता के समीप कुछ बलकारी भोजन मांगने को गये तब कश्यपजीने गरुड़के वचन सुनकर कहा कि समुद्र में एक बहुत बड़ा हाथी और कछुआ है वह दोनों अपने शाप से छूटचुके हैं उनको तुम लाकर खाजाओ पिता के यह वचन सुनकर गरुड़ जी उन दोनों जीवों को लेकर कल्पवृक्ष की शाखा पर बैठे तब गरुड़जी के भार से वह शाखा टूटगई तब नीचे बैठेहुए तपस्वी बालखिल्यों के बचाने के लिये गरुड़ जीने वह शाखाभी अपनी चोंच में दबाली और पिता की आज्ञा से जिससे कि लोग न मरने पावैं इसलिये वह शाखा यहां निर्जनस्थान में डाली इसीकारण से मथुरा की सम्पूर्ण पृथ्वी काष्ठ-मयहै विभीषणसे इस कथाको सुनकर लोहजंघ बहुत खुशहुआ

इसके उपरान्त जब लोहजंघ मथुरा को जानेलगा तब विभीषणने उसे बहुत से बहुमूल्य रत्न दिये और भक्ति से मथुरा में विष्णु भगवान् के आयुध बनाने के निमित्त सुवर्ण के शंख-चक्र-गदा-और पद्म दिये तब वह इन सब पदार्थों को लेकर और लाख योजन चलनेवाले उस पक्षीपर चढ़कर लोहजंघ लंकासे उड़ा और समुद्र के पार आकर विना परिश्रम मथुरा में आगया फिर मथुरा के बाहर किसी शून्य स्थानमें उतरकर उसने सम्पूर्ण रत्न रखदिये और वह पक्षी बांधदिया फिर उसने एक रत्न लेजाकर बाज़ार में बेचा और उसी धनसे वस्त्र अलंकार और भोजनकी सब सामग्री खरीदी फिर उन पदार्थों को लेकर जहां टिकाथा वहां आया और उस पक्षी को भोजन खिलाकर आप भी भोजन किया सायंकाल के समय लोहजंघ वस्त्र आभूषणादिको धारणकरके और शंख-चक्र गदा और पद्मको लेकरके उसी पक्षीपर चढ़कर रूपणिका के घर गया वहां जाकर आकाश में ही उसके घरके ऊपर खड़ाहोकर गंभीर वचनसे रूपणिकाको बुलाताभया उसके वचन सुनकर बाहर आईहुई रूपणिकाने आकाश में खड़ेहुए लोहजंघको नारायणके समान देखा तब लोहजंघने कहा कि मैं विष्णुहूं तेरे लिये आयाहूं यह सुनकर उसने कहा कि आइये कृपाकीजिये तब लोहजंघ उस पक्षीको बांधकर उसके घर में आया और भोग करने के उपरान्त उसी पक्षीपर चढ़कर चलागया प्रातःकाल रूपणिका यह विचारकर मौन होकर बैठी कि मैं विष्णुकी स्त्री देवता होगई हूं अब किसी मनुष्यसे नहीं बोलूंगी तब मकरदंष्ट्राने उससे पूछा कि हे पुत्री ! आज तू मौन क्यों है इसप्रकार माताके बहुत हठ करनेपर उसने बीचमें पर्दा डलवाकर रात्रिका सब वृ-

त्तान्त कहा यह सुनकर उसे बड़ा सन्देह हुआ और रात्रिको उस ने अपने आपही पक्षीपर चढ़कर आयेहुये विष्णुरूपी लोहजंघको देखा प्रातःकाल परदेमें बैठीहुई रूपणिकासे कुट्टनी मकरदंष्ट्राने प्रणाम करके कहा कि विष्णुभगवान् की कृपा से तुम देवी हो-गईहो मैं तुम्हारी माता हूं इसलिये मुझे कन्या होनेका कुछ फल देदे तुम विष्णुभगवान् की कृपा से दयाकरके यह कहो कि मेरी बुड्ढी माता इसी देह से स्वर्ग को चली जाय रूपणिका ने उसका कहना मानकर रात्रिको जब लोहजंघ आया उससे सब बातें कहीं तब उसने कहा कि तेरी माता बड़ीपापिनीहै वह प्रकट होकर स्वर्ग में नहीं जासक्ती परन्तु एकादशी के दिन प्रातःकाल स्वर्ग का द्वार खुलता है वहां पहले महादेव जी के गण घुसकर भीतर जाते हैं उनके बीच में तुम्हारी माता का भी उन्हीं का सा वेष करके उसको भी मैं स्वर्ग के भीतर भेजदूंगा इसलिये तुम इस का सब शिर मुँड़वाकर पांच चोटी रखवादो इसके गले में मुण्डों की माला पहरादो एक तरफ़ इसका मुख काजल से रँगदो और एकतरफ़ सिन्दूर से रँगदो और इसके सब कपड़े उतारकर इसे नंगी करदो तब मैं इसको सुखसे स्वर्गको लेजाऊंगा यह कहकर लोह-जंघ तो चलागया और प्रातःकालही रूपणिकाने अपनी माताका वैसाही स्वरूप बनादिया जैसा कि लोहजंघ कहगया था तब वहभी स्वर्गजाने की तैयारीकरके बैठी रात्रिके समय फिर लोहजंघ वहां आया और रूपणिकाने अपनी माता उसे सौंप दीनी तब उस नङ्गी कुटॅनी को लेकर लोहजंघ उस पक्षीपर सवार होकर बहुत ज़ोर से उड़ा आकाशमें जाकर लोहजंघने किसी देवमन्दिरके आगे एक बहुत ऊंचा पत्थरका खम्भा देखा उस खम्भे में एक चक्र लगाथा

उसी खम्भे पर उस लोहजंघने उस कुटनीको वह चक्र पकड़ाकर बैठाल दिया और कहा कि तुम थोड़ी देर यहां ठहरो जबतक मैं पृथ्वीपर होआऊं यहकहकर लोहजंघ वहांसे चलाआया उससमय वह कुटनी ऐसी शोभित होती थी कि मानो लोहजंघको क्लेश देनेका वदला लेनेकी पताका है इसके उपरान्त रात्रि के समय उसी देवमन्दिर में जागरण करने को आयेहुये लोगों को देख कर लोहजंघ आकाशसे बोला कि हे लोगो! आज तुम्हारे ऊपर सबका संहार करनेवाली महामारी गिरेगी इसलिये तुम भगवान् विष्णुकी शरण में जाओ यह आकाशवाणी सुनकर डरेहुए सब मथुरावासी भगवान् के आगे स्वस्त्ययन पढ़नेलगे और लोहजंघ भी आकाश से उतरकर अपने उस सम्पूर्ण वेषको खोलकर सब लोगोंके बीचमें छिपकरठहरा और वह कुटनी यह शोचनेलगी कि अभीतक विष्णुभगवान् नहीं आये और मैं अभीतक स्वर्ग्ग को नहींगई यह शोचते २ जब ऊपर न ठहरसकी तव डरकर हाय२मैं गिरी यह कहकर चिल्लानेलगी यह सुनकर उस महामारी के गिरने के डरसे व्याकुलहुए विष्णुभगवान् के आगे खड़ेहुए लोगबोले कि हे देवि! न गिरो २ इसके उपरान्त महामारी के गिरने के डरेहुए सम्पूर्ण मथुरानिवासी बाल वृद्धोंने वह रात्रि बड़ी दिक्कतसे व्यतीतकी प्रातःकाल उस खम्भेमें लटकीहुई कुटनी को देखकर राजासमेत सब पुरवासियोंने उसे पहचाना तव सबका भय दूरहोगया और हँसनेलगे यह वृत्तान्त सुनकर रूपणिकाभी वहां आई और आश्चर्य्यपूर्वक अपनी माताकी यह दुर्दशा देखकर उसने उसे खंभे परसे उतरवाया तब सब लोगोंने यह हाल पूँछा और उसने सब वर्णन किया इसके उपरान्त किसी सिद्धका यह काम समझकर

राजा ब्राह्मण और बनियें सब बोले कि जिसने अनेक पुरुषों की चाहनेवाली इस कुटनी को छलाहै वह प्रकट होवे उसका फैसला कर दियाजावे यह सुनकर लोहजंघ वहां आया और पूँछनेपर सब हाल पिछला कहकर विभीषण के भेजेहुए बड़े मनोहर शंख चक्र गदा पद्म देदिये इसके पीछे सम्पूर्ण मथुरानिवासियों ने उसका फैसलाकरके राजाकी आज्ञा से रूपणिकाको खुद मुख्तार करदिया तब बहुतसे धन तथा रत्नोंको लेकर अपनी प्रियाके साथ लोहजंघ उस कुटनी से अपना बदला लेकर सुखपूर्व्वक रहनेलगा इस प्रकार उस विगड़े हुए स्वरूपवाले वसन्तक से इस कथाको सुनकर वासवदत्ता बन्धनमें पड़ेहुए राजा उदयनके समीप आनन्दपूर्व्वक रहने लगी–

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्तदशःप्रदीपः १७ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेऽष्टादशप्रदीपः १८ ॥

दुष्करंकुर्वतेकार्य्यंमन्त्रिणोबुद्धिमत्तराः ॥
बद्धंविमोचयामास रुदयन्तंसुबन्धनात् १८ ॥

(अर्थ) अत्यन्त बुद्धिमान् मन्त्री लोग महाकठिन कामको भी करलेते हैं जैसे सुसरेके गृह बंधनमें पड़े राजा उदयनको मंत्रियोंने रानीसहित छुटाया—१८ ॥

इसके उपरान्त वासवदत्ता अपने पिताके पक्षको छोड़करउदयनसे बड़ा प्रेम करनेलगी यह बात जानकर यौगन्धरायण मन्त्री अन्य सब लोगोंसे छिपकर उदयनके पास आया और वसन्तकके सन्मुख एकान्तमें जाकरबोला कि हे राजा! चंडमहासेनने आपको मायासे पकड़रक्खाहै अब अपनी कन्या देकर तुमको आदरपूर्व्वक छोड़ा चाहताहै तो इसकी कन्याहीको हमलोग अपने आपहरलें

चलैं इसप्रकार से इस अभिमानी का बदला भी हो होजायगा और संसारमें भी हमलोगोंका अपयश न होगाइसराजाने अपनी वासवदत्ता कन्याको एक भद्रवतीनाम हथिनीदी है उसहथिनीकी चालके समान नड़ागिरि हाथीके सिवाय और किसीहाथीकी चाल नहीं है और उसे देखकर नड़ागिरि भी नहीं लड़ता है उस हथिनी का आषाढ़क नाम महावत है उसे मैंने बहुतसा धन देकर मिला लिया है तो तुम उसी हथिनी पर वासवदत्तासमेत चढ़कर अपने हथियारोंको लेकर यहां से भागजाओ और यहां का जो प्रधानहै वह हाथियों की चेष्टाओंको जानताहै उसे मद्यपिलाकर ऐसामत-वाला करदेना जिससे कि वह कुछभी न जाने और मैं मार्गकी रक्षा केलिये तुम्हारे मित्र म्लेच्छोंके राजा पुलिन्दक के पास पहलेही से जाताहूं यह कहकर यौगन्धरायण चलागया उदयनने भी यह सब बातें मानलीं और जब वासवदत्ता उसकेपासआई तब अनेकप्रकार की सब बातों को मानकर चलने का निश्चय करके आषाढ़क को बुलाकर हथिनी के तैयार करने को कहा और देवताओं की पूजा के बहाने से वहां के प्रधान को उसके साथियोंसमेत मद्य पिला-कर मतवाला करदिया तब सायंकाल के समय जब कि मेघ खूब गरज रहे थे उससमय आषाढ़क उस हथिनी को तय्यार करके ले आया तैयार हुई हथिनी ने जो शब्द किया उसे सुनकर हाथियों के शब्दका जाननेवाला प्रधान मद्यके कारण गड़बड़ाते वचनों को बोला कि यह हथिनी कहती है कि आज मैं तिरसठयोजन जाऊंगी परंतु मतवाले महावतों ने उसके यह वचन नहीं सुने और उस मतवाले के यह वचन भी विश्वास के योग्य न थे इस के उपरान्त उदयन यौगन्धरायण की बताई हुई युक्ति से अपने

बन्धन को खोल के और अपनी वीणा तथा शस्त्रोंको लेके वासव-
दत्ता की सखी कांचनमाला और वसन्तकसमेत उस हथिनीपर
चढ़ा इसके उपरान्त महाव्रतसमेत वह चारों रात्रिके समय मत-
वाले हाथी से परकोटे को तुड़वाकर उज्जयिनी से बाहर निकले
उसस्थान के रक्षा करनेवाले वीरबाहु तथा तालभटनाम दो वीर
राजपुत्रों को उदयन ने मारडाला फिर वहां से राजा उस हथिनी
पर चढ़कर अपने सब साथियोंसमेत वेगपूर्वक चला उस समय
उज्जयिनी में उनदोनों रक्षकोंको मरा देखकर अन्य रक्षकोंसे राजा
चंड महासेनको मालूमहुआ कि उदयन वासवदत्ता को हरलेगया
इस बात के शहरमें फैल जानेपर चंड महासेनका पालकनामपुत्र
नड़ागिरिपर चढ़कर उदयनके पीछे दौड़ा पीछे आयेहुए पालक
को देखकर उदयनने बाहुओं के द्वारा उससे बड़ा युद्धकिया और
नड़ागिरि ने उस हथिनी को देखकर प्रहार नहीं किया उसीसमय
पालकका भाई गोपालक अपने पिताकी आज्ञा से पीछे से आ-
कर पालक को लौटा लेगया तब उदयन भी वहांसे धीरे २ साव-
धानहोकर चला उस रात्रि के व्यतीत होजानेपर दोपहरके समय
विन्ध्याचल के बनमें पहुँचकर तिरसठयोजन आईहुई वह हथिनी
प्यासीहुई तब अपने साथियोंसमेत राजा के उतर आनेपर उसह-
थिनी ने पानी पिया और पानीकेही दोषसे उसीसमय मरगई ह-
थिनी को मरा देखकर राजा और वासवदत्ता दोनों को बड़ा खेद
हुआ तब यह आकाशवाणी हुई कि हे राजा! मैं मायावतीनाम
विद्याधरों की स्त्री हूं इतने समयतक मैं शापके दोषसे हथिनी रही
आज मैंने तुम्हारे साथ इतना उपकार कियाहै अब आगे होनेवाले
तुम्हारे पुत्रका भी उपकार करूंगी यह तुम्हारी स्त्री वासवदत्ता भी

मानुषी नहीं है किन्तु देवी है किसी कारण से पृथ्वी में उत्पन्नहुई है यह सुनकर प्रसन्न होनेवाले उदयन ने वसन्तकको पुलिन्दक नाम अपने मित्रसे अपने आगमन का वृत्तान्त कहने के लिये आगे भेजा और आप स्त्रीसमेत धीरे २ चला उससमय बहुत से लुटेरों ने उसे आकर घेरलिया तबराजाने धनुषबाण लेकर लुटेरों को वासवदत्ताके आगे मारडाला उसीसमय राजा का मित्र पुलिन्दक यौगन्धरायण और वसन्तक समेत वहां आगया और उन लुटेरों को रोककर प्रणाम करके वासवदत्तासमेत राजा उदयन को अपने गांव में लेगया उस गांवमें वनमें कुशाओं से फटे हुए पैरवाली वासवदत्ता और राजा रात्रिभर रहे प्रातःकाल यौगन्धरायणसे बुलायागया रुमण्वान्नाम सेनापति सेनाको लेकर राजाके लेने को आया उसके संग इतनी सेना आई कि सम्पूर्ण विन्ध्याचलका बन भरगया इसके उपरान्त अपनी सेना के डेरों में जाकर उसीबनमें उज्जयिनी की वार्त्ता जाननेकेलिये राजा ठहरा रहा वहां ठहरेहुये राजासे यौगन्धरायण के एक मित्र वनियें ने उज्जयिनी से आकरकहा कि हे राजा ! आपपर राजा चंड महासेन बहुत प्रसन्न है और उसने आपके पास अपना दूत भी भेजा है वह आकर पीछे टिका है और मैं आप से कहने के लिये जल्दी छिपकर चला आया हूं यह सुनकर प्रसन्न हुए राजाने सम्पूर्ण वृत्तान्त वासवदत्ता से कहा और वह भी सुनकर बड़ी प्रसन्नहुई अपने बन्धुजनोंको त्याग करनेवाली और विवाहको शीघ्रचाहने वाली वासवदत्ता भी लज्जित होकर उत्कंठितहुई इसके उपरान्त अपने चित्तको बहलानेकेलिये वासवदत्ताने अपने निकट बैठेहुये वसन्तक से कहा कि कोई कथा वर्णनकरो तब बड़ा बुद्धिमान्

वसन्तक पतियों में बड़ीभक्ति की बढ़ाने वाली यह कथा वासव-
दत्ता से कहनेलगा ॥

इतिश्रीदृष्टांतप्रदीपिनीचतुर्थभागेऽष्टादशः प्रदीपः ॥ १८ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे एकोनविंशः प्रदीपः ॥ १६ ॥

पुत्रेष्ट्यापुत्रलब्धिर्हिह्येकतोमहती भवेत् ॥
धनदत्तस्यैकपुत्रो होमेन बहवोऽभवन् ॥ १६ ॥

(अर्थ) पुत्रेष्टि यज्ञ करने से एक पुत्रसे भी कई पुत्र होसक्तेहैं
जैसे धनदत्त बनियें ने एक पुत्रको काटके हवन किया तो तिसके
गन्धको सूंघने से उसकी सब स्त्रियें गर्भवतीभई और उनसे सैकड़ों
पुत्र उत्पन्न भये १६ ताम्रलिप्ती नाम नगरी में धनदत्त नाम
एक बड़ा धनवान् बनियां रहताथा उसके कोई पुत्र न था इसलिये
बहुतसे ब्राह्मणोंको बुलाकर नम्रतापूर्वक उसने कहा कि आपलोग
ऐसा यत्नकीजिये जिससे मेरे पुत्रहो तब ब्राह्मणबोले कि यहबात
कुछ कठिन नहीं है क्योंकि ब्राह्मणलोग वैदिककर्मों से सब कार्यों
को सिद्धकरसक्ते हैं पूर्व समयमें किसी राजा के पुत्र नहींथा और
एकसौ पांच उसकी रानी थीं तब पुत्रेष्टि नाम यज्ञ करने से उस
राजाके जन्तुनाम एक पुत्र उत्पन्न हुआ उससे सब रानियोंको बड़ी
प्रसन्नताहुई एक समय घुटनों से चलतेहुये उस बालक की जांघ में
चींटी ने काटखाया तब वह बालक बहुत चिल्लाकर रोनेलगा
बालकके रोने से सम्पूर्ण रानियां बहुत घबराईं और राजा भी हे पुत्र
हे पुत्र कहकर साधारण पुरुष के समान चिल्लानेलगा क्षणभर में
पीछे बालक के सावधान होजानेपर राजाने बड़े दुःखके कारण-
रूप एक पुत्रके होनेकी बड़ी निन्दाकी और ब्राह्मणों से बुलाकर
पूछा कि ऐसा कोई उपाय है जिससे मेरे बहुतसे पुत्रहोजायँ तब

ब्राह्मणों ने कहा कि यहांपर यह उपाय है कि तुम्हारे इस लड़के को मारकर इसके सब मांसका अग्नि में हवन कियाजाय उसके सूंघने से तुम्हारी सब रानियों के पुत्रहोंगे यहसुनकर राजाने वह सब उसीप्रकार से करवाया तब राजाके जितनी रानियां थीं इसी प्रकार हवन करने से उतनेही पुत्रहुये ॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागेएकोनविंशः प्रदीपः ॥ १९ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेविंशः प्रदीपः २० ॥

भूषणन्दूषणं स्त्रीणां चातुर्य्यम्भूषणम्परम् ।
चातुर्य्येणयुतासाध्वी स्वीयधर्ममरक्षयत् २० ॥

(अर्थ) साधारण आभूषण तो स्त्रियों के दूषण दोषकारक अर्थात् दुःखदायक भी हैं पर यह चतुराई स्त्री का श्रेष्ठ आभूषणहै जैसे चातुर्य्ययुक्त वैश्यपुत्रकी स्त्री ने चारों व्यभिचारियों के माथे में कुत्ते के पंजे का दाग़ लगवाया ॥ २० ॥

किसी बनियेंके गुहसेन नाम एक पुत्रहुआ धीरे २ उस पुत्रके बढ़नेपर धनदत्त उसके विवाहकी फ़िक्र करनेलगा इसके उपरान्त धनदत्त अपने पुत्र को लेकर रोज़गार के बहाने से किसी अन्य-द्वीपमें चलागया और वहां जाकर अपने पुत्रके लिये धर्म्मगुप्त नाम बनियें से देवस्मिता नाम उसकी कन्याको मांगा परंतु धर्म्म-गुप्त को कन्या बहुत प्यारी थी और ताम्रलिप्ती वहां से बहुत दूर थी इसलिये उसने वह सम्बन्ध नहीं मंजूर किया परंतु गुहसेन को देखकर देवस्मिताने उसके गुणों से वशीभूत होकर अपने बन्धुओं के त्याग करने का निश्चय करलिया और सखी के द्वारा संकेत बदकर रात्रि के समय अपने श्वशुरसमेत उस द्वीप से अपने प्रियके साथ निकलगई फिर ताम्रलिप्ती में आकर उन दोनों का

विवाहहोजाने पर परस्पर बड़ा स्नेह होगया इसके उपरान्तधनदत्त के मरजाने पर गुहसेन के मित्रों ने उसको कटाह द्वीप जाने के लिये कहा और देवस्मिता ने यह शोचा कि यह वहांजाकर अन्य स्त्रियों से संग करेगा ऐसा जानकर वहां जाने से रोका तब स्त्री के रोकने से और भाइयों के भेजने से गुहसेन बहुतघबराया कि मैं क्या करूं और घबराकर अपनी स्त्रीसमेत किसी देवमंदिर में जाकर इसलिये व्रतकिया कि परमेश्वर हमको उपाय बतावैं तबरात्रि के समय शिवजी ने उन दोनों को दर्शन दिया और दोनों के हाथ में एक २ लालकमल देकर कहा कि तुम दोनों यह कमल अपने २ हाथ में लिये रहो दूर होने पर भी तुम दोनों में से जो कोई एक भी अपना धर्म्म बिगाड़ेगा तो दूसरे के हाथ का कमल मैला होजायगा और नहीं तो ज्योंका त्यों बना रहैगा यह सुनकर वह दोनों जगपड़े और दोनों ने अपने २ हाथों में एक २ लालकमल देखा तब गुहसेन लालकमल को लेकर कटाहद्वीप को चलागया और देवस्मिता कमल को देखती हुई अपने घरमें रही वहां गुहसेन भी शीघ्रही कटाह द्वीप में पहुँच कर रत्न खरीदने और बेचने लगा उसके हाथमें सदैव बिना कुँभलाये कमल को देखकर कोई चार बनियों के पुत्र बड़ा आश्चर्य्य करनेलगे और उन्हों ने युक्ति पूर्वक उसे अपने घरमें लाके मद्य पिलाकर उससे कमल का सम्पूर्ण वृत्तान्त पूंछलिया तब बहुत कालतक गुहसेन रत्न खरीदेगा और बेचेगा यह जानकर वह चारों बनियों के पुत्र उसकी स्त्री के धर्म के बिगाड़ने के लिये छिपकर शीघ्रही ताम्रलिप्ती नगरी को चले आये वहां आकर किसी बुधके मंदिर में बैठीहुई योगकरण्डिका नाम संन्यासिनी के पासगये और उससे बोले कि जो तुम

हमारे मनोरथको सिद्ध करदोगी तो हम तुमको बहुतसा धन देंगे यह सुनकर उसने कहा कि युवापुरुषों को अवश्य किसी स्त्री की इच्छा होती है सो तुम अपने कार्य्य को कहो मैं उसे सिद्ध करदूंगी और मुझे धनकी कांक्षा नहीं है क्योंकि सिद्धकरी नाम एक बड़ी बुद्धिमती मेरी चेली है उसके सम्बन्ध से मुझे बहुतसा धन मिल गयाहै यह सुनकर उन्हों ने पूंछा कि तुमको चेली के प्रभाव से कैसे धन मिलाहै तब उसने कहा कि सुनो मैं वर्णन करती हूं इस नगरी में उत्तर की ओर से आकर कोई बनियां रहाथा उसके यहां हमारी चेली ने रूप बदलकर नौकरी करी थी और उस बनियें को मातबरी उत्पन्न करके उसके घरमें से सब सुवर्ण चुराकर प्रातःकाल निकलभागी तब भयसे उसे नगर के बाहर जल्दी २ जातेहुए देखकर ढोल लियेहुए कोई डोम उसका धन लेने के लिये उसके पीछे चला उससमय किसी बर्गद के पेड़ के नीचे जाकर और उस डोम को अपने पास आता देखकर बहुत ग़रीब बनकर कहा कि आज मैं अपने पति से लड़कर मरने के लिये घर से निकल आई हूं तो तुम हमारे लिये इस वृक्षमें फांसी लगादो तब उस डोम ने यह शोचा कि जो यह फांसी लगाकर आपही मरजाय तो मैं इसे क्यों मारूं यह समझकर उसने वृक्ष में फांसी लगादी इस के उपरान्त यह सिद्धकरी बड़ी भोली बनकर बोली कि फांसी गले में कैसे लगाई जाती है तुम मुझे दिखादो यह सुनकर उस डोमने पैरों के नीचे ढोल रखकर गलेमें फांसी लगाली और कहा कि इस तौरपर फांसी लगाई जाती है तब सिद्धकरी ने लात मारकर वह ढोल फोड़डाला और डोम फांसीमें लटककर मरगया उसीसमय वह बनियांभी सिद्धकरी के लिये ढूंढ़ने के लिये आताथा उसने दूरहीसे

वृक्षके नीचे सिद्धकरीको देखा और सिद्धकरी भी उसे दूरसे देखकर उस वृक्षपर चढ़कर पत्तोंमें छिपकर बैठरही उस बनियेंने वहां आकर फांसीमें लटकेहुए डोमको देखा परंतु सिद्धकरी को न देखा तब यह खयालकरके कि सिद्धकरी कहीं वृक्षपर न चढ़गई हो इसलिये उस बनिये का कोई नौकर उस पेड़ पर चढ़गया तब उससे सिद्धकरी बोली कि तुम मुझे बड़े प्यारे हो और तुम्हीं इस वृक्षपर भी चढ़ेहो सो हे सुन्दर! यह सब धन तुम्हाराही है आओ मेरे साथ भोग करो यह कहकर सिद्धकरी ने उससे लिपटकर और मुख चूमकर दांतों से उसकी जिह्वा काटली तब पीड़ा से व्याकुल होकर वह नीचे गिरपड़ा और उसके मुखसे रुधिर बहने लगा और अस्तव्यस्त वचन कहने लगा यह देखकर उस बनियें ने जाना कि इसके भूत लगाहै और डरकर अपने नौकरोंसमेत भागगया तब सिद्धकरी उस वृक्षसे उतर सब धन लेकर अपने घर चलीआई इसप्रकार से वह हमारी चेली बहुत सी छलविद्या जानती है और इसीकारण उसके सम्बन्ध से मैंने बहुतसा धन पायाहै यह कहकर उन बनियों को भी उसीसमय आईहुई अपनीचेली दिखादी और उनसे बोली कि तुमलोग किस स्त्री को चाहते हो मुझसे कहो मैं शीघ्रही उस से तुम्हें मिलादूंगी यह सुनकर वह बोले कि गुहसेन नाम बनियें की देवस्मिता नाम स्त्री से तुम हमको मिलादो यह सुनकर उसने उनके काम करदेने की प्रतिज्ञा करी और सबको अपने घर रक्खा इसके उपरान्त भोजनादिक पदार्थों के बांटनेसे वहां के लोगोंको प्रसन्नकरके वह संन्यासिनी अपनी चेलीसमेत गुहसेनके मकान-को गई जब वह दरवाज़े पर पहुँची तब बाहर बँधीहुई कुतिया ने उसे ग़ैर जानकररोका फिर देवस्मिताने उसे देखकर दासी भेज-

कर यह समझ के बुलवाली कि न जानें यह किस कामको आई है भीतर गईहुई वह पापिन संन्यासिनी ऊपर का आदर करनेवाली देवस्मिता से आशीर्व्वाद देकर बोली कि तेरे देखने को मेरा चित्त रोज़ चाहता था और आज मैंने तुझे स्वप्न में देखा था इसी से मैं तेरे देखने को चली आई हूं तुझे पति से रहित देखकर मेरे चित्त में बड़ा खेद होताहै क्योंकि प्रिय के भोग के बिना रूप और यौवन दोनों वृथाहैं इत्यादिक वचनों से देवस्मिता को सावधानकरके वह संन्यासिनी उससे पूंछकर अपने घर को चलीआई फिर दूसरे दिन बहुत मिर्च पड़े हुए मांस के टुकड़े को लेकर देवस्मिता के घरगई और वहां द्वारपर बँधीहुई कुतिया को वह मांस का टुकड़ा खिलादिया उसके खाने से बहुत चरपराहटसे उस कुतिया की आंखों से आंसू बहनेलगे और नाकसे पानी टपकनेलगा और वह संन्यासिनी घरके भीतर जाकर देवस्मिता के समीप बैठकर रोनेलगी जब देवस्मिताने बहुत पूंछा तबवह बोली कि देखो बाहर कुतिया रोरही है यह कुतिया मुझे दूसरे जन्म के पीछे मिलीहुई जान के रोनेलगी इसी से मेरे भी आंसू निकल आये यह सुनकर और बाहर रोतीहुई सी उस कुतिया को देखकर देवस्मिता शोचनेलगी कि यह क्या बातहै तब संन्यासिनी बोली कि पूर्व जन्ममें यह कुतिया और मैं किसी ब्राह्मणकी दो स्त्री थीं वह ब्राह्मण राजा की आज्ञासे बहुत दूर परदेश को जाया करताथा उस के परदेश चले जानेपर मैं अन्य पुरुषों के साथ संभोगकरके अपनी इंद्रियों को क्लेश नहीं देती थी क्योंकि इंद्रियों को क्लेश न देना परमधर्म्म है उसी धर्म से मुझे उस जन्म की भी इसजन्ममें याद बनी है और इस कुतियाने तो अज्ञानता से इंद्रियों को दुःखदेकर

केवल अपने शील की रक्षा की इसीसे यह कुतिया हुई परन्तु अपने जन्मका स्मरण इसे भी बनाहै यह सुनकर देवस्मिताने शोचा कि यह कौनसा धर्म है मालूम होताहै कि इसने कोई धूर्तता (छल) की रचना की है यह समझकर वह बोली कि अबतक मैं इस धर्म को नहीं जानती थी तो अब तुम किसी सुन्दर पुरुषके संग मेरा समागम कराओ तब उस संन्यासिनी ने कहा कि किसी अन्य-द्वीपसे आयेहुए चार बनियें के पुत्र यहां ठहरे हैं उनको मैं तेरेपास लाऊंगी यह कहकर वह वहांसे बहुत प्रसन्नतापूर्व्वक चलीगई तब देवस्मिता ने अपनी दासियों से बुलाकर कहा कि मेरे पति के हाथमें उस म्लानता रहित कमलके फूलको देखकर और मद्य पिलाकर उससे इसका सब वृत्तान्त पूछकर मेरे बिगाड़ने के लिये उसी द्वीपसे कोई बनियें के लड़के आये हैं और उन्होंनेही यह दुष्ट तपस्विनी भेजी है सो तुमलोग जाकर धतूरा मिलीहुई शराब ले आओ और लोहे का एक कुत्ते का पंजा बनवालाओ उस के यह बचन सुन दासी मद्य भी लाई और कुत्ते का पंजा भी बनवा-लाई और उसी के कहने से एकदासी ने उसका वेष भी बनालिया फिर वह संन्यासिनी सायंकाल के समय उनचारों में से एक को अपनी चेली के वेषमें छिपाकर देवस्मिता के घर लिवालाई और उसे भेजकर आप चलीगई तब उस बनियेंके लड़केको देवस्मिता रूप दासी ने आदरपूर्व्वक धतूरा मिलीहुई शराब पिलाई उस के पीने से वह बेहोश होगया तब दासियों ने उसके सब वस्त्र उतार लिये और माथे में कुत्ते का पंजा दागकर उसे किसी मल से भरेहुए गड्ढे में ढकेलदिया पिछली रात्रिको जब उसे होश आया तो उसने अपने को गढ़ेमें पड़ाहुआ देखा तब वहांसे उठके स्नान

करके माथे के दाग़ को टटोलताहुआ नंगा बनियें का लड़का उस संन्यासिनी के समीप पहुँचा तब उसने यह शोचकर कि अकेले मेरीही हँसी क्यों होय प्रातःकाल अपने साथियों से कहा कि रास्ते में मुझसे ठगों ने सब असबाब छीनलिया और जागरण तथा मद्य पीने से मेरे शिरमें दर्द होरहाहै इस वहाने से शिरमें कपड़ा लपेट लिया दूसरे दिन दूसरा बनियें का पुत्र देवस्मिता के यहां गया और उसकी भी वही दशाहुई तब नंगा होकर वहां आया और उसने भी बाक़ियों से कहा कि मैं अपने आभूषण तो वहीं छोड़ आयाहूं परंतु मेरे कपड़े चोरों ने छीनलिये फिर प्रातःकाल शिरकी पीड़ा के वहाने से उसने भी अपने माथे के दाग़ को छिपाया इसीप्रकारसे वह सव बनियों के पुत्र उसी दशा को पहुँचे सबके माथे में एक २ कुत्ते का पंजा दाग़ दियागया और सबका धन छीन लियागया फिर इस संन्यासिनी की भी यही दशा हो इसलिये वह अपने सब वृत्तान्त को बिना कहे सुनेही वहां से चले गये इसके उपरान्त किसी और दिन वह संन्यासिनी अपनी चेली समेत बहुत प्रसन्न होकर उसके घरगई देवस्मिता ने उसे वहां आई हुई देखकर बड़े आदरपूर्व्वक उसे और उसकी चेली को धतूरा मिली हुई मदिरा पिलाई जब वह दोनों मतवाली होगईं तब नाक और कान कटवाकर उन्हें भी उसी गड्ढे में डलवा दिया इस के उपरान्त यह शोचकर कि ऐसा न हो कि यह बनियें के पुत्र वहां जाकर मेरे पति को मारडालें देवस्मिता ने घबराकर यह सब वृत्तान्त अपनी सास से कहा तब सास बोली कि हे वहू ! यह तो तुमने बहुत अच्छाकिया परंतु मुझे यह सन्देह होताहै कि यह दुष्ट मेरे पुत्रकेलिये कुछ बुराई न करें तब देवस्मिता

ने कहा कि जैसे शक्तिमती ने अपनी बुद्धिसे पतिकी रक्षाकी थी उसीप्रकार मैं भी अपने पतिको बचाऊंगी उसकी सासने पूँछा कि शक्तिमती ने अपने पतिकी कैसे रक्षाकीथी तब वह कहनेलगी कि मेरे देशमें शहरके भीतर बहुत कालका बड़ा प्रतिष्ठित एक महा यक्षहै वहांके निवासी अपने २ मनोरथों के पूर्ण होने के लिये अनेक २ प्रकारकी भेट पूजाओंको लेजाकर उससे अपना २ मनोरथ मांगते हैं और वहां यह चालहै कि जो मनुष्य पराई स्त्री के साथ पकड़ा जाताहै वह उस स्त्री समेत उसी यक्षके मन्दिर में रात्रिभर बन्द कियाजाताहै और प्रातःकाल उस स्त्रीसमेत राजाकी सभामें वह पहुँचाये जाते हैं और वहीं उनको दण्ड मिलताहै एक समय समुद्रदत्त नाम बनियेंको किसी पराई स्त्रीके साथ कोतवालनेपकड़ा और उसको उस स्त्रीसमेत यक्षके मन्दिर में बन्दकर दिया उससमय यहवृत्तान्त उस बनियेंकी बड़ी बुद्धिमान् और महापतिव्रता शक्ति-मती नाम स्त्रीने सुना और सुनकर वेप बदलकर अपनी सखियों समेत पूजनकी सामग्री लेकर यक्षके मन्दिरको गई वहां दक्षिणाके लोभसे पुजारीने कोतवालसे पूँछकर केवल शक्तिमती कोही भीतरजानेदिया भीतर जाकर स्त्री समेत लज्जितहुए अपने पतिको देखकर शक्तिमती ने उस स्त्रीका अपनासा वेष बनाकर उसे बाहर कर दिया वह स्त्री तो उसके वेषसे निकलकर रात्रिके समय वहांसे चलीगई और शक्तिमती अपने पतिकेपास रात्रिभर वहां रही प्रातः-काल जब राजाके नौकरोंने आकर देखा तो मालूम पड़ा कि वह बनियां अपनी स्त्रीके साथ था यह जानकर राजाने मृत्युके मुखके समान उस यक्षके मन्दिरसे स्त्रीसमेत बनियेंको तो छोड़दिया और कोतवालको सज़ादी इसप्रकारसे शक्तिमती ने अपने पतिकी रक्षा

कीथी और भी इसीप्रकारसे जाकर अपने पतिकी युक्तिपूर्वक रक्षा करूंगी इसप्रकार एकान्त में अपनी साससे कहकर देवस्मिता ने अपनी दासियों समेत बनियोंकासा रूप बनाया और जहाजपर चढ़कर रोज़गारके बहाने से कटाहद्वीपको गई कटाहद्वीप में जहां उसका पति रहताथा वहां जाकर सम्पूर्ण बनियों में बैठेहुए गुहसेन नाम अपने पति को देखा और उसे देखकर गुहसेनने भी अपने मनमें विचारा कि यह कौनसा पुरुष मेरी स्त्रीके समान यहां आया है इसके उपरान्त देवस्मिताने राजाके यहां जाकर कहा कि आप सब प्रजाके लोगोंको इकट्ठा कीजिये मैं कुछ प्रार्थना करूँगी तब राजाने सम्पूर्ण पुरवासियोंको बुलवाकर उससे पूंछा कि तेरी क्या प्रार्थनाहै तब वह बोली कि मेरे चारदास यहां भागकर चले आये हैं उनको मुझे देदीजिये तब राजा बोला कि यह सब पुरवासी बैठे हैं इनमें से तुम अपने दासोंको छाँटलो तब शिरमें कपड़ा लपेटे हुए वह चारों बनियोंके पुत्र जिनको कि उसने अपने घरपर माथे में दागाथा पकड़लिया तब सम्पूर्ण बनियें क्रोधसे कहनेलगे कि यह तो बनियों के पुत्रहैं तेरे दास कैसे होसक्ते हैं यह सुनकर वह बोली कि आप लोगों को मेरा यक़ीन नहीं है तो इनके माथे देख लीजिये मैंने कुत्ते के पंजेसे दागदिये हैं उसके कहनेसे जब उनके कपड़े खोलकर माथे देखेगये तो उनमें कुत्तेके पंजेका दागदिखाई दिया—इसके उपरान्त सम्पूर्ण बनियों के लज्जित होजानेपर राजाने बड़े आश्चर्यपूर्व्वक देवस्मितासे पूँछा कि यह क्या बातहै तब उसने उनका सम्पूर्ण वृत्तान्त कहा यह सुनकर लोग हँसनेलगे औरराजा ने भी कहा कि यह तेरे दास ठीक २ हैं तब और बनियोंने उनचारों को उससे छुटाने के लिये उसे बहुतसा धन दिया और उन चारोंकी

ओरसे राजाको जुरमाना भी दिया उन धनको और अपने पतिको लेकर सम्पूर्ण सज्जनों से प्रशंसा कीगई देवस्मिता अपनी पुरीमें चलीआई और उसे फिर कभी अपने पतिका वियोग नहीं हुआ इसीप्रकार बड़े उत्तम कुलों में उत्पन्न होनेवाली स्त्रियां बड़े उत्तम आचरणों से सदैव अपने पतिका सेवन करती हैं क्योंकि पतिही उनका परमदेव है वसन्तक के मुखसे इस मनोहर कथाको सुनकर पिताके घरको त्याग करने से लज्जित वासवदत्ताके मनमें उदयन् पर और भी अधिक भक्ति बढ़ी ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे ऊनविंशः प्रदीपः १९ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे विंशः प्रदीपः २० ॥

अपकारंनकस्यापि प्रकुर्य्याद्बुद्धिमान्नरः ॥
बालोप्यपकृतोदुःखप्रदोनार्य्यायथाभवत ॥ १ ॥

(अर्थ) बुद्धिमान् जन किसी का भी अपकार न करे जैसे उप माता करके अपकार किया लड़काभी उसका क्लेशकारक हुआ अर्थात् पिताको उसपर क्रुद्ध किया २० ॥

रुद्रशर्म्मा नाम किसी ब्राह्मणकी दो स्त्रियां थीं उनमें से एक स्त्रीके पुत्र उत्पन्न हुआ और वह मरगई तब उस ब्राह्मण ने वह लड़का अपनी दूसरी स्त्रीको सौंप दिया वह स्त्री उस लड़के को बहुत रूखा भोजन देती थी इससे उस बालकका शरीर बहुत खुरखुरा और पेट बहुत बड़ा होगया बालककी यह दशा देखकररुद्र शर्म्मा ने अपनी स्त्री से कहा कि मातासे रहित मेरे बालक की तुमने क्या दशा करडाली तब स्त्रीने कहा कि मैं तो इसे बहुतघी खिलाती हूं परन्तु यह इसी प्रकार बना रहता है मैं क्या करूं यह

सुनकर ब्राह्मणने भी जाना कि इस बालकका ऐसा स्वभावही होगा क्योंकि स्त्रियों के झूंठे भोले वचनोंको कौनसत्यनहींमान-ताहै तब वह बालक छोटीही अवस्था में कुरूप होगया इस लिये उसका नाम बालविनष्टक होगया वह बालविनष्टक पांच वर्ष कीही अवस्था में बड़ा बुद्धिमान् था इससे उसने अपने चित्त में शोचा कि यह सौतेली माता मुझे बड़ा कष्ट देती है इससे कुछ बदला लेना चाहिये यह बिचार कर जब उसका पिता राजाके दरबार से लौटा तब उसने एकान्तमें अपने पितासे तुतलाके कहा कि हे पिता मेरे दो पिताहैं इसी तरह वह रोज अपने पिता से कहने लगा तब उस ब्राह्मण ने अपनी स्त्रीको व्यभिचारिणी स-मझकर उसका स्पर्श करनाभी छोड़ दिया तब उस स्त्रीने शोचा कि विना अपराध के मेरा पति मुझसे क्यों खफ़ाहै शायद इस बालविनष्टकने कुछ उपद्रव किया होगा यह शोचकर उसने बाल-विनष्टक को आदर पूर्वक स्नान कराके और उत्तम भोजन कर-वाके गोदी में बैठाल कर उससे पूंछा कि हे पुत्र तुमने अपनेपिता को मेरे ऊपर क्यों खफ़ा करवा दियाहै यह सुनकर बालविनष्टक ने कहा कि जो तुम इतने पर भी न मानोगी तो मैं कुछ औरभी अधिक खफ़ा करवादूंगा तू सदैव अपने बालक को अच्छी तरह रखती है और मुझे कष्ट दिया करती यह सुनकर उस स्त्रीने कसम खाकर कहा कि अब मैं तुझे कभी दुःख न दूंगी तो अब तू अपने पिताको मेरे ऊपर प्रसन्न करवादे तब उस बालकने कहा कि जब मेरा पिता आवे तब कोई दासी उसे शीशा दिखावै तब मैं जो चाहूंगा सो करूंगा उसके वचन मानकर उसने एक दासी मुकर्रर करदी जब रुद्रशर्मा आया तब दासी ने उसे दर्पण दिखा दिया उस

समय बालविनष्टक ने अपने पिताको उसी का प्रतिबिम्बदिखाकर कहा कि हे पिता यहही मेरा दूसरा पिताहै यह सुनकर रुद्रशर्माका सन्देह दूर होगया और विना कारणके दूषित हुई अपनी स्त्री पर प्रसन्न होगया ॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे विंशःप्रदीपः २० ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागे एकविंश प्रदीपः

औषधैरसाध्यरोगेतु विचिकित्सेतबुद्धितः ॥
राज्ञःस्फोटोयथावैद्यैः स्फोटितःकथनान्मृते २१ ॥

(अर्थ) जब रोग औषधियों से साधने में न आवे तब बुद्धि बलसेही उसकी चिकित्सा करनी—जैसे—राजाका फोड़ा वैद्यों ने रानी का मरण कहकर फुड़वादिया २१ ॥

पूर्व्वसमयमें एक महासेननाम राजा था उसपर किसी बलवान् शत्रुने चढ़ाई की तब मंत्रियों ने राज्य बचाने की इच्छा से उस अत्यन्त बलवान् शत्रुको राजासे कर दिलवादिया तब कर देकर राजा महासेन को यह समझकर कि मैंने शत्रुको करदियाहै बड़ा शोचहुआ और इसी शोच से राजाके हृदय के भीतर एक फोड़ा होगया तब राजा उसकी पीड़ासे मरनेलगा राजा की यह दशा देखकर किसी बुद्धिमान् वैद्यने इस फोड़े को औषधियों से साध्य न समझकर राजासे कहा कि हे राजा तुम्हारी रानी मरगई यह सुनकर राजा एकाएकी पृथ्वी में गिर पड़ा और बड़े शोकसे वह फोड़ा आपही फूट गया तब रोग से छूटे हुए राजाने अपनी रानी पाई और शत्रुओंको भी जीता ॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे एकविंशःप्रदीपः २१ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे द्वाविंशप्रदीपः ॥

आत्मानन्दविचारेण परतश्छद्मयश्चरेत ॥
सएवदुःखंलभते यथासंन्यासिनाकृतम् २२ ॥

(अर्थ) जो जन निज सुखको विचार करके दूसरेसे छलकरता है तो वहही दुःख पाता है—जैसे—संन्यासी ने छल करके आपही दुःख पाया २२ ॥

गंगाजी के किनारे पर माकन्दिका नामपुरी में एक मौनी संन्यासी बहुतसे संन्यासियों समेत किसी देवमन्दिर के मठमें रहता था और भीख मांगकर अपना पेट पालताथा एक समय वह मौनी किसी बनिये के घर भिक्षा लेने को गयाथा वहां उसने भिक्षा देने को निकली हुई एक बहुत सुन्दर स्वरूपवाली कन्या देखी उसके अद्भुत स्वरूप को देखकर वह संन्यासी उस बनिये को सुनाकर हाय २ यह बड़ा गज़बहै ऐसा कहने लगा—फिर वहां से भिक्षा लेकर अपने घर को चलाआया तब एकान्तमें उस बनिये ने जाकर उससे पूंछा कि आज आप अपने मौन व्रत को छोड़कर किस कारण से बोले यह सुनकर उस संन्यासी ने कहा कि तुम्हारी कन्याके लक्षण बहुत बुरे हैं जब इसका बिवाह होगा तो निस्सन्देह तुम्हारे सब कुटुम्बका नाश होजायगा इसी से इस कन्या को देखकर मुझको बड़ा दुःख हुआ और तुम मेरे बड़े भक्त हो इस लिये मैंने अपना मौनव्रत छोड़कर वह बचन कहेथे सो तुम अब ऐसा उपाय करो कि उस कन्याको किसी सन्दूक में बन्द करके रात्रि के समय उसपर एक दीपक जलाकर गंगामें बहादो तब उस बनिये ने उसके बचन मानकर भयसे अपनी कन्या उसी प्रकार गंगामें बहादी ठीकहै डरपोक लोगों को विचार नहीं होता

उससमय उस संन्यासी ने अपने सेवकों से कहा कि तुम गंगाजी जाओ और वहां बहती हुई एक संदूक़ आवेगी जिसपर कि एक दीपक जलता होगा वहां उसे छुपाकर लेआओ और उसमें से जो कोई शब्द भी सुनाई पड़े तो भी उसे मत खोलना जबतक वह लोग वहां पहुँचे भी नहीं तबतक किसी राजा के लड़के ने उस संदूक़को देखकर अपनेनौकरों को भेजकर मँगवालिया फिर उस संदूक़ को खोलके उसमें से निकली हुई उसपरमसुन्दर कन्या के साथ अपना गान्धर्व विवाह करलिया और उस संदूक़ में बड़ा भयंकर बन्दर बैठालकर और उसके ऊपर दीपक रखवाकर फिर वही संदूक़ गंगाजी में बहादिया उस कन्या को लेकर वह राजा का पुत्र तो चलागया और उस संन्यासी के चेले उस संदूक़ को संन्यासी के पास लेगये तब उस संन्यासी ने चेलों से कहा कि आज मैं अकेला इस संदूक़ को लेकर इस मठके ऊपर कोई मंत्र सिद्धकरूंगा और तुमलोग चुपचाप नीचे रहना यह कहकर और उस संदूक़ को ऊपर लेजाकर उसने वह संदूक़ खोला तब उस में से एक बड़ाभयंकर बन्दर निकला और उसने दौड़कर उसके कान और नाक काटलिये इसप्रकार बन्दरके काटनेपर वह संन्यासी डर कर नीचे उतर आया और उसे देखकर उसके चेलों ने बड़ी मुश्किल से अपनी हँसी को रोंका प्रातःकाल इस वृत्तान्त को जान कर सम्पूर्ण लोग हँसने लगे और बनियां तथा बनिये की कन्या ऐसे वरको पाकर अत्यन्त प्रशन्न हुए ॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेद्वाविंशःप्रदीप. २२ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपःचतुर्थभागेत्रिविंशःप्रदीपः ॥

अभीष्टनार्य्यलाभेपि मरणंजायतेयथा ।
राज्ञोऽलब्धावणिक्भार्य्या मरणंतस्यचैअभूत २३

(अर्थ) चाही हुई स्त्री के न मिलने से भी मरणही होजाताहै- जैसे-राजाको वैश्यकी स्त्री न मिलने से मरनाही हुआ इति २३ ॥

श्रावस्ती नाम पुरी में देवसेन नाम बड़ा बुद्धिमान एक राजा था और उसी पुरी में एक वड़ा धनवान् कोई बनियां रहता था उस बनिये के एक वड़ी सुन्दर कन्या थी उसने आकर राजासे कहा कि मेरे एक कन्या है जो आपकी इच्छाहोय तो आप लेलीजिये यह सुनकर राजाने ब्राह्मणोंको उसके घर इसलिये भेजा कि वह जाकर कन्याके लक्षण देख आवैं कि अच्छे हैं या नहीं तव राजाके भेजे हुये ब्राह्मण वहां गये और उस उन्मादनीको देखकर कामके वशी भूत होगये फिर सावधान होकर उन ब्राह्मणों ने यह विचारा कि जो राजा इसके साथ विवाह करेगा तो इसके वशीभूत होकर सब राज्य कार्योंको छोड़देगा और ऐसा करने से राज्य नष्ट होजायगा इसलिये ऐसा करना चाहिये कि इस राजा का इसके साथ विवाह न होय यह शोचकर ब्राह्मणों ने राजासे जाकर कहदिया कि उस कन्या के लक्षण बहुत बुरे हैं इसके उपरान्त राजा से त्यागी हुई उस कन्या का उस बनिये ने राजा के सेनापति के साथ बिवाह करदिया एक समय अपने पति के घरमें उस उन्मादनी कन्या ने राजाको उसी मार्ग से जाता हुआ जानकर महल के ऊपर खड़ी होकर राजाको अपना रूप दिखाया उसके परम सुन्दर रूप को देखकर काम से व्याकुल हुआ राजा अपनेमहल में आकर और यह जानकर कि मैंने पहिले इसीका त्यागकिया बहुत ज्वर सहित

सन्ताप से युक्त होगया राजाकी यह दशा देखकर सेनापति ने कहा कि हे राजा वह पराई स्त्री नहीं है आपकी दासी है आप उसे लेलीजिये और नहीं तो मैं उसे किसी देवमन्दिर में त्याग करदूं तो वहां से आप उसे लेलीजिये अपने सेनापति के ऐसे वचन सुनकर राजा बोला कि मैं परस्त्री को न लूंगा और जो तुम उस का त्याग कर दोगे तो तुम्हारा धर्म नष्ट होगा मैंभी तुमको दण्ड दूंगा यह सुनकर सम्पूर्ण मन्त्री चुप होगये और राजा उसी काम ज्वर से सन्तप्त होकर कुछ कालमें मरगया॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेत्रिविंशःप्रदीपः २३॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेचतुर्विंशःप्रदीपः॥

तथाप्रियवियोगेपिमृतिःसद्योभिजायते। गम्य मरनेयथावैश्येमृतातस्त्र्यथसोमृतः २४॥

(अर्थ) तैसेही प्रियके वियोग होते भी शीघ्रही मरण होजाताहै जैसे वैश्यके परदेश जाते२उसकी स्त्रीमरी फिर वहभी मरगया २४॥

मथुरा नाम नगरी में एक यइक्षकनाम वनियां रहता था उसके एक बड़ी प्यारी स्त्री थी और वह स्त्रीभी उससे बड़ा स्नेह करती थी एक समय वह वनियां किसी वड़े काम से किसी दूसरे द्वीप को जाने लगा तव उसकी स्त्री भी उसके साथ चलने को तैयार हुई क्योंकि बहुत स्नेह करनेवाली स्त्रियां विरह को नहीं सहसक्ती हैं परन्तु वह बनियां उस स्त्रीको बिना लियेही अपने घरसे चला तब उसको बियोग न सहकर उस स्त्री के प्राण निकलगये यह खबर सुनकर उसीवक्त लौटेहुये उस बनिये ने पृथ्वीपर मरी पड़ी हुई अपनी स्त्री देखी उससमय उसकी ऐसी शोभा होरही थी कि मानों आकाश से सोतीहुई कोई चन्द्रलोक की देवता पृथ्वी पर गिरपड़ी

है सुन्दर पीतवर्ण वाली और बिखरेहुए बालवाली अपनी स्त्री को गोदीमें रखकर रोतेहुये उस बनिये के भी प्राण निकल गये इस प्रकार परस्पर के बिरह से वह दोनों मरगये ॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेचतुर्विंशःप्रदीपः २४ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेपंचविंशःप्रदीपः ॥

परीक्ष्यसाधवःश्रेष्ठफलंलोकेददंतिवै । यथापृथा व्यथंनावत्सद्धकातपृष्ठेघृताग्न्यपि २५ ॥

(अर्थ) साधुजन लोककी परीक्षा करकरकेही श्रेष्ठ फल देते हैं जैसे दुर्वासाने कुंतीकी परीक्षाकरी उसकी पीठपर जलती कढ़ाई धरी और उसेकुछभी व्यथायुक्त नदेखकरप्रसन्नहोवरदानदिया-२५॥

एकसमय कुन्तिभोजनाम राजा के यहां दुर्वासा मुनि उसकी परीक्षा के लिये आके रहे राजाने मुनिकी सेवा के लिये अपनी कन्या कुंती को आज्ञा देदी और वह कुंती भी यत्न पूर्वक मुनिकी सेवा करनेलगी एकसमय कुंती की परीक्षा करने के लिये दुर्वासा ऋषिने उससे कहा कि जल्दी से खीर बनाओ मैं अभी स्नान करके आताहूं यह कहकर जल्दी से स्नान करकेदुर्वासा भोजन के लिये आगये तब कुंती ने खीरसे भराहुआ पात्र दुर्वासाके आगे रखदिया बहुत गरम खीर से उस पात्र को जलताहुआ जानकर और हाथसे छूने के योग्य न जानके दुर्वासाने कुन्ती की पीठकी ओर दृष्टिकी दुर्वासा के आशय को समझकर कुन्ती ने उस पात्र को अपनी पीठपर रखलिया और दुर्वासाने यथेष्ट भोजन किया पीठ के जल जानेपर भी कुन्ती की चेष्टा में कोई विकार न देखके दुर्वासा ने प्रसन्न होकर कुन्ती को वरदान दिया ॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे पञ्चविंशःप्रदीपः २५ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेषड्विंशः प्रदीपः ॥

संत्रेणकिमसाध्यंस्याद्यथाब्राह्मणमंत्रिणा ।
सुमंत्रितसुखाभार्य्यानुरक्तैवकृतायतः २६ ॥

(अर्थ)-मंत्रविद्या से क्या २ नहीं साध्यहै अर्थात् सब सिद्ध होसक्काहै-जैसे मंत्रशास्त्री ब्राह्मणीने वैश्यकी स्त्री को मंत्रके प्रभाव से निजपति से स्नेहवती बनादी—२६ ॥

पाटलिपुत्रनाम नगर में धर्म्मगुप्त नाम एक बड़ा धनवान् बनियां रहताथा उसके चन्द्रप्रभानाम एक स्त्री थी एकसमय उस चन्द्रप्रभाके सर्वाङ्ग सुन्दरी एक कन्या उत्पन्न होतेही उठके बैठगई और स्पष्ट (साफ़ २) बोलनेलगी यह देखकर सम्पूर्ण स्त्रियां बहुत घबराईं और धर्मगुप्त भी डरकर वहां आगया और प्रणामकरके उस कन्या से बोला कि हे भगवती ! तुम कौनहो मेरे यहां अवतार लेकर आई हो तब वह कन्या बोली कि हे पिता ! तुम मेरा किसी के साथ विवाह न करना मुझे अपने घरमेंही रखने से तुम्हारी भलाईहोगी और अन्य वृत्तान्त पूछने से तुमको क्या प्रयोजनहै उसके यह वचन सुनकर डरेहुए धर्मगुप्त ने उस कन्या को छिपाकर अपने घरमें रक्खा और बाहर यह खबर उड़ादी कि कन्या मरगई इसके उपरान्त दिव्य स्वरूपवाली वह सोमप्रभानाम कन्या उसके घर में बढ़नेलगी एकसमय वह कन्या अपने महल के ऊपर चढ़ी हुई वसन्त के उत्सवको देखरही थी वहां कामदेव के भाले के समान उस कन्याको देखकर गुहचन्द्रनाम कोई बनिये का लड़का काम से मूर्च्छित होकर बड़े दुःखसे अपने घरको आया उसके माता पिता ने बहुत हठसे जब उसके व्याकुलहोनेका कारण पूछा तब अपने मित्रों के मुखसे यह हाल कहलवादिया यह बात सुनकर गुहसेन

नाम उस लड़के का पिता पुत्र के स्नेह से धर्मगुप्त के यहां कन्या मांगने को गया और वहां जाकर उसने कन्या मांगी तब धर्मगुप्त ने उससे कहा कि हे मूर्ख! मेरे यहां कन्या कहां है धर्मगुप्तके यह बचन सुनकर गुहसेनने जाना कि इसने अपनी कन्या छिपारक्खी है और अपने घरमें जाकर अपने पुत्रको व्याकुल देखके उसने शोचा कि मैं राजा से कहकर उससे वह कन्या लेलूं क्योंकि मैंने पहले राजाकी बड़ी सेवाकी है इससे राजा मेरे पुत्रको व्याकुल देखकर उस कन्या को दिवादेगा—ऐसा निश्चयकरके गुहसेन ने राजा के पास जाकर रत्नों की भेंट देकर राजा से अपना मनोरथ कहदिया राजा तो उससे प्रसन्नही था इससे उसने सहायता के लिये कोतवालको उसके साथकरदिया तब कोतवालने वहां जाकर धर्मगुप्तका घर चारोंओरसे घेरलिया यहदेखकर धर्मगुप्तको इसलिये बड़ा खेदहुआ कि आज मेरा सब धन नाश होजायगा तब सोमप्रभाने उससे कहा कि हे पिता! मुझे तुम इसेदेदो इसमें मेरेलिये तुम्हारे यहां कोई उपद्रव न होय परन्तु अपने सम्बंधीसे यह नियमकरलो कि मेरापति मुझे अपनी शय्यापर न बुलावे कन्या के यह बचन सुनकर धर्मगुप्तने शय्यापर न बुलानेका नियम करके कन्या देना स्वीकार करलिया और गुहसेन भी अपने चित्तमें हँसकर किसी तरहसे पुत्रका विवाह तो होजाय इसलिये यहबात स्वीकार करलीनी इसके उपरान्त गुहसेनका पुत्र गुहचन्द्र सोमप्रभा को विवाह करके अपने घर लेगया सायङ्कालके समय गुहसेन ने अपने पुत्र गुहचन्द्र से कहा कि हे पुत्र! इसे अपनी शय्यापर बुलाओ क्योंकि अपनी स्त्रीको कौन अपनी शय्यापर नहीं बुलाताहै यह बचन सुनकर सोमप्रभा ने अपने श्वशुर को बड़े क्रोधसे देखकर

यमराजकी आज्ञाके समान अपनी तर्जनी उँगली घुमाई उस अँगुलीको देखतेही गुहसेनके तो प्राण निकलगये और अन्य बनिये डर गये फिर गुहचन्द्र भी अपने पिता को मरा देखकर यह जाना कि यह स्त्री महामारी रूप मेरे घरमें आईहै इसके उपरान्त गुहचन्द्रने उसके साथ भोग नहीं किया और असिधाराव्रत धारण करलिया फिर इस दुःख से बहुत व्याकुल होकर सब भोगों को त्यागकर गुहचन्द्र नियमपूर्वक रोज़ ब्राह्मणों को भोजन कराने लगा उसकी स्त्री भी मौन धारणकरके सम्पूर्णब्राह्मणों को रोज़ दक्षिणा देती थी एकसमय किसी वृद्ध ब्राह्मण ने सोमप्रभा के बड़े विलक्षणरूपको देखकर एकान्तमें गुहचन्द्र से कहा कि यह स्त्री तुम्हारी कौनहै हमसे बताओ तब बहुत पूछने से गुहचन्द्र ने सब वृत्तान्त उसका ब्राह्मणसे कहदिया यह बात सुनकर उस ब्राह्मणने दयापूर्वक गुहचन्द्र का मनोरथ सिद्ध होनेके लिये उसे एक अग्निका मन्त्र बतादिया उसमन्त्रको एकान्तमें जपते २ गुहचन्द्र के आगे एक पुरुष अग्निमें से निकला उसे देखकर गुहचन्द्र उस के चरणों पर गिरपड़ा तब ब्राह्मणरूपधारी अग्निने उससे कहा कि आज हम तुम्हारे घरमें भोजन करके रात्रिको तुम्हारेही यहां रहैंगे और तुम्हें सम्पूर्ण तत्त्व दिखाकर तुम्हारा मनोरथ पूर्ण करदेंगे यह कहकर वह ब्राह्मण गुहचन्द्र के घरको चलागया और वहां जाके साधारण ब्राह्मणों के समान भोजन करके रात्रिके समय गुहचन्द्र के साथ सोगया पहरभर रात्रि व्यतीत होने पर जब गुहचन्द्रके यहां सब लोग सोगये तब गुहचन्द्रकी स्त्री घरसे बाहर निकली उससमय उस ब्राह्मण ने गुहचन्द्र को जगाकर कहा कि आओ अपनी स्त्रीका चरित्र देखो फिर उस ब्राह्मणने अपने योग

के बलसे गुहचन्द्रका और अपना रूप भौंरेकासा करलिया और वह दोनों गुहचन्द्र की स्त्रीके पीछे २ चले वह सोमप्रभा नगरसे बाहर निकलकर बहुत दूरतक चलीगई वहां जाकर गुहचन्द्र और ब्राह्मण ने यह देखा कि वहांपर बड़ी सघन छायावाला एक बड़का वृक्ष है उसकेनीचे उसे बड़ी सुन्दर वीणाकी ध्वनि और अत्यन्त मधुर गीत सुनाईदिये उस वृक्षकी एक शाखापर बड़े उत्तम सिंहासन पर सोमप्रभाके समान एक बड़ो उत्तम कन्या बैठी दिखाई दी उस कन्याकी कान्ति चांदनीसे भी निर्म्मल थी और सखियां उसके ऊपर श्वेत चमर डुलारही थीं वह कन्या क्या थी मानों चन्द्रमाकी सुन्दरता के खज़ानेकी देवताथी वहां सोमप्रभा भी उस वृक्षपर चढ़के उस कन्याके आधे सिंहासन पर बैठगई समान कान्तिवाली उन दोनों को देखकर गुहचन्द्र को यह मालूम होताथा कि आजकी रात्रि को तीन चन्द्रमा निकले हैं यह देखकर बहुत आश्चर्य्यपूर्वक गुहचन्द्र शोचनेलगा कि क्या वह स्वप्न है अथवा भ्रांतिहै या यह दोनों बातें नहीं हैं सन्मार्गरूपी वृक्ष की सत्संगतिरूपी मञ्जरी का यह फूल फूलाहै अब इसमें उचित फल मुझको मिलेगा गुहचन्द्रके इस विचारके करनेके उपरान्त उनदोनों कन्याओंने दिव्य भोजन और दिव्य मद्यका पानकिया तदनन्तर सोमप्रभा बोली कि आज हमारे यहां एक बड़ा तेजस्वी ब्राह्मण आया है उससे मेरा चित्त डररहा है इसीसे मैं जातीहूं यहकहकर और उसकी आज्ञालेकर सोमप्रभा उसवृक्षसे उतरी यह देखकर वह दोनों अपने घरमें आन कर पहलेसे सोगये और फिर गुहचन्द्रकी स्त्री भी छिपकर आकर सोरही इसके उपरान्त उस ब्राह्मण ने एकान्त में गुहचन्द्र से कहा कि तुमने देखा कि यह सोमप्रभा दिव्य स्त्री है मानुषी स्त्री नहींहै

और इसकी बहिन को भी तुमने देखा तो अब बताओ कि दिव्य स्त्री मनुष्य से कैसे समागम चाहेगी अब तुम्हारे मनोरथ के सिद्ध करनेके लिये मैं तुम्हें एक मंत्र बताताहूं उसे दरवाज़ेपर लिखदेना और उसके सिद्ध करनेकी युक्तिभी तुम्हें बताताहूं जैसे केवल अग्नि भी जलासक्ती है तो वायुके संयोगमें तो अवश्यही जलावेगी इसमें क्या कहनाहै इसीप्रकार केवल मंत्रही मनोरथको सिद्ध करसक्ता है और उसमें श्रेष्ठ युक्तिभी होय तो क्या कहनाहै यह कहकर और गुहचन्द्र को युक्तिसमेत मंत्र बताकर प्रातःकाल वह ब्राह्मण की बताईहुई युक्ति करदी फिर इसके उपरान्त गुहचन्द्र बड़े उत्तम वस्त्र पहनकर अपनी स्त्री के सम्मुख किसी अन्य स्त्रीसे कुछ बात करनेलगा यह देखकर मंत्रसे खुलीहुई जिह्वावाली सोमप्रभाने उससे बुलाकर पूंछा कि यह स्त्री कौन है तब गुहचन्द्र यह मिथ्यावचन बोला कि यह स्त्री मुझसे बड़ा स्नेह करती है इससे आज मैं इस के यहां जाता हूं यह सुनकर तिरछीनज़र से देखकर और बायें हाथ से उसे रोककर सोमप्रभा बोली कि क्या तुमने इसीलिये यह ठाठ किये हैं इसके यहां तुम मत जाओ उससे तुम्हें क्या प्रयोजन है मेरे पास आओ क्योंकि मैं तुम्हारी स्त्री हूं तब पुलकावली तथा कम्पसेयुक्त और मंत्र के प्रभावसे वशीभूतहुई सोमप्रभा के ऐसे वचन सुनकर गुहचन्द्र उसे शयनस्थान में लेजाकर उस दिव्य सुखको भोगनेलगा जिसका कि वह मनोरथ भी नहीं करसक्ता था इसप्रकार मंत्रके प्रतापसे अत्यन्त स्नेहयुक्त सोमप्रभाको पाकर गुहचन्द्र सुखपूर्व्वक रहनेलगा इसरीति से यज्ञादिक बड़े २ पुण्य करनेवालोंके यहां शाप से आईहुई दिव्य स्त्रियांभी उनकी स्त्री होती हैं देवता तथा ब्राह्मणोंकी सेवा सज्जनों के लिये काम-

धेनुके समान होती है उससे कौन २ पदार्थ नहीं पासक्ता है और सामआदिक उपाय तो ऊपरके दिखावे हैं पातक बड़े २ उच्चपद वाले दिव्यपुरुषों को भी अपने पदसे नीचे ऐसे गिरादेते हैं जैसे कि वायु पुष्पोंको गिरादेती है ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे षड्विंशः प्रदीपः २६ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे सप्तविंशः प्रदीपः ॥

योयादृक्कुरुतेकर्मफलंप्राप्नोतितादृशम् ।
अहिल्याहिशिलाजातासहस्रभगवान्हरिः २७।

(अर्थ) जो जैसा कर्मकरे उसे फिर तैसेही फल मिलता है जैसे कुकर्म करनेपर मुनि गौतमजीके शापसे अहिल्या तो शिलाभई और इन्द्रके शरीर में सौभगभई—इति २७ ॥

पूर्व्वसमय में त्रिकालज्ञ महर्षि गौतमनाम मुनि की बड़ी रूपवती अहिल्या नाम स्त्री थी एकसमय उसके रूपसे मोहित होकर इन्द्रने एकान्त में उससे प्रार्थनाकी ठीक है कि स्वामीलोग धन ऐश्वर्यसे मदान्ध होकर अनुचित कार्य्यभी करने लगते हैं अहिल्यानेभी कामातुर होकर इन्द्रकी प्रार्थना स्वीकार करली इस बात को अपने प्रभावसे जानकर गौतममुनि वहां आये मुनिको आया जानकर इन्द्रने अपना बिल्लीकास्वरूप धारणकरलिया तब गौतमने अहिल्यासेपूछा कि यहां अभीकौनथा उसने यह सत्यवचन कहा कि यह मेरायार और बिल्लीथा यहसुनकर गौतमने हँसकर कहा कि ठीक है तेरा जार यहां अभीथा और यह शापदिया कि हे पापिनि! तू बहुत कालतक पत्थरकी शिला बनी रहैगी फिर उसके सत्यवचनों को समझकर यहभी कहदिया कि जब बन में श्रीरामचन्द्रजी आवैंगे तब उनके दर्शनसे तुम्हारा शाप छूटजायगा इसके उपरान्त गौ-

तमने इन्द्रको भी यह शापदिया कि तुमको भगका बड़ा लोभ है इससे तुम्हारे शरीर में हज़ार भगहोजायँगी और जब विश्वकर्मा तिलोत्तमानाम अप्सराको बनावेंगे तब उसे देखकर यहसब तुम्हारे शरीरकी भग नेत्र होजायँगी इसप्रकारसे शापदेके मुनि तप करने को चलेगये अहिल्या शिलाहोगई और इन्द्रका सम्पूर्ण शरीर भगोंसे व्याप्तहोगया इसप्रकारसे जो कुकर्म कोई करता है उसका फल उसको अवश्य मिलता है क्योंकि जो जैसा बीज बोता है उसको वैसाही फल मिलता है इसीसे महात्मालोग पराया विरोध कभी नहींकरते हैं और यही अच्छेलोगोंकाभी सदैव नियम रहताहै॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे सप्तविंशः प्रदीपः २७ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे अष्टाविंशःप्रदीपः ॥

निधिस्थमपिज्ञातंस्वंज्ञापयेज्जारएवसा ।
स्वैरिणीवप्रियस्याग्रेऽवदत्पत्याश्रुतेऽपितत् २८॥

(अर्थ) व्यभिचारिणी स्त्री गड़ा भयाभी निज अपना द्रव्य यार को बता देती है—जैसे कुलटा देवदासकी स्त्रीने निज यारको अपना गड़ाद्रव्य बताया और पति छिपा सुनताथा— २८ ॥

पाटलिपुत्रनाम नगर में किसी महाधनवान् बनिये का एक देवदासनामपुत्रथा वह पौण्ड्रवर्द्धननाम नगरसे किसी बड़ेधनवान् बनियेकी कन्या विवाह लायाथा पिताके मरजानेपर देवदास धीरे२ जुयेमें सब धन हारगया तब उसका श्वशुर अपनी कन्याको दरिद्र से बहुत दुखी देखकर वहांसे पौंड्रवर्द्धनमें अपने घरलेगया धीरे २ विपत्ति से व्याकुल देवदासभी रोज़गार करनेकी इच्छा से अपने श्वशुर से धन मांगनेको चला सायङ्कालके समय पौंड्रवर्द्धननगर में पहुँचकर अपनेको धूलमेंलिप्त बुरेवस्त्रधारण कियेहुये देखकर देव-

दासने शोचा कि इसप्रकारसे मैं अपने श्वशुरके यहां कैसे जाऊं क्योंकि कहाभी है कि अर्थात् मानीपुरुषका मरजाना अच्छा है परंतु अपने संबंधियों के आगे दीनता करना अच्छा नहीं यही शोचकर बाज़ार में जाके किसी दूकानके बाहर रात्रिके समय कमलके समान मुरझाकर वह बैठरहा क्षणभरकेही पीछे उसने देखा कि कोई जवान बनियां उस दूकानके किवाड़ खोलकर भीतर चलागया और क्षणभरकेही पीछे उसी दूकानमें एक स्त्री बहुत धीरे २ पैर रखती हुई जल्दी से उसी दूकान में चलीगई जब दीपक के उजियाले में देवदासनें दूकानके भीतर देखा तो उसे मालूम हुआ कि यह तो मेरीही स्त्री है तब किवाड़े बन्दकरके अन्यपुरुष के साथ संभोग करनेके लिये गईहुई अपनी स्त्रीको देखकर उसकी छाती में दुःखरूपी वज्रसा लगा और वह शोचनेलगा कि धनहीन पुरुषके शरीरको भी लोग हरलेते हैं तो स्त्रियोंका क्या कहना है क्योंकि स्त्रियां तो स्वभावही से बिजली के समान चंचल होती हैं व्यसनरूपी समुद्रमें डूबेहुये मनुष्योंको यह विपत्ति होती है और पिताके घरमें रहनेसे स्वतंत्र स्त्रियों की यह गति होती है ऐसा बिचार करते २ उसने बाहर से रतिके उपरान्त जारके साथमें लेटी हुई अपनी स्त्रीका वार्त्तालाप करना सा सुना तब वह द्वारे में कान लगाकर सुननेलगा उससमय उसकी स्त्री अपने यार बनिये से बोली कि सुनो आज मैं तुमसे स्नेहके बशहोकर अपने घरकी गुप्तबात कहतीहूं कि मेरे पतिके बीरवर्मा नाम प्रपितामह ने अपनेघरके आंगनके चारों कोनोंमें सुवर्णसे भरेहुये चारकलसे गाड़े थे और उसने अपनी बहू अर्थात् मेरी सास से व मेरी सासने मुझसे कहदिया इसप्रकार मेरे पति के यहां यहबात सासों के मुख

से क्रमपूर्व्वक सुनी जाती है मैंने अपने पतिके दरिद्री होजानेपर भी यह वृत्तान्त उससे नहीं कहा क्योंकि उस ज्वारी से मुझे द्वेषथा और तुम मेरे परमप्रियहो इससे यह मैंने तुमसे कहदिया तो तुम मेरे पतिके पास जाकर उसे कुछ धन देकर वह घर खरीदलो और वह सोना निकालकर यहां आकर मेरे साथ आनन्दकरो उसके यह वचन सुनकर उसका यार उसपर विना परिश्रमके ही इतना धन मिलजानेकी आशासे बहुत प्रसन्नहुआ फिर देवदास भी उस दुष्ट स्त्री के वचनरूपी बाणों से अत्यन्त खेदितहुआ और धन मिलने की आशा उससमय उसके हृदय में कीलितसी होगई इसके उप-रान्त वह शीघ्रही अपने पाटलिपुत्रनगर में चलाआया और घरमें आकर उसने सब धन खोदलिया इसके उपरान्त उसकी स्त्रीका यार वही बनियां धनके लोभसे रोज़गारके बहाने वहां आया और देव-दास किसी और घरमें अपना कारखाना जमाकर शीघ्रही अपनी स्त्री को युक्तिपूर्व्वक अपने श्वशुर के घर से अपने घर ले आया ऐसा करने के उपरान्त उसकी स्त्री के यार बनियें ने वहां धन न पाकर देवदास से आकर कहा कि यह तुम्हारा घर बहुत पुराना है इससे मुझे नहीं अच्छा मालूम होता तो तुम हमारा धन हमें देदो और अपना मकान लेलो जब देवदास ने उसके कहने को मंजूर न किया तब वह दोनों लड़ते हुए राजा के यहां गये वहां जाकर देवदासने हृदय में स्थित विषके समान दुस्सह अपनी स्त्री का सम्पूर्णवृत्तान्त राजाके आगे कहदिया तब राजाने उसकी स्त्री को बुलाके और सब बातोंका निश्चय करके पराई स्त्रीके चाहनेवाले उस दुष्ट बनियें का सब धन छीनलिया और देवदासभी उस दुष्ट अपनी स्त्रीकी नाक काटके और किसी अन्य स्त्रीसे बिवाह करके

सुखपूर्वक भोग करनेलगा इसप्रकार धर्म से उपार्जन कीहुई लक्ष्मी अनेक पुश्तोंतक नष्ट नहीं होती और अधर्म्म से उपार्जन कीहुई लक्ष्मी पालेके जलके कणों की समान शीघ्रनष्ट होनेवाली होती है इससे मनुष्यको धर्म से धनका उपार्जन करना चाहिये ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेऽष्टाविंशःप्रदीपः ॥ २८ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकोनत्रिंशःप्रदीपः ॥ २९ ॥

भद्रकृत्प्राप्नुयाद्भद्रमभद्रंचाप्यभद्रकृत् ॥
फलभूतिंहन्तुमनाः स्वसुतंन्यवधीन्नृपः २९ ॥

(अर्थ) नेकी करनेवाला नेकी को पाता और बदी करे वह बदी पाता है जैसे फलभूतिको मारने के विचार से राजा ने निज पुत्रका घात किया २९ ॥

पद्मनाम देश में अग्निदत्तनाम एक बड़ा प्रसिद्ध ब्राह्मण रहताथा राजाने उसे गांव दिये थे उसीसे उसका निर्वाहहोताथा उस ब्राह्मणके दो पुत्रथे बड़ेका नाम सोमदत्त था और छोटे का नाम वैश्वानरदत्तथा बड़ा भाई बहुत मूर्ख तथा महादुष्टथा और छोटाभाई विद्वान् नम्र तथा सदैव विद्या पढ़नेवालाथा अग्निदत्त के मरजाने पर उन दोनों ने विवाह करके अपने पिताका गांव आदिक धन आधा २ बांट लिया उनमें से छोटे भाईका तो राजाने बड़ा आदर किया और बड़ा भाई सोमदत्त चञ्चलता से क्षत्रियों के से कर्म्म करनेलगा एक समय शूद्रों के साथ बैठेहुए सोमदत्त को देखकर उसके पिता के मित्र किसीब्राह्मण ने कहा कि हे मूर्ख! तू अग्निदत्त का पुत्र होकर शूद्रों के से कर्म्म करताहै और राजाके यहां अपने छोटेभाई की ऐसी प्रतिष्ठादेखकर तुझे लज्जाभी नहीं आती यह सुनकर सोमदत्त ने क्रोधसे उस ब्राह्मणका कुछ गौरव न मा-

लकर एक लात उसके मारी तब लात मारने से क्रोधित हुआ ब्राह्मण अन्य दो तीन ब्राह्मणों को गवाह करके राजा से जाकर पुकारा राजाने ब्राह्मण के वचन सुनकर सोमदत्तके पकड़ने को अपने सिपाही भेजे उन सिपाहियोंको सोमदत्तके शस्त्रधारी मित्रों ने मारा तब राजा ने बहुतसी सेना भेजकर सोमदत्त को बँधवा मँगवाया और क्रोधसे सोमदत्तको शूली देने का हुक्म दे दिया शूली पर चढ़ाया गया सोमदत्त शूलीपरसे पृथ्वी पर ऐसे गिर-पड़ा कि मानों किसीने उसे वहांसे उठाकर पटक दिया और उसे फिर शूली पर चढ़ाने के लिये उद्यत हुए बधिक लोग आंखों से अन्धे होगये ठीकहै जिसके लिये कुछ अच्छा होनेवाला होता है उसका भाग्यही उसकी रक्षा करता है उससमय इस वृत्तान्त को सुनकर प्रसन्नहुए राजा ने सोमदत्त के छोटेभाई के कहने से उसे शूली से छुड़वा दिया इसके उपरान्त मृत्युसे बचाहुआ सोमदत्त राजाके अनादरसे अपने घरके लोगोंको लेकर अन्यदेश में जाने की इच्छाकरनेलगा यह बात सुनकर उसके भाईबन्धोंने उसेपरदेश जानेसे रोका तब सोमदत्त राजाके दियेहुए गांवोंका हिस्सा छोड़ के वहीं रहनेलगा—इसके उपरान्त किसी अन्य रोज़गारके न होने से वह खेती के करनेके विचारसे खेतीके योग्य पृथ्वी ढूंढ़नेके लिये किसी अच्छेदिन वनको गया वनमें जाकर उसे फल होनेके योग्य बड़ी सुन्दर पृथ्वी मिली और उस पृथ्वी के बीचमें एक बड़ाभारी पीपलका वृक्ष उसको दिखाईपड़ा उस वृक्षकी ऐसी शीतल सघन छायाथी कि उसके नीचे सदैव वर्षाऋतुसी बनीरहतीथी उस वृक्षको देखकर बहुतप्रसन्नहुए सोमदत्तने कहा कि जो कोई देवता इसवृक्ष का मालिकहै उसीका मैं भक्तहूं और प्रदक्षिणा करके उस वृक्षको

प्रणाम किया इसके उपरान्त मङ्गलाचार करके और उस वृक्ष के नीचे बलिदान करके सोमदत्त दो बैलों को जोड़कर वहीं खेती करने लगा। सोमदत्त उसी वृक्षके नीचे रहा करताथा और उसकी स्त्री वहीं उसको भोजन लेआया करती थी समय पाकर जब उस का सब नाज पक गया तब किसी अन्यदेश के राजा ने आकर उस पृथ्वी को उजाड़ दिया फिर राजा की सेना के चले जाने पर और नाजके नष्ट होजाने पर रोती हुई अपनी स्त्री को वीर सोमदत्त ने समझाकर जो कुछ नाज बचा था सो सब दे दिया और पहले के समान बलिदान करके उसीवृक्ष के नीचे रहा ठीक है ऐसाही कहाहै आपत्तियोंमें अधिक दृढ़ होना धीरों का स्वभावहै— इसके उपरान्त रात्रिके समय उसीवृक्षके नीचे अकेले बैठेहुए और चिन्तासे जागते हुए सोमदत्तको उसी वृक्षपरसे वह वचन सुनाई पड़े कि हे सोमदत्त! तुम्हारे ऊपर मैं प्रसन्नहूं तो तुम श्रीकण्ठदेशमें आदित्यप्रभनाम राजाके राज्यमें जाओ वहां जाकर राजाके द्वार पर सन्ध्या और अग्निहोत्रके मन्त्रों को पढ़कर यह वचन कहना कि मैं फलभूति नाम ब्राह्मण हूं जो कुछ मैं कहता हूं वह सुनो— नेकी करनेवालोंको नेकी और बदी करनेवालोंको बदी मिलती है ऐसा कहने से वहां तुमको बड़ा ऐश्वर्य्य मिलेगा सन्ध्या तथा अग्निहोत्रके मन्त्र तुम मुझीसे अभी पढ़लो मैं एक यक्षहूं यह कह कर अपने प्रभावसे सोमदत्त को वह मन्त्र पढ़ाकर उस वृक्षसे वह वाणी निवृत्त होगई प्रातःकाल सोमदत्त यक्षके कहने से अपना फलभूतिनाम रखकर स्त्रीसमेत वहां से चला मार्ग्ग में विषम और टेढ़े बेढ़े बनोंको दुर्दशाओं के समान उल्लङ्घन करके वह श्रीकण्ठ देशमें पहुँचा वहां जाकर सन्ध्या तथा अग्निहोत्रके मन्त्र पढ़कर

राजा के द्वारपर अपना फलभूति नाम कह कर यह वचन कहने लगा यह वचन सुनकर लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ और बारं वार वही वचन कहते हुए फलभूति को जानकर राजा आदित्य-प्रभने बड़े आश्चर्य से बुलाया वहां जाकरभी वह वारंवार राजा के सामने वही वचन कहनेलगा यह सुनकर राजा अपनी समाज-समेत हँसने लगा और राजा ने प्रसन्न होकर उसे वस्त्र आभूषणों समेत कुछ गांव दिये ठीक है बड़ेलोगों की प्रसन्नता व्यर्थ नहीं होती है–इसप्रकार से उससमय यक्षके अनुग्रहसे दुर्बल फलभूति को राजाका दियाहुआ बहुतसा धनमिला सदैव वही वचन कहता फलभूति राजाका बड़ा प्रिय होगया क्योंकि राजालोगों का चित्त ऐसी २ आनन्दकी बातोंका अत्यन्त रसिक होताहै क्रमसे राजा के यहां महलों में और सम्पूर्ण राज्यभर में उस फलभूतिका बड़ा आदर इसलिये होनेलगा कि यह राजाका परमप्रिय है एक समय बनसे शिकार खेलकर आयाहुआ राजा आदित्यप्रभ अपने महल में गया और द्वारपालों को घबराने से सन्देहयुक्त राजा ने भीतरजाकर देखा कि रानी कुवलयावती नग्न बालखोलेहुए नेत्रों को बन्दकियेहुए सिन्दूरका बड़ा तिलक लगायेहुए जप करती हुई विचित्र रंगों से बनीहुई चौक में बैठी हुई और रुधिर मद्य तथा मांससे उग्र बलिदान करती हुई किसी देवता का पूजन कररही थी राजाके आने पर घबराके रानी ने वस्त्र पहन लिये और राजा के पूंछने पर अभय मांगकर रानी बोली कि आपही के उदय के वास्ते यह पूजन कररही थी इस विषयमें शास्त्रका वृत्तान्त और अपनी सिद्धि आपको सुनाती हूं पहले मैं आपके पिताके यहां जब कन्याथी तब वसन्तके उत्सवमें मेरी सखियों ने बगीचे में मु-

भसे कहा कि इस बगीचेमें वृक्षोंके मण्डलके वीचमें देवताओं के भी देवता वरदायक गणेशजी रहते हैं उनका प्रभाव हमलोगों ने देखाहै उन वरदायक गणेशजी का जो तुम भक्तिपूर्वक पूजन करो तो तुम्हें शीघ्रही निर्विघ्नतासे योग्य पति मिलजाय यह सुन कर मैंने भोलेपन से अपनी सखियों से पूछा क्या गणेशजी के पूजनसे कन्याओंको पतिमिलते हैं तब वह बोली कि तुम इतनी ही बात क्या कहतीहो इससंसारमें गणेशजी के पूजनकेबिना मनुष्य को कोईभी सिद्धि नहीं मिलसक्ती है सुनो हम तुम्हारे आगे गणेश जीका प्रभाव वर्णन करती हैं यह कहकर वह सखियां यह कथाकहने लगीं पूर्व्वकालमें जिससमय तारकासुरसे हारेहुए इन्द्र श्रीशिवजी के पुत्रको अपना सेनापति वनायाचाहतेथे और शिवजीकीदृष्टिसे कामदेव भस्म होगया था उससमय बड़ा तप करनेवाले ऊर्ध्वरेता महादेवजीको पार्वतीजीने बड़ा घोर तपकरके प्रसन्नकियाथा और प्रसन्नकरके उन्हींके साथ अपना विवाह कियाथा बिवाहके उपरान्त पार्वतीजीने श्रीमहादेवजीसे यह चाहा कि मेरे एक पुत्रहोय और कामदेव फिर जीआवे परन्तु पार्व्वतीजीने अपने कार्य्य के सिद्ध होने के लिये विघ्नराज गणेशजी का स्मरण नहीं कियाथा इसके उपरान्त इस मनोरथ के मांगनेवाली पार्वती से श्रीशिवजीने कहा कि हे प्रिये! पहले ब्रह्माके मनसे कामदेव उत्पन्न हुआ और उसने उत्पन्न होतेही अहंकार से यह बात कही कि किसको दलनकरूं तब ब्रह्माने उसका नाम कन्दर्प रखदिया और कहा कि हे पुत्र! जो तुम बड़े अभिमानीहो तो केवल तुम श्रीशिवजी के इस कहनेपर भी वह मूर्ख मेरे चित्त बिगाड़ने को आया तव मैंने उसे भस्मकर दिया इसकारण से अब वह सन्देह उत्पन्न नहीं होसक्ता और मैं

तुम्हारे अपनी शक्तिसे पुत्र उत्पन्न करूंगा क्योंकि संसारी जीवोंके समान मेरे कामके उत्साहसे पुत्र नहीं होता पार्वती से महादेवजी के इसवचनको कहतेही इन्द्रसमेत ब्रह्मा वहां आकर प्रकटहुए और स्तुतिकरके तारकासुरके मारनेकी प्रार्थनाकी तब शिवजीने पार्वती जी में अपना औरसपुत्र उत्पन्न करना स्वीकार किया और ब्रह्मा के कहने से सृष्टिके नाशहोने की रक्षा के लिये लोगों के चित्तमें कामदेवका उत्पन्नहोना स्वीकारकिया और अपने भी चित्तमें महादेवजी ने कामको अवकाशदिया इसबात से प्रसन्नहोकर ब्रह्मा जी चलेगये और पार्वतीजीभी प्रसन्न होगई इसकेपीछे बहुतकाल व्यतीत होजानेपर एकसमय एकान्त में श्रीशिवजी पार्वतीजीसे रति करनेलगे जब सैकड़ों वर्षके व्यतीत होजानेपर भी उनकी रति नहीं समाप्त हुई तब भयसे तीनोंलोक कांपनेलगे उससमय संसार के नाश होजाने के भयसे सम्पूर्ण देवतालोग ब्रह्माकी आज्ञा से श्रीशिवजीकी रतिमें विघ्न करनेकेलिये अग्निका स्मरण करनेलगे स्मरण करतेही अग्नि श्रीशिवजीको अधृष्य (दबानेके अयोग्य) समझकर देवतालोगों से भागकर जलमें छिपगये तब ढूंढ़ते हुए देवतालोगों को मेढ़कों ने जलमें छिपेहुए अग्निदेवता को बता दिया क्योंकि वह उनके तेजसे जलेजातेथे तब मेढ़कोंको यह शाप देकर कि तुम लोगों के वचन प्रकट नहीं होंगे अग्निदेवता मन्दराचलपर्व्वत पर चलेगये वहां वृक्षके खोखले में घोंघे का स्वरूप रखकर बैठेहुए अग्निदेवको हाथी और तोतोंने देवतालोगोंको बतादिया तब अग्निदेवतालोगों को दर्शनदिये और शापसे हाथी तथा तोतों की जिह्वा विपरीत करदी फिर देवतालोगों के स्तुति करनेपर उनके कार्य्य को स्वीकार करके अग्निदेव ने कैलासपर

जाके अपनी गरमी से श्रीशिवजी को रति से बन्दकरदिया और शापके भयसे प्रणाम करके देवतालोगों का कार्य्य श्रीशिवजी से कहदिया तब महादेवजी ने अपना वीर्य्य अग्निमें छोड़दिया उस वीर्य्यको अग्नि न धारण करसके न पार्वतीजी धारण करसकीं तब पार्वतीजीने खेदसे व्याकुल होकर महादेवजी से कहा कि आपसे मुझको पुत्रकी प्राप्ति नहीं हुई यह सुनकर श्रीशिवजी बोले कि तुमने विघ्नराज गणेशजी का पूजन नहीं कियाथा इसीसे तुम्हारे गर्भ में विघ्न होगया अब तुम गणेशजीका पूजनकरो तो अग्निमें पड़ेहुए वीर्य से पुत्र होजाय महादेवजी के यह कहने से पार्वतीजी ने गणेशजी का पूजन किया तब महादेवजी के वीर्य्य से अग्निके भी गर्भरहा शिवजीके तेजको धारण करतेहुए अग्निदेवकी दिन में भी ऐसी शोभा होतीथी कि मानों इससमयमें भी सूर्यने अग्नि में प्रवेश कियाहै अग्निने शिवजी के महादुस्सह तेजको गंगाजी में वमन कर दिया और गंगाजीने शिवजीकी आज्ञा से सुमेरुपर्वत पर अग्निकुण्ड में उसे छोड़दिया वहां महादेवजी के गणों से रक्षा कियाहुआ वह गर्भ हजार वर्ष के उपरान्त छःमुखका कुमार होकर उस कुण्ड में से निकला इसके उपरान्त पार्व्वती जी की भेजीहुई छः कृत्तिकाओं के स्तनों के दुग्धको अपने छओंमुख से पानकरके थोड़ेही दिनों में वह बालक बड़ा होगया इसी बीच में तारकासुर से हारेहुए इन्द्र युद्ध छोड़कर दुर्गम सुमेरुपर्व्वत के शिखरों पर आकर रहनेलगे और ऋषियोंसमेत सम्पूर्णदेवता लोग इन्हीं स्वामिकार्त्तिकजी की शरण में आये जब स्वामिकार्त्तिकने उनकी रक्षाकी तब सब उन्हींके पास उन्हें घेरकर रहनेलगे यहबात जानकर इन्द्र समझा कि अब तो यह हमारा राज्यही

छीन लेंगे यह समझकर क्रोध से इन्द्र स्वामिकार्त्तिक के पास जा-
कर उनसे लड़ने लगे इन्द्रके वज्रके लगने से स्वामिकार्त्तिक के
शरीर से शाख और विशाख नाम महातेजस्वी दोपुत्र उत्पन्न
हुए तब पुत्रोंसमेत स्वामिकार्त्तिकने इन्द्रको जीतलिया यह बात
जानकर श्रीशिवजी ने वहां आके स्वामिकार्त्तिक को युद्धसे निवृ-
त्तकरके यह शिक्षाकी कि तुम ताड़कासुरके मारने को और इन्द्र
के राज्यकी रक्षा करने को उत्पन्नहुएहो इससे अपने कार्य्य को
करो इसके उपरान्त प्रसन्नहुए इन्द्रने उससमय स्वामिकार्त्तिक को
अपनी सेनाका सेनापति बनाने के लिये अभिषेक करने का
प्रारम्भ किया जिससमय इन्द्रने अपने हाथ से अभिषेक करने के
निमित्त जलका कलश उठाया उससमय उनकी भुजा स्तब्ध
(जकड़गई) होगई इससे इन्द्रको बड़ा क्लेशहुआ तब श्रीशिवजी
ने इन्द्रसे कहा कि तुमने सेनापति बनाने के समय गणेशजीका
पूजन नहीं किया इसी से यह विघ्न हुआहै अब तुम गणेशजीका
पूजन करो यह सुनकर इन्द्रने गणेशजीका पूजन किया और
पूजन करतेही इन्द्रकी भुजा अच्छी होगई और उन्हों ने अच्छे
प्रकारसे अपने सेनापतिका अभिषेक किया इसके उपरान्त शीघ्रही
ताड़कासुरको युद्ध करके मारडाला तब सम्पूर्ण देवता बड़े प्रसन्न
हुए और श्रीपार्वतीजी को भी ऐसा वीरपुत्र प्राप्त होनेसे बड़ी प्रस-
न्नताहुई इसप्रकार से हे राजकन्या ! देवतालोगों को भी गणेश
जी के पूजन बिना कोई सिद्धि नहीं होती इससे तुम योग्यपति
के मिलने के अर्थ गणेशजी का पूजनकरो सखियों के यह बचन
सुनकर मैंने बगीचे के एकान्त स्थानमें रहनेवाले विघ्नहर्त्ता श्री
गणेशजीका पूजनकिया पूजनके उपरान्त मैंने देखा कि अक-

स्मात् मेरी सखियां अपनी सिद्धिसे उड़कर आकाश में विहारकर रही हैं यह देखकर मैंने उनको आकाशसे बुलाकर पूंछा कि तुम को यह सिद्धि कैसेहुई तब वह बोलीं कि मनुष्य के मांसको खाने से डाकिनी के मंत्र को जपकर यह सिद्धियां होती हैं इस मंत्रकी उपदेश करनेवाली एक कालरात्रिनाम ब्राह्मणी हमारी गुरुहै सखियों के यह वचन सुनकर आकाश में चलनेकी सिद्धिके लोभ से और मनुष्य के मांस के खाने के भयसे मैं क्षणभर बहुत सन्देह युक्तरही फिर सिद्धिके लोभसे मैंने अपनी सखियों से कहा कि उस मंत्रका उपदेश मुझे भी दिलवादो मेरे यह कहनेसे सखियां उसी समय बड़े भयङ्कर रूपवाली कालरात्रिको वहीं बुलालाई मिली हुई भृकुटी ढीड़युक्त नेत्रवाली टेढ़ी और चपटी नाकवाली स्थूल कपोलवाली भयंकर ओष्ठवाली बड़े दांतवाली बड़ी लम्बी गर्दन वाली लम्बे स्तनवाली बड़े उदरवाली और फटेहुए तथा फूलेहुए पैरवाली उसकालरात्रि को देखकर यह मालूम होताथा कि मानों ब्रह्माने बुरी चेष्टा बनानेकी सम्पूर्ण चतुरता इसी में खतमकरदीनी है उसे आई देखकर मैं उसके पैरों में गिरी तब उसने स्नान कर-वाके मुझसे प्रथम तो गणेशजी का पूजन करवाया और वस्त्र उतरवाके मंडल के भीतर मुझे ले जाकर भैरवजी का पूजन कर-वाया इसके उपरान्त मेरा अभिषेककरके उसने अपने मंत्रों का उप-देश मुझे करदिया और पूजनमें बलिदान कियाहुआ मनुष्यका मांस मुझे खाने को दिया मंत्रों को लेकर और मनुष्यके मांस को खाकर उसीसमय मैं नग्नही अपनी सखियों समेत आकाश में उड़-गई फिर वहां थोड़ी देरतक विहारकरके अपनी गुरानी की आज्ञा से उतरकर मैं अपने महल में चलीगई हे राजा ! इसप्रकार से मैं

बाल्यावस्था में भी डाकिनियों के साथ रहा करती थी उससमय हमने मिलमिलकर बहुत से मनुष्य खाये थे हे महाराज! इसी कथा के बीच में मैं आपको एक दूसरी कथा सुनाती हूं कि उस कालरात्रिनामब्राह्मणी का विष्णुस्वामी नाम पतिथा वह उस देश भर में वेदविद्या का बड़ा जाननेवाला था इससे अनेक देशों से आये हुए विद्यार्थियों को पढ़ाया करता था सम्पूर्ण शिष्यों में से एक सुन्दरक नाम तरुण शिष्य बड़ा रूपवान् तथा शीलवान् था एक समय विष्णुस्वामी के कहीं चले जानेपर कालरात्रि ने काम से व्याकुल होकर एकान्त में सुन्दरक से अपने साथ भोग करने को कहा कामदेव मानों कुरूप वालोंको हँसी का खिलौना बनाकर उनके साथ खेलता था क्योंकि कालरात्रि ने अपने स्वरूप को विनादेखे सुन्दरकके साथ भोगकरनेकी इच्छाकी सुन्दरकने कालरात्रिके बहुत हठ करनेपर भी ऐसे बुरेकाम करनेकी इच्छा नहींकी ठीकहै स्त्रियां चाहैं जैसी बुरी चेष्टाकरें परन्तु सज्जन पुरुषों का चित्त कभी नहीं डुलता इसके उपरान्त सुन्दरक के चले जानेपर कालरात्रिने क्रोधित होकर दांतों से और नखों से अपना सम्पूर्ण अङ्ग घायल करडाला और बालोंको तथा वस्त्रोंको फैलायेहुए रोती हुई तबतक बैठीरही जबतक कि विष्णुस्वामी घरको आये जब वह घर में आये तो उनसे बोली कि हे स्वामी! आज सुन्दरकने जबरदस्ती से मेरी क्या दशाकी है यह सुनकर उस समय उपाध्याय को बड़ा क्रोधहुआ ठीक है (स्त्रियोंपर विश्वास करने से विद्वान् लोगोंका भी विचार नष्ट होजाता है) सायङ्कालके समय जब सुन्दरक आया तब विष्णुस्वामी ने अपने शिष्यों समेत दौड़कर घूसोंसे लातोंसे और लाठियों से उसे खूबपीटा जब मारते २ वह बेहोश होगया तब

रात्रिके समय उसको बेपरवाही से अपने शिष्यों के हाथोंसे पकड़वा के बाहर सड़कपर डलवादिया इसके उपरान्त उस समय की वायु के लगने से सुन्दरक धीरे २ होशमें आया और अपनी यह दशा देखकर बिचारने लगा कि अरे जैसे बहुत तेजवायु बालूयुक्त तड़ागों को गँदला करदेती है उसीप्रकार स्त्रियोंकी प्रेरणा अधिक रजोगुण वाले पुरुषोंके चित्तको बिगाड़देती है क्योंकि वृद्ध तथा विद्वान् भी उपाध्याय ने बिना बिचारे अत्यन्त क्रोधपूर्वक इतना बिरोध मुझसे किया अथवा सृष्टिकी आदिसेही विद्वान् ब्राह्मणों के भी काम और मोक्षके द्वारके स्वाभाविक रोकनेवाले बेलन हैं देखो पहले भी देव-दारु बनमें अपनी स्त्रियोंके बिगड़ने के सन्देह से मुनि लोग क्या शिवजी पर क्रुद्ध नहींहुए और उन ऋषिलोगों ने क्षपणक(यती) का रूप धरके पार्वती जीको ऋषियों का भी शान्त न होना दिखाते हुए महादेवजी को नहीं जाना फिर शाप देनेपर तीनों लोकों के नाश करनेवाले महादेवजीको पहचान कर उन्हींकी शरणमें गये तो इसप्रकार से काम क्रोधादि छः शत्रुओंके द्वारा मुनि लोग भी मोहित होजाते हैं तो वेदपाठी ब्राह्मणों का क्या कहना है रात्रिके समय इसप्रकार ध्यान करताहुआ वह सुन्दरक चोरों के भयसे शून्य गोवाट नाम महल में चढ़कर बैठरहा जबतक कि वह उसमहल में छिपकर कहीं बैठने को ही था तबतक उसी महल में वह कालरात्रि चक्रको हाथमें लिये हुए भयङ्कर फूत्कारों को छोड़ती हुई नेत्र तथा मुखसे अग्निकी लपटें निकालती हुई और बहुतसी डाकिनियोंको अपने साथमें लियेहुए आई उस प्रकार से आई हुई कालरात्रि को देखकर सुन्दरक ने भयसे राक्षसोंके नाश करनेवाले मंत्रोंका स्म-रणकिया उन मन्त्रों से मोहित हुई कालरात्रि ने एकान्त में भयसे

अंगों को सकोड़े हुए बैठेहुए सुन्दरकको नहीं देखा इसके उपरान्त कालरात्रि उड़ने के मन्त्रको जपकर महल समेत आकाश में उड़ गई सुन्दरकने वह मंत्र सुनकर याद करलिया और कालरात्रि उस महल समेत शीघ्रही उज्जयिनीको चलीगई उज्जयिनी में जाकर शाकवाट (शाककी मंडी) में उस महलको मंत्रके द्वारा उतार कर कालरात्रि डाकिनियों समेत श्मशान भूमि में क्रीड़ा करने चली गई और उससमय क्षुधासे व्याकुल सुन्दरकने महलसे शाकवाटमें जाकर उखाड़ी हुई मूली खाई और मूलियों के द्वारा अपनी क्षुधाको निवृत्तकरके वह गोवाटमें जाके उसीप्रकारसे बैठरहा इसके उपरान्त कालरात्रि श्मशान से लौटी और उसी गोवाट पर चढ़के मंत्रों के द्वारा आकाश मार्ग्ग में उड़ी और अपने यहां आकर गोवाट को जहां से लिया था वहीं रखकर और उन डाकिनियों को विदाकरके शयन के स्थान में चलीगई सुन्दरक भी आश्चर्य्य पूर्व्वक उस रात्रिको व्यतीत करके प्रातःकाल गोवाट से उठकर अपने मित्रों के पास चलागया वहां अपने मित्रों से सम्पूर्ण वृत्तान्त कहकर विदेश जाने की इच्छा करनेलगा तब मित्रों ने समझाकर उसे अपने ही पास रक्खा उपाध्यायके घरको छोड़कर यज्ञगृह में भोजन करताहुआ सुन्दरक अपने मित्रों के साथ विहार करता हुआ स्वच्छन्द रहनेलगा एक समय घरकेलिये किसी चीज़के खरीदने के लिये बाज़ार में गईहुई कालरात्रि ने सुन्दरकको देखा उससमयभी वह कामसे पीड़ित होकर उससे बोली कि हे सुन्दरक तू अबभी मेरे साथ भोगकर क्योंकि मेरे प्राण तेरेही आधीन हैं उसके यह बचन सुनकर उस साधु सुन्दरकने कहा कि तुम ऐसा मत कहो मेरा यह धर्म नहीं है क्योंकि तुम गुरुपत्नी होनेसे मेरी माता

के समानहो तब कालरात्रि बोली कि जो तुम धर्मको जानते हो तो मेरे प्राण रक्खो क्योंकि प्राणदान से बढ़कर कोई धर्म नहीं है यह सुनकर सुन्दरक ने कहा हे माता! ऐसा विचार अपने हृदयमें कभी मत करो भला गुरुकी स्त्रीके साथ भोग करनाभी कहीं धर्म होसक्ताहै इसप्रकार सुन्दरकसे निषेध कीहुई क्रोधसे सुन्दरक को डराती हुई कालरात्रि अपने ही हाथसे अपने वस्त्र फाड़कर घरमें आई और घर में अपने पति को अपना वस्त्र दिखाकर बोली कि देखो आज सुन्दरक ने दौड़कर मेरा वस्त्र फाड़डाला यह सुनकर उसके पतिने यज्ञशाला में जाकर यह कहकर कि यह सुन्दरक भोजनके देने योग्य नहीं है बल्कि मारने के योग्य है उसका भोजन बन्द करवादिया इसके उपरान्त सुन्दरक बड़े खेदसे परदेश जाने के लिये फिर उद्यत हुआ और गोबाट नाम महल में सीखाहुआ आकाश में उड़ने का मन्त्र तो उसे यादही था परन्तु उतरने का मन्त्र कुछ भूलगया था उसी को सीखने के लिये वह उसी शून्य गोबाटमें फिर जाकर पहलेही के समान बैठा तब कालरात्रि वहां आकर महलसमेत उड़कर उज्जयिनी को चली गई उज्जयिनी में गोबाटको मन्त्रद्वारा शाकवाट में उतारकर क्रीड़ा करने के लिये श्मशान को चलीगई सुन्दरक ने उस मन्त्रको दूसरी बार भी सुन कर नहीं याद किया क्योंकि गुरुकी आज्ञाके बिना सम्पूर्ण सिद्धि नहीं होसक्ती इसके उपरान्त सुन्दरक ने कुछ मूली खाई और कुछ मूली घर लाने के लिये गोबाट में उठाकर रखलीं और वहीं छिप कर बैठरहा तब कालरात्रि वहां आकर गोबाटसमेत उड़ी और गोबाटको उसके ठीक स्थानमें रखकर अपने घरको चली गई प्रातःकाल सुन्दरक भी गोबाट से निकलकर उन मूलियोंको बाजारमें

इसलिये वेंचने को चला कि इनको वेंचकर जो कुछ धन मिले उससे भोजन को लाऊं उसे मूली वेंचते हुए देखकर मालव देश के राजसेवकों ने विना मूल्य दियेही अपने देश की उत्पन्न हुई मूलियां उससे छीनलीनी जब वह उन से लड़ने लगा तो वह उसे बांधकर राजा के यहां लेगये और उसके मित्र भी उसके पीछे २ उसके साथ चलेगये वहां जाकर उन मालव देशवालों ने राजासे कहा कि हे राजा हम लोग इससे पूछते हैं कि तू मालव देशसे मूली लाकर कान्यकुब्जदेशमें सदैव कैसे वेंचा करता है इसका उत्तर तो यह कुछ नहीं देताहै परन्तु ढेले मारताहै—यह अ-द्भुत बात सुनकर राजाने उससे पूछा कि यह कैसी बातहै तब उ-सके मित्र बोले कि हे राजा जो हम लोगों समेत इसे महल पर चढ़ाइये तो यह सब बात कहैगा नहीं तो नहीं कहैगा—राजा ने उसी समय उसको मित्रों समेत महलपर चढ़ा दिया तब सुन्दरक महल समेत राजाके देखतेही देखते आकाश में उड़गया सुन्दरक अपने मित्रों समेत धीरे २ प्रयाग पहुँचा और वहां थककर उसने किसी राजाको गंगास्नान करतेहुए देखा वहां मकान को आ-काशमेंही रोककर वह गंगाजीमें कूदपड़ा लोगोंको उसके देखनेसे बड़ा आश्चर्य हुआ और वह उसी स्नान करनेवाले राजाके पास चलागया राजाने प्रणाम करके उससे पूछा कि तुम कौनहो और किसलिये आकाश से उतरेहो तब उसने कहा कि मैं सुन्दरकनाम महादेवजीका गणहूं मनुष्योंकेसे भोग करनेको मैं महादेवजी की आज्ञासे तुम्हारे पास आयाहूं यह सुनकर उसके वचन सत्य जानकर राजाने सम्पूर्ण अन्नोंसेयुक्त रत्नोंसे पूर्ण एक पुरस्त्री तथा राज्यके सब अंगोंसमेत उसे देदिया वह उसपुर में जाकर पुरसमेत आकाश में

उड़गया और अपने साथियोंसमेत अपनीइच्छासे विहारकरनेलगा सुवर्ण के पलंगपर सोताहुआ चामरोंसे मोरछल कियाहुआ और श्रेष्ठस्त्रियों से भोगकियाहुआ सुन्दरक आकाशहीमें इन्द्रकेसे सुख भोगनेलगा एक समय कोई सिद्ध आकाशमार्ग से चला जाता था उसकी इस सुन्दरक ने बड़ी स्तुतिकी तब उसने प्रसन्न होकर इसको आकाश से उतरने का मंत्र दिया आकाश से उतरने का मंत्र पाकर वह पुर समेत अपने कान्यकुब्ज देश में आकाश से उतरा बड़े धनाढ्य पुर समेत आकाश से उतरे हुए उसे जानकर राजा बड़े आश्चर्य्य से आपही उसके पास आया राजाने उसे पहिंचानकर जब उससे पूछा तो उसने अपना और कालरात्रि का सब वृत्तान्त ठीक २ राजासे कहदिया यह सुनकर राजाने कालरात्रिको बुलाकर पूछा तो उसने निर्भय होकर अपना सम्पूर्ण दोष स्वीकार करलिया यह सुनकर जब राजा कुपितहोकर उसके कान काटने को उद्यत हुआ तो पकड़ने पर भी सब के देखते २ अन्तर्द्धानहोगई राजाने तबसे कालरात्रिका अपने देशमें रहना निषेध करदिया और राजाके पूजनको ग्रहणकरके सुन्दरकभी आकाश को चलागया रानी कुवलयावली इसप्रकार राजा आदित्यप्रभ से कहकर फिर कहनेलगी कि हेस्वामी डाकिनियोंके मंत्रकीसिद्धियां इसीप्रकार की होती हैं और यह वृत्तान्त मेरे पिता के देशभर में प्रसिद्धहै मैंने यह तो आपसे कहा कि मैं कालरात्रि की शिष्यहूं परंतु पतिव्रता होने के कारण मेरी सिद्धि कालरात्रिसे भी बढ़ीहुई है आज आपने मुझे देखलिया मैं आपही के लिये यह पूजनकर रहीथी और बलिदानदेने के निमित्त मंत्र से किसी पुरुष को खैंचने को उद्यतथी हे राजा अब आपभी इस हमारे मार्ग्ग में आजाइये तो

आपकी सिद्धि से सम्पूर्ण राजालोगों को जीतकर उनके शिरोमणि होजाइये यह सुनकर राजाने कहा कि कहां तो डाकिनियों के मार्ग में मनुष्य के मांसका भोजन करना और कहां राज्यकरना इस में बड़ा अन्तर है और यहबात कहके राजाने अपने संयुक्तहोने का निषेध करदिया परंतु जब रानी प्राणदेने को तय्यारहुई तब राजा ने उसका कहना अंगीकारकरलिया ठीकहै (विषयों के वशीभूत मनुष्य अच्छेमार्ग में कैसे रहसक्ते हैं) इसके उपरान्त रानीने पहले से पूजन कियेहुए उस मंडल में राजा को बुलालिया और उससे सम्पूर्ण बातों का नियम करने का कौल करार कहा कि यह जो फलभूति नाम ब्राह्मण आपके पास रहताहै उसीको आज मैंने भेंट देनेके लिये खेंचने का विचार किया था परन्तु मंत्रके द्वारा खेंचने में बड़ा परिश्रम है इससे किसी रसोइये को भी इसमार्ग में लेना चाहिये जिससे कि वह रसोइया उसे आपही मारे और पकावे हे राजा ! उस बलिदान के मांस के खाने में घृणा न करना चाहिये क्योंकि पूजन के समाप्त होजानेपर सिद्धि पूर्ण होजाती है इससे वह मांस बड़ा उत्तम है प्रियाके यह वचन सुनकर पापसे डरेहुए भी राजाने ब्राह्मणका बलिदान देना स्वीकार करलिया (बड़ेकष्ट देनेवाली स्त्रियोंकी आज्ञाके पालन करने को धिक्कारहै) इसके उपरान्त साहसिक नाम रसोइये को बुलाकर और उसेभी विश्वास पूर्वक अपना शिष्यकरके राजा और रानी दोनों उससे बोले कि राजा और रानी आज साथही भोजनकरेंगे इससे शीघ्रही भोजन बनाओ यह बात तुमसे जो कोई आकर कहे उसे मारकर उसी के मांस से प्रातःकाल एकान्त में तुम स्वादिष्ट भोजन हमारे वास्ते बनाना राजाकी इस आज्ञाको स्वीकार करके वह रसोइया अपने

घर को चलागया प्रातःकाल राजाने फलभूति से कहा कि तुम साहसिकनाम रसोइये से जायकर कहो कि रानीसमेत राजा आज स्वादिष्ट भोजन करेंगे इससे तुम शीघ्रही उत्तम भोजन बनाओ राजाकी आज्ञा को लेकर बाहर गये हुए फलभूति से चन्द्रप्रभनाम राजाके पुत्रने कहा कि यह सोना लेकर आज शीघ्रही तुम हमारे लिये वैसे कुण्डल बनवाओ जैसे कि पहले तुमने हमारे पिता के लिये बनवाये थे जब राजपुत्रने फलभूति से बहुत हठपूर्व्वक शीघ्र जाने को कहा तो वह राजाका संदेशा उस राजपुत्र से कहकर कुं- डल बनवाने को चलागया और राजपुत्र भी फलभूति की बताई हुई राजाकी आज्ञाको कहने के लिये अकेलाही रसोईदारके पास गया वहांजाकर जब राजपुत्र ने रसोइये से राजा की आज्ञाकही तब उस साहसिक ने शीघ्रही राजपुत्र को छुरी से मारडाला और उसी के मांस से बनाये हुए भोजन को पूजन के उपरान्त राजा रानीने बिना उस तत्त्वके जाने खाया राजाने पश्चात्ताप सहित वह रात्रि व्यतीतकरके प्रातःकाल कुंडलोंके बहानेसे राजाने उस समय उससे पूंछा कि तुम यह कैसे कुंडल लेकर यहां आये हो तब फल- भूति ने कुंडलोंका सब वृत्तान्त कहदिया उस वृत्तान्त को सुनतेही राजा पृथ्वी में गिरकर हा पुत्र२ कहकर चिल्लानेलगा और अपनी तथा रानीकी निन्दा करनेलगा जब मंत्रियोंने पूछा कि यह क्या वृत्तान्तहै तब राजाने सब वृत्तान्त सत्य २ कहदिया और बोला कि फलभूति तो नित्य कहताही था कि (नेकी करनेवालेको नेकी और बदी करनेवालेको बदी) जैसे दीवार पर फेंकीहुई गेंद फेंकनेवाले ही की ओर लौटकर आजाती है उसीप्रकार दूसरे के लिये बिचारा हुआ दोष अपनेही ऊपर आताहै देखो हम दोनों पापियों ने ब्रह्म-

हत्या करने का विचार कियाथा इससे अपनेही पुत्र को मरवाकर उसीका मांस खानापड़ा यह कहकर और नीचे को मुख कियेहुए अपने मंत्रियों को समझा कर राजाने अपने सब राज्य में उसी फलभूति का राज्याभिषेक करदिया पुत्ररहित राजा इसप्रकार अपनेपापसे छूटने के लिये सम्पूर्ण राज्यकादान करके और पश्चात्ताप से बहुत संतप्त होके रानीसमेत अग्नि में जलगया फलभूति उस राज्यको पाकर सब पृथ्वी का पालनकरनेलगा इसीप्रकार भलाई या बुराई जो दूसरे पर कियाचाहै वह अपनेही ऊपर आजाती है ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे एकोनत्रिंशः प्रदीपः ॥ २९ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागे त्रिंशः प्रदीपः ॥

ताडिताप्यनुरक्तैव जारे जारेण जायते ।
यथा राजसुतस्त्रीसा ताडिताप्यनुरक्तिका ३० ॥

(अर्थ) व्यभिचारिणी स्त्री यारसे ताड़ना करने में भी स्नेहवती हीं होती है जैसे देवदत्त नाम राजपुत्रकी वधू निज जारसे पीटीजाने परभी न हटी और स्नेह से तिसके साथ भोगकिया ३० ॥

पूर्व्वसमय में जयदत्त नाम किसी सामान्य राजा के देवदत्त नाम पुत्र हुआ समय पाकर देवदत्तके तरुण होने पर उसके विवाह करनेकी इच्छा से उस बुद्धिमान् राजाने यह शोचा कि अत्यन्त चंचल राजलक्ष्मी वेश्या के समान बलवान्ही से भोग की जासक्ती है और बनियों की लक्ष्मी कुल स्त्री के समान अन्य गामिनी नहीं होती इससे मैं अपने पुत्रका विवाह बनिये की पुत्रीसे करूंगा इसकारणसे अनेक उपाधियुक्त इस राज्यमें इसको क्लेश न होगा ऐसा निश्चय करके राजा जयदत्त ने अपने पुत्रके लिये पटने के रहनेवाले बसुदत्तनाम बनिये से अपने पुत्रके लिये कन्या

मांगी वसुदत्तने भी उत्तम सम्बन्धकी इच्छा से दूरदेशमें भी राज-
पुत्रके लिये अपनी कन्या देना स्वीकार करलिया और विवाह के
समय जामाता को इतने रत्न दिये कि उसको अपने पिताके स-
म्पूर्ण ऐश्वर्य्य का अभिमान दूर होगया उस धनवान् वनिये की
कन्याके साथ अपने पुत्रका विवाह करके वह जयदत्त राजा सुख
पूर्वकरहनेलगा एक समय वसुदत्त बहुत उत्कण्ठित होकर अपने
जमाई के घर आकर अपनी पुत्रीको लिवा लेगया इसके उपरान्त
अकस्मात् राजा जयदत्त तो स्वर्गवासी हुआ और उसके भाइयों ने
देवदत्तसे सम्पूर्ण राज्य छीनलिया तब उनके डरसे उसकी माता
छिपकर उसे किसी दूरदेश में लेगई वहां जाकर देवदत्तसे उसकी
माता ने कहा कि पूर्वदिशा का राजा चक्रवर्ती है और वही हमारा
स्वामी है उसके पास तुम जाओ वह तुमको तुम्हारा राज्य दिलवा
देगा माताके यह बचन सुनकर राजपुत्र ने कहा कि परिकरके
बिना वहां मुझको कौन राजपुत्र समझेगा यह सुनकर फिर माता
बोली कि पहले तुम अपने श्वशुरके घर जाकर वहांसे धन लेकर
परिकर बनाके उस चक्रवर्ती के पास जाओ माता से इस प्रकार
प्रेरणा कियाहुआ वह राजपुत्र लज्जित होकर वहां से धीरे २ चला
और सायङ्काल के समय अपने श्वशुर के घर में न जासका श्व-
शुरके घरके निकट किसी यज्ञशाला के बाहर ठहरा वहां रात्रि के
समय उसने देखा कि श्वशुर के कोठे से एक स्त्री रस्सी के सहारे
नीचे उतररही है क्षणभर में आकाश से गिरी हुई ज्वालाके समान
रत्नजटित आभूषणों से देदीप्यमान उस स्त्री को उसने पहिचाना
कि यह तो मेरीही स्त्री है और पहिंचान कर उसके चित्त में बड़ा
खेद हुआ उस स्त्रीने तो उसे देखकर भी मलिनता और दुर्बलता

के कारण नहीं पहिंचाना और उससे पूछा कि तू कौनहै उसनेकहा कि मैं एक पथिकहूं इसके उपरान्त वह यज्ञशालाके भीतरगई और राजपुत्र भी छिपकर देखनेके लिये उसके पीछे चलागया वहां वह स्त्री एक पुरुष के पासगई उसने उसे देखकर कहा कि तू आज बहुत देर करके आई और लातों से उसे बहुत पीटा पीटने से और भी अधिक अनुराग युक्त होकर उसने उसे प्रसन्नकिया और इच्छाके अनुसार उसके साथ रमणकिया यह सम्पूर्ण चरित्र देखकर राजपुत्र ने अपने चित्त में विचार किया कि यह क्रोधका समय नहींहै अभी मुझे अन्य कार्य्य करनेहैं मेरा यह शत्रुओं के योग्य शस्त्र इस दीन स्त्रीपर और इस जड़पुरुष पर चलाने के योग्य नहींहै इस दुष्ट स्त्री से मुझे क्या प्रयोजन है यह सब कार्य मेरेही दुर्भाग्य का है जोकि मेरे धैर्यकी परीक्षा न करनेका फलहै ठीक कहाहै कि कौएकी स्त्री कौएको छोड़कर कोकिलके साथ कैसे रमणकरे यह शोचकर उसने अपनी स्त्री और जार दोनोंको उपेक्षाकरके न मारा बहुतजीने की इच्छा करनेवाले सज्जन लोगों के चित्त में स्त्री रूपी तृण क्या है उससमय रति के आनन्द में मोतियों से जड़ाहुआ आभूषण उस स्त्रीके कानमें से गिरपड़ा वह उसने रतिके अन्त में भी नहीं सँभाला और जारसे पूछकर जिसमार्ग से आईथी उसीमार्ग होकर चलीगई और उसके जानेकेबाद वह जार पुरुष भी चलागया इन दोनों के चलेजाने के उपरान्त राजपुत्रने वह जड़ाऊ आभूषण उठालिया रत्नोंके प्रकाश से देदीप्यमान वह आभूषण क्याथा मानों ब्रह्माने खोई हुई राजलक्ष्मी के ढूंढ़ने के लिये मोहरूपी अन्धकार का दूर करनेवाला दीपक उसके हाथ में दिया उस आभूषण को बहुमूल्य जानकर राजपुत्रने जाना कि मेरा कार्य्य सिद्धहुआ और

उसे लेकर कान्यकुब्ज देशको चलागया वहां उसने वह आभूषण एकलाख अशर्फी में गिरवी रखकर हाथी और घोड़े आदि सब परिकर इकट्ठे किये और उस सब परिकरको लेकर चक्रवर्तीके पास जाके अपना वृत्तान्त वर्णन किया और चक्रवर्ती की दीहुई बहुत सी सेना अपने साथ में लेकर शत्रुओंको मार अपने पिताके राज्य को लेलिया देवदत्त को फिर अपने राज्यपर बैठा देखकर उसकी माता बहुत प्रसन्नहुई इसके उपरान्त देवदत्त ने उस आभूषण को छुड़ाकर अपनी स्त्री का सब वृत्तान्त प्रकट करने के लिये अपने श्वशुरके पास भेजदिया उसने भी अपनी कन्या के कान के आभूषणको देखकर घबराके अपनी कन्याको जाकर दिखाया पहले भ्रष्टहुए आचारके समान उस आभूषणको देखकर और उसे अपने पतिका भेजा जानकर बनिये की पुत्री ने व्याकुल होकर अपने चित्त में स्मरण किया कि यह आभूषण उस रात्रि को यज्ञशाला में गिराथा जिसमें कि मैंने वहां एक पथिक देखाथा इससे यह ज्ञात होता है कि वह मेरा पति मेरे आचरण की परीक्षा करनेको आया था परन्तु मैं उसे नहीं पहिंचानसकी कदाचित् वही इसे लेगया होगा इस प्रकार शोचती हुई उस बनिये की पुत्री का हृदय अपने दुराचार के प्रकट होजाने से व्याकुल होकर कातरता से फटगया इसके मरजाने पर इसके पिता ने पुत्री के वृत्तान्त के जाननेवाली दासी से पूछके और सम्पूर्ण तत्त्व समझकर अपने शोकको त्याग करदिया और वह राजपुत्र राज्य को पाकर अपने गुणों से प्रसन्न हुई चक्रवर्ती की कन्या को दूसरी राजलक्ष्मी के समान प्राप्त होकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेत्रिंशःप्रदीपः ३० ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागेएकत्रिंशःप्रदीपः ॥

आपद्गतापिसाध्वीनत्यजतिस्वीयसम्यगाचरणम्। श्रेयस्ततोपिभवतेयथाद्विजस्त्रीसुखंलेभे ३१ ॥

(अर्थ)-पतिव्रता स्त्री महाभारी आपत्ति में भी निज श्रेष्ठ आचरणको त्यागती नहीं इसीसे फिर उसे सुखभी मिलजाताहै जैसे-द्विजवधू निजधर्म की रक्षाकी थी तो फिर सुखको प्राप्तहुई ३१ ॥

मालवदेश में बड़ा विद्वान् और धनवान् अग्निदत्त नाम एक ब्राह्मण था वह सदैव याचकों को धनदिया करता था उसके अपने ही समान दोपुत्र उत्पन्न हुए ज्येष्ठका नाम शङ्करदत्त और कनिष्ठ का नाम शान्तिकर था उनमें से शान्तिकर विद्या पढ़ने के लिये बाल्यावस्थाहीमें पिताके घरसे निकलकर कहीं चलागया और बड़े भाई ने यज्ञ करने के लिये धनके इकट्ठे करनेवाले यज्ञदत्त नाम ब्राह्मण की कन्याके साथ बिवाह किया वह मैंहूं समय पाकर मेरा श्वशुर स्वर्गवासी हुआ और मेरी सासभी उसी के साथ सती होगई इसके उपरान्त मुझ गर्भवती को छोड़कर मेरे पतिने तीर्थयात्राके बहाने जाकर सरस्वती नदीके प्रवाहमें शोकसे अन्धहोकर अपना शरीर त्याग करदिया जब उसके साथियों ने आकर उसका वृत्तान्त कहा तब मैं गर्भवती होनेके कारण उसके दुःख में अपना शरीर नहीं त्यागसकी इसके उपरान्त अकस्मात् बहुतसे चोरों ने आकर जिस गांव में रहती थी वह सब गांव लूट लिया उस समय तीन ब्राह्मणियों के साथ होकर मैं अपने आचरणकी रक्षाकरने के लिये थोड़ेसे बस्त्रोंको लेकर वहां से भागी देश भंग होनेसे बहुतदूर आकर एक देश में महीने भरतक बहुत कठिन कर्म्मोंकी जीविका करके

निवास किया वहां लोगों से राजा उदयन को अनाथों की रक्षा करनेवाले सुन कर ब्राह्मणियों के साथ केवल सदा चाररूपी पाथेय (सफ़रख़र्च) को लेकर वहां आई इस देश में आतेही उन तीनों ब्राह्मणियों के समीपही में एक साथही यह दोनों पुत्र उत्पन्न हुए शोक विदेश दरिद्रता और एक साथही दोनों पुत्रोंका उत्पन्नहोना वाह ब्रह्माने मानों मेरे लिये आपत्तियों का द्वारही खोलदिया तब इन बालकों के पालन करने के लिये कोई गति न समझकर मैंने स्त्रियों के लज्जारूपी आभूषण को छोड़कर सभामें आकर महाराज उदयनसे प्रार्थनाकी और उनकी आज्ञासे तुम्हारे सन्निकट प्राप्तहुई ठीक कहा है कि आपत्ति में पड़ेहुए बालकों के दुःख को कौन देख सक्ता है तुम्हारे द्वारपर आतेही मेरी सम्पूर्ण बिपत्तियां मानों किसी ने मारकर भगादीं हे रानी ! यह मेरा सम्पूर्ण वृत्तान्तहै और बालकपनसेही अग्निहोत्र के धुएंसे मेरे नेत्र पिंगलबर्णके होगये इसलिये मेरा पिङ्गलिकानाम है और मेरा शान्तिकरनाम देवरजो परदेश चलागया था सो कहां है यह अबतक नहीं मालूम हुआ इसप्रकार अपने वृत्तान्त को कहनेवाली उस ब्राह्मणी को कुलीन जानकर रानी बिचारकर बोली कि यहां शान्तिकर नाम विदेशी ब्राह्मण रहताहै वह मेरा पुरोहित है मैं जानती हूं कि वही तेरा देवर होगा इसप्रकार उसब्राह्मणी से कहकर और उस उत्कंठित ब्राह्मणी को रात्रिभर अपने समीप रखकर प्रातःकाल रानी ने शान्तिकरको बुलाके उसका वृत्तान्त पूँछा उस वृत्तान्त को सुनकर रानीको निश्चय होगया कि यह पिंगलिकाका देवरहै फिर शान्तिकरसे कहा कि यह तुम्हारे बड़े भाईकी स्त्री तुम्हारी भावी है तब जानपहिचान होजाने पर उसकेद्वारा अपने माता पिता तथा भाई की मृत्युजान

कर शान्तिकर उसको अपने घर लेगया और वहां जाकर अपने माता पिता और भाईका शोककरके अपनी उसभावीको सावधान किया रानी वासवदत्ताने भी पिंगलिका के दोनों पुत्र होनेवाले अपने पुत्रके पुरोहित बनाये और बहुतसा धन देकर ज्येष्ठकानाम शान्तिसोम और कनिष्ठ का नाम वैश्वानर रक्खा—अन्ध के समान यह लोक आगे चलतेहुए अपने कर्मोंकरके फलरूपी पृथ्वी पर पहुंचाया जाता है उसमें अपना पुरुषार्थ हेतुमात्र है क्योंकि पिंगलिका शान्तिकर और वह दोनों बालक सब अनायास एक स्थान में आकर मिलगये॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकत्रिंशःप्रदीपः ३१॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेद्वात्रिंशःप्रदीपः ३२॥

स्नेहोवापिविरोधोवाजायतेपूर्वजन्मतः।
संस्कारादेवसर्वत्रयथाजीमूतवाहने ३२॥

(अर्थ) स्नेह वा विरोध किसीसे अकस्मातही हो वह पूर्वजन्म के संस्कार से ही होताहै जैसे जीमूतवाहनमें पुलिन्दकर स्वाभाविकही स्नेह उत्पन्न होगयाथा ३२॥

श्रीपार्वती जी का पिता हिमालयनाम पर्व्वत जो कि केवल पर्व्वतोंही का नहीं किन्तु श्री शिवजी का भी गुरुहै उस पर्व्वत पर विद्याधरोंका राजा जीमूतकेतु रहताथा उसके घरमें एक कल्पवृक्ष पुरुषाओं के समयसे था उसकेहीद्वारा राजाके सम्पूर्ण मनोरथ पूर्णहोते थे एकसमय राजा जीमूतकेतु ने बगीचे में जाकर कल्पवृक्षसे यह प्रार्थनाकरी कि हे देव! सदैव आप हमारे सम्पूर्ण मनोरथों को पूर्ण करते हो इससे मुझ अपुत्र को एक गुणवान् पुत्र दीजिये यह सुनकर कल्पवृक्षने कहा कि तुम्हारे अत्यन्तदानी पूर्वजन्म का

स्मरण करनेवाला सम्पूर्ण प्राणियों का हितकारी पुत्र होगा यह सुनकर प्रसन्नहुए राजा जीमूतकेतु ने कल्पवृक्ष को प्रणाम किया और महल में जाकर रानी से भी यह वृत्तान्त कहकर उसे अत्यन्त प्रसन्न किया इसके उपरान्त थोड़ेही दिनों में राजाकेपुत्र हुआ उसने उसका नाम जीमूतवाहन रक्खा जैसे २ वह जीमूतवाहन बढ़ता था वैसेही उसके हृदयमें सम्पूर्ण प्राणियों पर दया भी बढ़ती जाती थी समय पाकर जब वह युवराज हुआ तब उसने अपनी सेवा से प्रसन्नकरके पितासे एकान्तमें कहा कि हे महाराज ! संसारमें जितने भर पदार्थ हैं वह सब क्षणभंगुरहैं परन्तु महात्माओं का निर्मलयश कल्पपर्य्यन्त रहता है यदि पराये उपकार से ऐसा सुन्दर यश प्राप्त होताहै तो धन प्राणों से भी अधिकप्यारा क्यों होनाचाहिये जिस सम्पत्ति से पराया उपकार नहीं होताहै वह बिजलीके समान लोगों के नेत्रों को देखकर चंचलतासे नाशको प्राप्त होजाती है इससे यह जो कल्पवृक्ष सम्पूर्ण मनोरथों का पूर्ण करनेवाला हमारे यहां है यह जो पराये उपकार के अर्थ रखदिया जाय तो उसका होना सफल होजाय तो अब मैं ऐसा करताहूं कि जिससे कल्पवृक्ष की सम्पत्तियों से सम्पूर्ण याचकलोग दरिद्र रहित होजायँ पिता से यह कहकर और उनकी आज्ञा पाके जीमूतवाहन कल्पवृक्ष के पास जाकर बोला कि हे देव ! आप सदैव हमारे मनोरथों को पूर्ण करते रहेहो इससे अब हमारे इस मनोरथको भी पूर्णकरो कि यह सम्पूर्ण पृथ्वी दरिद्र रहित होजाय आपका कल्याणहोय मैंने आपको सम्पूर्ण याचकों के अर्थ देदिया उसके यह बचन सुनकर कल्पवृक्ष ने बहुतसी सुवर्ण की वृष्टि पृथ्वीपर की इससे सम्पूर्ण प्रजा आनन्दित होगई जीमूतवाहन की इसउदारताको देखकर लोगों ने कहा कि

जीमूतवाहन से अधिक और कौन बोद्धावतार के समान दयालु होगा जो कल्पवृक्ष को भी याचकों के निमित्त दे सके इस प्रकार जीमूतवाहन का यश सम्पूर्ण दिशाओं में फैलगया इसके उपरान्त जीमूतकेतुके राज्यको पुत्रके यशसे दृढ़होते जानकर उसके गोत्री भाई द्वेप करनेलगे और कल्पवृक्ष के देदेने से उसे प्रभाव रहित जानके उन्हों ने यह जानलिया कि इसको हम शीघ्रही जीतलेंगे ऐसे समझकर वह सम्पूर्ण जब युद्धके लिये तैयार हुए तब जीमूतवाहन अपने पितासे कहा कि जो यह शरीरही पानी के बुलबुले के समान है तो वायुमें रक्खेहुए दीपक के समान चञ्चल लक्ष्मी से क्या प्रयोजन है और उसे भी दूसरोंको क्लेश देकर कौन बुद्धिमान् लेनाचाहे इससे हे पिता! मैं इन गोत्री भाइयों के साथ युद्ध नहीं करूंगा और राज्य छोड़कर यहां से किसी वनमें चलाजाऊंगा यह लोभी राज्यको भोगकरैं मैं अपने वंश का नाश नहीं करूंगा जीमूतवाहन के यह बचन सुनकर जीमूतकेतु निश्चय करके बोला कि हे पुत्र! जब तुम्हींने युवाहोकर भी इस राज्यको तृणके समान त्यागदिया तो मैं वृद्धहोकर इस राज्यको क्याकरूंगा और मैं भी तुम्हारेही साथ वनको चलूंगा पिताके यह बचन सुनकर जीमूतवाहन पिता और माता दोनों को लेकर मलयाचल पर चलागया मलयाचल में जहां अनेक चन्दनके वृक्ष लगेहुए हैं झरने झररहे हैं और अनेक सिद्धलोग निवास करते हैं वहां एक आश्रम में रह कर अपने पिता और माताकी सेवा करनेलगा वहां रहते २ सम्पूर्ण सिद्धोंके राजा विश्वावसुके पुत्र मित्रावसु के साथ उसकी मित्रता होगई किसीसमय जीमूतवाहन ने मित्रावसु की बहिनको एकान्त में देखा और ज्ञानसे जानलिया कि यह मेरी पूर्व्वजन्म की स्त्री

है उस समय उन दोनों का एकान्त में परस्पर देखनाही मनरूपी मृगों के बांधने की दृढ़ डोरी के समान होगया इसके उपरान्त एक दिन मित्रावसु ने आकर एकाएकी जीमूतवाहन से कहा कि मलयवतीनाम मेरी एक छोटी बहिन है उसे मैं तुमको दिया चाहता हूं तुम मेरी इच्छाको भंग न करना यह सुनकर जीमूतवाहन बोला कि हे युवराज ! यह तो पूर्वजन्ममें भी मेरी स्त्री थी और तुम दूसरे हृदय के समान मेरे परममित्र थे मैं जातिस्मरहूं इससे मुझे पूर्व्वजन्मका स्मरण बनाहै उसके यह वचन सुनकर मित्रावसु बोला कि पूर्वजन्मकी सम्पूर्ण कथा कहो मुझे उसके सुनने की परमइच्छा है मित्रावसुके ऐसे कहनेपर पुण्यात्मा जीमूतवाहन अपने पूर्वजन्मकी कथा कहनेलगा कि मैं पूर्व्वजन्म में आकाश मार्ग से चलनेवाला विद्याधरथा एकसमय हिमालय के ऊपर के शिखरपर होकर मैं जारहाथा और नीचे श्री शिवजी पार्वती के साथ क्रीड़ा कर रहे थे मुझे ऊपर जाते देखकर उल्लंघन से क्रोधित होकर महादेवजीने शापदिया कि तू मनुष्य होजायगा वहां विद्याधरी स्त्रीको पाकर अपने मनुष्यपुत्र को अपना अधिकार देकर फिर विद्याधरों के यहां उत्पन्न होगा और तुझे अपने पूर्वजन्मों का स्मरण बना रहैगा इसप्रकार शाप देकर और शापका अन्तभी कहकर महादेव जीके अन्तर्द्धान होजाने पर थोड़ेही समयके उपरान्त मैं पृथ्वीपर बनियोंके कुलमें उत्पन्न हुआ बलभी नाम नगरी में महाधन नाम वैश्यके घरमें मेरा जन्म हुआ और वसुदत्त मेरा नामहुआ धीरे २ जब मेरी युवावस्था हुई तब मेरे पिताने द्वीपान्तर जाने के लिये मेरी तय्यारी करदी और मैं भी उनकी आज्ञा लेकर रोज़गार करने को चलागया इसके उपरान्त जब मैं वहां से लौटा तो बनमें बहुत

से चोरों ने आकर मेरा सब धन छीनलिया और वह मुझे बांधकर अपने गांवकी चण्डिका के मन्दिर में लेगये उस मन्दिर में लाल वस्त्र की लम्बी पताका ऐसी शोभित होती थी कि मानों पशुओं के मारनेकी इच्छासे यमराजने अपनी जिह्वा निकाली वहां देवी का पूजन करते हुए पुलिन्दकनाम अपने स्वामी के निकट बलिदान के निमित्त मुझे लेगये वह पुलिन्दक मुझे देखतेही मुझपर अत्यन्त दयालु होगया कारण के विनाही मनमें स्नेह उत्पन्न होने से जन्मान्तरकी प्रीति सूचित होती है तब पुलिन्दक ने मुझे छुड़वाकर अपने आपकोही बलिदान करके पूजनको समाप्त करना चाहा उसका यह साहस देखकर यह आकाशवाणी हुई कि ऐसा मतकर मैं तेरे ऊपर प्रसन्नहूं तू वरमांग इस आकाशवाणी को सुन कर पुलिन्दक प्रसन्न होकर बोला कि हे भगवती! यदि तुम प्रसन्न हो तो मुझे अन्य वरदान से क्या प्रयोजन है तथापि मैं यह वर मांगताहूं कि जन्मान्तरमें भी इस बनिये के साथ मेरी मित्रता होवे तब एवमस्तु यह कहकर वाणी के निवृत्त होजाने पर पुलिन्दक ने बहुतसा धन देकर मुझे मेरे घर भेज दिया परदेश से और मृत्युके मुखसे बचकर मेरे लौटनेपर मेरे पिताने सब वृत्तान्त जानकर बड़ा उत्सव किया इसके उपरान्त कुछ समय के व्यतीत होने पर मैंने देखा कि उसी पुलिन्दक को पथिकों के लूटने के अपराध से राजा ने बँधवा मँगायाहै उसीसमय उसके पितासे कहकर मैंने एकलाख रुपया खर्च करके उस पुलिन्दक को राजाके यहां से फांसी से बचाया इसप्रकार प्राणोंके बचानेका प्रत्युपकार करके अपने घर में लाकर बहुत प्रीतिपूर्वक उसे रक्खा और कुछ दिनके उपरान्त उस को बहुत सत्कारपूर्वक बिदाकिया वहभी अपना प्रेमयुक्त हृदय मेरे

पास रखकर अपने गांवको गया वहां मेरे प्रत्युपकार के निमित्त अपने पासकी कस्तूरी तथा मोती आदिकको न्यून समझकर बहुतसे गजमुक्ता लेनेके निमित्त हाथियों के मारने को हिमाचल पर्वतपर धनुषबाण लेकर गया हिमाचल पर घूमते २ उसे एक बड़ा सुन्दर तालाब मिला उसमें बहुत से अनेक २ प्रकार के कमल फूलरहे थे और किनारेपर एक महासुन्दर मन्दिर बनाहुआथा वहां यह शोच कर कि यहां हाथी पानी पीने आवैंगे पुलिन्दक छिपकर एकान्तमें बैठगया उस समय वहां एक बड़ी सुन्दर कन्या सिंहपर चढ़ीहुई श्री शिवजीका पूजन करने को आई श्रीशिवजीका पूजन करनेवाली कन्याका भावमें बर्तमान दूसरी पार्वतीजी के समान उसकन्याको देखकर पुलिन्दक को बड़ा आश्चर्यहुआ और उसने शोचा कि यदि यह मनुष्यकी स्त्री होती तो सिंहपर कैसे सवार होती और जो दिव्य स्त्री होती तो मुझ सरीखों को दृष्टिगोचर कैसे होती इससे यह निश्चय होताहै कि मेरे नेत्रों के प्राक्तन पुण्यों की परिणति (फल) मूर्ति धारण करके आई है यदि इसके साथ में मैं अपने उस मित्रका बिवाह कराऊं तो बड़ाही उत्तम प्रत्युपकार उसके साथ में होजाय इससे इसके पास जाकर इसके मनोभिलषित बर के जानने को उद्योग करूं यह शोचकर पुलिन्दक उसके पास गया और वह कन्या भी छाया में बैठेहुए सिंहपर से उतरकर तालाब में से कमल तोड़नेलगी पुलिन्दक भी उसके पास जाकर प्रणाम करके खड़ा होगया तब कन्याने उसे अपूर्व्व अतिथि के स्नेह से स्वागत पूछकर प्रसन्न किया और पूछा कि तुम कौनहो और किस निमित्त इस दुर्गम भूमि में आयेहो उसके यह मधुर बचन सुनकर पुलिन्दक बोला कि मैं श्रीपार्वतीजी के चरणों का

सेवक शवरों का राजाहूं यहां गजमुक्ता लेने के निमित्त आया हूं इससमय तुम्हें देखकर अपने प्राणदायक मित्र साहूकार के पुत्र वसुदत्त की याद आगई हे सुन्दरी! वह भी तुम्हारेही समान रूप और यौवन से इस संसारके नेत्रोंका आनन्द देनेवाला अद्वितीय सुंदरहै इस संसारमें वह कन्या धन्यहै जो मित्रता दान दया तथा धैर्यादि गुणों के निधिरूप उसके पाणि को ग्रहण करेगी जो यह तुम्हारी सुंदर आकृति उस सुंदर पुरुष के साथ संयोग को न पावे तो कामका धनुष धारण करनाही व्यर्थ है इसप्रकार कामदेव के मोहन मंत्रों के समान पुलिन्दक के वचनों को सुनकर उसका चित्त हरगया और कामदेव से प्रेरित होकर पुलिन्दक से बोली कि तुम्हारा वह मित्र कहां है मुझे लाकर दिखलाओ उसके यह बचन सुनकर और उससे आज्ञालेकर पुलिन्दक वहां से अपने घर को आया और वहां से बहुत से मोती तथा कस्तूरी आदिक पदार्थों को भारोंपर लदवाकर मेरे स्थान को आया मेरे यहां सब लोगों ने उसका बड़ा सत्कार किया और जो २ पदार्थ लायाथा वह सब उसने मेरे पिता की भेंट करदिया इसप्रकार उत्सव से उस दिन के व्यतीत होजानेपर रात्रिके समय एकान्त में पुलिन्दकने कन्याके देखनेका सम्पूर्ण वृत्तान्त मुझे सुनाकर मुझसे कहा कि हे मित्र! चलो वहीं चलें यह सुनकर मैं उत्कंठित होकर उसी रात्रिको उसके संग चला प्रातःकाल मेरे पिता ने मुझे पुलिन्दक के साथ गया हुआ सुनकर पुलिन्दक के प्रेमके बिश्वास से धैर्य धारण करलिया और पुलिन्दक ने मार्ग में मेरे सम्पूर्ण कार्य्य करके क्रमसे मुझे हिमालयपर पहुँचाया वहां सायंकालके समय उस तालाबपर पहुँच कर हम दोनोंने स्नानकिये और सुन्दर मधुर फल खाकर वहीं एक

रात्रि व्यतीत की लताओं के पुष्प जिसमें बिछेहुए हैं भौंरे जहां सुन्दर गुंजार कररहे हैं शीतल मन्द सुगन्ध वायु जिसमें आरही है और औषधिरूपी दीपक जिस में बलरहे हैं ऐसा वह बन हम लोगोंका रात्रिके समय विश्राम करनेको रतिके निवासके समान मालूम हुआ इसके उपरान्त दूसरे दिन उसके देखने की इच्छा से मानों बारम्बार फड़कते हुए दक्षिणनेत्र से सूचित आगमनवाली और बारम्बार उत्कंठित होके उसीके मार्गमें जानेवाले मनसे मानों आगे चलकर लीगई वह कन्या वहां आई बड़ी२जटावाले सिंहकी पीठपर बैठीहुई उस कन्या को शरद्काल के मेघों पर विराजमान चन्द्रमाकी कलाके समान मैंने देखा उससमय आश्चर्य उत्कंठा और भयसे उसे देखकर मेराचित्त कैसाहुआ वह मैं नहीं जानता इसके उपरान्त वह सिंहपरसे उतरकर फूलोंकोतोड़ तड़ागमें स्नानकरके तड़ाग के किनारे पर वर्त्तमान श्रीशिवजी का पूजन करनेलगी पूजन के अन्त में पुलिन्दक उसके पास गया और प्रणाम करके बोला कि हे सुंदरी!तुम्हारेयोग्य उसबरको मैं यहां लिवालायाहूं यदि आज्ञा होय तो अभी बुलाकर दिखाऊं यह सुनकर उसने कहा कि दिखाओ तब पुलिन्दक मुझे वहांसे बुलाकर उसकेपासलेगया वह तिरछी दृष्टि से प्रेमपूर्व्वक मुझे देखकर काम के बशीभूत होकर पुलिन्दक से बोली कि तुम्हारा यह मित्र मनुष्य नहीं है मेरे ठगने के लिये कोई देवता आयाहै क्योंकि मनुष्य की ऐसी आकृति नहीं होसक्ती उसके यह बचन सुनकर उसे बिश्वास दिलाने के लिये मैंने कहा कि हे सुन्दरी!मैं मनुष्यही हूं सीधेजनके साथ छल करने से क्या प्रयोजनहै मैं बलभीनगर में रहनेवाले महाधननाम बैश्यका श्री शिवजी के बरसे प्राप्तहुआ पुत्र हूं पुत्रके निमित्त श्री

शिवजी के प्रसन्न करने को तपकरतेहुए मेरे पिता से महादेवजी ने प्रसन्न होकर स्वप्नमें कहा कि उठो तुम्हारे कोई महात्मा पुत्रहोगा और इसका बड़ा वृत्तान्त है उसके कहने से कोई प्रयोजन नहीं यह सुनकर मेरे पिताकी निद्राखुली तो समय पाकर मेरा जन्महुआ और उन्हों ने वसुदत्त मेरानाम रक्खा और शबरों का स्वामी यह पुलिन्दक विपत्ति में रक्षा करनेवाला परम मित्र मुझे विदेश में प्राप्तहुआ था यह मेरा सम्पूर्ण वृत्तान्तहै इस प्रकार कहकर जब मैं निवृत्तहुआ तब वह कन्या लज्जा से नीचे मुख करके बोली कि तुम्हारा कहना बहुत ठीकहै गतरात्रि में मैंने स्वप्न में देखा कि मैं श्रीशिवजीका पूजन करचुकी थी कि उस समय श्रीशिवजीने कहा कि तुझे प्रातःकाल पति मिलेगा इस से यही मेरे पतिहों और तुम्हारा मित्र मेरा भाईहै इसप्रकार अमृतरूपी वचनों से मुझे प्रसन्न करके वह चुप होगई इसके उपरान्त विधिपूर्वक विवाह करने के लिये उससे सलाह करके मैंने अपने घर जाने की मित्रसमेत इच्छाकी तब उसने सिंहको इशारेसे बुलाकर मुझ से कहा कि हे आर्य्यपुत्र! तुम इसपर सवार होजाओ मैंने भी सिंह पर चढ़के उस स्त्री को गोदी में उठालिया और मित्रसमेत वहां से प्रसन्नता पूर्वक चला पुलिन्दक के बाणों से मारेगये हिरणोंके मांसको खाते हुए हम सब लोग क्रमसे वलभीपुरी में पहुँचे वहां मुझे उस कन्या समेत सिंहपर सवार देखकर लोगों ने बड़े आश्चर्य्यपूर्वक मेरे पिता से जाकर कहा और मेरे पिता भी हर्ष से आगेआकर सिंह से उतरकर प्रणाम करतेहुए मुझे देखकर आश्चर्य समेत अत्यन्त प्रसन्नहुए और अत्यन्त सुन्दरी उस कन्याको प्रणाम करते देखकर मेरे योग्य स्त्री जानकर आनन्द में मग्नहोगये इसके उपरान्त हम

सब लोगों को घर में लेजाकर और सम्पूर्ण वृत्तान्त पूछकर मेरे पिताने पुलिन्दक की मित्रताकी बड़ी प्रशंसाकी और महाउत्सव किया फिर ज्योतिषी की आज्ञा से दूसरेदिन सम्पूर्ण बन्धुओं को बुलाकर उस कन्या के साथ मेरा बिवाह किया मेरे विवाहके हो-जानेपर वह सिंह सब के देखते २ दिव्य वस्त्राभरणधारी दिव्य पुरुष होगया यह देखकर लोगों के अत्यन्त आश्चर्य्य युक्त होजानेपर उसने प्रणाम करके मुझसे कहा कि मैं चित्राङ्गदनाम विद्याधरहूं और यह प्राणों से भी अधिक प्यारी मनोवती नाम मेरी कन्या है इसको सदैव गोदी में लेकर वनमें घूमताहुआ मैं एक समय श्री गङ्गाजी के तटपर पहुँचा वहां तपस्वियों के बहुतसे आश्रमों को देखकर तपस्वियों के उल्लंघन के भयसे गङ्गाजी के बीचमें होकर मैं चला भाग्यवश से मेरी पुष्पों की माला गङ्गाजी के जल में गिर-पड़ी उसके गिरतेही जल के भीतर बैठेहुए नारदजी ने एकाएकी उठकर उस माला को पीठपर गिरने के अपराधसे क्रोधकरके मुझे यह शाप दिया कि हे पापी ! तू इस उद्दंडता के कारण हिमालयप-र्व्वत में जाकर सिंहहोगा और इस कन्याको पीठपर लिये २ घूमेगा फिर जिससमय मनुष्य के साथ तेरी कन्याका विवाहहोगा तब तू उसे देखकर शाप से छूटजायगा इसप्रकार नारदमुनिसे शापदिया गया मैं हिमाचलमें सिंह होकर सदैव श्रीशिवजी की पूजा करने वाली इस कन्याको पीठपर धारण करतारहा इसके उपरान्त जिस प्रकार पुलिन्दक के यत्न से यह सम्पूर्ण कार्य्य सिद्धहुआ सो तो आप सब लोगोंको विदितही है अब मैं जाताहूं मेराशाप छूटगया सब लोगों का कल्याणहोय यह कहकर वह विद्याधर आकाश को उड़गया तब इस आश्चर्य्य को देखकर सम्पूर्ण, बांधव लोग बड़े

प्रसन्नहुए और इस श्रेष्ठ सम्बन्धसे प्रसन्नहोकर मेरे पिताने बड़ा महोत्सवकिया निर्व्याज मित्रों के चरित्रों को कौन जानसक्ताहै जो मित्रों के साथ प्राणों से भी उपकारकरके नहीं तृप्तहोते हैं यहबात किसने पुलिन्दक के चरित्र को ध्यानकरके आश्चर्य्य पूर्वक नहीं कही वहांका राजाभी पुलिन्दकके उस वृत्तान्त को जानकर हमारे स्नेहसे उसपर अत्यन्त प्रसन्नहुआ और मेरे पिताने राजाको प्रसन्न जानकर बहुतसे रत्नोंकी भेंटदेकर पुलिन्दकको सम्पूर्ण वनका राज्य दिलवादिया इसके उपरान्त अपनी प्रिया मनोवती और प्रियमित्र पुलिन्दक के साथमें कृतार्थ होकर सुखपूर्वक रहनेलगा और पुलिन्दकभी अपने देश स्नेहको छोड़कर बहुधा मेरेही घरमें रहनेलगा परस्पर उपकार करने से नहीं तृप्त होतेहुए हम दोनों मित्रों का समय व्यतीतहोताथा थोड़ेदिनों के उपरान्त मनोवती में मेरे पुत्र उत्पन्नहुआ वह पुत्र क्या था मानों सम्पूर्ण कुलके हृदय का उत्सव रूप धारण करके बाहर आगया हिरण्यदत्त नाम वह पुत्र धीरे २ बढ़ा और सम्पूर्ण विद्याओंको पढ़कर योग्य होगया तब मेरे पिता ने उसका विधिपूर्व्वक व्याह करवादिया यह सम्पूर्ण उत्सव करके और जीवन के फलको परिपूर्ण जानके मेरे पिता मेरी मातासमेत श्रीभागीरथी गंगाजीके तटपर शरीर त्याग करनेको चलेगये तब पिताके शोकसे अत्यन्त व्याकुल मुझे जानकर बन्धुओंने बहुत समझाकर मुझे गृहस्थी का भार धारण करवाया उससमय मनोवतीके मुग्ध (भोले) मुखचन्द्रको देखकर और प्रियमित्र पुलिन्दक से मिलकर मेरा चित्त सावधान हुआ इसके उपरान्त सत्पुत्र से आनन्दयुक्त सुन्दर स्त्री से मनोहर और प्रियमित्र के समागम से मेरे वह उत्तम दिन व्यतीतहुए समय पाकर जब मैं वृद्धहुआ तो

वृद्धावस्थाने प्रीतिपूर्वक मानों मुझसे यह कहकर कि हे पुत्र! क्या अब भी घरमें रहोगे मेरी ठोढ़ी पकड़ली तब मुझे शीघ्रही वैराग्य उत्पन्नहुआ और बन जानेकी इच्छासे मैंने कुटुम्बका सम्पूर्ण भार अपने पुत्र पर रखदिया और स्त्री समेत मैं कालिंजर पर्वतपर चला गया मेरे स्नेह से राज्य को त्यागकर मेरा प्रियमित्र पुलिन्दक भी मेरे पास चलाआया वहाँ जाकर मुझे अपने पूर्वजन्म की और समासहुए श्रीशिवजी के शापकी याद आगई वह सब मैंने पुलिन्दक और मनोवती से कहदिया इसके उपरान्त मनुष्य शरीर के त्याग करने की इच्छा से मैंने यही स्त्री और मित्र मुझको पूर्वजन्म में भी मिलें और स्मरण भी बनारहै यह कहकर और हृदय में श्रीशिवजीका ध्यानकरके उस पर्व्वतसे स्त्री तथा मित्र समेत गिरकर शरीर का त्यागकिया वही मैं इस विद्याधरके कुल में अपने पूर्व्व जन्मको स्मरण करताहुआ जीमूतवाहन नामसे उत्पन्नहुआहूं और वह पुलिन्दक श्रीशिवजी की कृपासे सिद्धोंके राजा विश्वावसु के पुत्र मित्रावसुनाम तुमहो और वह मनोवतीनाम मेरी स्त्री तुम्हारी बहन मलयवती नामसे उत्पन्नहुई इसप्रकार तुम हमारे पूर्व्वजन्म के मित्रहो और तुम्हारी बहिन हमारी पूर्व्वजन्मकी स्त्री है इसके साथ में विवाह करना योग्यही है परन्तु पहिले जाकर हमारेमाता पितासे कहो जब वह स्वीकारकरलेंगे तब यह कार्य्य सिद्धहोगा इस प्रकार जीमूतवाहनसे सुनकर मित्रावसुने उसके माता पितासे सब वृत्तान्त कहा वह भी जब उसके मनोरथको सुनकर प्रसन्नहुए तब उसने जाकर अपनी बहिनके विवाहकी तय्यारी करी और मलयवती का विवाह जीमूतवाहन के साथ विधिपूर्व्वक करदिया उस समय विद्याधर सिद्ध और अनेक आकाशचारी देवयोनियों का

बड़ा उत्सव हुआ इसप्रकार विवाह करके उस मलयाचल पर्वतपर जीमूतवाहन अपनी मलयवती स्त्री समेत बड़े ऐश्वर्य्य को भोग करताहुआ रहनेलगा एकसमय जीमूतवाहन अपने साले मित्रावसुको साथ लेकर समुद्र के किनारों की सैर करने को गया वहां जाकर देखा कि एक युवापुरुष उदासीन होकर आया है और हा पुत्र २ कहकर रोतीहुई अपनी माताको लौटारहाहै उसीके साथमें एक दूसरा पुरुष और है जिसने कि उसे एक बड़ी ऊँची शिलाके पास जाकर छोड़दियाहै यह देखकर जीमूतवाहनने उस उदासीन पुरुषसे पूँछा कि तुम कौनहो क्या चाहतेहो और तुम्हारी माता क्यों शोक कररही है यह सुनकर उसने कहा कि पूर्व्वसमय में कश्यप मुनिकी स्त्री कद्रू और विनताने आपसमें कथा प्रसंगसे परस्पर यह विवाद किया कि सूर्य्य के घोड़े काले हैं अथवा श्वेत तब कद्रूने कहा काले हैं और विनताने कहा श्वेत और यह प्रण किया कि जो हारे वह दासीहोय तब कद्रूने एकान्तमें अपने पुत्र सर्पोंसे कह कर विषके फूत्कारों से सूर्य्य के घोड़े काले करवादिये और विनता को उसीप्रकार के काले दिखलाकर छल से उसे जीतकर अपनी दासी बनालिया ठीक कहाहै स्त्रियोंका दाह बड़ाही कठिन होताहै यह सब वृत्तान्त जानकर विनताके पुत्र गरुड़ने कद्रूको समझाकर अपनी माताको दासीपने से छुटानेकी प्रार्थना की तब कद्रूके पुत्र सर्पोंने शोचकर गरुड़ से कहा कि हे वैनतेय! देवतालोगों ने समुद्र के मथनेका प्रारम्भ किया है वहांसे अमृत लाकर जो हमको दो तो अपनी माताको लेजाओ क्योंकि तुम बड़े बलवान् हो सर्प्पों के यह वचन सुनकर गरुड़ने क्षीर समुद्र में जाकर अमृत के लिये बड़ा ही पुरुषार्थ दिखाया गरुड़के पराक्रम को देखकर प्रसन्न हुए भग-

वान् विष्णुने कहा कि तुम्हारे ऊपर मैं प्रसन्नहूं तुम कोई वर मांगो भगवान् के वचन सुनकर माताके दासीभाव से क्रुद्धहुए गरुड़ने यह वर मांगा कि सर्प हमारे भक्ष्य होजायँ भगवान् ने कहा ऐसा ही होगा इसप्रकार भगवान् से वर पाकर और अपने पराक्रम से अमृत लेकर जब गरुड़ चलने लगे तब इन्द्रने सब वृत्तान्त जान कर उनसे कहा कि हे पक्षीन्द्र! ऐसा उपाय करना जिससे मूर्ख सर्प अमृत न खासकें और मैं उनसे लेआऊं इन्द्र के वचनको स्वीकार करके विष्णु भगवान् के वरदान से बड़े प्रचण्ड गरुड़जी अमृतके कलशको लेकर सर्पों के पास आये और वरके प्रभाव से डरे हुए मूर्ख सर्पोंसे बोले कि यह अमृत हम लेआये हैं तुम हमारी माता को छोड़कर इसको लो और जो तुम्हें सन्देहहोवे तो मैं इसे कुशों पर रक्खे देताहूं और अपनी माताको छुड़ाकर लिये जाताहूं तुम इसे लेलेना सर्पोंने गरुड़की वात स्वीकार करलीनी तब गरुड़ ने पवित्र कुशासन पर अमृतका कलश रखदिया और सर्पोंने उनकी माता को छोड़दिया इसप्रकार अपनी माता को दासीभावसे छु-ड़ाकर गरुड़जी के चलेजाने पर जैसेही सर्प निस्सन्देह होकर अमृतको लेनेलगे वैसेही इन्द्र वहां आकर अपनी शक्तिसे सर्पोंको मोहित करके कुशासन परसे अमृत के कलश को हरलेगया तब सर्प अत्यन्त दुःखित होके उन कुशों को इस लोभसे चाटने लगे कि कदाचित् कुछ अमृत इन में लगगया होगा इससे जिह्वा के कट जाने से वह नाहकही द्विजिह्वता को प्राप्त होगये ठीक है अ-त्यन्त लोभियों को हँसी के सिवाय और क्या फल होना चाहिये इसके उपरान्त सर्पों को अमृत तो नहीं मिला परन्तु गरुड़ने बैर मानकर विष्णु भगवान् के वरसे वहां आन २ कर उनका खाना

आरम्भ करदिया गरुड़के आने से पाताल में छिपेहुए विष रहित तो निर्जीव होजाते थे और गर्भिणी नागिनियों के गर्भ गिर पड़तेथे इसप्रकार सर्पोंको नष्ट होते देखकर वासुकी ने विचार करके बड़े बलवान् गरुड़से प्रार्थनाकरके यह नियमकरके कहा कि हे पक्षीन्द्र! एक सर्प हम तुम्हारे लिये समुद्र के तटके पर्वतपर रोज़ भेजा करेंगे आप पाताल में न आया करिये क्योंकि आपके यहां पर आनेसे बहुत से सर्प नाश हुये हैं मैं शङ्खचूड़ नाम सर्प हूं और आज मेरी बारी है इसी से में सर्पराज की आज्ञा से गरुड़ के भोजन के लिये इस वध्यशिलापर आयाहूं और यही कारणहै कि मेरी माता अत्यन्त शोक कररहीहै उसके यह वचन सुनकर जीमूतवाहनने बहुत दुःखित होकर कहा कि सब परमेश्वर कुशल करेंगे और यह भी कहा कि सर्पों के राजावासुकी बड़ेही निस्सत्त्वहैं कि जो अपने ही हाथ से अपनी प्रजाको शत्रु की भेंट करते हैं उस नपुंसक ने पहले अपने आप को ही गरुड़ को न देकर अपने वंशका क्षय देखना स्वीकार किया कश्यपजी से उत्पन्न होकर गरुड़भी कैसा पाप करते हैं ठीकहै महात्मालोगों को भी केवल शरीरही के निमित्त कैसा मोह होताहै तो आज मैं गरुड़को अपना शरीर देकर तुम्हें बचाऊंगा हे मित्र ! शोक मतकरो जीमूतवाहन के यह वचन सुनकर शंखचूड़ने धैर्य धारण करके यह वचन कहा कि ईश्वर न करे ऐसा होय हे वीर ! अब ऐसा मत कहना कांचके निमित्त मोती की हानि करना उचित नहीं मैं ऐसा करके कुलका कलंकी नहीं होऊंगा इसप्रकार जीमूतवाहन से कहकर और क्षणभरमें गरुड़ के आनेका समय जानकरके शंखचूड़ समुद्रके तटपर वर्तमान श्रीगोकर्णनाम शिवजीको अन्तसमय में नमस्कार करनेको गया उसके

चलेजानेपर अत्यन्त दयालु जीमूतवाहनने जाना कि इसके बचाने का अवसर मुझेमिला और शीघ्रही उस बातको विस्मृतसी करके युक्तिपूर्वक किसीकार्य्य के वहाने से मित्रावसु को अपने घर भेज दिया उससमय निकट आये हुये गरुड़ के पंखों की वायुके वेगसे यहां की पृथ्वी जीमूतवाहन के सत्त्वके देखने के आश्चर्य से मानों कांपउठी उस भूकम्प से गरुड़ को आतेहुये जानके परमदयालु जीमूतवाहन उस वध्यशिला पर चढ़गया उसी क्षण में अपनी छाया से आकाश को आच्छादित करतेहुये गरुड़जी चोंचमारकर जीमूतवाहन को उठालेगये और जिसके शरीर से रुधिर टपकरहा है जिसकी चूड़ामणि उखड़कर पृथ्वीपर गिरपड़ी है ऐसे जीमूतवाहनको पर्वतके शिखरपर लेजाकर खानेलगे उससमय आकाश से पृथ्वीपर पुष्पोंकी वर्षाहुई और उसे देखकर गरुड़को आश्चर्यहुआ कि यह क्या बातहै यहां तो गरुड़जी जीमूतवाहनको खारहेथे और वहां गोकर्ण नाम शिवजी को नमस्कार करके लौटेहुये शङ्खचूड़ ने वध्यशिलापर पड़ाहुआ रुधिर देखा यह देखकर कहा कि हाय मुझे धिक्कार है मेरे लिये उस महात्माने शरीर देदिया तो इससमय गरुड़ उसे कहां लेगये होंगे जलदी से ढूंढूं कदाचित् मिलजाय यह शोचकर वह उस रुधिर को देखताहुआ चला इसी बीच में गरुड़ जीमूतवाहन को प्रसन्न देखकर भक्षण करना त्यागकर आश्चर्यपूर्वक शोचा कि क्या यह कोई औरही है जो मुझसे भक्षण किया जाता भी दुःख के सिवाय प्रसन्न होरहा है इसप्रकार शोचते हुये गरुड़ से जीमूतवाहन अपने अभीष्ट को सिद्ध करने के लिये बोला कि हे पक्षिराज ! मेरे शरीर में रुधिर और मांस है तुम क्यों बिना तृप्तहुए भोजन से निवृत्त होगये हो यह सुनकर गरुड़ ने

बहुत आश्चर्य्ययुक्तहोकर कहा कि साधो तुम सर्प्प तो नहीं हो बताओ कौनहो यह सुनकर जीमूतवाहनने कहा कि सर्प्पहीहूं तुम अपने कामको करो क्या धीरलोग कार्य्य को प्रारम्भ करके विना समाप्त किये ही छोड़ देते हैं जिससमय जीमूतवाहन यह कहरहा था उसीसमय शङ्खचूड़ने दूरसे पुकारकर कहा कि हेगरुड़! यह सर्प नहीं है तुम्हारा भक्ष्य सर्प्प मैंहूं तुम इसे छोड़दो यह तुमको कैसा अयोग्य भ्रमहुआ है यह सुनकर गरुड़को तो बड़ा भ्रमहुआ और जीमूतवाहन को अपने मनोरथ के न होने से खेदहुआ तब परस्पर की बातों से जीमूतवाहन को विद्याधरों का स्वामी जानकर गरुड़ जी को अज्ञानता से उसके खानेका बड़ा सन्ताप हुआ कि अरे मुझ पापी नें यह बड़ाही अधम कार्य्य किया अथवा कुमार्ग्ग में चलने वालों को पाप सुलभही होते हैं एक यही महात्मा प्रशंसा करने के योग्य है जिसने पराये निमित्त प्राणदेकर ममताके मोह में पड़ेहुये सम्पूर्ण को तुच्छ करदिया इसप्रकार विचार करके पाप से छूटने के लिये अग्नि में प्रवेश करनेकी इच्छा करतेहुये गरुड़ से जीमूतवाहनने कहा कि हे पक्षीन्द्र! क्यों दुःखी होतेहो जो तुम सत्य २ ही पाप से डरतेहो तौ अब कभी सर्पों को न खाना और जिनको खाचुकेहो उनकेलिये पश्चात्ताप करो यही इसका उपायहै और अन्य तुम्हारा शोचना व्यर्थ है इसप्रकार उस दयालुके बचनों को सुनकर गरुड़ ने प्रसन्नहोकर गुरुके समान उसके बचन स्वीकार करलिये और जीमूतवाहन के घायल अङ्गोंको पुष्ट करने के लिये तथा अन्य मरेहुये सर्पों के जिलाने के लिये स्वर्ग में अमृत लेने को गरुड़जी चलेगये इसके उपरान्त मलयवती की भक्ति से प्रसन्नहुई भगवती नें साक्षात् वहां आकर जीमूतवाहन पर अमृत

सींचा इससे उसके अंग पहलेसे भी अधिक सुन्दर होगये तब देवता लोगों ने आनन्द से आकाश में दुन्दुभी बजाई इसप्रकार जीमूतवाहन के स्वस्थ होजाने पर गरुड़ने स्वर्ग से अमृत लाकर सम्पूर्ण समुद्रके तटपर बरसाया उससे जिन सर्प्पोंका हाड़ आदिक कोईभी अंग पड़ाथा वहसब जीउठे उससमय अनेक सर्प्पोंसे व्याप्त समुद्रका तट ऐसा शोभित हुआ कि मानों गरुड़ के भयसे रहित होकर सम्पूर्ण पाताल जीमूतवाहनके देखने को आयाहै इसके उपरान्त अक्षय शरीर तथा यशसे विराजमान जीमूतवाहनको जानकर उस के बन्धुजन अत्यन्त प्रसन्न हुये और उस की स्त्री तथा माता पिताभी अत्यन्त आनन्दित हुए ठीक है सुखरूपसे अन्तमें परिणत होनेवाले दुःखसे कौन नहीं प्रसन्न होता है इसके उपरान्त जीमूतवाहन से आज्ञा लेकर शङ्खचूड़ पातालको चलागया और जीमूतवाहनका यश तीनों लोकों में छागया उससमय श्रीभगवतीजी की कृपासे जीमूतवाहनके मतंगादिक बान्धव जो कि प्रथम विरुद्ध होगयेथे वह सब भयभीत होकर आप आकर उससे मिले और बहुतसी प्रार्थना करके जीमूतवाहन को मलयाचल से हिमालय पर लेगये वहां मित्रावसु मलयवती तथा अपने माता पिता समेत जीमूतवाहन विद्याधरों का चक्रवर्ती होकर बहुत कालतक राज्यका भोग करतारहा इति ॥

यथा ॥

काशीजी में विक्रमचण्डनाम एकराजाथा उसके अत्यन्त प्रिय सिंहपराक्रम नाम एक सेवकथा वह रणके सिवाय द्यूतमें भी अद्वैत जीतनेवाला था उस सिंहपराक्रम के कलहकारी यह यथार्थ नाम की स्त्री थी वह जैसी कुरूपथी वैसीही चित्तसेभी कुटिलथी सिंह-

पराक्रम राजा से और द्यूतसे बहुतसा धन लाय लाय कर उसको देता परंतु वहदुष्टास्त्री अपने तीन पुत्रोंसमेत क्षणभरभी विनाकलह किये नहीं रहती थी सिंहपराक्रम से यह कहकर कि तू नित्यबाहर ही मद्यपान और भोजन करताहै और मुझे कुछ नहीं देता अपने पुत्रोंसमेत उससे यह कहकर अत्यन्त सतायाकरतीथी यद्यपि वह भोजन तथा वस्त्रों से उसे नित्य प्रसन्न करताथा तथापि वह दुरन्त भोग तृष्णाके समान सदैव जाज्वल्यमान बनी रहतीथी इसके उपरान्त धीरे २ उसके क्रोधसे बहुत खिन्नहोकर सिंहपराक्रम विन्ध्यवासिनी के दर्शन को चलागया और वहां निराहार होकर पड़ा रहा रात्रि के समय उससे भगवती ने स्वप्नमें कहा कि हे पुत्र! उठो उसी काशीपुरी को जाओ वहां जो सबसे बड़ा बरगदका वृक्षहै उसकी जड़में खोदने से तुमको बहुतसा धन मिलेगा और उसीमें खड्गके समान निर्मल बड़ाभारी गरुड़ माणिक्यका एकपात्र मिलेगा और उसको देखने से उसके भीतर सम्पूर्ण प्राणियोंकी पूर्व जन्मकी जाति को जानकर खेद रहित होकर सुखपूर्वक रहोगे इस प्रकार भगवती से कहागया वह सिंहपराक्रम जगपड़ा और प्रातःकालही पारणकरके काशीपुरी को चलागया वहां आकर बरगद की जड़से बहुतसी निधि और माणिक्यपात्र उसको मिला और उसपात्रमें जो उसने देखा तो उसकी स्त्री पूर्वजन्मकी रीछनी थी और वह सिंहथा इसप्रकार पूर्वजन्मके महाबैरकी बासनासे अपने वैरको निश्चल जानकर उसने शोक और मोह छोड़दिया फिरउस पात्रके प्रभावसे बहुतसी भिन्न जातिवाली कन्याओं को छोड़कर पूर्वजन्मकी सिंहनी सिंह श्रीनामवाली दूसरी स्त्री के साथ बिवाह किया और उस कलहकारिणी को केवल भोजन देकर अलग कर

दिया और निधिको पाके नवीन स्त्री समेत सुखपूर्वक रहनेलगा—

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेद्वात्रिंशःप्रदीपः ३२ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागे त्रयस्त्रिंशःप्रदीपः ३३ ॥

धूर्ताश्छलेन जीवंति यथास्तांशिवमाधवौ ।
लक्ष्मीगृहादिरहितंचक्रतुस्तौपुरोधसम् ३३ ॥

(अर्थ)—धूर्त लोग छलसेही निज आजीविका करलेते हैं— जैसे शिवमाधव इन दोनों धूर्तों ने राजाके पुरोहितको धन गृहादि से हीन करदिया ३३ ॥

रत्नपुरनाम यथार्थ नामवाले नगरमें शिव और माधव दो धूर्त रहते थे उन दोनों ने बहुत से धूर्तों को अपने साथ में लेकर अपनी माया के प्रयोग से नगरके सम्पूर्ण धनी लोग ठग लिये एक समय उन दोनों ने आपसमें यह सलाह करी कि यह नगर तो हमने सब ठग लिया इससे अब उज्जयिनी पुरी में चलकर रहैं वहां राजाका शंकरस्वामी नाम पुरोहित बड़ा धनवान् सुनाई देता है युक्ति पूर्वक उससे धन लेकर मालवदेशकी स्त्रियों के रसको भोग करैंगे उज्जयिनी के ब्राह्मणलोग उसे यमराज के समान कठिन कहते हैं क्योंकि वह उनसे आधी दक्षिणा लेलेता है और एक कन्या भी उसके है वह भी इसी प्रसंगसे हमैं अवश्य मिलेगी इस प्रकार निश्चयकरके और अपने २ कर्तव्य का विचार करके वह दोनों धूर्त उसपुरी से चले धीरे २ उज्जयिनी के निकट पहुँचकर माधवने राजपुत्रका भेष बनाकर सब सामान सहित नगरके बाहर डेराकिया और शिव पहलेही ब्रह्मचारी का भेष बनाकर अकेला उस नगरी में चलागया और वहां क्षिप्रानदी के किनारे पर एक मठ बनाकर उसमें मृत्तिका कुश भिक्षाके पात्र तथा मृगचर्म्म को

सबके देखने के योग्य स्थानमें रखकर रहनेलगा और प्रातःकाल बहुतसी मृत्तिका अपने शरीर में लपेटकर नदी के जलमें बहुत कालतक अधोमुखहोकर रहताथा मानों कुकर्म से होनेवाली अपनी अधोगतिका पहलेही से अभ्यास करताथा और स्नानकरके बहुत कालतक सूर्य्य के सन्मुख जाकर कुशोंको हाथमें लेके पद्मासन से बैठाहुआ दम्भमें अत्यन्त चतुरहोकर जप करताथा इसके अनन्तर साधु लोगोंके हृदयों के समान स्वच्छ पुष्पोंको लेकर श्रीशिवजी का पूजन करताथा और पूजनकरके फिर भी झूठमूठ ध्यान देकर जप करताथा मानों आगे होनेवाले नरकोंका ध्यान करताथा और अपराह्न के समय मृगचर्मको पहिनकर भिक्षाके निमित्त मायारूपी स्त्री के कटाक्षके समान वह पुरमें घूमताथा ब्राह्मणों के घरों से तीन भिक्षाओंको लेकर उसभिक्षाके तीनभाग करताथा एकभाग काकों को देताथा एक भाग अभ्यागतों को देताथा और एक भाग से अपना पेट भरताथा भोजन के उपरान्त मालाको लेकर फिर झूठ मूठ जप किया करताथा मानों अपने सम्पूर्ण पापोंको गिनता था और रात्रिके समय लोगोंकी सूक्ष्मतर्क करनेकी बातोंको विचारताहुआ अकेला उसी मठमें रहताथा इसप्रकार प्रतिदिन अत्यन्त कठिन कपटमें भरेहुए तपकोकरके उसने नगरनिवासियों का चित्त अपने बशीभूत करलिया नगरभरेमें उसकी यह प्रसिद्धि होगई कि वहबड़ा शांत तथा तपस्वी है और सम्पूर्ण लोग उसके भक्तहोगये इसके उपरान्त उसका मित्र माधव भी दूतके मुख से यह वृत्तान्त सुनकर नगरी में आया और वहां थोड़ी दूरपर किसी देवमन्दिर में रहकर राजपुत्र के भेषसे क्षिप्रानदी में स्नान करने को गया और स्नान करने के उपरान्त देवता के आगे अपने मित्र शिव को

देखकर नम्रता पूर्व्वक उसके पैरों पर गिरपड़ा और सब लोगों को सुनाकर बोला कि ऐसा और कोई तपस्वी नहीं है मैंने इसे बहुधा तीर्थों पर घूमताहुआ देखा है और शिव इसको देखकर भी उसी प्रकार से खड़ारहा फिर माधव अपने डेरोंको चलागया रात्रि के समय दोनों ने एक स्थान में मिलकर भोजन तथा पानकरके आगे जो कुछ कर्तव्यथा उसकी सलाहकी पिछले पहर शिव तो अपनी मठी में चलाआया और माधव ने प्रातःकाल उठकर एक धूर्तसेकहा कि दो बस्त्रोंकी भेंटलेकर राजाके पुरोहित शंकरस्वामी के यहां जाओ और उनसे जाकर विनयपूर्वक यह कहो कि माधव नाम राजपुत्र अपने गोती भाइयों के द्वारा राज्यसे निकाल दिया गया है वह कईएक अन्य राजपुत्रों को भी अपने साथ में लेकर और अपने पिता का बहुतसा धन लेकर दक्षिण दिशा से यहां आयाहै और आपके राजाका सेवन करना चाहताहै उसीने आपके दर्शन करने के लिये मुझको भेजा है इसप्रकार कहकर माधवका भेजाहुआ वह दूत भेंट लेकर पुरोहितजी के यहां पहुँचा और एकान्त में भेंट देकर उसने माधव का सब संदेशा उससे कहदिया उसने भी भेंटके लोभसे और आगेको भी बहुतसा लाभ समझकर उनबातोंपर विश्वास करलिया ठीक है कुछ देनाही लोभियों के आकर्षण करनेकी परम औषधि है इसके उपरान्त उस धूर्तके लौट आनेपर दूसरे दिन माधव अवकाश पाकर उस पुरोहित के पास आपही गया राजपुत्रों के भेषको धारण कियेहुए बहुतसे धूर्तोंको साथ में लेकर पुरोहित के यहां पहुँचा पुरोहितने भी पहलेही से उसका आगमन सुनकर आगे आकर उसेलिया और स्वागत पूँछ कर उसे बहुत प्रसन्न किया वहां थोड़ीदेर उसकेसाथ बैठकर माधव

अपने डेरेपर चलाआया दूसरे दिन फिर दोबल भेजकर उसकेपास गया और बोला कि कुटुम्ब के अवरोध से मैं सेवा करनेकी इच्छा करताहूं इसीसे मैंने आपका आश्रय लिया है और धनतो मेरेपास बहुत है उसके यह वचन सुनकर पुरोहित ने अधिक धन पानेकी इच्छासे कहा कि मैं तुम्हारा अभीष्ट सिद्धकरदूंगा और क्षणभर में राजाके पास जाकर माधवकी जीविका के लिये पुरोहितजीने विज्ञापनाकरी और राजाने भी उसके गौरवसे वह बात स्वीकारकरली दूसरे दिन पुरोहित अन्य धूर्तोंसमेत माधव को राजाके निकट ले गया राजाने भी माधव की आकृति राजपुत्रों के समान देखकर आदर पूर्वक उसकी जीविका अपने यहां करदी इसके उपरान्त माधव सेवा करनेलगा रात्रिके समय वह अपने मित्र शिवके पास आकर सलाह करजाया करताथा माधवसे उस पुरोहितने लोभ से कहा कि तुम मेरेही घरमें आकर रहौ तब वह अपने सम्पूर्ण साथियों समेत उसके घरमें जाकररहा और कृत्रिम माणिक्यों के बने हुए भूषणों से भराहुआ पात्र उसीके यहां रखवाकर और अनेक बहानों से उसे बीच २ में भी खोलकर उन्न आभूषणोंसे उसने उस पुरोहितका चित्त हरलिया वासको देखकर पशुके समान लोभित हुए उस पुरोहितके विश्वासित होजानेपर माधवने भोजन घटाकर अपना शरीर दुर्बल करके मिथ्यारोग प्रगट किया कुछ दिनों के व्यतीत होनेपर शय्या के पास बैठेहुए पुरोहित से धूर्तराज माधव धीमे स्वरसे बोला कि मेरे शरीरकी दशा अब अच्छी नहीं है इससे आप किसी उत्तम ब्राह्मण को बुलालाओ जिसे मैं संकल्प करके अपना सर्व धनदेदूं इससे मेरे इसलोक और परलोक दोनों में उपकारहोगा धीरलोग प्राणोंको स्थिर न जानकर धनपर ममता नहीं

करते हैं उसके यह वचन सुनकर दानकी जीविका करनेवाला पुरोहित बोला कि मैं ऐसाही करूंगा यह सुनकर माधव उसके पैरों पर गिरपड़ा इसके उपरान्त पुरोहित जिन जिन ब्राह्मणोंको बुलाकर लाया उन सबपर माधवने उत्तम न समझकर श्रद्धा न की यह देखकर उसके पास बैठाहुआ एक धूर्त्त बोला कि इसे प्रायःसामान्य ब्राह्मण अच्छो नहीं मालूम होतो इससे यह जो क्षिप्रानदीके तट पर शिवनाम बड़ातपस्वी ब्राह्मण रहताहै वह इसे अच्छा मालूम होता है कि नहीं यह सुनकर माधव ने उस पुरोहित से कहा कि आप मेरे ऊपर कृपाकरके उस ब्राह्मणको लेआइये क्योंकि उसके समान और कोई ब्राह्मण नहीं है उसके यह वचन सुनकर पुरोहित शिव के पासगया उस समय वह निश्चल ध्यान लगायेहुए बैठा था पुरोहित प्रदक्षिणा करके उसके सम्मुख बैठगया और उस समय शिवने धीरे से नेत्र खोलकर देखा तब पुरोहित प्रणाम करके बोला कि हे प्रभो! जो आप कोप न करें तो मैं एक प्रार्थना करूं यह सुनकर उसने इशारा किया कि कहौ तब वह बोला कि माधव नाम बड़ा धनवान् एक दक्षिण का राजपुत्र मेरे यहां रहता है वह अपना सम्पूर्ण आभूषण आपको देवे यह सुनकर शिव ने धीरे से कहा कि हे ब्राह्मण! मुझ भिक्षुक ब्रह्मचारी को धनसे क्या प्रयोजन है तब पुरोहित ने कहा कि आप ऐसा मतकहौ क्या आश्रम के क्रमको आप नहीं जानतेहौ बिवाह करके घर में देव पितृ और अतिथियों का पूजन करते हुए गृहस्थ लोग धन से धर्म अर्थ काम इनतीनोंको प्राप्तहोते हैं क्योंकि गृहस्थाश्रम सम्पूर्ण आश्रमों से श्रेष्ठ है यह सुनकर शिवने कहा कि मेरा बिवाहही कहां हुआ है और बिवाह में कठिनता यह है कि मैं ऐसे वैसेसाधा

रण कुल से कन्या नहीं लूंगा उसके यह वचन सुनतेही पुरोहित ने अपने मन में शोचा कि जो इसका विवाह मेरी कन्या से होजाय तो धन सुखपूर्वक भोग करने को मिलै यह शोचकर उसने कहा कि मेरे विनयस्वामिनी नाम एक अति सुन्दर कन्या है वह मैं आपको देदूंगा इससे आप गृहस्थाश्रम को स्वीकार करिये और जो कुछ धन आपको माधवसे मिलेगा उसकी रक्षा मैं करूंगा तब शिव अपने मनोरथको सिद्धजानकर यह वचन बोला कि हे ब्राह्मण! यदि आपको ऐसाही आग्रहहै तो मैं ऐसाहीकरूंगा परंतु मैं तपस्वी होने के कारण सुवर्ण और रत्नको नहीं जानता और तुम्हारे ही वचन से इसकार्य्य में प्रवृत्तहोताहूं इससे तुम्हें जैसा योग्य समझपड़े वैसाकरो शिवके यह वचन सुनकर प्रसन्न हुआ पुरोहित उसे अपने घरको लेगया वहां उसे लेजाके माधव से सम्पूर्ण वृत्तान्त कहदिया और वह भी सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ उस समय पुरोहित ने मूर्खता से हारीहुई सम्पत्ति के समान अपनी कन्या अशिवरूप शिवको देदीनी फिर विवाह करने के उपरान्त तीसरेदिन पुरोहित शिवको दान दिलाने के लिये माधवके पास लेगया उसे देखतेही तुझ महातपस्वी को मैं वन्दना करताहूं यह मिथ्यावचन सुनाकर माधव उसके पैरोंपर गिरपड़ा और पुरोहितके यहां से वह कृत्रिममाणिक्यों के बनेहुए आभूषण उसे देदिये शिवने भी मैं इनके मूल्यको नहीं जानताहूं तुम्हींजानो यह कहकर पुरोहित को वह सब देदिये पुरोहित ने भी मैं तो पहलेही स्वीकार करचुकाहूं आपको क्या चिन्ता है यह कहकर सब आभूषण लेलिये इसके उपरान्त शिव तो आशीर्वाद देकर अपनी स्त्री के पासचलागया और पुरोहितने वह सब अपने भंडार में रखदिये माधव भी

दूसरे दिनसे महादान के प्रभाव से अपने रोगका धीरे२ शान्त होना कहनेलगा और पुरोहित से बोला कि तुम्हारी सहायता से मैं इस महाआपत्ति से पारहुआ इसी के प्रभाव से यह मेरा शरीर बचाहै यह कहकर शिवके साथ प्रत्यक्ष में भी मित्रता करनेलगा इसके उपरान्त कुछ दिनों के व्यतीत होने पर शिव ने पुरोहित से कहा कि इसप्रकार से मैं तुम्हारे यहां कबतक भोजनकरूंगा इस से तुम्हीं इन आभूषणों को क्यों नहीं मोललेलेतेहो और जो इन आभूषणों को बहुमूल्य जानतेहो तो जो कुछ तुम से होसके वही मुझको देदो यह सुनकर पुरोहित ने उन आभूषणोंको बहुमूल्य समझकर उसने एकलेख शिवसे लिखवालिया और आपने भीउ से लिखदिया इसप्रकार उनदोनों ने एकदूसरे का लिखाहुआ काग़ज़ लेलिया और अपना निवास भी दोनोंने अलग २ करलिया इसके उपरान्त शिव और माधव दोनों पुरोहितके धनको भोगतेहुए सुख पूर्वक रहनेलगे कुछ समयके व्यतीत होने पर पुरोहित उन आभूषणों में से एक आभूषण लेकर बाज़ारमें बेचनेकोगया वहां उस आभूषण को देखकर रत्न के पहिचाननेवाले बनिये बोले कि किस में ऐसी चतुरताहै जिसने यह कृत्रिम आभूषण बनायाहै यह तो पीतलमें नड़ेहुए अनेक रंगों से रँगेहुए कांच तथा बिल्लौरके टुकड़े हैं इसमें न रत्न हैं न सुवर्ण है यह सुनकर पुरोहित ने बहुत बिह्वल होकर सब आभूषण घरसे लाकर उन्हें दिखाये उनलोगों ने देखकर कहा कि यह सब आभूषण कृत्रिमहैं यह सुनतेही पुरोहित की छाती में बज्रसा लगा और उसने उससमय शिवसे जाकर कहा कि तुम अपने आभूषण लेलो और धन देदो तब शिवने उत्तर दिया कि अब मेरे पास धन कहा है मैंने सब खर्च करडाला तब लड़तेहुए

वह दोनों राजा के पासगये वहां माधव भी राजाके पास बैठा था पुरोहितजी ने राजासे कहा कि शिवने पीतल में जड़ेहुए अनेक रंगों से रँगेहुए कांच तथा बिल्लौर के टुकड़ों से बनेहुए झूठे आभूषण मुझे देकर मुझ न जाननेवाले का सर्व्वस्व खाडाला तब शिवने कहा कि हे महाराज ! मैं तो बाल्यावस्थासेही तपस्वीथा इसी ने बहुत प्रार्थना करके मुझे दान दिलवाया और मैंने उसीसमय इससे कहदियाथा कि मैं रत्नादिक और सुवर्ण नहीं पहिचानता हूं तुम्हें जैसा समझपड़े वैसाकरो इसने कहाथा कि मैं सब देखलूंगा तुमको इससे कुछ काम नहीं और मैंने वह सब लेकर इसी को दे भी दियाथा तब इसने अपनी इच्छा के अनुसार मुझे मोल देकर सब लेलिया इस विषय में हमारी इनकी लिखापढ़ी भी होगई थी वह दोनों के पासहै अब आप जैसा उचित समझिये वैसा कीजिये इसप्रकार कहकर शिवके चुप होजानेपर माधव पुरोहित से बोला कि आप जैसा उचित समझिये वैसा कीजिये इसप्रकार कहकर शिवके चुप होजानेपर माधव पुरोहित से बोला कि आप ऐसा न कहिये इस में मेरा भी कोई अपराध नहीं है मैंने आप से और शिवसे कुछ ले नहीं लिया मैंने अपने पिताका धन किसी के पास रखदियाथा बहुत दिनके पीछे उससे लेकर यहां चलाआया और वही दान करके देदिया यदि सत्य २ उसमें सुवर्ण तथा रत्न नहीं है तो मुझे पीतल बिल्लौर तथा कांचही के देनेका फल होगा और निष्कपट होनेके कारण मुझे तो दानमें विश्वासहै इसी के प्रभाव से मैं अत्यन्त महाकठिन रोगसे निवृत्त होगया यह सब कोई जानताहै इसप्रकार जब माधवने कहा और उसके मुखपर किसीप्रकार का विकार नहीं मालूमहुआ तब राजा सम्पूर्ण मंत्रियोंसमेत हँसा

और माधव पर प्रसन्न होगया उससमय सम्पूर्ण सभाके लोगों ने हँसी को रोककर यह कहा कि इसमें माधव और शिव किसी का भी कोई दोष नहीं है यह सुनकर पुरोहित लज्जित होकर वहां से चलागया ठीक कहाहै कि अत्यन्त लोभान्ध होने से मनुष्यों पर कौन २ सी विपत्ति नहीं आती इसप्रकार पुरोहित तो अपना धन गवांकर चलेगये और वह दोनों धूर्त्त प्रसन्नहोकर राजा से बहुत सा धन पाकर सुखपूर्वक वहीं रहनेलगे इसीप्रकार से जालसाजी करके जीविका करनेवाले धीवरों के समान धूर्त्त सैकड़ों प्रकार के ढंगोंको रचकर संसार में जाल फैलाते हैं ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेत्रयस्त्रिंशःप्रदीपः ३३ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे चतुस्त्रिंशः प्रदीपः ३४ ॥

तिरस्कुर्यादार्यमपिखलसंवादशृंखला ।
हरस्वामीयथादुष्टैर्बालभक्षीतिज्ञापितः ३४ ॥

(अर्थ) दुष्टलोगों की बातों की परम्परा महात्माजन का भी तिरस्कार करदेवे—जैसे हरस्वामीको लोगों ने बालकों को खाने-वाला प्रसिद्धकिया ३४ ॥

कुसुमपुरनाम नगरहै वहां तीर्थोंका सेवन करनेवाला हरस्वामी नाम एक ब्राह्मण रहता था वह गंगाजी के किनारे कुटी बनाके भिक्षावृत्ति से अपना पालन करता था और तपके प्रभाव से वहां के निवासियों पर उसका बड़ा दबाव होगया था एक समय उस ब्राह्मण को भिक्षा मांगनेको जातेदेखकर उसके गुणों में ईर्षाकरने वाले एकदुष्टने लोगों से कहा कि क्या तुम जानतेहो कि यह कैसा कपटी तपस्वी है इसीने इस नगर में सब बालकखाये हैं यह सुनकर उसीका साथी एकदुष्ट बोला कि तुम ठीक कहतेहो मैंने भी लोगों

से ऐसाही सुना है तब एक तीसरा दुष्ट और बोला कि हां यहबात बहुत ठीकहै सत्यकहाहै कि दुष्ट लोगोंकी बातोंकी परम्परा सज्जन लोगों के अपयश को करतीहै इसी क्रमसे एकसे दूसरे के कान में जाता हुआ यह चवाव सम्पूर्ण नगर में फैलगया तब सम्पूर्ण पुरवासी अपने बालकों को घरसे बाहर नहीं निकलने देते थे इस कारण कि हरस्वामी लड़कों को लेजाकर खाडालताहै इसके उपरान्त वहां के सम्पूर्ण ब्राह्मणों ने बालकों के नाशके भयसे उसको नगर से निकाल देनेकी सलाह की और सब लोग इस भय से कि यह क्रोध करके हमीं लोगों को न खाडाले उसके पास नहीं जासके तब उन्होंने उसके पास दूत भेजे दूतों ने दूरही से जाकर उससे कहा कि ब्राह्मण लोग कहते हैं कि तुम इस नगरसे चले जाओ उसने आश्चर्ययुक्त होकर उनसे पूछा कि क्यों ऐसा कहते हैं तब दूतोंने उत्तर दिया कि तुम जिस बालक को देख पाते हो उसे खाडालते हो यह सुनकर हर स्वामी ब्राह्मणों को समझाने के लिये आपही उनके पास चला उसेआते देखकर लोग भागने लगे और ब्राह्मण लोग भयसे अपने अपने मठों पर चढ़गये ठीक है प्रायः मिथ्या अपवाद से मोहित हुये लोग विचार नहीं करसक्ते हैं इसके उपरान्त हर स्वामी ने नीचे खड़े होकर मठोंपर खड़े हुये ब्राह्मणों से एक एक का नाम लेकर कहाकि हे ब्राह्मण लोगो! तुम्हें आज यह क्या अज्ञान हुआ है अपने आपस में क्यों नहीं देखते हो कि मैंने किसके कितने बालक कब कहां खाये हैं यह सुनकर सब ब्राह्मण लोगों ने आपस में बिचार किया तो मालूम हुआ कि सब के बालक जीते हैं क्रम से सब पुरवासियों ने विचार किया तो सबको मालूम हुआ कि किसीका भी बालक उसने नहीं

खाया यह देखकर सम्पूर्ण ब्राह्मण तथा बनियों ने कहा कि अरे हम सब मूर्ख लोगों ने इस साधूको मिथ्याही दोष लगाया सबके बालक तो जीते हैं इसने किसके बालक खाये इसप्रकार सबलोगों के कहने पर हर स्वामी अपनी शुद्धताको प्रगट करके नगर से जानेको तय्यार हुआ ठीक कहाहै कि दुर्जनोंके द्वारा लगाये हुये दोष से विरक्त चित्तवाले धीर लोगोंको विवेक रहित दुर्देश में स्नेह नहीं होताहै इसके उपरान्त ब्राह्मण व बनियोंने चरणों पर गिरकर हरस्वामी को बहुत समझाया तब उसने बड़े आग्रहसे वहां रहना स्वीकार किया ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनींचतुर्थभागेचतुस्त्रिंशःप्रदीपः ३४ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेपञ्चत्रिंशःप्रदीपः ३५ ॥

सत्यवक्ताप्रमुच्येत्प्राणार्थंगोवधादपि ॥
यथापुत्राद्विजस्यासन्निष्पापागोवधादपि ३५ ॥

(अर्थ) सत्यवादी जो निज प्राण बचानेको कभी गोहत्याभी करलेवे तो भी शुद्ध होजाताहै जैसे सात द्विजपुत्रोंने भूखमरते गोबधकिया फिर गुरुसे आय कहा तो वे सत्य कहनेसे शुद्धहुये ३५॥

कुण्डनपुर में किसी ब्राह्मण उपाध्यायके ब्राह्मणोंके सात पुत्र शिष्यथे एकसमय दुर्भिक्षके दोषसे उपाध्यायने अपने सातों शिष्यों को अपने श्वशुरके यहां गौ मांगने को भेजा दुर्भिक्षसे दुर्बल वह सातोंशिष्य अन्यदेशमें रहनेवाले उपाध्यायके श्वशुरके यहागये और जाकर बोले कि उपाध्यायने गौ मांगीहै उस कृपण ने अपने जामाता की जीविकाके निमित्त एक गौ देदी परन्तु उन भूखे ब्राह्मणों को भोजन नहीं दिया तब उस गौको लेकर जब आधी दूर वह सातों पहुँचे तो क्षुधा से अत्यन्त व्याकुल होकर मुरझा के

पृथ्वी में गिरपड़े उससमयमें उन सबोंने मिलकर यह विचारकिया कि उपाध्याय का घर यहां से बहुत दूरहै और हम लोगों को बड़ा भारी क्लेश होरहाहै यहां अन्न मिलनाभी सर्वथा दुर्लभहै इससे हम लोगों के अब प्राणही जाते हैं और हम लोगोंके विना यह गौभी जल तृण तथा मनुष्यरहित इस वनमें अवश्य नष्ट होजायगी तब गुरुका कुछभी प्रयोजन सिद्ध न होगा इससे इस गौके मांस को खाके अपने प्राण बचावैं और जो मांस बचे वह गुरुको जाकर देवैं क्योंकि यह आपत्तिका समयहै इसप्रकार सलाह करके उन सातों ने शास्त्रोक्त विधि से गौको मारकर उसके मांस से देव पितरों का पूजन करके आप भोजन किया और जो मांस बचा वह लेकर अपने उपाध्यायके पास चले उपाध्यायके पास आके प्रणामपूर्वक उन सबने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कहदिया उपाध्याय भी उन अपराधी शिष्यों पर सत्य बोलने के कारण अत्यन्त प्रसन्नहुआ सात दिन के उपरान्त दुर्भिक्ष के दोष से वह सातों मृत्यु को प्राप्त होगये और सत्यके प्रभावसे दूसरेजन्म में भी जातिस्मर हुए॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनींचतुर्थभागेपञ्चत्रिंशःप्रदीपः ३५॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे षट्त्रिंशः प्रदीपः ३६॥

नियमेशुद्धभावोहि भवेत्सत्फलदायकः॥
अशुद्धभावसंयुक्तो विप्रश्चाण्डालतांययौ ३६॥

(अर्थ) नियममें श्रेष्ठभावना विचारनाही श्रेष्ठफलदाता होता है और अशुद्धभावना करने से खोटाफल होता है—जैसे—ब्राह्मण ने खोटी भावनाकरी तौ तिसे निषादके घर जन्म लेनापड़ा३६॥

पूर्व समय में गंगाजी के तटपर एक ब्राह्मण और एक चांडाल दोनों अनशन व्रतकरके बैठे उनमें से क्षुधा से व्याकुल ब्राह्मणने

वहां आकर मछलियां खातेहुए निषादों को देखकर चित्तमें शोचा कि संसार में ये निषादही धन्यहैं क्योंकि यह अपनी इच्छा के अनुसार नित्य मछलियों का मांसखाते हैं और उस चांडाल ने उन निषादों को देखकर यह शोचा कि जीवों के मारनेवाले मांसाशी इन निषादों को धिक्कार है यहां इनका मुख भी मुझे नहीं देखना चाहिये इसप्रकार शोचकर अपने २ नेत्र बन्दकरलिये और अपने आत्मा का ध्यान करनेलगा क्रमसे थोड़ेही दिनों में अनशन से वह दोनों ब्राह्मण और चांडाल मृत्युको प्राप्तहुए तब ब्राह्मणके शरीरको तो कुत्तोंने खाडाला और चांडालका शरीर गंगा जी में गलगया इसके उपरान्त वह ब्राह्मण तो निषादों के यहां उत्पन्नहुआ और तीर्थ के प्रभाव से पूर्व जन्म का स्मरण बना रहा और वह धीर चांडाल गंगाजी के तटपर राजाके यहां उत्पन्नहुआ और उसे भी अपने पूर्वजन्मका स्मरण बनारहा इस प्रकार उत्पन्न होकर अपने २ पूर्वजन्म का स्मरण करते हुए उनदोनों में से ब्राह्मण तो निषाद होकर पश्चात्तापको प्राप्तहुआ और चांडाल राजाहोकर अत्यन्त प्रसन्नहुआ इससे धर्मरूपी वृक्ष का मूल मन जिसका शुद्धहोता है उसको वैसाही फल निस्सन्देह मिलता है और अशुद्धको अशुद्ध फल मिलता है॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे षट्त्रिंशः प्रदीपः ३६॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे सप्तत्रिंशःप्रदीपः ३७॥

एकान्तेहिकृतःश्रेष्ठ आलापोपिफलप्रदः।
एकान्तालापितौदृष्ट्वा राजातुष्टोधनंददौ३७॥

(अर्थ) एकान्तमें किया विचारभी श्रेष्ठ फलदायक होजाता

है जैसे दो पुरुषों का एकान्त में वार्ता करते देख राजाने प्रसन्न हो तिनको धन दिया २७ ॥

दृष्टान्त-एक राजा सम्पूर्ण परिकर लेकर शिकार खेलने को चला उससमय सम्पूर्ण पृथ्वी घोड़े पदाति तथा कुत्तों से भरगई पशुओं की बांधनेवाली डोरियों से सम्पूर्ण दिशा व्याप्त होगई और प्रसन्न व्याधों के शब्दों से आकाश छागया जब हाथीपर सवार होकर राजा चला तब उस समय उसने पुरके बाहर किसी शून्य देवमंदिर में परस्पर कुछ सलाह करतेहुये दो पुरुष एकान्त में खड़ेहुये दूर से देखे और उनको देखताहुआ राजा वन में शिकार खेलने को चलागया वहां खड्गों से न डरनेवाले वृद्धव्याघ्रों को देखकर सिंहों के शब्दों को सुनकर और पर्व्वत तथा पृथ्वी के विचित्र स्थानोंको देखकर राजा अत्यन्त प्रसन्नहुआ हाथियोंके मारनेवाले सिंहोंको मारकर उनके नखों से गिरेहुये पराक्रम के बीज के समान गजमोती सम्पूर्ण पृथ्वी में राजाने बखेरदिये तिरछे चलनेवाले पक्षी तथा मृग वक्र होकर राजाके निकट होकर भागे उनको विना वक्र हुएही मारकर वह अत्यन्तही प्रसन्नहुआ इसप्रकार शिकार खेलकर सेवकों के थकजाने और धनुषों के शिथिल होजाने पर राजा अपनी उज्जयिनी नगरी को लौटा फिर लौटते समय भी राजाने जातेसमय जिन दो पुरुषों को शून्य देवमंदिर में सलाह करते देखाथा उन्हें उसीप्रकार से उतने समय तक खड़ेहुये देखा उनको देखकर राजाने शोचा कि यह कौनहैं और इतनी देरतक क्या बिचार कररहे हैं निस्सन्देह यह दोनों किसी बड़ी गुप्तबातके बिचार करनेवाले चोर हैं यह शोचकर राजाने प्रतीहार को भेजकर उन दोनों को बुलवाया और दोनोंको बँधवालिया दूसरेदिन

सभामें उनदोनों को बुलाकर राजाने पूछा कि तुम कौनहो और बहुत कालतक तुम क्या बिचार कररहे थे राजाके यह वचन सुन-कर उनमें से एकपुरुष अभय मांगकर बोला कि हेमहाराज! सुनिये मैं सम्पूर्ण यथार्थ वृत्तान्त वर्णन करताहूं आपकी इस पुरी में वेद विद्या का जाननेवाला कर्मक नाम एक ब्राह्मण था उसने बीर पुत्र होने की इच्छा से अग्नि का आराधन किया तब मेरा जन्म हुआ समय पाकर जब मेरे पिता मरगये और मेरी माता उन्हीं के साथ सती होगई तब मैं बाल्यावस्थाही में विद्याओंको पढ़कर भी अनाथ होनेके कारण द्यूत खेलनेलगा और शस्त्रविद्या में अभ्यास करनेलगा ठीकहै बड़े लोगोंकी शिक्षाके बिना बाल्यावस्थामें कौन पुरुष कुमार्गीनहीं होजाताहै इसप्रकार से बाल्यावस्था के व्यतीत होजानेपर एकसमय मैं अपने भुजबलके अभिमान से बनमें बाण फेंकने को गया उससमय उसीमार्ग से नगरी के बाहर एक बधू बहुत से बरातियों समेत गाड़ीपर चढ़ीहुई वहांआई और अकस्मात् जंज़ीर तोड़कर कहीं से भागाहुआ एक मतवाला हाथी उसी बधू पर दौड़ा उसके भयसे उसका पति तथा अन्य सब लोग इधर उधर भागगये यह देखकर मैंने घबराके एकाएकी शोचा कि हाय इन कातरोंने कैसे इस बिचारी को अकेला छोड़दिया तो इस हाथी से मैं इस अनाथ को बचाऊंगा क्योंकि बिपत्ति में पड़ेहुये को न बचानेवाले व्यर्थ प्राण और पुरुषार्थ से क्या प्रयोजनहै यह शोचकर मैं गर्जकर उस हाथी की ओर दौड़ा और वह हाथी भी उस स्त्रीको छोड़कर मेरी ओरदौड़ा तब डरीहुई उस स्त्री से बारंबार देखागया मैं भगाकर उसहाथीको बहुत दूरतक लेगया बीचमें घने पत्रों से युक्त किसी वृक्षकी टूटीहुई शाखाको लेकर उससे अपनेको

आच्छादित करके मैं वृक्षों के बीच में चलागया और शीघ्रता से वृक्षोंके बीचमें उस शाखाको धरकर मैं तो भागगया और हाथी ने वह शाखा तोड़डाली तब मैंने वहांसे उस स्त्रीके पास आकर उससे शरीर की कुशल पूछी वहभी मुझे देखकर दुःख तथा हर्ष से युक्त होकर बोली कि मुझे कुशलही क्याहै जिसका ऐसाकुत्सित पुरुष के साथ विवाह हुआहै जो ऐसे संकट में भी मुझे छोड़कर कहीं भागगयाहै परंतु यह कुशलहै जो तुम उस हाथी से बचकर फिर दिखाई दिये हो इससे वह अब मेरा कौन है तुम्हीं मेरे पति हो जिसने शरीर की आशा छोड़कर निरपेक्ष होकर मृत्यु के मुख से मेरी रक्षाकी अब वह मेरा पति अपने सेवकों समेत देखो आरहा है इससे तुम पीछे २ छिपकर मेरे साथ चलेआओ अवसर मिल-नेपर तुमसे मिलकर जहां चाहौगे वहां चलूंगी उसके यह वचन सुनकर मैंने स्वीकार करलिये—यद्यपि स्वरूपवती भी है और स्वयं अपने को अर्पण भी करती है तथापि यह परस्त्री होने के कारण ग्रहण करने के योग्य नहीं है इसधैर्यके मार्गपर युवा पुरुष नहीं चल सके क्षणभर में उसके पतिने आकर उसे सावधान किया और अपने भृत्यों समेत उसे लेकर वहां से चला और मैंभी गुप्ततापूर्वक उसके दियेहुये पाथेय (राहखर्च) को भोजन करताहुआ उस के साथ बहुत दूरतक अन्य मार्गसे छिपकर पीछे २ चला और उस स्त्रीने हाथीके भयसे गिरपड़ने के कारण मिथ्या पीड़ाका बहाना करके अपने पति को अपना स्पर्श भी नहीं करने दिया ठीक है विकारयुक्त कीगई रक्तोन्मुखी और अन्तःकरण में उत्पन्नहुये घने विकाररूपी विषसे दुस्सह सर्पिणी के समान किस की स्त्री बिना अपकार किये रहती है क्रमसे चलते २ हम उन्हींके साथ पीछे २

लोहनगर में पहुंचे वहीं रोजगार से जीविका करनेवाली उसस्त्री के पतिका घरथा पहले दिन वह लोग बाहर एक देवमंदिर में रहे वहीं यह ब्राह्मण हमको मिला नवीन दर्शन मेंभी हम दोनों को परस्पर बड़ा हर्षहुआ ठीकहै प्राणियों का चित्त जन्मांतरके संचित प्रेमको जानताहै तब मैंने अपना सम्पूर्ण रहस्य इससे कह दिया उसे जानकर इसने मुझसे एकान्त में कहा कि तुम चुप रहो जिस लिये तुम यहां आये हो उसका उपाय मेरे पास है इस बनिये की बहिन मेरे साथ यहांसे निकल चलनेको उद्यतहै और इस बातका सब ठीकभी होचुकाहै इससे उसी की सहायता से मैं तुम्हारा भी अभीष्ट सिद्ध करूंगा मुझसे यह कहकर इस ब्राह्मणने उसस्त्री की नन्दसे सम्पूर्ण वृत्तान्त कहदिया दूसरे दिन सलाह करके वह अपने भाई की स्त्रीको लेकर उसी देवमन्दिरके गुप्त स्थानमें आई वहां हम दोनों में से मेरेमित्र इस ब्राह्मणका भेष उसने अपने भाई की स्त्री कासा बनालिया और इसेलेकर अपने भाईके साथनगरमें अपने घरको आई और मैं पुरुषभेष धारिणी उस बनियेकी स्त्रीको साथले कर धीरे २ उज्जयिनी में आया और उसकी नन्द रात्रि के समय उत्सवसे उन्मत्तहोकर जबसम्पूर्णलोग सोगये तब मेरे इस मित्रको लेकर वहां से निकली तब यह उसे लेकर छिपकर इस उज्जयिनी नगरी में आया और यहां आकर मुझसे मिला इसप्रकार हम दोनों नन्द और भावज अपने २ अनुरागसे मिलीं इससे हे महाराज! हमलोगों को यहां सब कहीं निवास करने में सन्देह होताहै क्योंकि साहसी चित्त किसीपर बिश्वास नहीं करते इसीसे उनस्त्रियोंके निवासके लिये और धनकेलिये हमदोनों कल एकान्तमें विचारकर रहेथे उससमय आपने दूरसे देखकर चार (गोयंदा) के सन्देहसे

हम दोनोंको पकड़ मँगवाया और आज आपके पूछने पर मैंने अपना और अपने मित्रका सम्पूर्ण वृत्तांत वर्णनकिया अब आप स्वामी हैं जैसा उचित समझिये वैसा कीजिये उसके यह वचन सुनकर राजाविक्रमसिंह उनदोनों ब्राह्मणोंसे बोला कि तुम दोनों पर मैं प्रसन्नहूं डरोमत मैं तुम दोनोंको निर्वाहके योग्य धनदूंगा इसी पुरीमें रहो यह कहकर राजाने उनको यथेष्ट जीविकादी और वह अपनी स्त्रियों समेत सुखपूर्वक राजाके निकट रहे ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्तत्रिंशःप्रदीपः ३७ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेअष्टत्रिंशःप्रदीपः ३८ ॥

अनित्येहिशरीरेऽस्मिन्नकुर्य्यान्ममतांजनः ।
राजकन्याःसप्तयथानचक्रुर्ममतांतनोः ३८ ॥

(अर्थ)-अनित्य नाशमान इस शरीर पर ममता न करनी जैसे सात राजपुत्रियोंने इस शरीर को असार समझ त्यागनाही विचारा ३८ ॥

पूर्वसमय में कृतनाम किसी राजाके अत्यन्त सुन्दर सातकन्या क्रमसे हुईं वह सातों बाल्यावस्थाही में वैराग्य से पिता के घरको छोड़कर श्मशान में चलीगईं जब परिवारके लोगोंने उनसे पूंछा कि तुमने गृह का त्याग क्यों कियाहै तब वह बोलीं कि यह सम्पूर्ण संसारही असारहै संसार में भी यह शरीर अधिक असार है और इस शरीरमें भी अभीष्ट की प्राप्ति आदिक सुख स्वप्नके समान अत्यन्तही असारहै परन्तु एक परहितही इस संसारमें सारहै इससे इस शरीर से हम सब प्राणियों का हित करैंगी इस जीतेहुये ही शरीर को श्मशान में राक्षसों के भोजन के निमित्त डालदेंगी क्योंकि सुन्दर भी इस शरीर से क्या प्रयोजनहै देखो पूर्व समयमें

एक सुन्दर राजपुत्र तरुणअवस्थाही में विरक्त होकर संन्यासी हो-गया एकसमय वह किसी वैश्यके यहां भिक्षाके निमित्त गया वहां उस वैश्यकी स्त्री का चित्त कमलके पत्रों के समान बड़े २ उसके सुन्दर नेत्रोंकी शोभासे चलायमान हुआ तो वह बोली कि तुमने इस अवस्था में इस कष्टदायी संन्यास का ग्रहण क्यों किया वह स्त्री धन्यहै जिसको तुम अपनेनेत्र कमलसे देखतेहो उसके यह बचन सुनकर राजपुत्र ने अपना एक नेत्र फाड़कर हाथ में लेकर कहा कि हे माता ! देखो यह ऐसा निन्दक मांस रुधिर से भराहुआ नेत्र है जो आपको प्रिय लगताहोय तो लेलो और दूसरा नेत्रभी इसी प्रकार का है बताओ इनमें रमणीयता क्याहै उसके यह बचन सु-नकर और उसे देखकर वह स्त्री बहुत दुःखित होके बोली हाय २ मैं महा दुष्टाहूं मुझ पापिनी ने यह बड़ा पापकिया क्योंकि तुम्हारे नेत्र के निकालनेका हेतु मैंहीं हूं यह सुनकर राजपुत्र बोला कि हे माता ! खेद मतकरो तुमने मेरे साथ उपकार कियाहै—इस बातपर मैं तुम्हें एकदृष्टान्त सुनाताहूं पूर्वसमय में गंगाजीके तटपर किसी उपबन में एक यती वैराग्य के अधिक बढ़ने की इच्छा से तप करता था वहां भाग्यवश से कोई राजा अपनी रानियों समेत वि-हार करने को आया बिहार करने के उपरान्त जब मद्यपान करके राजा सोगया तब सम्पूर्ण रानी उसके पास से उठकर अपनी च-पलता से उस उपबन में घूमनेलगीं और उस मुनिको एक स्थान में समाधि लगाये हुये बैठा देखकर आश्चर्य से सम्पूर्ण रानी उसे घेरकर बैठगईं जब वह बहुत कालतक वहां बैठीरहीं तब राजाने जगकर रानियोंको अपने पास न देखकर उन्हें ढूंढ़ने के लिये स-म्पूर्ण बनमें भ्रमण किया और देखा कि मुनिको घेरे हुये सम्पूर्ण

रानी बैठी हैं उन्हें देखकर ईर्षा से कुपित होकर राजाने मुनिपर ख-
ड्ग का प्रहार किया ठीकहै-ऐश्वर्य्य-ईर्षा-निर्दयता-उन्मत्तता
और विवेक का न होना इसमें से एक एकही कौनसे कुकर्म्म को
नहीं करसक्ता और जहां यह अग्नि के समान पांचों इकट्ठे होयँ
वहां क्या कहना है इसके उपरान्त जब वह राजा चलागया और
शरीर के कटजाने पर भी मुनिको क्रोध नहीं हुआ तब एक देवी
प्रकट होकर मुनि से बोली कि हे महात्मन्! जिस पापी ने क्रोधसे
तुम्हारे ऊपर प्रहार किया है उसे जो तुम्हारी आज्ञा होय तो मैं मा-
रडालूं देवी के वचन सुनकर मुनि बोला कि हे देवी! ऐसा मतकहो
वह मेरे धर्म्म का सहायक है अपकारी नहीं है उसकी कृपा से
मेरा क्षमारूपी धर्म्म बढ़ा यदि वह ऐसा न करता तो मैं किसपर
क्षमा करता और जानसक्ता कि मैं अपने को वशीभूत करचुका
इस नश्वर शरीर के लिये बुद्धिमान् क्रोध नहीं करते हैं प्रिय और
अप्रिय में समता होने से जो क्षमा होती है वह ब्रह्म का पद है
मुनिके यह वचन सुनकर उसके तपसे प्रसन्न हुई देवी उसके अंगों
को घावोंसे रहितकरके अन्तर्द्धानहुई इससे हे माता! जैसे वह राजा
मुनिका उपकारी हुआ उसी प्रकार तुमभी मेरा नेत्र निकलवाकर
उपकारिणी हुईहो इस प्रकार उस वैश्यकी स्त्री से कहकर जितेन्द्री
वह राजपुत्र अपने सुन्दर शरीरमें भी विश्वास न करके सिद्धके
लिये चलागया इससे बालभी और रम्य भी इस नश्वर शरीर में
क्या विश्वासहै बुद्धिमान्को इस शरीर से केवल परोपकारही क-
रना उचितहै इससे हम सातों इस स्वाभाविक सुखदायी श्मशान
में प्राणियों के निमित्त इस शरीरको रक्खेंगी अपने परिवारवालों
से इसप्रकार कहकर उन राजकन्याओं ने वैसाही किया और परम

सिद्धियों को प्राप्तहुईं इसप्रकार बुद्धिमान् लोगों को अपने शरीर में भी ममता नहीं होती और पुत्र तथा स्त्री आदि परिवार रूपी तृणोंकी कौन गणना है ॥

इति श्रीदृष्टांतप्रदीपिनीचतुर्थभागेअष्टत्रिंशः प्रदीपः ३८ ॥

अथ दृष्टांतप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकोनचत्वारिंशः प्रदीपः ३९ ॥

कन्या प्रभाव मतुलं जायते पुत्रतोपिहि।
कन्याप्रभावतोजातः सुषेणःकृतकृत्यताम् ३९॥

(अर्थ) इस संसारमें कन्याका भी प्रभाव बड़ाभारी होताहै- जैसे कन्या के होनेसेही सुषेणराजा कृतार्थ हुआ ३९ ॥

चित्रकूट पर्वतपर सुषेणनाम राजा था जिसे ब्रह्माने शिवजी की ईर्षा से मानों द्वितीय कामके समान बनायाथा उसने चित्रकूट के तटमें एक दिव्य उपबन बनवाया वह ऐसा सुन्दर बनाथा जिसे देखकर देवतालोगों को नन्दनबनके बिहारसे अनिच्छा होजाती थी और उसी उपबन के बीचमें प्रफुल्लित कमलों से युत एक बावड़ी बनवाई थी वह बावड़ी क्याथी मानों लक्ष्मीजीके क्रीड़ा के कमलों की नवीनखानि थी उस बावड़ीकी रत्नजटित सीढ़ियों पर अपने योग्य स्त्रियोंके न होनेसे अकेलाही राजा सुषेण बिहार करताथा एक समय उसी मार्गसे आकाश में भ्रमण करतीहुई रम्भा नाम अप्सरा इन्द्रके भवनसे आई उसने उस उपबनमें प्रफुल्लितपुष्पों के बनमें साक्षात् बसन्त के समान विहार करते हुए राजा को देखा बावड़ीके कमलोंमें वर्त्तमान लक्ष्मीकेलिये क्या यह चन्द्रमा स्वर्गसे आयाहै परंतु यहचंद्रमानहीं है क्योंकि इसकी शोभा स्थिरहै क्या है कामदेवहै यहां पुष्प तोड़नेको वनमें आयाहै परंतु इसकेसाथ सदैव रहनेवाली रति कहांगई इसप्रकारचित्तमेंसंदेहकरतीहुईरम्भामनुष्य

शरीर धारण करके राजाके पासगई उसे अपने पास आई हुई देख कर राजाने आश्चर्य पूर्वक शोचा कि यह अपूर्व्व सुन्दररूपवाली कौनहै यहमानुषी तो नहीं है क्योंकि इसके पैरों में धूल नहींलगी और इसके नेत्रों में पलकैं भी नहीं लगती हैं इससे यह कोईदिव्य स्त्री मालूम होती है परंतु इसे पूछना नहीं चाहिये पूछने से कदाचित चली न जाय क्योंकि किसी कारण से मिलीहुई दिव्य स्त्री प्रायः अपने भेदको नहीं प्रकट करसक्ती हैं इसप्रकार विचारतेहुए राजासे उसने आकर सम्भाषण किया और क्रमसे दोनों का उस समय समागम भी हुआ राजा उस अप्सराके साथ बहुत कालतक क्रीड़ा करतारहा और उसने भी स्वर्गका स्मरण नहीं किया ठीक है प्रेम रमणीय होता है जन्मभूमि नहीं रम्यहोती रम्भाकी सखी यक्षणियों से वर्षायेगये सुवर्ण के समूहसे, राजाके राज्यकी पृथ्वी ऐसी व्याप्तहोगई जैसे कि सुमेरु के शिखरोंसे स्वर्ग होताहै इसके उपरान्त समयपाकर राजा सुषेणकी वह श्रेष्ठ अप्सरा रम्भा गर्भवती हुई और गर्भ के पूरेहोजाने पर एक अत्यन्त सुन्दर कन्याके उत्पन्न होतेही रम्भा राजासे बोली कि हे राजा!मुझे इतने दिनका शापथा वह इससमय छूटगया मैं रम्भानाम स्वर्ग की अप्सरा हूं तुम्हें देखतेही मेरे चित्त में अनुराग उत्पन्नहुआ अब मैं इस कन्या को यहां छोड़कर जाती हूं क्योंकि मेरा ऐसाहीं नियमहै आप इस कन्याकी रक्षाकीजिये और इसके बिवाहसे स्वर्ग में हमारा तुम्हारा फिर समागमहोगा इसप्रकार कहकर पराधीन वहअप्सरा अंतर्द्धान होगई और राजा उसके दुःख से प्राण देनेको उद्यतहुआ राजाकी यह दशादेखकर मंत्रियों ने उससे कहा क्या शकुन्तलाको उत्पन्न करके मेनकाके चलेजाने पर विश्वामित्रने निराश होकर शरीर

त्याग दियाथा मंत्रियों के इत्यादि अनेक बचनों को सुनकर राजा को धीरे २ धैर्यहुआ और उस कन्या को देखकर उसके विवाहमें रम्भाके फिर मिलने की आशाहुई राजाने सर्वांगसुंदरी उस कन्या का नाम लोचनों के अत्यन्त सुन्दरहोने के कारण सुलोचनारक्खा समयपाकर जब सुलोचना युवती हुई तब उसे उपबन में कश्यप जीके पुत्र वत्सनाम युवामुनि ने देखा तपके समूहरूपभी वत्समुनि राजकन्याको देखकर अनुरागवश होगये और शोचनेलगे कि इस कन्याकारूप परमअद्भुतहै यदि यह मेरी स्त्री न होय तो इसके सिवाय तपका क्या फल होगा इसप्रकार शोचतेहुए धूमरहित अग्नि के समान जाज्वल्य तेजवाले वत्समुनि को सुलोचनाने भी देखा माला यज्ञोपवीत तथा कमंडलधारी मुनिको देखकर उसके चित्त में भी प्रेम उत्पन्न हुआ और शोचनेलगी कि यह कौनहै इसकी आकृति कैसी शान्त और मनोहरहै इसप्रकार शोचकर मानों स्वयम्बर के लिये नेत्रकमलों की माला उसपर फेंकतीहुई सुलोचना ने निकट जाकर उसे प्रणाम किया तब देवता और दैत्यों से भी नहीं उल्लंघन करने के योग्य कामकी आज्ञा के वशीभूत मुनिने तुझे पति प्राप्तहोय यह आशीर्बाद दिया उससमय मुनिके अपूर्व रूपके लोभसे निर्लज्ज होकर सुलोचना मुखको झुकाकर बोली कि जो आपकी ऐसी इच्छा है और यह केवल हास्य नहीं है तो मेरे पितासे जाकर याचना कीजिये वही मुझे देसक्ताहै तब मुनि ने उसकी सखियों से उसका सम्पूर्ण बृत्तान्त पूछकर उसके पिता राजासुषेण के पास जाकर उसकी याचना की राजाने भी उसे तप और शरीर दोनों से अत्यन्त उत्कृष्ट जानकर अतिथि सत्कार करकेकहा कि हेभगवन्! यह मेरीकन्या रम्भा अप्सरासे उत्पन्न हुई है

जब रम्भा स्वर्गको जानेलगी थी तब उसने कहाथा कि इस कन्या के विवाहमें हमारा तुम्हारा फिर समागमहोगा यहबात कैसे सिद्ध होगी इसको आप विचार लीजिये राजाके यहबचन सुनकर वत्स-मुनि ने क्षणभर यह विचार किया कि पूर्वसमय में मेनकाकी कन्या प्रमद्वरा को जब सर्पने काटाथा तब रुरुनाम मुनि ने अपनी आ-युका अर्द्धभाग देकर क्या उसके साथ विवाह नहीं कियाथा क्या विश्वामित्र भयभीत त्रिशंकु को स्वर्ग नहीं लेगये थे इससे मैं भी अपने तपके कुछ अंशको व्यय करके इसके मनोरथ को क्यों न सिद्धकरूं यह शोचकर और यह कुछ कठिन बात नहीं है ऐसा कहकर वह मुनिवोले कि हे देवतालोगो! मेरे तपके अंशसे शरीर सहित यह राजा रम्भासे सम्भोग करने के निमित्त स्वर्ग को जाय मुनि के ऐसा कहने पर एवमस्तु यह आकाशवाणी राजसभा में सुनाईदी तव राजासुषेण वत्समुनि के साथ सुलोचनाका बिवाह करके स्वर्गको चलागया और स्वर्ग में जाकर दिव्य शरीर होकेइन्द्र की आज्ञा से दिव्य प्रभाववाली रम्भाके साथ आनन्दपूर्वक रमण करनेलगा इसप्रकार कन्याके प्रभावसे राजासुषेण कृतार्थ हुआ ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकोनचत्वारिंशःप्रदीपः ३९ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेचत्वारिंशःप्रदीपः ॥ ४० ॥

असमाप्यकथांनैव आश्रमंददतेबुधाः ।
कथांकथन्प्रसुप्तोहि दुःखंराजसुतोऽलभत् ४० ॥

(अर्थ)-कोई कथाकहते बिन प्रसंग पूर्णकिये विश्राम न देना-जैसे राजपुत्र कथा कहते सोगया तो तिसने दुःखपाया ४० ॥

पुष्करावतीनाम नगरी में गूढ़सेननाम राजाथा उसके एकही पुत्रथा वह राजपुत्र अभिमान से जो कुछ शुभाशुभ कार्य्य करता

था वह सब उसका पिता सह लेताथा एकसमय उस बनमें भ्रमण करतेहुए राजपुत्रने ब्रह्मदत्तनाम वैश्यका अपने समान रूप और ऐश्वर्य्यवान् पुत्र देखा देखतेही राजपुत्र ने जाकर उससे मित्रता करली उन दोनों में ऐसी मित्रता बढ़ी कि वह दोनों एकरूप से होगये परस्पर विना देखे क्षणभर भी नहीं ठहरसक्ते थे ठीकहै—पूर्व जन्मका संस्कार शीघ्रही प्रेमको दृढ़ करदेताहै राजपुत्र उस सुख को कभी नहीं भोग करता था जो उस वणिक्पुत्र के लिये पहले ही से नहीं कल्पिताकिया जाताथा एकसमय राजपुत्र अपने मित्र बणिक्पुत्र के लिये विवाह का पहिलेही से निश्चय करके अपने बिवाहके लिये अहिच्छत्र देशको जाने के लिये अपने मित्रसमेत हाथीपर चढ़कर सब सेनासहित चला और सायंकाल के समय इक्षुमती नदी के तीर पर रहा वहां रात्रि के समय चांदनी में मद्यपान करके पलँग पर लेटा और अपनी उपमाता के कहने से कोई कथा कहनेलगा कथाके बीचही में श्रमसे और मदसे राजपुत्र को तो निद्रा आगई और उसकी उपमाता भी सोगई परन्तु वह बणिक्पुत्र स्नेह से जागता रहा उस समय आकाश में स्त्रियोंकीसी यह बातचीत उस बणिक्पुत्रको सुनाईदी कि यह पापी कथा को विना कहे सोगया इससे मैं इसे यहशाप देतीहूं कि प्रातःकाल इसे एक हार दिखाई देगा यदि यह उसे लेलेगा तो उसके पहरतेही इसकी मृत्यु होजायगी यह कहकर जब एक चुपहुई तब दूसरी बोली कि जो इससे यह बच जायगा तो मार्ग में एक आम्र का वृक्ष इसे दिखाई देगा जो उसके फल यह खायगा तो इसकी मृत्यु होजायगी यह कहकर जब वह चुप हुई तब तीसरी बोली कि जो यह इससे भी बच जायगा तो बिवाह के लिये यह जिस

घरमें जायगा तो वही घर इसके ऊपर गिरेगा और उसीसे इसकी मृत्यु हो जायगी यह कहकर जब वहभी चुप होगई तब चौथी बोली कि जो इससे भी यह बचजायगा तो रात्रिके समय जब यह शयन के स्थानमें जायगा तब जातेंही इसे सौवार सौ छींक आवेंगी जो हर छींक में कोई मनुष्य इसे जीव २ नहीं कहेगा तो इसकी मृत्यु होजायगी और जिसने हम लोगोंकी यह बात चीत सुनीहोगी वह जो कदाचित् इसके बचाने के लिये इस से कहेगा तो उसकी भी मृत्यु होजायगी—यह कहकर वहभीं चुपहोगई इस सम्पूर्ण दुःखदाई वार्त्तालापको सुनकर वणिक्पुत्र राजपुत्रके स्नेह से व्याकुल होकर शोचनेलगा कि बड़े खेदका विषयहै कि प्रारंभ कीहुई कथाको अलक्षित होकर देवतालोग भी सुनते हैं जो उसे पूरी न करो तो वह शाप देजाते हैं अच्छा होय सो होय इस से क्या लाभ है अब इस राजपुत्र के मरजानेपर मेरा जीना भी व्यर्थ होजायगा इससे प्राणोंके समान प्रिय इस मित्रकी युक्तिपूर्वक रक्षा करनीचाहिये और यह वृत्तान्तभी उससे नहीं कहनाचाहिये-क्योंकि कहने से मुझे दोषहोगा इस प्रकार शोचकर बड़े खेदसे उसने वह रात्रि व्यतीत की प्रातःकाल वहांसे चलकर राजपुत्र नें एक हार मार्ग में पड़ाहुआ देखा और उसके लेनेकी इच्छाकी तब बनिये के पुत्रनेकहा कि हे मित्र ! यह हार मतलो यह हार नहीं है मायाहै नहीं तो सैनिकलोग इसेक्यों नहीं देखते अपने मित्रके यह वचन सुनकर उसे छोड़कर राजपुत्र ने आगे चलकर एक आम्रका वृक्ष देखा और उसके फलखानेकी इच्छाकरी तब फिर वैश्यपुत्रने उसी प्रकार से वहां भी निषेध करदिया इसके उपरान्त धीरे २ राजपुत्र अपने श्वशुर के यहां पहुँचा वहां जब विवाहके निमित्त घरमें जाने

लगा तब वणिक्पुत्रने द्वारही से उसे रोका और उसी समय वह घरगिरपड़ा इसप्रकार इन आपत्तियों से बचकर राजपुत्र रात्रि के समय वणिक्पुत्र की उन बातों में कुछ आश्चर्य पूर्वक विश्वास करताहुआ अपनी स्त्री समेत शयनस्थानमें गया वहां वणिक्पुत्र पहलेही से जाकर पलँग के नीचे छिपकर बैठरहा था वहां जाकर पलँगपर बैठतेही राजपुत्र को सौ बार छींकें आईं और प्रति बार नीचे से वणिक्पुत्रने धीरे२ जीव २ यह शब्द कहा फिर छिपाहुआही प्रसन्नहोकर वहांसे निकलनेलगा निकलते समय उसे राजपुत्रने देखकर ईर्षासे उसके स्नेहको भूलकर कुपितहोके द्वारपालों से कहा कि यह पापी यहां एकान्त में भी मेरे रनिवास में चला आया इससे इसे बांधकर रक्खो प्रातःकाल इसे फांसी दीजायगी राजपुत्र के वचनसुनकर रक्षकों ने उसे रात्रिभर बांधरक्खा और प्रातःकाल वध्यस्थान को लेचले उस समय वणिक्पुत्रने उन से कहा कि पहले मुझे राजपुत्रके पास लेचलो क्योंकि मुझे उससे कुछ कहनाहै पीछे मेरा वध करना उसके यह वचन सुनकर उन लोगोंने राजा से जाकर यही विज्ञापनाकी तब राजपुत्रने मंत्रियों के कहने से उसे अपनेपास बुलवाया वहां आकर वणिक्पुत्र ने राजपुत्रसे वह सम्पूर्ण वृत्तान्त जो रात्रिके समय दिव्य स्त्रियों से सुनाथा कहदिया यह राजपुत्रने घर गिरने के विश्वाससे वह सब बातें निश्चय मानलीं और वधसे उसे छुड़ाकर अत्यन्त प्रसन्नहोकर उसीके साथ अपनी स्त्री समेत अपनी पुरी में आया और वहां आकर अपने मित्र वणिक्पुत्र का भी विवाह करवाया विवाह के उपरान्त मार्गकी बातोंको सुनकर सम्पूर्ण लोगोंसे प्रशंसा किया गया वणिक्पुत्र सुखपूर्वक रहनेलगा हे सखी ! इसप्रकार उच्छृंखल

(जंजीरसे छुटा और उद्दंड) होकर अपने नियन्ता (शिक्षक और महावत) को भी मारनेवाले उन्मत्तहाथी के समान राजपुत्र हित को नहीं मानते हैं और वैताल के समान हँसकरभी प्राण लेते हैं ऐसे राजपुत्रों से मित्रता क्याकरनी चाहिये इससे हे राजपुत्री! मेरीमित्रता में कभी भेद न करना ॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे चत्वारिंशःप्रदीपः ४० ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागे एकचत्वारिंशःप्रदीपः ४१ ॥

लज्जितोमृतवद्धिःस्यात्पिशाचोलज्जितोयथा ।
तिरस्कृतोविप्रवध्वाच्चेस्मं कृत्वाविनिर्गतः ४१ ॥

(अर्थ)–लज्जित हुआ जन मरासा होजाता है–जैसे पिशाच द्विजवधूके कहनेपर दूसरा घाव भरने में असमर्थहो लज्जित होकर चलागया ४१ ॥

किसी गांवमें एक दरिद्री ब्राह्मण रहता था वह एकसमय वन में काष्ठ लेनेको गया वहां कुठारसे कटाहुआ एक काष्ठ भाग्यवश से उसकी जांघमें घुसगया उसके लगनेसे वह मूर्च्छित होकरगिर पड़ा और जंघासे रुधिर बहने लगा उससमय किसी पुरुष ने उसे पहिचान कर घर पहुँचादिया वहां उसकी स्त्रीने पतिकी यहदशा देखकर रुधिर धोकर उसकी जंघा में पट्टी बांधदी इसके उपरान्त प्रति दिन औषधि करने पर भी वह घाव पूरा तो नहीं हुआ परंतु नासूर होगया उससे अत्यन्त दुःखी होकर वह ब्राह्मण मरनेके लिये उद्यत हुआ उससमय उसके किसी मित्र ब्राह्मणने उससे एकान्त में जाकर कहा कि मेरा मित्र यज्ञदत्त नाम ब्राह्मण बड़ा दरिद्रीथा पिशाचका साधनकरने से उसको बहुतसा धन प्राप्तहुआ और अब वह सुखपूर्वक रहता है उसने वह पिशाच साधन मुझे भी बता-

दियाहै इससे हे मित्र ! तुमभी पिशाच सिद्धी करो वह तुम्हारे इस घाव और नासूरको अच्छा करदेगा यह कहकर और मन्त्र बताकर उसने यह विधिभी बताई कि रात्रिके पिछले पहर उठकर बालोंको खोलकर नग्न होके आचमन बिना किये दो मुट्ठियों में जितने चावल आसकें उतने चांवल लेकर मन्त्रको जपते हुए तुम चौराहेपर जाना वहां दोनों मुट्ठी चांवल रखकर मौन होकर चलेआना और पीछे फिरकर न देखना जबतक पिशाच प्रकट होकर यह न कहे कि मैं तुम्हारे व्रणोंको खोदूंगा तबतक प्रतिदिन इसी रीतिको करे चले जाना इसप्रकार से पिशाच सिद्ध होकर तुम्हारे रोग को दूर करदेगा अपने मित्रके यह वचन सुनकर उस ब्राह्मणने उसी रीति पर किया तब पिशाच ने सिद्ध होकर हिमालय से औषधी लाकर उसका नासूर खोदिया नासूरके अच्छे होजाने से प्रसन्न हुए उस ब्राह्मण से वह पिशाच बोला कि हे ब्राह्मण ! मुझे कोई दूसरा घाव और बताओ जिसको मैं पूरा करूं नहीं तो मैं तुम्हारे लिये कोई अनर्थ करदूंगा या तुम्हारे शरीरकोही नष्ट करदूंगा यह सुनकर ब्राह्मण भयभीत होके अपने को बचाने के लिये बोला कि सात दिनके उपरान्त मैं तुमको दूसरा घाव बतलाऊंगा तब पिशाच चलागया और वह ब्राह्मण अपने जीवनसे निराश होगया इतनी कथा कहकर कलिंगसेना असभ्य वचनों के कहनेकी लज्जासे निवृत्त होकर सोमप्रभा के कहने से फिर बोली कि इसके उपरान्त उस ब्राह्मण की एक चतुर विधवा पुत्री अपने पिताको खिन्न देखकर बोली कि आप क्यों उदासीन हो तब उसने उससे सम्पूर्ण वृत्तान्त कहदिया तब कन्याने व्रणके न मिलने से अपने पिताको खिन्न जानकर कहा कि मैं उस पिशाचको छललूंगी तुम

उससे जाकर कहो कि मेरी पुत्रीके नासूरहै उसे पूरा करो पुत्री के वचन सुनकर ब्राह्मण प्रसन्न होकर पिशाच के पासगया और उस को अपनी पुत्रीके पास लेगया तब लड़की ने पिशाचको एकान्त में अपनी योनि दिखाकर कहा कि इस मेरे घावको तुम पूरा करो उसके वचन सुनकर वह मूर्ख पिशाच अनेक प्रकारके लेप और वत्ती आदि उसकी योनि में लगाने लगा परन्तु उसे पूर्ण न कर सका कुछ दिनों के पीछे खिन्न होकर पिशाच उस ब्राह्मणकी पुत्री की जङ्घा अपने कन्धों पर रखकर उसकी योनि को देखने लगा कि यह व्रण क्यों नहीं पूर्ण होताहै उससमय कुछ नीचे दृष्टि प-ड़नेसे उसे गुदाका छिद्र दिखाई दिया उसे देखकर वह घबरा कर शोचने लगा कि एक व्रण को तो पूराही नहीं करचुकाहूं दूसरा और उत्पन्न होगया यह कहावत ठीकहै कि छिद्रों में अनर्थ वहुत होते हैं जिससे सम्पूर्ण उत्पन्न होतेहैं और जिसके द्वारा नाशको प्राप्त होतेहैं उस खुले हुये संसार के मार्गको कौन ढकसक्ताहै यह शोचकर उसे यह भयहुआ कि घाव तो नहीं अच्छा हुआ अब मुझको यहीं बन्धन में पड़ना होगा इस भयसे वह मूर्ख पिशाच वहांसे भागगया ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकचत्वारिंशःप्रदीपः ॥ ४१ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेद्विचत्वारिंशःप्रदीपः ४२॥

श्रेष्ठाशीलवतीनारी मुच्यतेमहतोभयात् ॥
महत्सौख्यमवाप्नोति वैश्यपत्नीयथाऽभवत्४२॥

(अर्थ) श्रेष्ठ स्वभाववती स्त्री सब भयों से छूटती फिर भारी सुखभी पातीहै जैसे वैश्यकी स्त्री निज साससे दुःखीहो निकलगई तो तिसने फिर राजासे सन्मानपाया और निज पतिसेमिली४२॥

पाटलिपुत्र नाम पुर में धनपालित नाम एक बड़ा धनी ब-
नियां रहता था उसके कीर्त्तिसेना नाम अत्यन्त रूपवती प्राणों से
भी अधिक प्यारी कन्याथी उसने उस कन्याका विवाह मगधदेश
निवासी देवसेन नाम महाधनवान् बनिये के साथ किया उस
सज्जन देवसेन के यहां उसकी दुष्टामाता गृहकी स्वामिनी थी
क्योंकि उसका पिता मरगया था वह अपनी बधू कीर्त्तिसेना को
अपने पुत्रको प्यारी देखकर क्रोधसे अत्यन्त जाज्वल्य होती थी
और पुत्र के परोक्ष में उसे वहुत त्रासदिया करतीथी परन्तु कीर्त्ति-
सेना अपने पति से कुछभी नहीं कहतीथी ठीकहै कुटिलसासों के
आधीन होकर सज्जन वधुओं का रहना वड़ा कष्टदायक है एक
समय देवसेन वाणिज्य के लिये बन्धुओं के कहने से वलभी पुरी
के जानेको उद्युक्तहुआ तब कीर्त्तिसेना उससे वोली कि हे आर्य्य-
पुत्र! अबतक मैंने तुमसे कुछ नहीं कहाथा परन्तु अब कहना पड़ता
है तुम्हारी यह माता मुझे तुम्हारे होनेपर भी अत्यन्त त्रास देती
है और तुम्हारे चले जाने पर न जानिये क्या करेगी सो मैं नहीं
जानतीहूं यह सुनकर उसके स्नेह से घबराकर देवसेन डरताहुआ
अपनी माता से प्रणाम करके बोला कि हे अम्ब ! मैं इस कीर्त्ति-
सेनाको तुम्हें सौंपे जाताहूं इससे कठोरता नहीं करनी उचित है
क्योंकि यह सत्कुल में उत्पन्न हुई इससे इसका सरल स्वभाव है
यह सुनकर उसकी माता कीर्त्तिसेना को बुलाकर त्यौरी बदलकर
देवसेन से बोली कि इससे पूछो तो मैंने क्या कियाहै यह घर में
भेदडालने के लिये तुमको वहकातीहै हे पुत्र ! मुझे तो तुमदोनों
समानही हो यह सुनकर देवसेन का चित्त सावधान होगया ठीक
है अपनी माता के कपट भरे प्रेमके बचनों में कौन नहीं फँसता

है कीर्त्तिसेना भी उसके भयसे चकितहोकर चुपखड़ीरही उसके दूसरे दिन देवसेन तो वलभीपुरी को चलागया और पति के इच्छा से व्याकुल उस कीर्त्तिसेनाके पास जो दासी नौकर थीं वह सब उसकी सासने धीरे २ छुड़ादीं और एकदिनउसने अपनीदासी से सलाह करके कलिंगसेना को भीतर बुलाकर नंगी करकेलातों से दांतों से और नखों से बड़ी ताड़ना करी और कहा कि हे दुष्टे! तू मेरे पुत्रको भड़काती है फिर एक तहखाने में से सब असबाब निकलवाकर उसखाली तहखाने में उसे बन्दकरके जंजीरलगादी और प्रतिदिन सायंकाल के समय वह पापिनी उसको आधा सकोराभर भातदेनेलगी तदनन्तर उसने शोचा कि इससमय इसका पति तो बहुतदूर है जो यह इसी में पड़े २ मरजाय तो इस को फिंकवाकर लोगों से कहदूंगी कि वह निकलगई इसप्रकार पापिनी साससे तहखाने में डालीगई सुखके योग्य कीर्त्तिसेना रोदनकरके शोचनेलगी कि धनवान्पति सत्कुल में जन्म सौभाग्य और अच्छे आचरण इनसब सुलक्षणों के होनेपर भी सास की कृपा से मुझे यह विपत्ति भोगनी पड़ी है इसी से बांधवलोग कन्या के जन्म की निन्दा करते हैं सास और नन्दों के आधीन होकर कन्याओं को अनेकप्रकार के दुःख भोगने पड़ते हैं इसप्रकार शोचतीहुई कीर्त्तिसेना को अकस्मात् उसी तहखाने में एक कुदाली मिलगई वह कुदाली क्या थी मानों ब्रह्माने उसके चित्त से दुःखरूपी शल्य निकालकर बाहर डालदिया था उसी कुदाली से उसने सुरंगखोदी वह सुरंग भाग्यबश से उसी के निवास स्थान में जा निकली वहां उसके पूर्वजन्म के पुण्य के समान दीपक का प्रकाश होरहाथा उससमय थोड़ी सी रात्रिबाकीरही थी इस

से कीर्त्तिसेना थोड़ेसे बस्त्र और सुवर्ण वहांसे लेकर छिपकर नगर के बाहरचलीगई वहां जाके उसने शोचा कि इसप्रकार से मुझे अपने पिताके यहां जाना तो उचित नहीं है क्योंकि वहां जाकर मैं क्याकरूंगी और लोग मुझपर कैसे विश्वासकरेंगे इससेअपनी युक्तिपूर्वक मुझको अपने पतिकेही पास जाना उचित है क्योंकि साध्वीस्त्रियोंको इसलोक और परलोक में पतिके सिवाय और कोई गति नहीं यह शोचकर उसने तड़ाग में स्नान करके अपना भेष राजपुत्र का बनाया और बाजार में जाकर कुछ सुवर्ण बेचके उस दिन किसी वनियेके यहां निवास किया दूसरेदिन वलभीपुरी को जानेकी इच्छाकरतेहुए समुद्रसेन वनियेके साथ परिचयकरके उसी के साथ राजपुत्रका भेष बनाकर वलभीपुरीको चली और उस वैश्य से उसने कहा कि मुझे गोत्री भाइयोंने यहां क्लेश दियाहै इससे मैं तुम्हारे साथ बलभीपुरी में अपने सुजनसे मिलनेको चलताहूं यह सुनकर वहबैश्य उसे राजपुत्र जानकर गौरवसे मार्गमें उसकी बड़ी सेवा करनेलगा कुछ दूरचलकर वह वनियां अपने साथियों समेत साधारण मार्गको छोड़कर वनके मार्गकी ओरचला क्योंकि साधारण मार्ग में बहुतसा कर पड़ताथा कुछ दिनोंके उपरान्त वनके द्वारपर पहुंचकर जब सम्पूर्ण लोग वहां सायंकालके समय टिके उस समय यमराजकी दूती के समान शृगाली ने भयंकर शब्द किया उस शब्दको सुनकर उसके जाननेवाले बैश्यलोग अपने २शस्त्रों को लेकर सब ओर से अपने सम्पूर्ण पदार्थों को घेरकर सावधान होकर बैठे उससमय चोरों की आगे चलनेवाली सेनाके समान सब ओरसे अन्धकारके आजानेपर पुरुषबेषधारी कीर्त्तिसेना शोचनेलगी कि पापियों का कर्म्मवंश के समान बढ़ताही जाता है

देखो मेरी सासके कर्मोंका फल मुझे यहां भी मिला पहले मृत्युके समान सासके कोपने मुझे भक्षण किया तब मैं द्वितीय गर्भवास के समान तहखाने में डालीगई भाग्यवश से उससे भी निकलकर मानों दूसरीबार जन्म लेकर धीरे २ यहां आई अब यहां आकर भी मुझे प्राणोंका सन्देह होरहा है जो चोर मुझे यहां मारडालैंगे तो वह वैरिणी सास मेरे पतिसे कहैगी कि वह किसीकेसाथ भागगई और जो वस्त्रों के खुलजानेसे मुझे कोई पुरुष स्त्री जानजायगा तो मुझे मृत्यु अच्छी है परन्तु अपने आचार का भ्रष्ट करना उचित नहीं है इससे मुझे अपनी रक्षा करनी चाहिये इसमित्र बनिये की अपेक्षा नहीं करनी चाहिये क्योंकि मित्रादिको छोड़कर स्त्रियोंको अपने सतीधर्म्म की रक्षा करनी योग्य है यह निश्चय करके उसने ढूंढ़कर वृक्षोंके बीचमें एक घरके समान बनाहुआ गढ़ादेखा मानों पृथ्वी नेरहने के लिये उसे स्थान दियाथा उसने उसके भीतर जाकर और तृण तथा पत्ते आदिकों से अपने शरीरको ढककर पति के मिलने की आशासे चित्तको सावधान करके वहीं स्थितिकरी इसके उपरान्त अर्द्धरात्रि के समय शस्त्र धारण कियेहुये बहुत से चोरों की सेनाने आकर सम्पूर्ण साथियों समेत समुद्रदत्त को घेर लिया उस समय चोररूपी मेघ गर्जनेलगे शस्त्रों की ज्वालारूपी बिजली चमकनेलगी और रुधिररूपी जल बरसनेलगा इसप्रकार उस युद्धरूपी वर्षामें साथियों समेत समुद्रसेनको मारकर वह बलवान् चोर सम्पूर्ण धनको लेकर चलेगये उससमय चोरोंके कोलाहलको सुनकर भी जो कीर्त्तिसेनाके प्राण नहीं निकले इसमें केवल भाग्यही कारणहै तदनन्तर रात्रिके व्यतीत होजानेपर वह कीर्त्ति सेना उसीगढ़ेसे बाहर निकली निस्सन्देह अपने व्रतको नहीं भंग

करनेवाली पतिव्रता स्त्रियों को आपत्ति में देवता लोग आपही आकर वचाते हैं क्योंकि उस निर्जन वनमें सिंहने उसे देखकर भी छोड़दिया और किसी ओर से किसी तपस्वी ने आकर सम्पूर्ण वृत्तान्त पूंछकर अपने कमण्डलु से जल पिलाकर उसे सावधान किया और मार्ग भी वताया फिर तपस्वी के अन्तर्द्धान होजानेपर मानों अमृत से तृप्तिहुई क्षुधा और तृषा से रहित वह कीर्त्तिसेना तपस्वी के वतायेहुए मार्ग से चली कुछ दूर चलकर भी सूर्य भगवान् को अस्तहोते जानकर और किरणरूपी हाथोंको फैलाकर पक्षियों के शब्दोंसे मानों एक रात्रि यहां ठहरजाओ ऐसा कहनेपर कीर्त्ति-सेना किसी वड़े वृक्षकी जड़के गृहके समान खोलमें चलीगई और उसका द्वार किसी दूसरे काष्ठसे वन्दकरलिया सायंकाल के समय उसने छिद्रोंमें से देखा कि एक वड़ी भयंकर राक्षसी अपने वालकों कोलिये चलीआती है उसे देखकर इसको यह भयहुआ कि अन्य विपत्तियों से तो मैं वचगईहूं परन्तु यह राक्षसी आज मुझे खाडा-लेगी उस राक्षसीको तो यह वृत्तान्त विदितही न था इसहेतुसे वह अपने वालकों समेत वृक्षपर चढ़गई उस समय उसके वालकों ने अपनी माता राक्षसी से कहा कि हे माता! कुछ भोजनदो तव वह वोली कि आज मुझे श्मशानमें भी जाकर कुछ भोजन नहीं मिला और डाकिनियोंसे भी मैंने मांगा परन्तु उन्होंने भी मुझे भाग नहीं दिया इसी खेदसे मैंने भैरवनाथ से प्रार्थनाकी तव वह मुझसे नाम तथा वंशको पूँछकर वोले कि भयंकरी तू खरदूषण के वंशमें उत्पन्न होने के कारण वड़ी कुलीनहै इससे यहांसे थोड़ी दूरपर वसुदत्तपुर नाम नगरमें तू जा वहां वसुदत्तनाम वड़ा धर्मवान् राजाहै वही इस सम्पूर्ण वनकी रक्षाकरताहै और पथिकोंसे थोड़ासा कर लेकर चोरों

से उनकी रक्षा करताहै एकसमय वह राजा वनमें शिकार खेलने के लिये आया और शिकार खेलकर थकके कहीं सोगया उससमय एक खनखजूरा उसके कानमें चलागया परन्तु उसे नहीं मालूम हुआ और कानके भीतर जाकर उस खनखजूरेने बहुतसे बचेदिये हैं इसरोग से राजा वसुदत्त अत्यन्त दुर्बल होगया है. वैद्यलोग उसके इसरोगको नहीं जानसक्ते हैं जो दूसरा भी कोई न जानेगा तो कुछकाल में राजाकी मृत्यु होजायगी राजाके मरजानेपर उसका मांस तुम अपनी माया से हरकर खाना उसके खाने से छः महीने तक तुम्हारी तृप्तिहोगी इसप्रकार से भैरवजी ने मुझसे यह संदिग्ध वचनकहे हैं इससे हे बालको! मैं क्या करूं उस राक्षसीके यहवचन सुनकर वह बोले कि हे माता! जो इसरोगको जानकर कोई दूसरा पुरुष अच्छाकरदे तो वह राजा जीसक्ताहै और जो जीसक्ताहै तो यहरोग किसप्रकार से जासक्ताहै अपने पुत्रों के यह वचन सुनकर वह राक्षसी बोली कि इसरोग के दूर होजाने पर वह राजा अवश्य जी सक्ताहै मैं तुम्हें इसरोगके दूरहोनेका उपायबतातीहूं पहले राजा के शिरमें गर्म्म घृत लगाकर उसे मध्याह्नकी अत्यन्त कड़ी धूपमें बैठावे फिर उसके कान में एकबांसकी नली जिसमें बराबर छिद्र होय लगादे और उस नली को दूसरी ओरसे शीतल जलसे भरे हुए घड़ेपर छेददार सकोरा बन्द करके उस छिद्रमें लगादे इस उपाय से स्वेद तथा धूपसे व्याकुल होकर सम्पूर्ण खनखजूरे शिरसे निकलकर कान के द्वारा नली में होकर शीतलता के लोभसे घड़े में गिरपड़ेंगे इस उपाय से राजा बड़े रोगसे छूटजायगा इसप्रकार अपने पुत्रों से कहती हुई उस राक्षसी से इस सम्पूर्ण वृत्तान्त को सुनकर खोखले में खड़ी हुई कीर्त्तिसेना शोचने लगी कि जो मैं

यहांसे बचजाऊंगी तो इसी युक्ति से राजा वसुदत्तको नीरोग करूंगी यही राजा थोड़ासा करलेकर इस बनकी रक्षा करताहै इसी लोभसे सम्पूर्ण वनिये इस मार्ग से जातेहैं यहबात समुद्रदत्तने भी मुझ से कहीथी इससे मेरापति इसीमार्ग से आवेगा तो मैं इसबन से वसुदत्त पुरमें जाकर राजाको नीरोग करके वहीं अपने पतिके आने की प्रतीक्षा करूंगी इसप्रकार विचारती हुई कीर्त्तिसेना बड़े खेद से उस रात्रि को व्यतीत करके प्रातःकाल राक्षसों के चले जानेपर उस खोखले में से निकली और धीरे धीरे वहांसे चली कुछ दूर चलकर मध्याह्न के समय एक साधू गोपाल उसे मिला उसके पास जाकर कीर्त्तिसेना ने पूंछा कि यह कौनसा प्रदेश है यह सुनकर उसकी सुकुमारता और मार्गगमन के क्लेश को देखकर वह गोपाल दयापूर्वकबोला कि देखो यह सन्मुख वसुदत्तनाम राजाका वसुदत्तपुर नाम नगरहै यह महात्मा राजा रोगसे दो एक दिनमें मरने चाहताहै यह सुनकर कीर्त्तिसेना उससे बोली कि जो मुझे उसके पास कोई लेचले तो मैं उसके रोगको दूरकरदूंगा तब वह गोपाल बोला कि मैं इसी पुरमें जाताहूं तुम मेरेसाथ चलो मैं तुम्हें राजाके पास पहुँचाने का उद्योग करूंगा उसके वचनों को स्वीकार करके कीर्त्तिसेना उसीके साथ वसुदत्तपुरको गई वहां जाकर उस गोपालने राजाके रोगको देखकर किसी दुखी प्रतीहार से कहाकि यह वैद्य राजाके रोगको दूरकरने को कहताहै यह सुनकर प्रतीहार राजासे विज्ञापना करके और आज्ञा लेकर कीर्त्तिसेनाको उसके पास लेगया रोगसे पीड़ित राजाभी उसके अद्भुत स्वरूपको देखतेही सावधान होगया ठीकहै—आत्माही हिताहित को पहिचानता है और बोला कि हे सुलक्षण ! जो तुम मेरे रोग को दूर

करोगे तो मैं तुम्हें अपना आधा राज्यदेदूंगा मैंने स्वप्न में देखाथा कि किसी स्त्री ने मेरी पीठपरसे काला कम्बल उतारलिया है इस से मुझे निश्चयहोताहे कि आप मेरे इसरोगको अवश्य दूरकरियेगा राजाके यह वचन सुनकर कीर्तिसेना बोली कि हे महाराज! आज तो दिन व्यतीत होगया है कल मैं आप के रोगको दूरकरदूंगा आप अपने धैर्यको न छोड़ियेगा यह कहकर उसने राजाके शिर पर गौकाघृत मलवाया उससे राजा की पीड़ा कमहोगई और निद्रा आगई तब सम्पूर्ण लोग कीर्तिसेना की बड़ाई करके बोले कि यह कोई देवता हमलोगों के पुण्य से वैद्यका रूपधारण करके रात्रिके समय आया है रानी ने भी राजा के योग्य सम्पूर्ण उत्तम२ सामग्रियों से उसका सेवनकरके रात्रिके समय दासियोंसमेत एक बड़ा सुन्दर स्थान उसके शयन करने को दिया इसके उपरान्त दूसरेदिन मध्याह्नके समय सम्पूर्ण मन्त्री और रानियों के सन्मुख कीर्तिसेना ने राक्षसी की बताई उस अपूर्व युक्तिके द्वारा राजा के शिरसे डेढ़सौ खनखजूरे कानके मार्ग्ग से निकाले उन खनखजूरों को घड़े में रखकर दूध और घी आदि पुष्ट पदार्थों से राजाको तृप्त किया क्रमसे रोग के निवृत्त होजाने पर राजा सावधान होगया और घड़े में उन खनखजूरों को देखकर सम्पूर्ण लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ राजाने भी उन कीड़ोंको देखकर भय तथा आनन्द से युक्त होकर अपना पुनर्जन्म माना और स्नान करने के पीछे उत्सव करके कीर्तिसेना को अपना आधा राज्यदेने का प्रस्ताव किया जबकीर्त्तिसेना ने आधाराज्य नहीं स्वीकार किया तब गांव हाथी घोड़े तथा सुवर्ण देकर उसे प्रसन्न किया सम्पूर्ण रानी तथा मंत्रियोंने भी कहा कि इसने हमारे स्वामीके प्राणों की रक्षा की है

इससे यह हमारा पूज्यहै और बहुतसे वस्त्र तथा सुवर्ण के आभूषण उसे दिये कीर्त्तिसेना उन सम्पूर्ण पदार्थोंको राजाके हाथमें सौंपकर और मैं यहां कुछदिन रहूंगा यह कहकर अपने पतिकी बाटदेखती हुई वहीं रहनेलगी इसके उपरान्त सम्पूर्ण लोगों से आदर कीगई उस कीर्तिसेनाने पुरुषवेषसे वहा कुछदिन रहकर अपने पति देव-सेनको वलभी से वहां आयाहुआ सुना और जिस वैश्यपथिक-समाजमें उसका पतिथा उसे उसनगरी में आयाहुआ जानके नवीन मेघको मयूरीके समान उसने अपने पतिको वैश्यसमूह में जाकर देखा बहुत काल उत्कंठा से व्याकुल चित्तसे आनन्द के आंसुओं का अर्घदेतीहुई कीर्तिसेनापति के पैरोंपर गिरपड़ी वह भी दिनमें सूर्य्यकी किरणों से अलक्षित चन्द्रमाकी मूर्ति के समान पुरुषवेष में छिपीहुई अपनी प्रियाको पहिचानगया और उसके मुखरूपी चन्द्रमा को देखकर चन्द्रकान्त उसे देवसेन का हृदय जो नहीं गलितहुआ यह बड़ा आश्चर्य्य है तदनन्तर कीर्त्तिसेना को अ-पने स्वरूप के प्रकट करने पर देवसेन को बड़ा आश्चर्यहुआ कि यह क्या बात है तब उसने अपनी सासके दुराचार से हुए अपने सम्पूर्ण वृत्तान्त का वर्णनकिया यह सब बृत्तान्त सुनकर उसका पति देवसेन अपनी माता से विमुखहोगया और उसे क्रोध क्षमा आश्चर्य तथा हर्ष एक साथही हुए कीर्तिसेना के इस अद्भुत चरित्र को सुनकर सम्पूर्ण लोग आनन्द पूर्व्वक कहते थे कि पति की भक्तिरूपी रथपर चढ़कर शीलरूपी कवच को धारण कर और धर्म्मरूपी सारथी को साथ ले साध्वी पतिव्रता स्त्री बुद्धि-रूपी शस्त्रसे विजयको प्राप्त होती हैं राजानेभी कहा कि पति के निमित्त इतना क्लेश सहकर इसने श्री रामचन्द्र के निमित्त क्लेश

सहनेवाली सीता देवीको भी जीतलिया इससे प्राणोंकी रक्षा क-
रनेवाली यह मेरी धर्मकी वहनहै इसप्रकार प्रशंसा करतेहुए राजा
से कीर्तिसेना बोली कि हे महाराज! जो आपके दियेहुए ग्रामहाथी
घोड़े तथा रत्नादिक पदार्थ मैंने आपको सौंप दियेथे वह मेरे पति
को देदीजिये उसके यह बचन सुनकर राजाने ग्रामादिक सम्पूर्ण
पदार्थ देवसेन को देदिये और प्रसन्न होके उसको पक्का लेख लिख
दिया इस प्रकार राजाके दिये हुए और वाणिज्य में उत्पन्न किये
हुए धनसे देवसेन बड़ा ऐश्वर्यवान् होकर अपनी माताको त्याग
करके कीर्त्तिसेनाकी प्रशंसा करता हुआ उसी वसुदत्तपुर में रहने
लगा और कीर्त्तिसेनाभी अपने चरित्रके प्रभावसे बड़े यशको पा-
कर और उस पापिनी सासुको छोड़कर सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य को सुख
पूर्व्वक भोगती हुई अपने पतिके पास मूर्त्तिमती पुण्यों के फल
की समृद्धि के समान रहने लगी इसप्रकार दुर्दैव के योगसे दुःख
को सहकर बिपत्ति में भी अपने चरित्रकी रक्षा करती हुई साध्वी
स्त्रियां अपने वड़े सत्त्वके प्रभावसे अपनी रक्षा करके अपना और
पतिकाभी कल्याण करती हैं हे सखी! वहुओंको प्रायः सासु और
नन्दों के द्वारा इसीप्रकारके दुःख भोगने पड़ते हैं इससे मैं तुम्हारे
लिये ऐसी सुसराल चाहती हूं जहां दुष्ट सासु और नन्द न होय
सोमप्रभा से इस अद्भुत आनन्ददायिनी कथाको सुनकर कलिंग-
सेना अत्यन्त प्रसन्न हुई और मानों इसी बिचित्र कथाको समाप्त
जानकर सूर्य भगवान् के अस्ताचल पर जाने के समय सोमप्रभा
कलिंगसेनासे मिलकर अपने स्थानको चलीगई ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेद्विचत्वारिंशःप्रदीपः ४२ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागेत्रिचत्वारिंशःप्रदीपः ४२ ॥

योग्यएवलभेन्नारीं काकतालीयवद्यथा ॥
राजपुत्रोथचागत्य प्राप्तवान्स्त्रियमीप्सिताम् ४३॥

(अर्थ) योग्य पुरुषही श्रेष्ठ स्त्रीको पाता है जैसे काकतालीय न्यायके समान किसी एक राजपुत्रने आकर उस अभीष्ट स्त्री को प्राप्तकरी ४२ ॥

उज्जयिनीपुरी में विक्रमसेन नाम एक राजा पूर्व्व समयमें था उस राजाके तेजस्वती नाम अत्यन्त सुन्दरी कन्याथी उस कन्याको प्रायःकोई भी राजा अपने विवाहके योग्य नहीं मालूम होता था एकसमय उसने अपने महलपरसे किसी पुरुषको देखा उसे अपनें समान सुन्दर जानकर उसकेपास संदेशा लेकर अपनी सखीभेजी सखीने जाकर उससे राजपुत्रीका संदेशा कहा परन्तु उसने साहस से डरकर अंगीकार नहीं किया फिर सखीने बहुत प्रार्थना करके उससे यह संकेत किया कि यह जो निर्ज्जन देवमन्दिर तुम देखते हो इसमें रात्रिमें तुम आकर उस राजपुत्री की प्रतीक्षा करना यह कहकर सखीने वहांसे आकर तेजस्वतीसे उसका सब वृत्तान्त कह-दिया तब तेजस्वती तो सूर्य्य के अस्त होनेकी प्रतीक्षा करनेलगी और वह पुरुष स्वीकार करके भी भयसे और कहीं चलागया ठीक है मेंढक रक्तकमलिनी के किंजल्क के स्वादको नहीं जानता इस बीचमें कोई कुलीन राजपुत्र अपने पिताके मरजानेपर उसके मित्र इस राजाविक्रमसेनसे मिलनेको उज्जयिनी में आया गोत्रीभाइयों ने उसका राज्य हरलियाथा इससे वह अकेलाही सोमदत्त नाम सुन्दर राजपुत्र सायंकाल के समय उसपुरी में पहुंचकर भाग्यबश

से जिस देवमन्दिर में तेजस्वती की सखी उस पुरुषको बुलाआई थी उसीमें रात्रि व्यतीत करनेको रहा रात्रि के समय राजपुत्री तेजस्वतीने अनुरागसे बिना पहिचाने उसी राजपुत्रको अपना पति बनालिया वह बुद्धिमान् राजपुत्र भी भाग्यवश से मिलीहुई होनेवाली राजलक्ष्मी की सूचित करनेवाली उस राजपुत्री के साथ चुपचाप आनन्द को प्राप्त होगया क्षणभरके उपरान्त राजपुत्री ने उसे अपना संकेतित वह पुरुष न जानकर और उसकी भव्य आकृती देखकर अपने चित्तमें कहा कि ब्रह्माने मुझे ठगा नहीं है यह उससे भी सुन्दर है तदनन्तर उससे वार्तालाप करके और सलाह करके राजपुत्री अपने मन्दिर में चलीआई और वह उसी मन्दिर में रहा प्रातःकाल राजद्वार में जाकर और प्रतीहार के द्वारा अपना नाम राजा को निवेदन करके राजा की आज्ञा पाकर भीतरगया वहां उसने राजा से अपना अभिप्राय कहा फिर रानी ने भी सखियों के मुखसे कन्याका वृत्तान्त सुनकर राजा से कहा उस वृत्तान्त को सुनकर अनिष्ट का न सिद्धहोना और इष्ट का सिद्ध होजाना इस काकतालीय न्यायसे विस्मित राजासे उस समय एक मंत्री बोला कि जैसे स्वामियों के सोजाने पर अच्छे भृत्य जागा करते हैं उसीप्रकार भव्य पुरुषों के कार्य्यों में उनका भाग्यही सहायक होताहै इसी विषय में आपको मैं एक कथासुनाताहूं किसी ग्राम में हरिशर्मा नाम एक मूर्ख दरिद्री ब्राह्मण था वह दीन ब्राह्मण जीविका के न होने से बहुत दुःखी रहताथा और पूर्वजन्म के पापों के भोगने के लिये उसके बहुत से पुत्रभी हुएथे इससे वह कुटुम्ब सहित भिक्षा मांगताहुआ किसीनगर में पहुँचा वहां स्थूलदत्त नाम किसी बड़े धनवान् गृहस्थ के यहां उसने

चाकरी करली तब अपने पुत्रों को उसके पशुओं की रक्षा के लिये नियुक्त करदिया और आप अपनी स्त्री समेत उसकी सेवकाई करने लगा। एकसमय स्थूलदत्तके यहां कन्या के विवाहका उत्सवहुआ उस उत्सव में बहुतसे बराती तथा कुटुम्बियों के आने से स्थूलदत्त का घर भरगया उससमय हरिशर्म्मा ने अपने कुटुम्ब समेत यह आशा लगाई कि घी तथा मांस आदिक उत्तम भोजन हमें गले तक खानेको मिलैगा। और इसी से वह भोजनके समयकी आशा देखतारहा परन्तु उससमय उसको किसीने भी स्मरण नहीं किया तब भोजन को न पाकर महादुःखी होकर वह अपनी स्त्री से बोला कि दरिद्रता और मूर्खता से मेरा यहां ऐसा अनादर है इससे मैं युक्तिपूर्वक कोई बनावटका ज्ञान प्रकट करूंगा जिससे यह स्थूल-दत्त मेरा सत्कार किया करेगा। तुम अवसर पाकर इससे कहदेना कि मेरापति बड़ा ज्ञानी है यह कहकर और बिचार करके जब सम्पूर्ण लोग सोगये तब उसने स्थूलदत्त के घरसे दामादका घोड़ा खोलकर बहुत दूर जाकर कहीं छिपादिया प्रातःकाल बरातियों ने जब इधर उधर ढूँढ़ा परंतु घोड़ा नहीं मिला तब स्थूलदत्त के चित्त में बड़ा सन्देह हुआ कि यह बड़ा अशकुनहै उससमय हरिशर्मा की स्त्री ने आकर स्थूलदत्तसे कहा कि मेरापति बड़ाज्ञानी है और ज्योतिष आदिक विद्या अच्छेप्रकार जानता है आप उससे क्यों नहीं पूछते उसके पूछने से आपका घोड़ा मिलजायगा यह सुन-कर स्थूलदत्तने हरिशर्मा को बुलवाया तब वह कल मुझे भूलगये आज घोड़ा खोने पर मेरी यादआई है ऐसा कहता हुआ उसके पास आया तब स्थूलदत्तने उससे कहा कि मैं भूलगया मेरे अप-राधको क्षमाकरो और बताओ घोड़ा किसने हराहै उसके बचन

सुनकर हरिशर्मा बहुतसी झूठमूठ की रेखा खैंचकर बोला कि यहां से दक्षिण की ओर कुछ दूरपर चोरों ने तुम्हारा घोड़ा लेजाकर बांधाहै वहां से जाकर शीघ्र लेआओ नहीं तो वह वहां से भी लेजा-यँगे यह सुनकर बहुत से लोग दौड़कर गये और हरिशर्मा की प्रशंसा करते हुए वहां से घोड़ा लेआये उस समय सब लोगों ने हरिशर्मा की बड़ी प्रशंसाकी और वह सुखपूर्वक स्थूलदत्तके यहां रहने लगा इसके उपरान्त कुछ दिनों के व्यतीत होजाने पर उस नगरके राजाके यहांसे बहुतसे रत्न तथा सुवर्ण कोई चुरालेगया जब बहुत खोज करने पर भी राजा को उसका पता नहीं मिला तब राजाने हरिशर्मा की बहुत सी प्रशंसा सुनकर इसे बुलवाया वहां जाकर हरिशर्मा ने कुछ समय टालने के लिये कहा कि मैं प्रातः-काल बताऊंगा और वहीं राजा के यहां रात्रि को निवास किया राजाके यहां जिह्वानाम एक चेरी थी उसी ने अपने भाई से मिल-कर वह धन चुराया था वह जिस स्थानमें हरिशर्मा सोरहाथा उस के द्वारपर कान लगाकर खड़ीहुई कि देखूं यह ज्ञानी क्याकर रहाहै उससमय हरिशर्मा ने एकान्त जानकर अपनी मिथ्यावादिनी जिह्वाकी इसप्रकार निन्दाकी कि हे जिह्वे! तूने भोगमें लम्पटहोकर यह क्या दुराचारकिया अब तुझे यहां मृत्युका क्लेश भोगनाहोगा यह सुनकर जिह्वा ने जाना कि यह ज्ञानी मुझे जानगया और भय से व्याकुल होकर किसी युक्ति से भीतर जाके उसके पैरों पर गिरकर कहा कि हे महाराज! धनकी चुरानेवाली जिह्वा मैंही हूं आपने ज्ञान से मुझे जानलिया अब आप मेरी रक्षा कीजिये यह थोड़ासा सुवर्ण उसमें का मेरे पास है सो आप लेलीजिये और शेष सम्पूर्ण धन मैंने उपवन में अनार के बृक्षके नीचे गाड़दिया

है यह सुनकर हरिशर्मा बोला कि मैं भूत भविष्य वर्त्तमान इन तीनों कालों की बात जानता हूं तू मेरी शरण में आई है इससे मैं तेरा नाम नहीं बताऊंगा और यह जो सुवर्ण तेरे पास है सो मुझे फिर देना उसके यह वचन सुनकर वह चेरी वहांसे चली गई और हरिशर्मा आश्चर्य्य पूर्वक शोचने लगा कि अनुकूल भाग्य असाध्य कार्य्योंको भी सहजही में सिद्ध करताहै देखो यहां कैसे अनर्थ में फँसकर मैं अपनी जिह्वा की निन्दा कर रहा था उससे जिह्वा नाम चोट्टी मुझे मिलगई यह मेरा प्रयोजन सिद्ध होगया ठीकहै छिपेहुए पातक शङ्कामात्रसेही प्रकट होजाते हैं इसप्रकार बिचारकर उसने वह रात्रि प्रसन्नता पूर्वक व्यतीतकी प्रातःकाल झूठमूठलकीरआदि खैंचकर उसने उपवनमें राजाको लेजाकर सब धन खुदवादिया कि इसमेंसे कुछ धन चोर लेकर भागगया है हरि- शर्माके इस अपूर्व विज्ञान को देखकर राजा उसको ग्राम देने को उद्यत हुआ तब मन्त्री ने राजासे कानमें कहा कि शास्त्रके बिना ऐसा ज्ञान नहीं होसक्ता है और यह मूर्ख है तो निस्सन्देह इसने चोरोंके साथ मिलकर अपनी यह जीविका निकाली है इससे एक बार किसी युक्ति से इसकी परीक्षा फिर करलीजिये तब राजाने एक नवीन घटमें एक मेंढक बन्द करवाके उसके सम्मुख रक्खा और कहा कि हे ब्राह्मण! इस घटमें जो पदार्थ है उसे जानजाओ तो मैं आपकी बड़ी पूजा करूंगा राजाके यह बचन सुनकर और अपने नाशका समय जानकर हरिशर्मा बाल्यावस्थामें पिताके रक्खेहुए मेंढक इस अपने नामको स्मरण करताहुआ भाग्यवशहो दुःखसे कहनेलगा कि हे मेंढक तुझ साधूके बिनाशके लिये अकस्मात यह घट उपस्थितहुआ उसके यह बचन सुनकर सब लोग प्रशंसा

करने लगे कि यह बड़ा ज्ञानी है इसने इस मेंढक को भी जान लिया और राजाने उसको अत्यन्त ज्ञानी जानकर बहुत प्रसन्न होके उसे सुवर्ण छत्र तथा वाहन सहित बहुतसे ग्राम दिये इससे हरिशर्मा सामन्तके समान होगया इसप्रकार पुण्यात्मा मनुष्योंके कार्य भाग्यवशसे सिद्ध होजाते हैं ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे त्रिचत्वारिंशः प्रदीपः ४३ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे चतुश्चत्वारिंशः प्रदीपः ४४॥

एकोगुणीरक्षतेहि बहूनपिजड़ान्नरान् ॥
विष्णुदत्तोयथासप्त ब्राह्मणान्रक्षतिस्मह ४४ ॥

(अर्थ) एकभी गुणीजन बहुतसे मूर्खोंको मृत्युसे बचा लेता है जैसे विष्णुदत्तने सातों ब्राह्मणोंको मरने से बचाये ४४ ॥

पूर्वही अन्तर्व्वेद में वसुदत्त नाम एक ब्राह्मण रहताथा उसके विष्णुदत्त नाम पुत्रथा विष्णुदत्त १६ वर्ष की अवस्था में विद्या पढ़ने के लिये वलभीपुरी में जानेको उपस्थित हुआ उसे ब्राह्मणों के सात पुत्र वहां जानेके लिये साथी मिले यह तो कुछ पढ़ा और कुलीनभी था परन्तु वह सातों मूर्ख थे आपसमें एक दूसरेके लिये परित्याग न करने को शपथ खाकर उनके साथ रात्रिके समय अपने माता पितासे छिपकर विष्णुदत्त चला घरसे चलतेही कुछ अशकुन देखकर उसने अपने साथी मित्रों से कहा कि आज अकस्मात् यह अशकुन हुआहै इससे लौट चलना चाहिये फिर कभी जब अच्छा समय होगा तब चलैंगे यह सुनकर वह सातों मूर्ख बोले कि व्यर्थ शङ्का मतकरो हम इससे नहीं डरते जो तुम डरते हो तो लौट जाओ हम तो अभी जाते हैं क्योंकि प्रातःकाल हमारे

बान्धव लोग जो जान जायँगे तो हमें नहीं जाने देंगे उनके यह बचनसुनकर विष्णुदत्त शपथके आधीन होकर उन्हींकेसाथ विष्णु भगवान् को स्मरण करके चलदिया चलते २ रात्रिकेव्यतीत हो-जाने पर फिर कुछ अशकुन देखके विष्णुदत्तने उनसे लौटने को कहा तब वह बोले कि और तो कोई अशकुन नहीं है परन्तु बड़ा अशकुन यही है जो कौएके समान पद पद पर शङ्का करने वाले तुम हमारेसाथमें आयेहो उनके यहवचन सुनकर विष्णुदत्त पराधी-नहोकर उनके साथ चुपचाप चला और शोचने लगा अपनीही इच्छा के अनुसार करनेवाले मूर्खों को उपदेश न करना चाहिये क्योंकि मूर्खों का उपदेश उपस्थ इन्द्री के संस्कारके समान केवल तिरस्कारका हेतु होताहै बहुतसे मूर्खों में पड़कर एकविद्वान्भी जल की लहरों में पड़े हुए कमलके समान नष्ट होताहै इससे मुझे इन मूर्खों से हित अनहित कुछभी नहीं कहना उचितहै और चुपचाप चलना चाहिये परमेश्वरकी कृपासे सब कल्याण होगा इसप्रकार शोच करताहुआ विष्णुदत्त उन्हीं मूर्खों के साथ सायङ्कालके समय निषादों के ग्राम में पहुँचा वहां रात्रिके समय उनको ठहरनेकेलिये किसी युवतीस्त्रीका गृहमिला वहां जाकर वहसातोंमूर्ख तो क्षणभर में सोगये परन्तु विष्णुदत्त उस घरमें किसी अन्य पुरुषकेनहोनेसे जागताहीरहा ठीकहै मूर्खलोग निश्चिन्तहोकर सोते हैं परन्तु विवेकी लोगों को निद्रा नहीं आती उससमय एक युवा पुरुष उस घर में आकर उस युवतीस्त्री के पास चला गया और उसके साथ रमण किया फिर कुछकाल वार्त्तालाप करके दोनों सोगये उन दोनोंका यह वृत्तान्त विष्णुदत्त ने भीतर दीपक प्रकाशित होने के कारण द्वारके छिद्रसे देखा और विचारा कि इस दुश्चारिणी स्त्री के यहां

हम कैसे आगये मुझे मालूम होताहै कि यह इसका जार है पति नहीं है नहीं तो इसकी चाल सन्देह पूर्व्वक ऐसी धीरी न होती और मुझे पहलेही यहचपलचित्त मालूम हुईथी परन्तु कोई स्थान रहने को नहीं मिला तब इसमें लाचार होकर रहना पड़ा अच्छा कोई डर नहीं है हम कई आदमी हैं परस्पर साक्षी होसक्ते हैं इस प्रकार विचार करते २ उसे बाहर मनुष्यों कासा शब्द सुनाई पड़ा और फिर एक तरुण पुरुष अनुचरों समेत खड्गको लियेहुए वहां आया अनुचर तो अपने २ स्थानपर जा बैठे और उसने विष्णुदत्तसे पूछा कि तुमलोग कौनहो उसने डरकर कहाकि हम पथिक हैं तब भीतर जाकर और अपनी स्त्री को जारके साथ सोती हुई देखके उसने खड्गसे जारका शिर काटलिया और स्त्रीको न मारा न जगाया और दूसरे पलँग पर खड्गको अपने पासही रख कर शयन किया विष्णुदत्त ने यह वृत्तान्त भी द्वारकी सन्धि से देख कर शोचा कि इसने अपनी भार्याको स्त्री जानकर उसे छोड़ जो जारहीं को मारा यह अच्छाकिया परन्तु ऐसा घोरकर्म्म करके यह निस्सन्देह होकर निर्भय सोरहा है यह बड़े आश्चर्य्य की बात है विष्णुदत्त के इसप्रकार शोचतेही वह दुष्ट स्त्री उठकर अपने जार को मराहुआ और अपने पतिको सोताहुआ देखकर जारके धड़को कन्धेपर रखकर और उसके शिरको हाथमें लेकर बाहर जाकर कहीं राखके ढेरमें धड़समेत शिरको डालकर चुपचाप लौटआई विष्णुदत्त भी उसी के साथ जाके दूरही से सब वृत्तान्त देखकर लौटकर अपने मित्रों के साथ लेटरहा तब उस स्त्री ने लौटकर उसी खड्ग से अपने पतिका शिर काटडाला और बहुत चिल्लाकर महारोदन करके कहा कि हाय २ इन पथिकोंने मेरे पतिको मारडाला उसके

बचन सुनकर सम्पूर्ण सेवकलोग दौड़े और अपने स्वामीको मरा देखकर शस्त्रलेके उन सातों आठों निरपराध ब्राह्मणों को मारने लगे जब उनपर मार पड़नेलगी तब वह सब घबराकर उठबैठे और उनमेंसे विष्णुदत्त जल्दीसे बोला हे सेवकलोगो! ब्रह्महत्या न करो हमलोगों का कोई अपराध नहीं है इसी दुश्चारिणीका यह दुष्टकर्म है इसप्रकार उनको मारने से निवृत्त करके उसने रात्रिका सम्पूर्ण वृत्तान्त उनसे कहदिया और उन्हें अपने साथ लेजाकर वह धड़ तथा शिर राख में पड़ाहुआ दिखला दिया तब उस स्त्री का मुख म्लान होगया और उस कुचालिनी की निन्दाकरके सबलोग कहनेलगे कि कामके आधीन होकर जो स्त्री निश्शंक हो साहस करती है वह पराये हाथ में गयेहुए खड्ग के समान किसको नहीं मारती है यह कहकर उनलोगों ने विष्णुदत्त आदिक आठों ब्राह्मणोंको छोड़दिया तब वह सातों ब्राह्मण विष्णुदत्तसे कहनेलगे कि आज रात्रि के समय सोतेहुए हमलोगों के निमित्त रक्षा के लिये स्थापन कियेगये रत्नके दीपकके समान तुम होगये तुम्हारी कृपा से हमलोग इस दुश्शकुन के प्रभावसे होनेवाली मृत्युसे बचे इसप्रकार विष्णुकी प्रशंसाकरके और अपने दुष्टवचनों के अपराध को क्षमा कराके उसी के साथ अपने कार्य्यों को चले ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेचतुश्चत्वारिंशःप्रदीपः ४४ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेपञ्चचत्वारिंशःप्रदीपः ४५ ॥

सपत्नीशंकनीयाहि यत्नतोमानवैर्यथा ।
वियुक्ताकदलीगर्भा सपत्नीसङ्गतोयतः ४५ ॥

(अर्थ) मनुष्योंको सपत्नीका भय मानना चाहिये जैसे—सपत्नी

पटरानी ने कदलीगर्भा मुनिपुत्री का तिसके पति से वियोग करा दिया ४५ ॥

विश्वामित्रकी बनाईहुई इक्षुमती नाम एकनदी है उसीके तट पर उसीनामकी एकपुरी भी है उसी पुरी के समीप एक बड़ा वन है है उसमें मंकणकनाम मुनि का आश्रमहै वह मुनि अपने आश्रम में ऊपरको पैर कियेहुए तप कररहे थे एकसमय मुनि ने तपकरते२ आकाशमार्ग में मेनकानाम अप्सरा देखी और वायुके द्वारा वस्त्रों के चलायमान होने से उसके अंगभी साफ़ २ उन्हें दिखाई दिये उसे देखकर मुनिका चित्त कामसे चलायमान हुआ और एक नवीन केले के पत्ते पर उनका वीर्य्य निकलपड़ा वीर्य्यपात होतेही एक बड़ी सुन्दरकन्या उसीसमय उत्पन्न होगई ठीकहै महर्षिलोगों का अमोघवीर्य्य तत्क्षणही फलदाई होताहै वह कन्या केले में उत्पन्नहुई थी इसहेतु से मुनि ने उसकानाम कदलीगर्भा रक्खा जैसे रम्भाके देखने से गौतमकावीर्य च्युतहोके द्रोणाचार्य की स्त्री कृपी का जन्म हुआ था इसीप्रकार उत्पन्न होनेवाली कदलीगर्भा मुनि के आश्रमों में धीरे २ बड़ी हुई एक समय मध्य देशका स्वामी राजा दृढ़वर्मा शिकार खेलनेको गयाथा उसका घोड़ा किसी कारणसे भागकर उसको मंकणक मुनिके आश्रममें लेगया वहां जाकर राजाने वल्कलोंको धारण कियेहुए मुनि कन्याओं के भेष से अत्यन्त शोभित कदलीगर्भाको देखा उसे देखतेही राजाका चित्त उसके वशीभूत होगया और उसे अपनी सम्पूर्ण रानियों का स्मरणभी नहीं रहा तब जैसे राजा दुष्यन्त ने कण्व मुनिकी कन्या शकुन्तला पाईथी उसी प्रकार क्या यह ऋषिकी कन्या मुझे भी मिलैगी इसप्रकार शोचते हुए राजा दृढ़वर्म्मा ने कुशा तथा स-

षियोंको लेकर आतेहुए मङ्कणक मुनिको देखा मुनिको देखतेही घोड़ेको छोड़कर राजाने अपना नाम कहकर प्रणाम किया तब मुनिने कदलीगर्भासे कहा कि हे वत्से! इस अतिथि राजाके लिये अर्घ लाओ इसप्रकार मुनिकी आज्ञा पाकर कदलीगर्भा ने राजा का अर्घादिक सम्पूर्ण सत्कारकिया तदनन्तर राजाने मुनिसे पूछा कि यह कन्या आप के कैसे हुई तब मुनि ने उसकी उत्पत्ति का वृत्तान्त और नाम सब राजा से कहदिया मुनिके वचन सुनकर राजाने कदलीगर्भा को मेनकाके स्मरण से उत्पन्न होनेके कारण अप्सरा जानकर मुनिसे कहाकि हेमहाराज! यह कन्या आप मुझे देदीजिये तब मुनिने राजाको सुन्दर योग्य वर जानकर कदली-गर्भाका उसके साथ बिवाह करदिया ठीकहै प्राचीन लोगोंकेदिव्य प्रभाव पुण्यकार्य्यों में विचार नहीं करना चाहिये कदलीगर्भा के बिवाहको जानकर वहुतसी अप्सराओं ने मेनकाके स्नेह से उस आश्रममें आकर बिवाहके योग्य सम्पूर्ण आभूषणादिक उसे पहरा-दिये और थोड़ीसी सरसों उसके हाथ में देकर कहा कि हे पुत्री! जाते समय इन सरसोंके दानोंको मार्ग में बोती चली जाना क-दाचित् यह तुम्हारा पति राजा तुम्हें तिरस्कार करे तो तुम इन्हीं सरसों के वृक्षोंकी पहिचान से मार्ग्ग जानकर यहां चली आना उन के इस कहने के उपरान्त राजा दृढ़वर्म्मा कदलीगर्भा को अपने घोड़ेपर सवार करवाके वहांसे चला और मार्ग में छुटी हुई सेना को फिर पाकर उन्हें साथमें लेके राजधानी को आया और कद-लीगर्भा भी मार्ग में सरसों बोती हुई चली आई राजा राजधानी में आकर अपने मन्त्रियों से कदलीगर्भा का सब वृत्तान्त कहकर अन्य रानियों से बिमुख होके केवल उसीके साथ आनन्द पूर्व्वक

विहार करने लगा राजाकी यह दशा देखकर उसकी पटरानी ने मन्त्रीको बुलाकर एकान्त में अपने प्राचीन उपकारों को स्मरण कराके कहा कि राजाने नवीन स्त्री में आसक्त होकर मेरा त्यागकर दिया इससे ऐसा उपाय करो जिससे यह मेरी सपत्नी अलग हो जाय यह सुनकर मन्त्री ने कहा हे रानी! हम लोगों का यह काम नहीं है कि अपने स्वामीका स्त्री से वियोग कराना अथवा स्त्री का नाश करना यह काम संन्यासिनी स्त्रियोंका है वह दम्भ करने में बड़ी चतुर होती हैं और बहुत से दम्भी पुरुषों को वह जानती हैं और उन्हींकी संगति में रहती हैं मन्त्री के यह वचन सुनकर रानी लज्जित होकर बोली कि अच्छा मैं इस निन्दित कार्य्य को नहीं करानाचाहती उसके ऐसा कहनेपर जब मन्त्री चलागया तब उसने मन्त्री के वचनों को अपने हृदयमें ध्यान करके सखीके द्वारा एक संन्यासिनी बुलवाई और उससे सब अपना वृत्तान्त कहकर कार्य्य सिद्ध होजानेपर उसे बहुतसा धनदेने कहा वह दुष्ट तपस्विनी धन के लोभसे बोली कि हे रानी! यह कौन बड़ी बातहै मैं तुम्हारे कार्य को सिद्ध करदूंगी मुझे अनेक प्रकारके बहुतसे प्रयोग मालूमहैं इस प्रकार रानीको समझाकर वह अपनी मठी में आकर भयभीत होकर शोचनेलगी कि अत्यन्त भोग तृष्णा किसे क्लेश नहीं देती हैं देखो मैंने रानी के आगे सहसा प्रतिज्ञा तो करली है परन्तु मुझे इस विषयमें अन्य स्थानोंके समान छलभी न करना चाहिये क्योंकि कपट खुलने पर राजा लोग सर्व नाश करदेते हैं इस विषयमें एक उपायहै कि वह जो मेरा मित्र नाई इस विषयमें प्रवीण है वह चाहै तो उद्योग करसक्ताहै यह शोचकर उसने उस नाईके पास जाके अपना सम्पूर्ण मनोरथ वर्णन किया तब उस धूर्त नाई

ने शोचा कि भाग्यवश से यह लाभका योग उपस्थित हुआ है इससे राजाकी नवीन स्त्री कदलीगर्भाका नाश तो न करना चाहिये क्योंकि उसका पिता दिव्यदृष्टि है वह सम्पूर्ण वृत्तान्त जान जायगा परन्तु राजाका उससे वियोग कराके इस रानीसे खूब धन लेना चाहिये और कुछ काल के उपरान्त फिर राजाके साथ उस नवीन रानी का संयोग कराके राजाके सन्मुख ऐसी बात करनी चाहिये जिससे राजा और रानी कदलीगर्भा दोनों प्रसन्न होयँ ऐसा करने से बहुत पाप तो होगा नहीं परन्तु जीविका अच्छी होजायगी यह शोचकर यह नाई उससे बोला कि हे अम्ब! मैं यह सब काम करसक्ताहूं परन्तु योगबलसे रानी कदलीगर्भाका मारना योग्य नहीं है क्योंकि जो राजा जानजायगा तो हम सबका नाश करदेगा दूसरे स्त्रीकी हत्याहोगी औरतीसरे उसकेपिता मुनिशापदेंगे इससे मैं अपनी बुद्धिके बलसे उसके साथ राजाका वियोग करवा दूंगा तो पटरानीको सुख होगा और मुझे धन मिलेगा मेरे लिये यह कोई बड़ीबात नहीं है मैं बुद्धिसे कौन कार्य सिद्ध नहीं करसक्ता हूं सुनो मैं अपनी चतुरता सुनाताहूं इसदृढ़वर्मा राजाका पिता बड़ा दुराचारी था और मैं उसका सेवकथा एकसमय राजाभ्रमण करता हुआ मेरे घरकी ओर आया और मेरी स्वरूपवती स्त्री का मुख देखकर उसका चित्त चलायमानहुआ तब उसने अपने सेवकों से पूंछा कि यह कौनहै सेवकों ने कहा कि यह आपके नापितकी स्त्री है सेवकों के वचन सुनकर यह जानकर कि नापित मेरा क्या करेगा राजा मेरे घरमें जाकर मेरी स्त्री से यथेष्ट भोग करके चलागया मैं उस दिन भाग्यवशसे कहीं बाहरगया था दूसरे दिन घर में आकर मैंने अपनी स्त्री के कुछ नये ही ढंग देखे जब मैंने

पूछा तब उसने अभिमानपूर्व्वक सब वृत्तान्त कहदिया तब से मुझ अशक्त की स्त्री के साथ राजा नित्य आकर रमण करने लगा ठीक है दुराचार से उन्मत्त राजा को गम्यागम्य का विचार नहीं रहता वायुसे प्रचंड अग्निको जैसे तृण वैसेही वन यह दशा देख कर राजा के निवारण करने का कोई उपाय न जानकर मैंने अपना भोजन घटाकर शरीर को दुर्वल करदिया और दुर्वलता से बहुत श्वासलेताहुआ राजाके यहां हजामत बनाने को गया राजा ने मुझको दुर्वल देखकर गुप्त अभिप्राय से पूछा कि अरे तू ऐसा क्यों होगयाहै तब मैंने कईवार टालकर राजाके बहुत पूँछने पर एकान्तमें अभय मांगकर कहा कि हेमहाराज! मेरी स्त्री डाकिनी है वह नित्य मेरी आंतें मेरी गुदासे निकालकर चूसती है और चूस के उसी में फिर रखदेती है इसी से मैं दुर्वल होगयाहूं और मुझे पुष्ट तथा धातुवर्द्धक भोजन भी नहीं मिलते हैं जिनसे कुछ बल बना रहे मेरे यह वचन सुनकर राजा ने सन्देहपूर्वक विचार किया कि क्या सत्यही वह डाकिनी है इसी से मेरा चित्त उसके आधीन होगया जब मैं सोजाताहूं तब मेरी भी आंतें वह चूसती होगी परंतु मैं बलकारी भोजन करताहूं इससे दुर्वल नहीं हुआहूं तो आज मैं युक्तिपूर्व्वक रात्रि में उसकी परीक्षा करूंगा इस प्रकार शोचकर राजा ने मुझे बलकारी भोजन दिलवादिया तदनन्तर मैं वहां से अपने घर आकर अपनी स्त्री के पास रोनेलगा जब उसने पूछा कि क्यों रोतेहो तब मैंने कहा कि हे प्रिये! किसी से कहना नहीं मैं तुमसे कहताहूं इसराजा की गुदा में वज्रके समान पुष्टदांत निकले हैं इससे आज बालबनाते में मेरा बड़ा उत्तम छुरा टूटगया इसी प्रकार से जो मेरा रोज छुरा टूटेगा तो मैं नित्य कहां से

खाऊंगा इसकारण रोताहूं हाय मेरी जीविका ही नष्ट हुईजाती है मेरे यह वचन सुनकर मेरी स्त्री ने अपने चित्त में कहा कि आज जब राजा रात्रिको आकर सोजावेंगे तब उनकी गुदाके दांत देखूंगी देखो सम्पूर्ण संसार भरमें कहीं भी नहीं देखीगई मेरी इस असम्भव बातको सच जानगई ठीक है चतुर स्त्रियां भी धूर्तों के कहनेमें फँसजाती हैं इसके उपरान्त रात्रि के समय राजा मेरे यहां आकर और मेरी स्त्री के साथ भोगकरके मेरे कहने की परीक्षाक-रने के लिये झूंठमूठ सोरहा और मेरी स्त्री ने उसे सोयाहुआ जान-कर गुदाके दांत देखनेके लिये उसकी गुदाकीओर धीरे २ हाथबढ़ाया गुदा में हाथ के लगतेही राजा एकाएकी उठबैठा और डाकिनी २ यह कहकर भयभीत होकर अपने घरको चलागया और फिर उस दिनसे डरकेमारे मेरे घर फिर नहीं आया तब मैं अपनी स्त्रीकेसाथ आनन्दपूर्व्वक स्वाधीन होकर रहनेलगा इसप्रकार मैंने अपनी बुद्धि के बलसे राजासे अपनी स्त्री छुटाई थी उस तपस्विनीसे यह कहकर फिर नाई बोला कि मैं तुम्हारा यह कार्य्य अपनी बुद्धिके बल से सिद्धकरदूंगा और उसका उपाय भी मैं तुमको बतायेदेताहूं कि किसी अन्तःपुर में रहनेवाले बृद्ध पुरुषको अपनी ओर मिलाकर गांठलो वह राजासे एकान्तमें कहदे कि तुम्हारी रानी कदलीगर्भा डाकिनी है और उसरानी का कोई सेवक रात्रिके समय किसीजीव के कटेहुए हाथ पैर आदि मंदिरके ऐसे स्थान में रखदे जिसे राजा देखसके इसप्रकार यत्न करने से कटेहुए अंगों को देखकर राजा उस बृद्धके कहने को सत्य मानकर भयभीत होकर कदलीगर्भाको छोड़देगा इस उपाय से सौतके अलग होजाने से पटरानी सुख पूर्वक रहैगी और तेरा बड़ा सत्कार करेगी तब मुझे भी कुछ-

मिलजायगा नाई के यह वचन सुनकर उसकपटिनी तपस्विनी ने जाकर पटरानी से सब उपाय कहदिया तब उसने उसकी बताई हुई युक्तिकी इससे राजा ने कदलीगर्भा में वह महा अवगुण देखकर उसे त्याग करदिया तब पटरानी ने प्रसन्नहोकर बहुत सा धन उस तपस्विनी को दिया और उसने उसमें से नाई को भी बहुतसा धन देकर प्रसन्नकिया इसके उपरान्त राजासे त्याग कीहुई कदलीगर्भा मिथ्या दोषों से सन्तप्त होकर राजमन्दिर से निकलकर पूर्व में बोईहुई सरसों के वृक्षोंकी पहिचान से जिसमार्ग से आई थी उसी मार्ग के द्वारा अपने पिता मंकणक ऋषिके पास चलीगई वहां मंकणक ने उसे एकाएकी आईहुई देख के सन्देह से क्षणभर ध्यान किया और ध्यानही से सम्पूर्ण वृत्तान्त, को जानकर स्नेह से उसका बड़ा आदर किया और समझाकर सावधान किया फिर उसे अपने साथ में लेकर मुनिने आपही राजाके यहां आकर राजासे सब सपत्नियों का कियाहुआ दोष कहदिया उस समय उस नाई ने भी राजाको वह सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाकर कहा कि हे राजा! मैंने इसभयसे कि ऐसा न होय कि पटरानी इसकदलीगर्भाको मारण करवाके मरवाडालें इस लिये युक्तिपूर्वक आपसे वियोग करवादिया उसके यह वचनसुनकर और मुनिके वचनोंका विश्वास करके राजाने कदलीगर्भा को स्वीकार करलिया फिर मुनिको विदाकरके उसनाईको अपना शुभचिन्तक जानकर बहुत सा पारितोषिक दिया और अपनी पटरानी से विमुखहोकर उसी कदलीगर्भा के साथ सुखपूर्वक रहनेलगा हे कलिंगरुचा! इस प्रकार के बहुतसे मिथ्या दोष सौतें शुद्धस्त्रियों में लायदेती हैं ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेपंचचत्वारिंशःप्रदीपः ४५॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे षट्चत्वारिंशःप्रदीपः ४६ ॥

अनुकूलोविधिर्मृत्युस्थानेऽपिप्रापयेद्धनम् ।
पूरयन्नपिवल्मीकंलब्धवान्द्रविणंद्विजः ४६ ॥

(अर्थ) सीधा विधाता मृत्यु के भी भय स्थानमें द्रव्य प्राप्ति करादेवे—जैसे मूर्ख संतोपी ब्राह्मण भाइयों से सर्प की वाबी को खोदकर भरदेने में नियुक्त किया तो तिसको तहां द्रव्यमिला४६॥

किसी खेतमें एक खेती करनेवाला खेत जोतरहाथा और कुछ गारहाथा उस खेती करनेवाले से उसी मार्गमें आतेहुए किसी संन्यासीने कहींका मार्ग पूछा वह उसके वचनको न सुनकर गाताही रहा तववह संन्यासी क्रोधकरके उससे कटुबचन कहनेलगा कटुवचनों को सुनकर वह अपना गीत छोड़कर बोला कि तू संन्यासी होकर भी धर्म के अंशको नहीं जानता मैंने तो मूर्ख होकर भी धर्म का सारांश जानलिया यह सुनकर संन्यासी ने कहा कि तुम ने क्या जानलियाहै तव वह बोला कि यहां छाया में वैठजाओ मैं तुमसे कहताहूं सुनो इस प्रान्तमें ब्रह्मदत्त सोमदत्त और विष्णुदत्त यह तीन सगेभाई ब्राह्मण रहते हैं उनमें से दोका तो बिवाह होगया है और छोटे का नहीं हुआ है वह विष्णुदत्त नाम छोटा भाई अपने बड़े भाइयों की आज्ञाको पालन करताहुआ मेरे साथ सेवकोंके समान क्रोधरहित होकर रहता था उनके घरका खितियरहूं ब्रह्मदत्त और सोमदत्त दोनों बड़े भाई साधू सन्मार्गी सीधे तथा निरालसी अपने छोटेभाई विष्णुदत्त को मूर्ख समझते थे एक समय विष्णुदत्त की भाभी लोगों ने कामातुर होके उससे रति करने के लिये कहा परन्तु उसने उनको माता के समान

जानकर निषेध करदिया तब उनदोनोंने अपने२ पतिसे कहा कि यह तुम्हारा छोटाभाई एकान्त में हमारा धर्म भ्रष्टकरना चाहता है स्त्रियों के कहने से वह उसपर कुपित होगये ठीकहै दुष्ट स्त्रियों के वचनों से मोहित पुरुषों को अच्छे बुरे और सत्यासत्य का ज्ञान नहीं होता तब उनदोनों भाइयों ने विष्णुदत्तसे कहा कि तुमखेत में जाकर वहां जो सर्पकी वामी है उसे बराबर कर आओ उनकी आज्ञा पाकर वह कुदाली लेके यहां आकर वामीको खोदने लगा उसे खोदते देखकर मैंने निषेधकिया कि अरे इसमें काला सर्प है इसको मत खोदो मेरे वचनों को सुनकर भी जो होना होगा सो होगा ऐसा कहकर वह अपने पापी बड़े भाई की आज्ञाको उल्लंघन न करके उसे खोदताही रहा खोदते २ एक सुवर्ण से भराहुआ कलश उसमें उसको मिला और सर्प नहीं दिखाईदिया ठीक है धर्म सर्वत्र सज्जन लोगों की सदैव सहायता करताहै तब उसने मेरे निषेध करने पर भी वह धन अपने सबभाइयों को लाकर दे दिया उन दोनों ने उसी धनमें से कुछ धन घातकों को देकर सब धनलेनेकी इच्छासे उसके हाथ पैर कटवाडाले इतनेपर भी उसने अपने भाइयों पर क्रोध नहीं किया इसी धर्म के प्रभावसे उसकेहाथ पैर फिर यथावस्थित होगये इसी वृत्तान्तको देखकर मैंने सम्पूर्ण क्रोध उसी दिनसे त्याग करदिया और तुमने तपस्वी होकरभी अब तक क्रोध नहीं छोड़ा इसी समय देखलो कि मैंने क्रोधके जीतनें से स्वर्ग्ग को जीत लिया यह कहकर वह खेती करनेवाला शरीर को त्यागकर स्वर्गको चलागया॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे षट्चत्वारिंशःप्रदीपः ४६॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागे सप्तचत्वारिंशःप्रदीपः ४७ ॥

शत्रुमध्येनिवासोहि दन्तेष्विवरसज्ञया ।
जायतेबुद्धियुक्तानां निकृष्टप्राणिनामपि ४७ ॥

(अर्थ) शत्रुओं के वीचमें रहना ऐसा जैसे दांतों में जिह्वा है सो वह बुद्धिवाले तुच्छप्राणियों का अर्थात् मूषक आदिकों को भी भया ४७ ॥

विदिशा नाम नगरीके बाहर एक बड़ा वरगदका वृक्ष था उस में नौला उल्लू बिलाव और मूसा यह चारों प्राणी अलग २ स्थानों में रहते थे जड़में मूसा और नौला अलग २ बिलमें रहते थे बिलाव बृक्षके मध्यमें किसी बड़े भारी खोह में रहताथा और उल्लू वृक्षकी चोटी जहां कोई पहुँच नहीं सकता था उसपर रहता था इनमें से बिलाव नौला तथा उल्लू इन तीनों का मूसा भोजन था और बिलाव के मूसा नौला तथा उल्लू यह तीनों भोजन थे बिल्ली के भयसे मूसा तथा नौला अपने आहार तथा भोजनके लिये रात्रिमें बाहर निकलते थे और उल्लू स्वभावही से रात्रिको अपने भोजन को निकलता था और बिलाव रात्रि दिन निर्भय होकर जब चाहताथा तब निकलताथा उस बृक्षके निकट एक जौका खेतथा उस में जब बिल्ली उल्लू तथा नौला अपने आहारके लिये जातेथे तब वह यहभी चाहा करते थे कि मूसा मिलजाय तो हम उसेभी मार कर खाजायँ एक समय कोई बहेलिया वहां आया उसने बिल्ली के पंजे खेतकी तरफ़ गयेहुए देखकर उसके मारने के लिये खेत के चारों ओर जाल बिछा दिया जब रात्रिके समय बिलाव मूसे के मारने की इच्छा से खेतमें गया तो वहां जाल में फँसगया फिर

अन्नके निमित्त वहां गया हुआ मूसा बिलाव को जाल में फँसा देखकर प्रसन्न होकर उछलने कूदनेलगा और बिल्लीसे दूरके मार्ग से खेतके भीतर चलागया उस समय उल्लू तथा नौला यह दोनों भी वहां गये और बिलाव को बँधा देखकर मूसे को पकड़ने की इच्छा करने लगे मूसे ने दूरही से उन दोनों को देखकर चित्त में शोचा कि जो नौला तथा उल्लूको भय देनेवाले बिलावकी शरण में जाऊं तो जालमें बँधा हुआभी अपने पंजे के एकही प्रहार से मुझे मार डालेगा और जो उसकेपास न जाऊं तो यह दोनों मुझे मार डालेंगे तो अब इन शत्रुओं के बीच में पड़कर मैं क्या करूं और कहां जाऊं इस समय इस बिलावहीकी शरण में मुझे जाना चाहिये क्योंकि यह इससमय आपत्ति में पड़ाहै अपने बचाने के लिये मुझे जालके काटनेका उपयोगी समझकर अवश्य बचावे-गा यह शोचकर मूसा धीरे २ बिलारके पास जाकर बोला कि तुम्हें बन्धनमें पड़े देखकर मुझे बड़ा खेद होताहै इससे मैं तुम्हारे जाल को काटे देताहूं सीधे जीवों को साथ में रहने से शत्रुओं पर भी स्नेह होजाताहै परन्तु तुम्हारे ऊपर मुझे विश्वास नहीं है क्योंकि मैं तुम्हारे चित्तकी बात नहीं जानता यह सुनकर बिलार बोला कि तुम मेरे ऊपर विश्वास करो आजसे तुम प्राणोंकी रक्षा करने के कारण मेरे मित्र होगये उसके इसप्रकार कहनेपर मूसा उसके पास जाकर बैठगया यह देखकर नौला और उल्लू निराश होके वहां से चलेगये तदनन्तर बिलारने मूसेसे कहा कि हे मित्र! रात्रि बहुत थोड़ी रहगई है इससे बहुत शीघ्र मेरे जाल को काटदो तब मूसा धीरे २ पाशों को काटता हुआ बहेलिये के आनेकी बाट देखता हुआ बहुत काल तक झूंठमूठ दांत कटकटाया किया जब रात्रि

व्यतीत होगई और वहेलिया आगया तब विलार की प्रार्थना से मूसे ने सब जालकी फांसी काटदीं पाशोंके कट जाने पर बिलार तो बहेलिये के भयसे भागगया और मूसा मृत्युके मुखसे बचकर भागकर अपने बिलमें घुसगया और फिर जब उसे बिलारने बुलाया तो उसने उसपर विश्वास न करके कहा कि कालके संयोग से शत्रुभी मित्र होजाता है परंतु वह सदैव मित्र नहीं बनारहता इसप्रकार मूसेने भी बहुत से शत्रुओंसे अपनी रक्षा की तो मनुष्यों के लिये क्या कहना चाहिये ॥

इति श्रीदृष्टांतप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्तचत्वारिंशः प्रदीपः ४७ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेअष्टचत्वारिंशः प्रदीपः ४८ ॥

यथार्थनिर्णयोभूयाद्बुद्धियुक्तकृतोयथा ।
औषध्युत्पाटनाद्द्रव्यंगृहीतंनिश्चितंखलु४८॥

(अर्थ)-बुद्धिमान् स्वामीका किया यथार्थ निर्णय होता है-जैसे बुद्धिमान् राजाने औषधि उखाड़नेसे ब्राह्मणका द्रव्य निश्चय करके दिवादिया ४८ ॥

श्रावस्ती नाम नगरी में प्रसेनजित नाम एक राजाथा उसके पुर में कोई अपूर्व ब्राह्मण आया वह शूद्रका अन्न नहीं खाताथा इससे किसी वैश्यने उसे किसी ब्राह्मणके घर में टिकादिया और शुष्क अन्न तथा दक्षिणा उसे रोज देनेलगा कुछ दिन में अन्य वैश्यभी उसे पहिचानकर शुष्क अन्न और दक्षिणा देनेलगे इस प्रकार अधिक प्राप्तहोनेसे उसने धीरे २ हजार अशर्फ़ी इकट्ठी कीं और बन में जाकर वह सब असर्फ़ी कहीं पृथ्वी में गाड़दीं वह अकेला प्रतिदिन बन में जाकर उस स्थानको देख आताथा एक दिन उसने उसस्थान को खुदाहुआ देखा और असर्फ़ी वहां न

देखीं उस गढ़को शून्यदेखकर केवल उसका चित्तही शून्य नहीं होगया किन्तु उसको सब दिशाभी शून्यही दिखाई देनेलगीं फिर रोताहुआ उस ब्राह्मण के यहां आया जिसके यहां टिकाथा उसेरोते देखकर गृहके स्वामी ने पूछा कि तुम क्यों रोतेहो तब उस ने अपना सब वृत्तान्त कहदिया और तीर्थपर जाके अनशन व्रत करके अपने प्राण देने को उद्यतहुआ इस वृत्तान्तको सुनकर वह अन्नदाता वनियांभी अन्य बनियों को साथ लेकर आया और उससे कहनेलगा कि हेब्राह्मण! तुम धनके निमित्त क्यों प्राण देना चाहतेहो धन तो अकाल मेघके समान आया जाया करता है अन्नदाता वैश्यके यह वचन सुनकरभी उसने शरीर त्यागकरने का हठ नहीं छोड़ा ठीक है— लोभी को प्राणों से भी अधिक धन प्यारा होताहै तब मरनेके लिये तीर्थपर जातेहुए उस ब्राह्मणके वृत्तान्तको जानकर राजा प्रसेनजित ने आपही वहां आकर उससे पूछा कि हे ब्राह्मण! जहां तुमने वहधन गाड़ाथा उस पृथ्वीकी कुछ पहिचान भी मालूम है उसने कहा कि हां महाराज वनमें एक छोटासा वृक्ष है उसकी जड़में मैंने अपना धन गाड़ाथा यह सुनकर राजाने कहा तुम प्राण मतदो तुम्हारा धन हम ढुंढ़वादेंगे या अपने खज़ाने से देंगे इसप्रकार कहकर और ब्राह्मण को मरनेसे निवारण करके राजा अपने मंदिर को चलागया वहां प्रतीहारको बुलाकर यह आज्ञादी कि मेरे शिर में पीड़ा है इससे ढँढोरा पीटकर नगर भरके वैद्योंको बुलाओ इसप्रकार सब वैद्योंको बुलाकर एक २ वैद्य से राजाने पूछा कि तुम्हारे पास कितने कौन रोगी हैं और तुमने किसको कौनसी दवादी है सम्पूर्ण वैद्यों ने अपने २ रोगी तथा ओषधियां बताईं उनमें से एकने कहा कि मातृदत्त रोगी बनिये को

मैंने दो दिनसे नागबला बताई है उसे कौनलायाथा उसने कहा कि एक मेरा सेवक लायाथा तब राजा ने उसके सेवकको बुलाके कहा कि तुमने नागवलाकेलिये वृक्षकीजड़ खोदने में जो अशर्फी पाई हैं वह देदो वह ब्राह्मणकी हैं राजाके इसप्रकार कहनेसे वह डरकर अशर्फी लाके उसी समय दे गया और राजाने उसी समय उस ब्राह्मणको बुलाकर उसके बाहर चलनेवाले प्राणों के समान वह अशर्फी देदीं इसप्रकार राजाने उस वृक्षकी जड़में उन ओषधियों को जानके बुद्धिके बलसे ब्राह्मणकी अशर्फी पाईं इससे सदैव पुरुपार्थ की अपेक्षा बुद्धिप्रधान है ऐसे कार्य्यों में पराक्रम क्या करसक्ताहै इससे हे योगेश्वर ! तुमभी बुद्धिसे ऐसाकरो जिससे कि कलिंग सेनाका कोई दोप मालूम होय क्योंकि किसी दोपके मिल जानेसे न उसके लिये कोई बुराई होगी न हमारे लिये होगी राजा उसके साथ बिवाह न करेगा ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे अष्टचत्वारिंशःप्रदीपः ४८ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे एकोनपंचाशत्तमःप्रदीपः ४९ ॥

शरीरं मुञ्चतिस्वीयं व्रतभंगे पतिव्रता ।
यथा राज्ञाप्रार्थिता सा मृताराजाप्यथोमृतः ४९ ॥

(अर्थ)—पतिव्रता स्त्री निज नियम टलने में स्वीय शरीर भी त्याग देती है जैसे राजाने पतिव्रता से रतिकरने को प्रार्थना की तो व्रतभंग भयसे उसका हृदय फटगया और राजा भी फिर मरगया ४९ ॥

पूर्व्व समय में इन्द्रदत्त नाम चेदिदेश का राजा था उसने शरीर को क्षणभंगुर जानकर यशरूपी शरीर की प्राप्ति के लिये

पापशोधन नाम तीर्थपर एक बड़ा सुन्दर देवमन्दिर बनवाया राजा बड़ी भक्ति से दर्शन करने को वहां नित्य आता था और सम्पूर्ण वहां के मनुष्य तीर्थस्नान करने के लिये उस स्थान पर आते थे एक समय तीर्थ पर स्नानके निमित्त आई हुई किसी वैश्यकी स्त्री जिसका पति परदेश में था राजाने देखी निर्मल कान्ति रूपी सुधा से सिंचीहुई विचित्र रूप तथा आभूषण वाली वह स्त्री क्या थी मानों कामदेव की मनोहर जंगम राजधानी थी तुम्हारे बलसे हम संसारको जीतेंगे इसलिये मानों कामदेवके तरकसोंकी शोभा उसके पैरों में आलगी थी ऐसी सुन्दर उस स्त्री को देखकर राजा का चित्त उसपर ऐसा आसक्त हुआ कि रात्रि के समय वह उसको ढूंढ़कर उसके घर पहुँचा और उससे संभोग के लिये प्रार्थना करने लगा तब उसने राजा से कहा कि आप तो धर्म की रक्षा करनेवाले हो आपको परस्त्रियों पर अधर्म करना उचित नहीं है जो आपहठ से मेरा स्पर्श करोगे तो बड़ा अधर्म होगा और मैं इसदोषको न सहकर शीघ्रही मरजाऊंगी उसके यह कहने पर भी राजा के हठ करने की इच्छा करने पर अपने आचरण के भ्रष्टहोने के भयसे उसपतिव्रता स्त्री का हृदय फटगया यह देखकर राजा लज्जित होके अपने घरको चलागया और इसी पश्चात्ताप से कुछ दिन में आप भी मरगया ॥

(तथा)

कुबेरका सेवक विरूपाक्ष नाम एकयक्ष था वह लाखों निधानों के रक्षकों का प्रधान था उसने मथुरा नगरी के बाहर जो एक निधान था उसकी रक्षाके लिये एक ऐसे यक्षको नियत किया था जो कि रात्रि दिन उन निधान परसे स्तम्भके समान नहीं हटता

था वहां मथुराका निवासी एक पाशुपत ब्राह्मण जो कि पृथ्वी में निधिहोने की परीक्षा करसक्ता था मनुष्य की चरबी के दीपकको हाथमें लियेहुए स्थानोंकी परीक्षा करताहुआ आया वहां आतेही वह दीपक उसके हाथ से गिरपड़ा उसलक्षणसे उसने वहां निधि जानजानकर अपने मित्रों समेत खोदनेका प्रारम्भकिया उससमय वहां का रक्षक जो यक्ष था उसने जाकर विरूपाक्ष से कहदिया यह सुनकर विरूपाक्ष ने क्रोधयुक्त होकर कहा कि जाकर शीघ्रही उन खोदनेवालों को मारडालो यह आज्ञा पाकर उस यक्षने वहां जाकर अपनी युक्ति से निधि के खोदनेवाले वह सम्पूर्ण ब्राह्मण मारडाले जब यह बृत्तान्त कुबेरने सुना तब कोप करके विरूपाक्ष से कहा कि हे पापी ! तूने सहसा महाहत्या क्यों करवाई दुर्दशाग्रस्त निर्धनलोग लोभ से क्या नहीं करते उन्हें बिघ्नों से डराकर भगादेनाचाहिये मारना न चाहिये यह कहकर उसे शापदिया कि तू इस पाप के प्रभावसे मृत्युलोक में उत्पन्न होजा शापके प्रभाव से वह यक्ष किसी ज़मींदार ब्राह्मण के यहा उत्पन्नहुआ तब उसयक्ष की स्त्री ने कुबेर से कहा कि हे धनाध्यक्ष ! आपने जहां मेरे पति को भेजाहै वहांही कृपाकरके मुझेभी भेजदीजिये मैं उसके वियोग में नहीं जीसक्ती उस पतिव्रता स्त्री के यह बचन सुनकर कुबेरने कहा कि जिस ब्राह्मण के यहां वह उत्पन्नहुआ है उसकी दासी के यहां तू अयोनिज कन्याहोगी वहां तेरा पति तुझे मिलजायगा और तेरेही प्रभावसे वह अपने शापसे उद्धारहोकर तुझसमेत फिर मेरे पासआजायगा कुबेर के इस बचन से वह पतिव्रता मानुषी कन्या होकर उस ब्राह्मण की दासी के द्वारपर आपड़ी दासी ने अकस्मात् अपने द्वारपर उसकन्याको देखकर लेके अपने स्वामी उस

ब्राह्मणको दिखाया उसे देखकर उस ब्राह्मण ने कहा कि यह नि-स्सन्देह कोई अयोनिज दिव्य कन्याहै यही मेरा चित्त कहता है इससे तू इसको मेरे ही घर में रख यही मेरे पुत्र की स्त्री होगी अपने स्वामीकी यह आज्ञापाकर दासी ने वह कन्या उसी के घरमें रक्खी क्रमसे वह कन्या और ब्राह्मण का पुत्र दोनों बढ़े और उन दोनों में परस्पर बड़ा स्नेह होगया तब उस ब्राह्मण ने दोनों का विवाह करदिया यद्यपि उनदोनों को अपने पूर्वजन्म का स्मरण नहीं था तथापि उनदोनोंको समागम होने से ऐसा आनन्दहुआ मानों बहुत कालके विरहके उपरान्त मिले हैं कुछकाल में वह यक्ष अपनीस्त्रीके तपसे पापरहितहोके मृत्युके वशहोगया और वहउसके साथ सतीहोगई इसप्रकार वह दोनों अपनेलोकको फिर चलेगये॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकोनपञ्चाशत्तमःप्रदीपः ॥ ४९ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागे पंचाशत्तमःप्रदीपः ५० ॥

प्रायोविपत्तिकालेहिभाग्यमेवसहायकम् ।
निधिर्लब्धोद्वितीयोपिसत्त्वशीलस्यसंकटे ५० ॥

(अर्थ) विपत्ति समयमें अवश्य भाग्यही सहायक होता है। जैसे—सत्त्वशील को राजा से संकट होने पर दूसरा खज़ाना और मिल गया है ५० ॥

चित्रकूट नाम पर्वत पर सदैव ब्राह्मणों का पूजन करनेवाला ब्राह्मण वरनाम राजा था उस राजा के यहां सत्त्वशील नाम एक सेवक केवल युद्धकेही लिये नौकरथा उसको राजाके यहां से सौ अशर्फ़ी मासिक मिलती थीं परन्तु उतने में उस महादानशील सत्त्वशील का निर्व्वाह नहीं होताथा क्योंकि वह अपुत्र होने के

कारण केवल दानमें अपना चित्त बहलाया करताथा वह यह शोचा करताथा कि परमेश्वर ने मुझे चित्तके प्रसन्न करने के लिये पुत्र तो नहीं दिया है और दानका व्यसन देदिया है तिसपरभी धन नहीं दिया संसारमें सूखे हुए जीर्ण बृक्ष तथा पाषाणका भी जन्म अच्छाहै परन्तु दानशीलका दरिद्री होना नहीं अच्छाहै इस प्रकार शोचते २ उसे एक समय उपवन में बहुतसी निधि मिलगई बहुतसे सुवर्ण तथा रत्नमय उस निधिको वह निज सेवकोंके द्वारा अपने घर उठवा लाया और उस धनमें ब्राह्मणों को तथा अपने मित्रों को देता हुआ और यथेच्छ भोग करताहुआ सुखपूर्वक रहने लगा उसके गोत्री भाइयों ने उसे सुखपूर्व्वक रहता जानके यह अनुमानकरके कि इसको निधि मिली है राजासे जाकर कह दिया राजाने उसे प्रतीहारके द्वारा बुलवाभेजा तब वह सत्त्वशील राजाकी आज्ञासे वहां गया और पहले क्षण भर भीतर जाने की आज्ञा न पाकर राजाके आँगन में एकान्त में बैठगया वहां शोक के कारण पृथ्वी खोदते खोदते उसे ताम्रके कलशेमें और बहुतसी निधि मिली मानो ईश्वरने उसपर प्रसन्न होके राजाको प्रसन्न करनेके लिये उपाय निकालदिया उसने उस निधिको देखकर उसी प्रकार मिट्टीसे तोपदिया और प्रतीहारके द्वारा आज्ञा पाकर राजा के निकट जाके उसे प्रणामकिया तब राजाने उससे कहा कि मुझे मालूम हुआहै कि तुमने निधि पाई है वह मुझे देदो उसने कहा कि हे महाराज! जो निधि पहले मिली है वह देऊं अथवा जो आज मिली है वह निधि देऊं राजाने कहा कि आजकी मिलीहुई निधि मुझको देदे तब उसने राजाको लेजाकर वह निधि जो आँगनमें मिली थी राजा को दिखलादी उस निधिको पाके राजा ने प्रसन्न

होकर कहा कि हे सत्त्वशील तुम पहले की पाई हुई निधिको य-थेच्छ भोगकरो राजाके यह वचन सुनकर सत्त्वशील अपने घरमें आकर दान तथा भोगसे अपने नामको यथार्थ करता हुआ और अपुत्रत्वके दुःखको किसीप्रकार दूर करताहुआ रहा ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेपञ्चाशत्तमःप्रदीपः ॥ ५० ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे एकपञ्चाशत्तमःप्रदीपः ५१ ॥

सद्योह्यधिकसत्त्वस्य पुंसःसिद्धिर्भवेदिह ॥
मन्दसत्त्वसमेतस्य तथासिद्धिर्विलम्बतः ५१ ॥

(अर्थ) अधिक सत्त्ववाले पराक्रमी पुरुषको शीघ्र सिद्धिप्राप्त होती है और स्वल्प सत्त्ववाले तथा मन्द पराक्रमी को सिद्धि भी विलम्ब करकेही होती है ५१ ॥

सम्पूर्ण पृथ्वी का आभूषणरूप अनेक प्रकार की मणियोंसे युक्त पाटलपुत्र नाम नगरहै उसमें विक्रम नाम सत्त्ववान् राजाथा जो दान में अर्थियोंसे और युद्धमें शत्रुओंसे कभी नहीं पराङ्मुख हुआ वह राजा एक समय बन में शिकार खेलने को गया वहां एक ब्राह्मण बेलोंका हवन कररहाथा उसे देखकर राजाने पूछने की इच्छाभीकी परन्तु शिकारमें तत्पर होने के कारण सेना समेत वहां से आगे चलागया बहुत कालतक उछलतेहुए और गिरतेहुए सिंहादि जीवोंको अपने हाथसे मारकर शिकार खेलके राजा लौटा लौटकर भी राजाने ब्राह्मणको उसी प्रकार हवन करते देखा और उसके पास जाके प्रणाम पूर्वक पूछा कि आप का क्या नाम है और आप यह किस निमित्त कर रहे हैं राजाके पूछनेपर ब्राह्मणने आशीर्वाद देकर कहा कि मैं नागशर्मा नाम ब्राह्मणहूं और इस होमका यह फल है कि बेलों का हवन करते करते जब अग्नि

भगवान् प्रसन्न होते हैं तब कुंडसे सुवर्ण के बेल निकलने लगतेहैं और अग्नि भगवान् साक्षात् प्रकट होकर वरदान देते हैं मुझे बहुत काल बेलों का हवन करतेहुए व्यतीत होचुकाहै परंतु अभी तक मुझ मंदभागीपर अग्निदेव प्रसन्न नहीं हुये हैं उस ब्राह्मणके यह बचन सुनकर बड़ा सत्त्ववान्नाम राजा विक्रमतुंग बोला कि हे ब्राह्मण ! मुझको एक बेलदो मैं अभी हवन करके अग्निको प्रसन्न करताहूं तब ब्राह्मण ने कहा कि मैं व्रत में बैठाहुआ महापवित्रहूं जब मेरे हवनसे नहीं प्रसन्नहुए तो तुमतो महाभ्रष्ट होरहेहो तुम्हारे हवनसे कैसे प्रसन्नहोंगे ब्राह्मणके वचन सुनकर राजाने फिर कहाकि ऐसा नहीं है तुम मुझको बेल देदो तो अभी आश्चर्य्य देखलो तब ब्राह्मणने आश्चर्य्य देखने के लिये उसको बेल देदिया और राजाने अपने दृढ़ सत्त्वयुक्त चित्तमें यह संकल्पकरके कि इस बेल के हवन से अग्निदेव नहीं प्रसन्न होंगे तो मैं अपना शिर हवन करदूंगा बेलका हवन करदिया हवन करतेही कुण्डमें से साक्षात् अग्निदेव राजाके सत्त्वरूपी वृक्षके फलके समान सुवर्णके बेलको हाथमें लिये हुए प्रकट हुए और बोले कि हे राजा ! तुम्हारे सत्त्वसे मैं प्रसन्नहूं वरदान मांगो अग्नि के यह बचन सुनकर राजा ने प्रणामकरके कहा कि मुझे और कोई वर न चाहिये आप इस ब्राह्मण के मनोरथ को पूर्ण कीजिये यह सुनकर अग्निदेव ने प्रसन्न होकर कहा कि हे राजा ! यह ब्राह्मण बड़ा धनवान् होगा और हमारी कृपासे तुम्हारा भी खजाना कभी क्षीण न होगा इस प्रकार वरदान देतेहुए अग्निदेवसे उस ब्राह्मण ने कहा कि इस स्वेच्छाचारी राजाके एकहीबार हवन करनेसे तो आप प्रकट होगये परंतु मैंने इतने दिनतक नियमपूर्बक हवन किया और आप नहीं प्रकट

हुए इसका क्या कारणहै तब अग्निदेव ने कहा कि जो हम इसे वर न देते तो यह शीघ्रही सत्त्ववान् होने के कारण अपना शिर हवन कर देता हे ब्राह्मण! तीव्र सत्त्ववाले लोगोंको शीघ्रही सिद्धि होती है और तुम सरीखे मन्द सत्त्ववालों को देर में सिद्धि होती है—यह कहकर अग्नि के अन्तर्द्धान होजानेपर नागशर्म्मा राजा से पूछकर अपने घरको गया और क्रमसे बड़ा धनवान् होगया और राजा भी बड़े सत्त्वके कारण सम्पूर्ण लोगोंसे अपनी प्रशंसा सुनता हुआ पाटलिपुत्र नगर को चलागया वहां एक समय अकस्मात् शत्रुञ्जय नाम प्रतीहार ने मन्दिर में बैठे हुए राजा से विज्ञापन किया कि हे महाराज! दत्तशर्मा नाम एक विद्यार्थी ब्राह्मण द्वारपर खड़ाहै और आपसे एकान्तमें कुछ विज्ञापन कियाचाहता है राजाने कहा अच्छा आनेदो तब राजाकी आज्ञासे वह ब्राह्मण भीतर आकर प्रणाम करके बैठगया और कहने लगा कि हे राजा! मैं किसी चूर्णकी युक्तिसे तांबेका सुवर्ण बनासक्ताहूं यह युक्ति मेरे गुरुने मुझे बताई है और मेरे आगेही गुरुजी ने इस युक्ति से सुवर्ण बनायाथा उसके यह वचन सुनकर राजा ने तांबा मँगवाकर गलवाया और उस ब्राह्मण ने उसमें चूर्ण डाला उस चूर्णको कोई यक्ष अदृश्य होकर डालतेही हर लेगया यह बात केवल राजाही ने अग्निकी कृपासे देखली चूर्णके न पड़ने से तांबा सुवर्ण नहीं हुआ इस प्रकार उसने तीनबार अपना चूर्ण छोड़ा और तीनोंबार यक्षके हर लेजाने से उसका श्रम व्यर्थ होगया तब राजाने उसको खिन्न देखकर तांबा गलवाके उससे चूर्णलेकर अपने हाथसे डाला और यक्ष राजाके तेजके प्रभावसे उसे हर नहीं सका और लज्जित होकर चलागया तब चूर्णके पड़नेसे तांबा सुवर्ण होगया राजाके

हाथसे सुवर्ण बनता देखकर उस ब्राह्मणने वड़े आश्चर्यपूर्वक पूछा कि यह क्या बातहै उसके यह बचन सुनकर राजाने यक्षका सब बृत्तान्त कहदिया और उस वालक ब्राह्मणसे चूर्ण बनानेकी युक्ति सीखकर उसे बहुतसा धन देकर कृतार्थ कर दिया धन पाकर वह ब्राह्मण तो बिवाह करके सुखपूर्व्वक रहने लगा और राजाभी उस युक्तिसे बनाये हुए सुवर्ण से अपने खजाने को पूर्ण करके इतना दान करने लगा कि कोईभी ब्राह्मण दरिद्री नहीं रहा और सुखपूर्वक अपनी रानियों समेत रहनेलगा इससे इसप्रकार मानो डरा हुआ अथवा प्रसन्न हुआ ईश्वरही वड़े सत्त्ववालों के मनोरथ को पूर्ण करताहै ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकपञ्चाशत्तमः प्रदीपः ५१ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेद्विपञ्चाशत्तमःप्रदीपः ५२ ॥

धातापिनप्रभुःप्रायश्चपलानान्तुरक्षणे ।
मत्तानदीचनारीच नियन्तुंकेनपार्यते ५२ ॥

(अर्थ) प्रायः चपल स्त्रियोंकी रक्षा करनेमें ब्रह्माभी नहीं समर्थ है मत्त नारी और नदी को कौन रोक सक्ताहै जैसे इस विषय पर मैं आप को एक कथा सुनाताहूं ५२ ॥

कि समुद्रके बीचमें रत्नकूट एकबड़ाद्वीपहै उस द्वीप में वड़ा उत्साही परमवैष्णव रत्नाधिपनाम यथार्थ नामवाला राजा था उसने संपूर्ण पृथ्वीकोजीतलिया और पृथ्वीपरके सबराजाओंकीकन्याओं को अपनी स्त्रीबनानेकेलिये विष्णुभगवान्का तपकियातपसेप्रसन्न होकर साक्षात् विष्णुभगवान्ने दर्शनदेकर प्रणामकरते हुए राजासे कहा कि हे राजा ! उठो जो मैं कहताहूं उसे सुनो कोई गन्धर्व मुनि के शापसे कलिंगदेश में श्वेतरश्मिनाम श्वेतहाथी होकर उत्पन्न

हुआहै पूर्व्वजन्म में तपके प्रभाव से और मेरी भक्ति से उस ज्ञानी हाथी को पूर्व्वजन्म का स्मरण भी बना है और वह आकाश मार्ग में भी गमन करसक्ता है उसको मैंने स्वप्नमें तुम्हारे पासआने की आज्ञादेदी है वह आकाश मार्ग से आकर आपका वाहनहोगा उसके ऊपर चढ़कर ऐरावत पर चढ़े इन्द्र के समान तुम आकाश-मार्ग्ग से जिस २ राजाके पास जाओगे वह तुम्हारे दिव्यप्रभाव को देखकर तुमको अपनी कन्यादेदेगा और मैं उन हजार राज-कन्या तुम्हारी स्त्री होजायँगी यह कहकर विष्णुभगवान् के अन्त-र्द्धान होजाने पर राजाने व्रतका पारण किया और दूसरे दिन वह श्वेतरश्मि हाथी उसके पास आकाशमार्ग्ग से आया उसपर चढ़ कर विष्णुभगवान् की आज्ञानुसार वह राजा सम्पूर्ण पृथ्वीजीत कर अस्सीहज़ार राजकन्या लेआया और अपने रत्नकूटपुरमें सुख पूर्वक विहार करनेलगा और उस श्वेतरश्मि हाथी की शान्ति के लिये प्रतिदिन पांचसौ ब्राह्मणोंका भोजन करवानेलगा एकसमय राजा रत्नाधिपति उस हाथीपर चढ़कर बहुत से द्वीपों में घूमकर अपने द्वीपमें आया वहां आकर जब वह हाथी आकाश से उतरने लगा उससमय भाग्यबश से गरुड़वंश के किसी पक्षी ने उसके शिरमें टोंटमारी वह पक्षी तो राजाके तीक्ष्ण अंकुश मारने से भाग गया परंतु हाथी मूर्छितहोकर पृथ्वी में गिरपड़ा और राजाके उतर आने पर मूर्छा जगनेपर भी वह उठाने से भी नहीं उठसका और न खासका पांचदिनतक इसीप्रकार उस हाथी के निराहार पड़ेरहने पर राजाने भी कुछ आहार नहीं किया और पांचवेंदिन बहुतदुःखी होकर यह कहा कि हे लोकपालो! इस संकट में मुझे कोई उपाय बताओ नहीं तो मैं अपना शिर काटकर आपलोगोंकी भेंटकरूंगा

यह कहकर राजा खड्गलेकर अपना शिर काटनेको उद्यत होगया राजाको ऐसा साहस करते जानकर उसीसमय आकाशवाणी हुई कि हे राजा! साहस मतकरो कोई सती स्त्री इस हाथीको अपने हाथ से स्पर्श करे तो यह अच्छा होजाय नहीं तो नहीं अच्छा होगा इस आकाशवाणी को सुनकर राजाने उसीसमय बहुत प्रसन्न हो-कर अपनी उस अमृतलता नामरानी को जिसकी कि उसने बड़ी रक्षाकी थी बुलवाया उसने आकर हाथीका स्पर्श किया परन्तु हाथी नहीं उठा तब राजाने अपनी सम्पूर्ण स्त्रियों को बुलवाकर सब से एक २ करके स्पर्श करवाया पर हाथी नहीं उठा क्योंकि उनमें एक भी सती न थी राजाने उन अस्सीहज़ार रानियों को लज्जित देखकर अपने पुरकी सम्पूर्ण स्त्रियों को बुलवाकर क्रम पूर्वक सबसे हाथीका स्पर्श करवाया जब इतनेपर भी वह हाथी न उठा तो राजा के चित्तमें लज्जाहुई कि हाय मेरे पुरमें एक भी सती स्त्री नहीं है उससमय हर्षगुप्त नाम एक वैश्य ताम्रलिप्ती नाम नगरीसे उस द्वीप में आयाथा वहभी इस वृत्तान्त को सुनकर कौतुक देखने के लिये वहांपर गया उस बनिये की शीलवती नाम स्त्री भी उसके पीछे २ चलीगई थी उसने कहा कि जो मैंने चित्तसे भी अपने मन में किसी अन्यपतिका स्मरणभी न कियाहोय तो मेरे हाथके स्पर्श से यह हाथी उठे यह कहकर उसने उस हाथीका स्पर्श किया उस के स्पर्श करतेही हाथी स्वस्थहोकर उठ खड़ा हुआ और चाराखाने लगा हाथीको उठा देखकर सब लोग शीलवती की प्रशंसा करके कहने लगे कि ऐसी साध्वी स्त्रियां कहीं बिर-लीही होती हैं जो ईश्वरके समान इस सम्पूर्ण संसार की उत्पत्ति पालन तथा संहार करसक्ती हैं राजा रत्नाधिपति ने भी प्रसन्न

होकर शीलवती को असंख्य रत्नों से पूर्ण करदिया और उसके स्वामी हर्षगुप्तको भी बड़े सत्कारपूर्वक अपने घरके पासही मकान देकर टिकाया और उस दिन से अपनी सम्पूर्ण स्त्रियों का स्पर्श भी त्याग करके उनको केवल भोजन और वस्त्रमात्र देने मिलने की आज्ञा दी इसके उपरान्त राजा ने भोजन करके हर्षगुप्तसमेत शीलवती को एकान्त में बुलाकर कहा कि हे शीलवती! तुम्हारे पिता के वंश में कोई और भी कन्या है जो होय तो तुम उसका मेरे साथ विवाह करवादो मैं जानताहूं कि वह भी तुम्हारेही समान होगी राजाके यह वचन सुनकर शीलवती बोली कि हेमहाराज! ताम्रलिप्तीपुरी में तारादत्त नाम एक मेरी बहिनहै वह बड़ी रूपवती है जो आपकी इच्छाहो तो उसके साथ विवाह करलीजिये राजा ने उसके वचन स्वीकार करलिये और दूसरे दिन ताम्रलिप्ती पुरी के चलने का निश्चय किया और हर्षगुप्त तथा शीलवती को उसी श्वेतरश्मि हाथीपर सवार कराके उस पुरीको गया और हर्षगुप्त के यहां पहुंचकर शीलवती की बहिन के विवाह के निमित्त ज्योतिषियों से लग्न पूछी ज्योतिषियों ने दोनों के जन्मनक्षत्र पूँछकर कहा कि आज से तीन महीनेके उपरान्त शुद्ध लग्नहै और एक लग्न आज भी है उसमें जो विवाह होगा तो तारादत्त अवश्य कुलटा होजायगी ज्योतिषियोंके यह वचन सुनकर राजाने सुंदर स्त्री के लिये उत्कंठित होकर और बहुत कालतक स्त्री के बिना रहनेको असमर्थ होकर शोचा कि विचारसे क्या प्रयोजनहै आज ही राजदत्ता के साथ विवाह करना चाहिये यह शीलवती की बहिनहै इससे यह निरभिमान होनेके कारण कुलटा न होगी और समुद्र के बीच में मनुष्यरहित एक द्वीपखण्डहै जिसमें कि मेरा

चौखण्डमहल बना है उसमें इसे रक्खूंगा और उस दुर्गमस्थान में केवल स्त्रीही इसकी सेवाके लिये रक्खूंगा इसप्रकार पुरुष के बिना देखे भाले यह कैसे पुंश्चली होजायगी यह निश्चय करके राजाने उसीदिन उसीलग्न में शीलवती के कहने से राजदत्ता के साथ अपना विवाह करलिया और विवाह करके हर्षयुत शीलवती तथा राजदत्ता को उसी श्वेतरश्मि हाथीपर बैठाकर क्षणभरमें आकाश मार्ग के द्वारा रत्नकूट द्वीप जहां कि उसका मार्ग सब लोग देख रहे थे आया और वहां आकर शीलवती को फिर भी इतना धन दिया कि जिससे वह अपने पतिव्रत पनेका फल पाकर कृतकृत्य होगई तदनन्तर राजाने रत्नदत्ताको श्वेतरश्मिपर बैठालकर पहले-हीसे विचारेहुए समुद्र के बीच मनुष्यों से दुर्गमद्वीप में ले जाकर अपने मन्दिर में रक्खा और केवल स्त्रियांही उसकी सेवाके लिये रक्खीं और जिन २ वस्तुओंकी वहां आवश्यकता थी वह सब वस्तु राजाने किसीपर बिश्वास न करके आपही आकाशमार्ग से वहां पहुँचगई राजा उसके अनुराग से रात्रिभर तो उसीके पास रहता था और दिनको राज्य के कार्य्य करनेको रत्नकूट पर चला आताथा एकसमय राजाने कोई दुस्स्वप्न देखाथा इससे प्रातःकाल मंगला-चारकरके आप भी मद्यपान किया और रानीको भी मद्यपान कर-वाया फिर किसी कार्य्य के लिये रत्नकूट में आनेका बिचार किया यद्यपि वह मदसे उन्मत्त होकर राजाको छोड़ना नहीं चाहती थी तथापि वह कार्य्यवश से रत्नकूट को चलाही आया और चित्तमें शोचतारहा कि वह मदोन्मत्त वहां अकेली क्या करेगी इस बीचमें राजदत्ता उस दुर्गमद्वीपमें दासियों के अपने२ कार्यों में लगजाने पर अकेली द्वारपर चली आई और वहां राजाकी सब रक्षाओं के

जीतने के लिये मानो आयेहुए भाग्यके समान एक आश्चर्यकारी पुरुषको देखकर उस मदोन्मत्तने पूछा कि तुम कौनहो और इस अगम्यस्थान में कैसे आयेहो रानी के यह वचन सुनकर अनेक क्लेशोंको भोगनेवाला वह पुरुषबोला कि मैं पवनसेन नाम वैश्य हूं मथुरा में मेरा घर है मेरे गोत्री भाइयों ने पिताके मरनेपर मुझे अनाथ जानकर मेरा सब धन छीन लिया तब मैंने विदेशमें जाकर नौकरी करली वहां कुछ धन इकट्ठा करके रोजगार करने के लिये अन्यदेशको चला मार्गमें चोरोंने मेरा सब धन छीनलिया चोरोंके हाथ सब धन गमाकर वहांसे अपने समान अन्य साथियों के साथ कनक क्षेत्र नाम एक स्थानमें जहां रत्नोंकी खानि निकाली जातीथी गया वहां राजासे कुछ पृथ्वी लेकर सालभरतक खोदता रहा परन्तु एक भी रत्न नहीं मिला और मेरे साथियों को अनेक रत्न मिले तब मैं अपनी ऐसी मन्द भाग्यता देखकर समुद्रके तटपर जाकर बहुत से काष्ठ इकट्ठे करके चिता बनाके जलनेका विचार करनेलगा उससमय जीवदत्त नाम एक वैश्य वहां आया उसने मुझे चितासे निवारणकरके अपने पास नौकर करलिया और मुझे अपनेसाथजहाजपर बैठाकर स्वर्णद्वीप में जाने का प्रस्थान किया पांच दिनतक समुद्रमें चलते २ छठेदिन अकस्मात् मेघ बरसनेलगे और वायु से वह जहाज मतवाले हाथी के शिरके समान घूमने लगा और फटकर पानी में डूबगया उसके डूब जानेपर भाग्यवश से मुझ को गोते खाते २ एक काष्ठका टुकड़ा मिलगया उसीपर चढ़कर मेघोंके शान्त होजाने पर मैं इस द्वीपके तटपर पहुंचगया और उस काष्ठके टुकड़े से उतरकर इस बनमें घूमते यहां तुम्हारा मंदिर मुझे मिला और यहां आकर नेत्रोंमें अमृतकी वृष्टिके समान

सुख देनेवाली तुमको देखा उसके यह बचन सुनकर रानी तारा-दत्ताने मदसे और कामदेवसे उन्मत्त होकर उसको पलँगपर लेटा कर उसका आलिंगन किया स्त्रीपना–उन्मत्तता–एकान्त–पुरुष का मिलना और स्वतन्त्रता इन पांच अग्नियों के सन्मुख शील-रूपी तृणकी क्या सामर्थ्य है कामसे मोहित स्त्री विचार करने में समर्थ नहीं होती देखो रानी राजदत्ता ने उस विपत्ति में पड़े हुए अयोग्य पुरुषके साथ भी रमणकी इच्छाकी उससमय राजा रत्ना-धिपति ने उत्कंठित होकर उसी श्वेतरश्मिपर चढ़कर वहां आके मंदिरमें जाकर रानी राजदत्ता उस दीनपुरुषके साथ रमण करती हुई देखी और उस पुरुषको मारनेकी इच्छाकी परन्तु वह पैरों पर गिरकर दीनवचन कहनेलगा इससे छोड़दिया और अपनी रानी तारादत्ताको उन्मत्त तथा भयभीत देखकर बिचारकिया कि काम-देवके मुख्य मित्र मद्यमें प्रसक्त स्त्री सती कैसे हो सक्ती है चपलस्त्री रक्षा करने से भी नहीं रुक सक्ती है क्या आंधी की हवाको कोई भु-जाओंसे रोक सक्ताहै मैंने ज्योतिषियोंका कहा नहीं किया उसका यह फल मुझको मिला शिष्ट लोगों के वचनका तिरस्कार करना किसको अन्तमें अनिष्टकारी नहीं होताहै मैंने इसको शीलवतीकी बहिन जानकर अमृत के साथ उत्पन्न हुए विषका स्मरण नहीं रक्खा अथवा अद्भुत कार्य करनेवाले ब्रह्माके अपूर्व कार्य्योंको कौन पुरुष अपने पुरुषार्थ से जीत सक्ताहै–इसप्रकार शोचकर राजा ने किसीपर क्रोध नहीं किया और उस बैश्यसे सम्पूर्ण बृत्तान्त पूछ-कर उसेछोड़दिया तब उस बैश्यने भी वहां जीविकाकी कोई गति न जानकर समुद्रके तटपर आकर एक जहाज उस मार्ग से जाता हुआ देखा और शीघ्रतासे उसी काष्ठके टुकड़ेपर फिर चढ़कर स-

मुद्रमें जाकर पुकारकर कहा कि मुझे यहां से निकाल लो उसके यह वचन सुनकर कोशवर्म्मा नाम जहाज के स्वामी ने उसे जहाजपर चढ़ा लिया —ब्रह्माने जौनसा कर्म जिसके नाश होने के लिये नियत करदियाहै वह उसके साथ सर्वत्र जाताहै देखो वह मूर्ख जहाजपर जाकर एकान्तमें कोशवर्म्माकी स्त्रीके साथ रति में आसक्त हुआ और कोशवर्म्मा ने उसे देखकर समुद्रमें ढकेल दिया वहां राजा रत्नाधिपति अपने सम्पूर्ण परिकर समेतरानी राजदत्ता को श्वेतरश्मिपर चढ़ाकर रत्नकूट में ले आया और राजदत्ता को शीलवती के सुपुर्द करके शीलवती से और अपने मंत्रियोंसे उस का सम्पूर्ण वृत्तान्त कहदिया और वैराग्ययुक्त होकर यह वचन कहे कि मैंने इस असार विरस विषयों में चित्त लगाकर कितना दुःख उठाया इस से अब में वनमें जाकर श्रीकृष्ण भगवान्का भजन करूंगा जिससे फिर ऐसे दुःख भोगने न पड़ें राजाकेयहवचन सुनकर मंत्रियों ने तथा शीलवती ने भी समझाया परंतु उसका चित्त बैराग्यसे नहीं हटा तब उसने अपने खजाने में से आधा धन शीलवती को देकर आधा सम्पूर्ण ब्राह्मणों को बांट दिया और सम्पूर्ण राज्य संकल्प करके राजा के स्नेहसे आंसू भरे हुए प्रजा लोगोंके देखतेहुए ही तपोवन जाने के लिये श्वेतरश्मिको बुलवाया श्वेतरश्मि वहां आतेही अपने शरीर को त्यागकर हार आदिक दिव्य आभूषणोंसे युक्त दिव्यपुरुष होगया उसकी यहदशा देखकर राजाने कहा कि तुम कौनहो और यह क्या बातहै तब वह बोला कि मलयाचल के रहनेवाले हम दो गन्धर्व परस्पर भाई हैं मेरा सोमप्रभ नामहै और मेरे बड़े भाईका देवप्रभ नामहैमेरे भाई के राजवती नाम परम प्रिय एकही स्त्री है एक समय देवप्रभ

राजवतीको गोदमें लेकर मेरे साथ सिद्धवास नाम स्थानको गया वहां जाकर श्रीविष्णु भगवान्का पूजनकरके भगवान्के आगे हम सब लोग गानेलगे उससमय वहां कोई सिद्ध आकर अत्यन्त मनोहर गान करतीहुई राजवतीको अनिमेष दृष्टिसे देखनेलगा उसे इस प्रकार देखताहुआ देखकर मेरे भाईने कुपित होकर उससे कहा तुम सिद्ध होकर भी परस्त्री को बुरी अभिलाषसे देखतेहो तब सिद्ध ने कुपितहोकर कहा कि हे मूर्ख! मैंने इसको अपूर्व नीतिके कारणसे देखाथा मेरी बुरी अभिलाषा न थी तेरे चित्तमें बड़ी ईर्षा है इससे तू मृत्युलोक में उत्पन्न होगा और वहां अपनी स्त्री को परपुरुष से रमण करती हुई देखेगा इस शाप को सुनकर मैंने लड़कपन से कुपित होकर उसको एक मृत्तिकाके श्वेत हाथीसे जिसको कि मैं खेलने को लायाथा मारा तब उसने मुझे भी शाप दिया कि तूने मुझे श्वेत हाथी से माराहै इससे तूभी पृथ्वीमें श्वेत हाथीके रूपसे उत्पन्न होगा सिद्धके इस शापको सुनकर मेरे भाई ने उनसे बड़ी विनय करी तब उसकी अति विनयको सुनकर सिद्धने कृपाकरके इसप्रकार हम दोनोंके शापका अन्त बताया कि तुम मनुष्य योनि में भी विष्णुभगवान्की कृपासे द्वीपभरके स्वामीहोकर दिव्य हाथी रूप अपने भाई को अपना वाहन पावोगे और अस्सीहज़ार तुम्हारी रानी होंगी उन सबके दुराचार को जानकर मनुष्य योनिमें उत्पन्नहोनेवाली इस अपनी स्त्रीसे भी विवाह करके इसे अपनी आंखोंसे परपुरुष के साथ रमण करतीहुई देखोगे इसकी यह दशा देखकर तुम वैराग्ययुक्त होकर ब्राह्मणको अपना सब राज्य देकर जब बन जाने को उद्युक्त होगे तब पहले तुम्हारा यह भाई हाथी पने से छूट जायगा और इसे देखकर तुम भी अपनी स्त्री समेत

शापसे छूट जाओगे इसप्रकार उस सिद्धके वचनके अनुसार पूर्व जन्म के कर्म्म फलसे हम लोगोंका इससमय शापका अन्त हुआ सोमप्रभ के यह वचन सुनकर राजा अपने पूर्व्व जन्मका स्मरण करके बोला कि वह देवप्रभ मैंहींहूं और राजदत्ता मेरीस्त्री राजवती है यह कह कर राजा राजदत्तासमेत शरीर को त्याग करके गंधर्व होगया फिर क्षणभर में सबके देखतेही देखते वह तीनों आकाश में उड़कर अपने स्थान मलयाचलपर चलेगये शीलवती भी अपने शीलके माहात्म्य से बहुतसी सम्पत्ति पाके ताम्रलिप्तीपुरी में जाकर धर्म्म पूर्व्वक रहनेलगी इस प्रकार इस संसार में कोई पुरुष भी स्त्रीकी रक्षा हठ पूर्व्वक नहीं करसक्ताहै कुलीन स्त्रियोंको केवल उनके शुद्ध सत्वरूपी पाशका बन्धन हीं उनकी सदैव रक्षाकरता है और ईषा तो मनुष्यों को दुखदाई महादोष रूप है और अन्य पुरुषों से द्वेष कराने का कारणहै इससे स्त्रियों की रक्षा तो नहीं होसक्ती है किन्तु इसके विपरीत उनके चित्त में उत्कण्ठा अधिक बढ़जातीहै ॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकपंचाशत्तमःप्रदीपः ५१ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेद्विपंचाशत्तमःप्रदीपः५२ ॥

सतीतुदुर्लभालोके प्रायोनार्य्यस्तुचंचलाः ।
आस्वासक्तमनादुःखंविविधंलभतेजनः५२ ॥

(अर्थ) पतिव्रता स्त्री तो संसारमें दुर्लभहै प्रायः स्त्रियें चंचल ही होती हैं इनमें मन फँसानेवाला जन अनेक दुःखभोगताहै५२॥

सम्पूर्ण संसार में विख्यात उज्जयिनी नाम नगरी में निश्चय दत्त नाम एक बनियें का पुत्र अत्यन्त ज्वारी था वह प्रतिदिन जुयेमें धन जीतकर क्षिप्रानदी में स्नान करके श्रीमहाकाल शिव

जीका पूजन करके और ब्राह्मण तथा दीन अनाथों को धन देके भोजनादिक कार्य्य करताथा और वह नित्यही स्नानादि के उपरान्त महाकाल के निकट श्मशान में जाकर अपने शरीर में चन्दनादिक लगाताथा और वहीं एक पत्थरके खम्भमें चन्दन लगाकर अपनी पीठ रगड़ताथा बहुत दिनतक रगड़ने से वह खम्भा एक ओर बहुत चिकना होगया एक समय उसी मार्ग से कोई चित्रकार एक चितेरे समेत वहां आया उसने उस खम्भे को बहुत चिकना देखकर श्रीपार्वती जी का चित्र उसमें बनादिया और उस चितेरेने अपने यन्त्रों से वह चित्र खोददिया फिर उन दोनों के चले जानेपर श्रीमहाकाल शिवजी का पूजन करनेको आई हुई एक विद्याधर की कन्याने खम्भे में पार्वतीजी की मूर्तिदेखी उस मूर्ति के बहुत शुभलक्षण देखकर उसमें भगवती का अंश जानकर भगवती का पूजन करके वह विश्रामके लिये अदृश्य होकर उसी खम्भे में प्रवेश करगई उससमय निश्चयदत्त भी वहां आया खम्भे में श्रीपार्वतीजी की मूर्तिको आश्चर्य पूर्वक देखकर वह अपने सम्पूर्ण शरीर में चन्दन लगाकर उस खम्भे की दूसरी ओर चन्दन लगाकर अपनी पीठ रगड़ने लगा उसे पीठ रगड़ते देख के और उसके रूप से मोहित होकर उस विद्याधरीने शोचा कि ऐसे सुन्दर पुरुषको भी कोई पीठ में चन्दन लगानेवाला नहीं है तो आज मैंहीं इसकी पीठमें चन्दन मले देतीहूं यह शोच कर वह खम्भे में से हाथ निकाल कर बड़े स्नेह से उसकी पीठ में चन्दन मलनेलगी उससमय हाथके स्पर्शको जानके और कंकण के शब्द को सुनकर निश्चयदत्तने फिरकर अपने हाथ से उस का हाथ पकड़लिया तब उसने खम्भे में से कहा कि हे महाभाग!

मैंने तुम्हारा क्या अपराध कियाहै मेरा हाथ छोड़दो इस अदृश्य वचनको सुनकर निश्चयदत्तने कहाकि तुम प्रत्यक्ष होकर कहो कि तुम कौनहो तभी तुम्हाराहाथ छोडूंगा उसने शपथखाकर कहाकि मैं प्रत्यक्ष आकर आपसे सब वृत्तान्त कहूंगी आप मेराहाथ छोड़ दीजिये उसके इसप्रकार कहने से निश्चयदत्त के हाथ छोड़ने पर वह खम्भे से निकलकर निश्चयदत्तके मुखको देखती हुई बैठकर अपना वृत्तान्त कहनेलगी कि हिमालय के आगे पुष्करावतीनाम एक नगरी है उसमें विद्याधरों का स्वामी विन्ध्यपर नाम विद्याधर रहताहै उसकी मैं अनुरागपरानाम कन्याहूं इससमय श्रीमहाकाल जीके पूजनके निमित्त आकर विश्रामके लिये यहां बैठीथी इतने में कामदेव के मोहनास्त्र के समान तुमभी यहां आकर अपनी पीठ इसमें रगड़नेलगे तब पहले तो आपके अनुरागसे मेरा हृदय राग युक्तहुआ और पीछे पीठके मलने में अंगराग के लगजाने से हाथ भी रक्त होगया इसके उपरान्त जो हुआ सो आप जानते हैं अब मैं अपने पिताके स्थान को जाती हूं उसके यह वचन सुनकर निश्चयदत बोला कि हेसुन्दरि! तुमने जो मेराचित्त हरलिया है वह मैंने अभी नहीं पाया सो पराई वस्तु लेकर विना दिये तुम कैसे चलीजाओगी निश्चदत्त के इस कहने पर वह अनुरागसे वशीभूत होकर बोली कि हे नाथ! जो तुम मेरी पुरी में आओगे तो मैं वहां आपसे मिलूंगी और वह पुरी तुमको कुछ दुर्गम भी नहीं है आपका मनोरथ सिद्ध होगा क्योंकि उत्साही मनुष्यों को इस संसारमें कुछ दुर्लभ नहीं है यह कहकर वह अनुरागपरा विद्याधरी आकाश को चलीगई और निश्चयदत्त उसीका ध्यानकरताहुआ अपने घरको चलागया घरमें जाकर वह शोचनेलगा कि खम्भे

रूपी वृक्षसे निकले हुए उसके पाणिपल्लव को पकड़कर भी मैंने उसका पाणिग्रहण नहीं किया तो अब उसी पुष्करावती पुरी को चलना चाहिये या तो मेरे प्राणही जायँगे या भाग्य सहायता करेगा इसप्रकार शोचकर निश्चयदत्तने कामसे पीड़ित होकर वह दिन व्यतीत किया दूसरे दिन प्रातःकाल उठकर उत्तरदिशाको प्रस्थानकिया कुछ दूर चलकर उत्तरदिशाकोही जानेवाले तीन वैश्यके लड़के उसको साथी मिलगये उनके साथ अनेक ग्राम तथा नगर बन तथा नदियों को उल्लंघन करताहुआ निश्चयदत्त उत्तरदिशा में म्लेच्छोंकी बस्ती में पहुंचा वहां ताजिकजातिके म्लेच्छों ने इनचारोंको पकड़कर किसी अन्य जाति के हाथ कुछ धन लेकर बेचडाला उस मोललेनेवाले ने उन चारोंको अपने नौकरों के द्वारा मुखारनाम म्लेच्छके यहां भेंटकेलिये भेजदिया वहां जाकर उन सेवकों ने मुखारको मराजानकर उसके पुत्रको वह चारों भेंट करदिये उसने कहा कि मेरे पिता के लिये उसके मित्रने इन चारोंको भेजाहै इससे इन चारोंको भी उसी कबर में अपने पिताके पास डालकर तोपदेना चाहिये यहकहकर उसने उनको जंजीरों में बँधवाकर रक्खा तब बन्धन में पड़कर रात्रि के समय निश्चयदत्तने अपने तीनों मित्रोंको मरनेके भयसे व्याकुल देखकर कहा कि खेद करने से क्या लाभहोगा धैर्य्य धारणकरो विपत्तियां धीरमनुष्यों के पास से भयभीतसी होकर भागजाती हैं इससमय आपत्तिकी नाशकरनेवाली भगवती दुर्गाका ध्यानकरो इसप्रकार उन्हें धैर्यदेकर वहभगवती की स्तुति करनेलगा कि हे महादेवि ! तुमको नमस्कारहै मारेगये दैत्यों के रुधिरसे मानों भरे हुये महावर से युक्त तुम्हारे चरणों में मैं नमस्कार करता हूं संसार

में ऐश्वर्य की देनेवाली अपनी शक्ति से तुमने शिवजी को भी जीतलिया है हे भगवती!तुम्हारी ही शक्ति से यह सम्पूर्ण संसार जीताहै हे महिषासुरमर्दिनि!तुमने तीनोंलोकों की रक्षाकरी है हे भक्तवत्सले!इस समय मुझ शरणागत की रक्षाकरो इसप्रकार अपने मित्रोंसमेत भगवती की स्तुतिकरके वह निद्राको प्राप्त होगया उससमय भगवती ने उन चारोंको स्वप्न में दर्शनदेकर कहा कि हे पुत्रो!उठो अब जाओ तुम्हारा बन्धन खुलगया यह स्वप्न देखकर चारों की निद्रा खुलगई और अपने अपने बन्धन खुलेहुये देखे और परस्पर अपने २ स्वप्न के वृत्तान्त को कहके अति प्रसन्नहोकर चले कुछ दूर जाकर रात्रि के व्यतीत होजानेपर निश्चयदत्त के वह तीनों मित्र भयभीतहोकर बोले कि हे मित्र ! इस उत्तरदिशा में बहुत म्लेच्छहैं इससे हमलोग इस दिशा को त्यागकर अब दक्षिण को लौटे जाते हैं तुम्हारी जैसी इच्छा होय सो करो उनके यह बचन सुनकर उन्हें लौटने की आज्ञा देकर निश्चयदत्त अनुरागपरा के प्रेमरूपी बन्धनसे बँधाहुआ अकेलाही उत्तरदिशा को चला कुछ दूर चलकर चार महाव्रती उसे साथी मिलगये उनके साथ वितस्तानाम नदी के पार जाकर भोजनकरके श्री सूर्य्य भगवान् के अस्त होते समय मार्ग में मिलेहुए एक वनमें उन्हीं चारों के साथ वह चला वहां कुछ काष्ठ के बोझेवाले मिले वह इन लोगों को वनमें जातेहुए देखकर बोले कि इससमय दिन व्यतीत होगयाहै तुम कहांजाते हो आगे कोई ग्राम निकट नहीं है एकसूना शिवालय इस वनमें है उसमें रात्रिके समय जो कोई मनुष्य भीतर अथवा बाहर रहताहै उसे शृंगोत्पादनीनाम यक्षिणी सींग उत्पन्नकरके पशु बनाकर मोहितकरके खाजाती है यहसुन-

कर वह महाव्रती उसवातपर उपेक्षाकरके बोले कि चलो चलें वह विचारी यक्षिणी हमारा क्या करेगी हमलोग बड़े २ कठिन श्मशानों में भी रहे हैं इसप्रकार कहतेहुये उनचारोंके साथ निश्चयदत्त उसी सूने शिवालयमें पहुँचा और रात्रि व्यतीत करनेकेलिये उसी मंदिर के भीतर अग्निजलाके एक बड़ाभारी भस्मका मंडल वनाकर उसीमें बैठकर सवलोग अपनी रक्षाके लिये मंत्र जपने लगे उससमय शृंगोत्पादनीनाम यक्षिणी नाचती हुई और हड्डियोंकी कींगिड़ी वजातीहुई वहां आई और एक महाव्रतीकी ओर दृष्टि लगाकर नाच २ के मंडल के वाहर मंत्र पढ़नेलगी उस मंत्र के प्रभाव से महाव्रती के सींग निकलआये और वह मोहितहोकर जलतीहुई अग्नि में गिरपड़ा उसेआधा जलाहुआ देखकर अग्नि में से निकालकर उस यक्षिणी ने बड़ी प्रसन्नता पूर्वक खा डाला फिर दूसरे महाव्रतीकी ओर दृष्टि लगाकर नाच २ कर मंत्र जपने लगी मंत्र के प्रभावसे उसकेभी सींग निकल आये और नाचकर मोहित होकर अग्नि में गिरपड़ा उसे भी उसने आधा जलाहुआ देखके अग्निसे निकालकर खा डाला इसप्रकार उसने तीन महाव्रती मंत्र के प्रभावसे मोहितकरके खाडाले भाग्यवशसे जव चौथे को खानेलगी तव अपनी कींगिड़ी पृथ्वी में रखदी उस कींगिड़ी को पृथ्वी में धरी देखकर निश्चयदत्तने वह आप उठालीनी और कईबार सुनने से याद हुए मंत्रको पढ़कर उस यक्षिणी के मुख में दृष्टि लगाकर नाच २ कर कींगिडी बजाई उस मंत्रके प्रभाव से विवश यक्षिणी भयभीत होकर बोली कि हे महासत्त्व! तुम मुझ विचारी स्त्रीको मतमारो अब मंत्र पाठ को समाप्तकरो तुम मुझ शरणागत की रक्षाकरो मैं तुम्हारे सम्पूर्ण मनोरथको जानतीहूं और

उसे सिद्ध भी करदूंगी जहां वह अनुरागपराहै वहां तुम्हें पहुँचादूंगी उसके यह विश्वास योग्य वचन सुनकर निश्चयदत्त मंत्र पाठको बंदकरके उसी यक्षिणी के कहने से उसी के कन्धेपर चढ़कर आकाशमार्ग से चला चलते २ जब रात्रि व्यतीत होगई तब उस यक्षिणी ने उसे एकपर्वतके वनमें पहुँचाकर कहा कि सूर्यके उदय होजानेपर मुझे ऊपर जानेकी शक्ति नहीं है इससे आप इसी सुन्दर वनमें इस दिनको व्यतीत करिये और सुन्दर मधुरफल खाकर झिरनों का जल पीजिये मैं अपने स्थान को जाती हूं रात्रिके समय फिर आकर आपको हिमालय के ऊपर पुष्करावतीनगरी में अनुरागपराके पास पहुँचाऊंगी इसप्रकार कहकर और निश्चयदत्तसे आज्ञालेकर सत्य बोलनेवाली वह यक्षिणी फिर आने के लिये कहकर वहां से चलीगई उसके चले जानेपर निश्चयदत्तने एक बड़ा सुन्दर शीतल जल से भराहुआ तड़ाग देखा उसकेजल में विष मिलाहुआथा मानों सूर्य भगवान् अपनी किरणरूपी हाथों को फैलाकर कहते थे कि हे प्रेमी! स्त्रियोंका चित्त ऐसाही होता है सुगन्धिसे उस जल में विष मिलाहुआ जानकर उसे छोड़कर वह प्याससे व्याकुल होकर उसी दिव्यपर्वतपर घूमनेलगा घूमते२ एक बड़े ऊंचे स्थान में दो पद्मरागमणिसी चमकती हुई देखकर उसने वहांकी मिट्टीहटाई मृत्तिकाके हटाने से एक जीवते हुए बन्दरका शिर उसे दिखाईदिया जिसके कि नेत्र पद्मरागमणिसे चमकरहेथे उसे देखकर जब इसे बड़ा आश्चर्य्य हुआ तब वह बन्दर मनुष्य वाणी से बोला कि मैं ब्राह्मणहूं भाग्यवश से बन्दर होगया हूं जो आप मुझे निकालिये तो मैं अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कहूं उसके यह वचन सुनकर निश्चयदत्त ने मृत्तिका हटाके उसे निकाल लिया तब

वह वहां से निकलके उसके चरणों पर गिरकर बोला कि आपने मुझे इस क्लेश से निकालकर प्राणदान दिया तो आओ आप थकगये होंगे कुछ फल खाकर जलपानकरो और तुम्हारी कृपासे मैंभी बहुत दिनों के उपरान्त जलपान करूं यह कहकर वह बानर उसे थोड़ीदूर पर पर्व्वती नदीपर लेगया जहां बड़े २ सुन्दर मधुर फलों से युक्त सघनछाया वाले वृक्ष लगेहुए थे वहां स्नान करके और फलादि भोजन पूर्व्वक जलपान करके निश्चयदत्त भोजनसे निबृत्त हुए उस बन्दर से बोला कि आप मनुष्य से बन्दर कैसे होगये सो कहिये तब वह बन्दर बोला कि सुनो काशीपुरीमें चन्द्र-स्वामी नाम एक ब्राह्मण रहता है उसकी सुब्रत्तानाम स्त्री में मेरा जन्म हुआ है सोमस्वामी मेरा नाम है क्रमसे जब मैं बड़ा हुआ तब मदसे निरंकुश कामरूपी मतवाले हाथीपर चढ़कर इधर उधर घूमनेलगा एक समय काशीपुरी के रहनेवाले श्री गर्भनाम वैश्य की पुत्री और बाराहदत्त नाम वैश्यकी स्त्री बन्धुदत्ता नाम तरुणी ने मुझे अपने पिताके घरके झरोखे से देखा देखतेही कामसे व्या-कुल होकर उसने अपनी सखीको मेरे पास संगमके लिये भेजा वह मुझसे उसका सम्पूर्ण वृत्तान्त कहकर मुझे अपने घर लिवा लेगई और मुझको वहां छोड़कर कामकी व्यथा से निर्लज्ज उस बन्धुदत्ता को वहीं लिवालाई वह आतेही बड़े स्नेह से मेरे गलेमें हाथ डालकर लिपटगई ठीक है—स्त्रियों का बहुत बढ़ाहुआ काम-देव बड़ाबीर होताहै इसप्रकार से बन्धुदत्ता प्रतिदिन अपने पिता के घरसे अपनी सखीके घरमें आकर मुझसे रमण करनेलगी एक समय बहुतकाल से अपने पिताके ही घरमें रहनेवाली बन्धुदत्ता को उसका पति मथुरासे लेनेके लिये आया और उसके पिताने

उसकी बिदाकी तैयारी करदी तब वन्धुदत्ता अपने जानेका निश्चय जानकर अपनी सखी से बोली कि हे सखी! निस्सन्देह मेरा पति मुझे मथुरा लेजायगा और मैं वहां सोमस्वामी के विना जी नहीं सक्ती हूं इससे कोई उपाय तुम मुझको बताओ उसके यह वचन सुनकर योगकी ज्ञाता वह सखी बोली कि मुझे दोमन्त्र मालूमहैं जिनमें से एक मंत्रको पढ़कर गलेमें सूत्र बांधने से मनुष्य शीघ्रही बन्दर होजाता है और दूसरे मंत्रको पढ़कर सूत्र खोल लेने से वह फिर मनुष्य होजाताहै और बन्दर होने में उसकी बुद्धि नहीं बदलती इससे जो तुम्हारा प्रिय सोमस्वामी इस बातको अङ्गीकार करे तो मैं उसे शीघ्रही बन्दर का बच्चा बनादूं तब तुम क्रीड़ाके बहाने से इसको मथुरा में लेजाना और मैं तुम्हें दोनों मन्त्र भी बतलाये देतीहूं उन मन्त्रोंके प्रभाव से तुम इसको सदैव बन्दर बना रखना और एकान्तमें पुरुष बनाकर इसके साथ भोगविलास करना अपनी सखी के यह वचन सुनकर उस वन्धुदत्ता ने मुझे एकान्तमें बुलाकर यह सब वृत्तान्त कहा तब मैंने कामके वशहोकर उसका कहना मानलिया और उसकी सखीने मुझे बन्दरका बच्चा बनादिया मुझे उसीरूप से लेजाकर वन्धुदत्ताने अपने पतिको दिखाकरकहा कि मेरी सखीने मुझे खेलनेके लिये यह बन्दर दियाहै वह मुझे देखकर बहुत प्रसन्नहुआ और मैं ज्ञानवान् तथा बोलने को समर्थ होकर भी बन्दर के समान उसकी गोदी में जाकर बैठगया और अपने चित्त में स्त्रियों के विचित्र चरित्र को शोचकर हँसता हुआ भी बन्दर ही के समान बनारहा क्योंकि यह कामदेव किस को नहीं ठगता है दूसरे दिन वन्धुदत्ता अपनी सखी से उन मन्त्रों को सीख कर पति के साथ मथुरा को चली और उस के पतिने उसके स्नेह

से मुझे एक नौकर के कन्धेपर चढ़वा दिया इसप्रकार हम सब लोग दोदिन चलकर एक बड़े वन में पहुँचे जिस में बड़े बड़े भयङ्कर बहुत से बन्दर रहते थे वह सब मुझे देखकर किलकारी मार २ कर मुझे बुलाते हुए आकर जिस नौकर के कन्धे पर मैं बैठाथा उसे काटने लगे तब वह भयसे विह्वल होकर मुझे पृथ्वी में छोड़कर भागगया और वह बन्दर मुझे पकड़ लेगये मेरे स्नेहसे बन्धुदत्ता तथा उसका पति और उसकेसब नौकर बन्दरों को पत्थर लाठीआदिके मारने से भी नहीं जीतसके और लाचार होके वहांसे चलेगये तब वह सम्पूर्ण बन्दर मानों मेरे कुकर्म से कुपित होकर दांतोंसे तथा नखोंसे मेरा रोयां २ नोचने लगे उस समय गलेमें बँधे हुए सूत्रके प्रभावसे और श्रीशिवजीके स्मरणसे मैं बलवान् होकर उनसे अपने बंधनको छुटाकर वहांसे भागा और भागते २ उनकी दृष्टि से अलक्ष्य होकर अनेक वनों में घूमताहुआ इस वनमें आया यहां आकर मानों ब्रह्माने दुःखरूपी अन्धकार से अन्धे मुझ दीन पर इसलिये कुपित होके कि बन्धुदत्तासे भ्रष्टहुए तुझ दुष्टको क्या परस्त्री संगमका यह वानर होनाही फल मिलेगा और भी दुःखदिया कि अकस्मात् एक हथिनी ने यहां आकर मुझे सूंड़से पकड़कर मेघोंके जलसे बहीहुई सर्पकी बामी के कीचड़में डालदिया मैं जानताहूं कि वह हथिनी के रूपमें भाग्यसे प्रेरित कोई देवताथी क्योंकि मैं बहुत यत्न करनेपर भी उस कीचसे निकल नहीं सका उसकीचड़ के सूख जानेपर मेरी मृत्यु नहीं हुई और निरन्तर श्रीशिवजीका ध्यान करनेसे मेरी क्षुधा तथा तृषाभी मिटगई और बहुत कालके पीछे आज तुमने मुझे इस सूखी कीचड़से निकाला हे मित्र ! श्रीशिवजीकी कृपासे ज्ञानके प्राप्त होनेपर भी मुझे इतनी शक्ति नहीं

है कि मैं वन्दरभावसे छूटकर फिर मनुष्य होसकूं जब कोई योगिनी उसी मंत्रको पढ़कर मेरे गलेका सूत्र खोलेगी तब मैं फिर मनुष्य होजाऊंगा यह मेरा सम्पूर्ण वृत्तान्तहै अब हे मित्र! तुमभी बताओ कि इस ऐसे अगम्य स्थानमें कैसे और किस निमित्त आयेहो व-न्दररूप उस सोमस्वामी के इसप्रकार वचन सुनकर निश्चयदत्त ने उज्जयिनी में विद्याधरी के मिलने से लेकर अपने धैर्य के प्रभावसे जीती हुई यक्षिणी के द्वारा वहां पहुँचने तकका अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कहदिया निश्चयदत्त के यहवचन सुनकर वन्दर रूपधारी बुद्धिमान् सोमस्वामी बोला कि हे मित्र! तुमनेभी हमारेही समान स्त्रीके निमित्त बड़ा दुःखउठाया—किसीकी लक्ष्मी औरस्त्री कदापि स्थिर नहीं होसक्ती है—स्त्रियां क्षणमात्र रागयुक्त नदी के समान कुटिल चित्त सर्पिणी के समान विश्वास करने के अयोग्य और विजली के समान चपल होती हैं इससे वह अनुरागपरा विद्याधरी अभी तो तुमसे स्नेह करती है परन्तु अपने किसी सजातीय को पाकर तुमको मनुष्य जानकर छोड़देगी इससे तुम स्त्रीके निमित्त अन्त में नीरस किंशुक फल के समान परिश्रम मतकरो हे मित्र! तुम पुष्करावती विद्याधरपुरी को मतजाओ उसी यक्षिणी के कन्धेपर चढ़कर अपनी उज्जयिनीपुरी को लौटजाओ मेरा कहना मानों देखो मैंने पहले प्रेमके वशीभूतहोकर अपने मित्रका कहना नहीं माना था उससे अब तक दुःखपारहाहूं जब मेरा वन्धुदत्ता से स्नेहहोगया था तब भवशर्मा नाम मेरे मित्र ब्राह्मणने मुझको निषेध करने के लिये यह वातें कही थीं कि हे मित्र! स्त्रीके वशीभूत मतहो क्योंकि स्त्रियों का चित्त वड़ा कठिन होताहै देखो मैं तुमको अपनाही वृत्तान्त सुनाताहूं यहीं काशीपुरी में सोमदानाम

एक बड़ी चपल रूपवती ब्राह्मणी गुप्त योगिनीथी उसके साथ भाग्यवश से मेरा समागम होगया और धीरे २ उसपर मेरा बहुत स्नेह होगया एकदिन मैंने उसको ईर्षा से क्रोधयुक्त होकर पीटा उसदुष्टा ने क्रोध को छिपाकर मेरीमार को सहलिया और दूसरे दिन क्रीड़ा के वहाने से मेरे गले में एक सूत्र बांधदिया सूत्र के बांधते ही मैं उसी समय वधिया बैल होगया तब उसने मुझे एक ऊंटवाले पुरुष से यथेच्छ धनलेकर बेचडाला वह ऊंटवाला मुझसे बोझा ढुलवाने लगा एक दिन वन्धमोचनिका नाम योगिनी ने मुझे भारसे पीड़ित देखकर और ज्ञान से यह जानकर कि सोमदत्त ने इसे पशुबनाया है मेरेस्वामी के परोक्ष में कृपा करके मेरे गलेका सूत्र खोलदिया मैं उसीसमय मनुष्यहोगया और मेरास्वामी मुझे भागा जानकर इधरउधर ढूंढ़नेलगा तदनन्तर भाग्यवशसे सोमदा ने मुझको वन्धमोचनी के साथ जाताहुआ देख लिया और क्रोध से जाज्वल्यमान होकर वन्धमोचनी से कहा कि इसपापीको तुमने पशुपने से क्यों छुड़ा दिया है हे पापिन ! तुझे इस कर्म्म का फल मिलेगा देख प्रातःकाल में तुझे और इसे दोनोंको मारडालूंगी उस के यह वचन कहकर चले जाने पर वन्धमोचनी ने उनसे बचनेके लिये मुझसे कहा कि सोमदा कालीघोड़ी का स्वरूप धरकर मुझे मारने के लिये आवेगी और मैं लाल घोड़ीका स्वरूप धारण करूंगी जब मेरा और उसका युद्ध होने लगे तब तुम खड्ग लेकर पीछे से उसे मारना इसप्रकार से हम तुम दोनों मिलकर उसे मार लेंगे इससे तुम प्रातःकाल मेरे घरपर आजाना यह कहकर उसने मुझे अपना घर दिखला दिया और अपने घरमें चली गई तब मैं एकही जन्ममें अनेकजन्मों का अनुभवकरके अपने घरको आया

और प्रातःकाल खड्ग लेकर वन्धमोचनी के मकानपर गया वहां उससमय सोमदा कालीघोड़ी का स्वरूप धारण करके आई और वन्धमोचनी ने लालघोड़ी का स्वरूप धारणकिया जब उन दोनों का लत्तियों और दांतोंसे युद्ध होनेलगा तब मैं पीछेसे सोमदाके खड्ग मारने लगा और वन्धमोचनी ने उस सोमदाको मारडाला उसे मरी हुई देखकर मैं निर्भय होगया और पशुपने का स्मरण करके फिर कभी मैंने परस्त्रीका मनसे भी ध्यान न किया चपलता साहस और डाकिनी होना यह तीनों दोष स्त्रियोंके प्रायः मनुष्यों को भयदायक हैं इससे डाकिनी की सखी वन्धुदत्ता से तुम स्नेह न करो जिसे अपने पतिपरही स्नेह नहीं है उसे तुमपर कैसे स्नेह होसक्ताहै अपने मित्र भवशर्म्मा के ऐसा कहनेपर भी मैंने उसका कहना नहीं किया इसीसे मैं इस गति को प्राप्त हुआ हूं इससे अब मैं तुमको समझाताहूं कि अनुरागपरा से कभी स्नेह न करो यह अपने सजातीय पुरुष को पाकर तुमको अवश्य छोड़ देगी जैसे भौंरी नवीन २ पुष्पों की वाञ्छा करती हैवैसेही स्त्री भी नवीन २ पुरुषों की अभिलाष किया करती हैं इससे हे मित्र! जो तुम मेरा कहना नहीं मानोगे तो तुमको मेरेही समान पश्चात्ताप करना पड़ेगा कपिरूप सोमस्वामी के यह बचन निश्चयदत्तके अनुराग-परासे पूर्ण हृदय में नहीं भाये और उसने सोमस्वामी से कहा कि विद्याधरों के शुद्ध कुल में उत्पन्न हुई अनुरागपरा मुझे छोड़कर व्यभिचार नहीं करेगी इसप्रकार उन दोनों की वार्त्ता होतेही होते सन्ध्यासे रक्त श्रीसूर्य्य भगवान् मानो निश्चयदत्तकी प्रसन्नता के लिये अस्ताचल को चलेगये—तदनन्तर अग्रदूती के समान रात्रि के आजानेपर वह शृंगोत्पादनी नाम यक्षिणी निश्चयदत्तके पास

आई उस यक्षिणी को आया देखकर निश्चयदत्त ने सोमस्वामी से जाने के लिये आज्ञामांगी उसने कहा अच्छा जाओ परन्तु मेरा स्मरण रखना इसप्रकार उससे आज्ञा लेकर निश्चयदत्त उस यक्षिणी के कन्धे पर चढ़कर वहांसे चला और अर्द्धरात्रि के समय हिमाचल पर पुष्करावती नगरी में पहुँचा उससमय अनुरागपरा अपनी विद्याके प्रभावसे उसके आगमन को जानकर उसे लिवा लाने के लिये नगरी के बाहर आई उसे आते देखकर यक्षिणी ने निश्चयदत्त से कहा कि नेत्रों को आनन्द देनेवाली चन्द्रमा की दूसरी मूर्त्ति के समान तुम्हारी कान्ता आरही है तो अब मैं जाती हूं यह कहकर और उसे अपने कन्धे से उतारकर यक्षिणी प्रणाम करके चलीगई तब अनुरागपराने बहुतकाल से उत्कंठित होने के कारण बहुत गाढ़ आलिंगन करके उस को प्रसन्न किया और भी बहुत क्लेशों को सहकर प्राप्त होनेवाली अनुरागपरासे यथेच्छ आलिंगन कर के मानों आनन्द के कारण अपने शरीर में न समाकर उसके हृदय में प्रविष्ट सा होगया तदनन्तर अनुराग-पराके साथ गान्धर्व विवाहकरके विद्याके बल से उसी के बनाये हुए पुर में रहनेलगा और उसी की विद्याके प्रभाव से माता पिता ने भी उसे नहीं देखा फिर निश्चयदत्तने उसके पूछने पर अपने मार्ग के सब क्लेशों का वर्णन किया उन क्लेशोंको सुनकर अनु-रागपरा उसपर अत्यन्त प्रसन्नहुई और दिव्य ऐश्वर्य्यों से उसका सेवन करनेलगी निश्चयदत्त ने अपने मार्ग के वृत्तान्तमें बान-ररूपी सोमस्वामी की भी कथा अनुरागपरा को सुनाकर कहा कि हे प्रिये! जो तुम्हारे उपाय से मेरा मित्र पशुयोनि से छूटजाय तो बड़ा उपकार होय उसके यह बचन सुनकर अनुरागपरा ने कहा

कि यह योगिनी स्त्रियों की बातें हैं मैं इन विषयों को क्याजानूं परन्तु भद्ररूपा नाम सिद्ध योगिनी मेरी सखी है मैं उससे कहकर तुम्हारा अभीष्ट सिद्ध करवादूंगी उसके यह वचन सुनकर निश्चयदत्त बहुत प्रसन्न होके बोला कि चलो अपने उस मित्रको तुम्हें दिखलाऊं तब अनुरागपरा उसे गोदी में लेकर आकाश मार्ग से उसको उस वानररूप सोमस्वामी के पास ले आई वहां आकर निश्चयदत्त ने अनुरागपरा समेत अपने मित्र वानर को प्रणामकरके कुशलक्षेम पूंछी सोमस्वामी ने अनुरागपरा को आशीर्वाद देकर निश्चयदत्त से कहा कि अब मुझको कुशलही है जो मैंने तुमको अनुरागपरा के साथदेखा तब वह सब एक मनोहरशिलापर बैठगये और सोमस्वामी को पशुपने से छुटाने का वार्त्तालाप करने लगे कुछकाल वार्त्तालाप करके निश्चयदत्त सोमस्वामी से आज्ञालेकर प्रियाकी गोदी में बैठकर पुष्करावती को गया दूसरे दिन उसने अनुरागपरा से फिर कहा कि हेप्रिये!चलो उसी मित्रके पास फिर चलें तब वह बोली कि आज तुम्हीं जाओ मैं तुम्हें आकाश में उड़नेकी और आकाशसे उतरने की विद्या बताये देतीहूं यहकहकर उसने उसे वह दोनों विद्या सिखादीं तब वह उन विद्याओंको पाकर आकाश मार्ग से अपने मित्रके पास आया निश्चयदत्त तो यहां आकर अपने मित्रसे वार्त्तालाप करनेलगा और अनुरागपरा अपने घरसे निकलकर उपवन में विहार करनेको गई वहां उपवन में बैठीहुई अनुरागपरा को स्वेच्छासे आकाश में भ्रमण करतेहुए किसी विद्याधरके कुमारने देखकर अपनी विद्यासे जानलिया कि यह किसी मनुष्य से प्रेम करती है यह जानकर वह उसके पास गया उसे देखकर वहअपना नीचे मुखकरके बोली कि तुम कौन

हो और यहां किसलिये आयेहो उसने कहा कि मैं सम्पूर्ण विद्याओं का जाननेवाला रागभंजन नाम विद्याधर हूं तुम्हारे देखनेही से कामदेवने मुझे अपने वशीभूत करके तुम्हारे अर्पण करदिया है इससे हे सुन्दरी! पृथ्वीके निवासी मनुष्यको छोड़कर तुम जबतक तुम्हारा पिता नहीं जानता है तबतक हमारे साथ विवाह करलो उसके यह वचन सुनकर अनुरागपराने उसे तिरछी दृष्टिसे देखकर अपने चित्तमें शोचा कि मेरे योग्यपति यही है तब अनुरागपराके आशय को जानकर उस रागभंजनने अनुरागपरासे विवाह कर-लिया ठीकहै एकान्त में स्त्री पुरुषके चित्त मिलजानेपर कामदेव किसी बातकी अपेक्षा नहीं करताहै तदनन्तर उसविद्याधर के चले जाने पर निश्चयदत्त सोमस्वामी के पास से अनुरागपरा के पास आया उससमय अनुरागपराने विरक्तहोकर शिरकी पीड़ा के बहा-नेसे उसका आलिंगन भी नहीं किया परन्तु स्नेह से मोहित सरल-चित्त निश्चयदत्त उसबहानेको सचाही जानकर दुःखपूर्वक वह दिन व्यतीतकरके दूसरेदिन प्रातःकाल खेदसे अपने चित्तको बहलाने के लिये उसी की बताईहुई विद्या के बल से फिर अपने मित्र सोमस्वामी के पास आया उसके चलेआनेपर वह रागभंजन वि-द्याधर अनुरागपरा के बिना रात्रिभर जागकर उससमय अवकाश पाकर उसके गले में आकर लिपटगया और यथेच्छ रमणकरके श्रम से सो गया और अनुरागपरा भी गोदी में उस सोतेहुए वि-द्याधरको अपनी विद्याकेबलसे छिपाकर रात्रिभरके जागनेसे सो-गई इस बीचमें निश्चयदत्त अपने मित्रके पास पहुँचा सोमस्वामी ने उसका शिष्टाचारकरके उससे पूंछा कि हे मित्र! आज तुम उदा-सीन से क्यों मालूम होतेहो निश्चयदत्तने कहा कि अनुरागपरा

आज बहुत पीड़ितहै इससे में उदासीन होरहाहूं क्योंकि वह मुझे प्राणों से भी अधिक प्रियहै यह सुनकर ज्ञानी वानररूप सोमस्वामी ने कहा कि जाओ इस समय अनुरागपरा सोरही है उसको उसकी बताईहुई विद्याके बलसे गोदीमें लेकर मेरेपास चले आओ मैं तुम्हें यहां बड़ा आश्चर्य्य दिखाऊंगा उसके इसप्रकार कहनेसे निश्चयदत्त ने आकाशमार्गसे जाकर अपनी प्रियाको सोतीहुई देखकर गोदी में उठालिया परन्तु उसकी गोदी में सोताहुआ वह विद्याधर उसे नहीं दिखाई दिया क्योंकि उसने उसे पहले ही विद्याके प्रभाव से अदृश्य करदिया था उसे लेकर निश्चयदत्त शीघ्रही सोमस्वामी के पास आगया उस समय दिव्यदृष्टि सोमस्वामी ने उसे योग का उपदेश किया जिसके प्रभाव से उसने अनुरागपरा की गोदी में सोतेहुए विद्याधर को देखलिया उसे देखकर हा धिक्कार यह क्या बात है इसप्रकार कहतेहुए निश्चयदत्त को सोमस्वामी ने उसका सम्पूर्ण वृत्तान्त अपने ज्ञान के बलसे जानकर बतला दिया यह सुनकर उसके कुपितहोने पर वह रागभंजन विद्याधर जगकर आकाश को चलागया और अनुरागपरा भी जगकर अपने भेद को खुलगया देखकर लज्जा से अधोमुख होकर बैठी उस समय निश्चयदत्त आंसूभर कर उससे बोला कि हे पापिन ! तूने मुझ विश्वासी को इसप्रकार से क्यों छला उसके यह कहने पर अनुरागपरा धीरे २ रोती हुई बिना कुछ उत्तरदिये आकाश में उड़कर अपने स्थानको चलीगई तब सोमस्वामी ने निश्चयदत्त से कहा कि तुम ने मेरे निवारण करनेपर भी उसके पास गमनकिया उसी तीव्र अनुराग रूपी अग्निका यह फल है कि तुम इस समय पश्चात्ताप कररहेहो स्वभावही से चंचल स्त्रियों का और सम्पत्तियों

का क्या विश्वास है इससे अब पश्चात्ताप न करो अपने चित्तको शान्तकरो ब्रह्मा भी होनहार को नहीं मेटसक्ते हैं सोमस्वामी के शोक तथा मोहनाशक यह वचन सुनकर निश्चयदत्त वैराग्य युक्तहो के श्रीशिवजी की शरण में गया इस के उपरान्त परम-मित्र कपिरूप सोमस्वामी के साथ वनमें रहतेहुए निश्चयदत्त के पास मोक्षदानार्थ तपस्विनी भाग्य वशसे आई उसने प्रणाम करते हुए निश्चयदत्त से पूछा कि तुम तो मनुष्यहो इस वन्दर के साथ तुम्हारी मित्रता कैसेहुई तव निश्चयदत्त ने अपना और अपने मित्रका सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाकर उससे दीनतापूर्वक कहा कि जो तुम कोई प्रयोग अथवा मंत्र जानती हो तो मेरे इस सुहृद सन्मित्र को पशुपने से छुड़ाओ यह सुनकर उसने वहुत अच्छा कहकर मन्त्रकी युक्तिसे सोमस्वामी के गले से वह सूत्र खोललिया सूत्र के खुलतेही वह वन्दरके स्वरूपको छोड़कर जैसा पहले था वैसेही मनुष्य होगया सोमस्वामी को मनुष्य वनाकर उस तपस्विनी के अन्तर्द्धान होजाने पर निश्चयदत्त और सोमस्वामी वहुतकाल तक वड़ा तपकरके परमगतिको प्राप्तहुए इसप्रकार से स्त्रियां प्रायः स्वभावही से चपल होती हैं उनके दुश्चरित प्रवन्धों को देखकर सत्पुरुषों को विवेक और वैराग्य उत्पन्न होता है कोई २ स्त्री पति-व्रताभी होती हैं जो आकाशको चन्द्रमाके समान अपने विशाल कुलको आभूषित करती हैं ॥

इति श्री दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागेद्विपञ्चाशत्तमःप्रदीपः॥ ५२ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेत्रिपञ्चाशत्तमः प्रदीपः॥ ५३ ॥

क्वचित्क्वचिद्धिवेश्यापि साध्वीवप्रतिजायते ॥
काकथातुकुलीनाना मनाज्ञोदाहणेकथा ५३ ॥

(अर्थ) कहीं २ वेश्याभी सुशीलहोतीहैं फिर अन्य सत्कुलोत्पन्न स्त्रियों का तो क्याही कहना है जैसे इस विषय में आपको एक कथा सुनाताहूं ५३ ॥

पाटलिपुत्र नाम नगरमें विक्रमादित्य नाम एक राजाथा उस के बहुतसे घोड़े तथा हाथियों से सम्पन्न हयपति और गजपति नाम दो बड़े राजा परममित्रथे और प्रतिष्ठान देशकास्वामी बहुत सी पदाती सेनासे सम्पन्न नृसिंहदत्त नाम राजा उसका शत्रुथा एक समय राजा विक्रमादित्य ने अपने मित्रों के बलके अभिमान से सहसा यह प्रतिज्ञाकी कि मैं राजा नृसिंहको इसप्रकारसे जीतूंगा कि जब वह द्वारपर आवे तो बन्दी और मागध लोग सेवक के समान उसका निवेदन मेरे सन्मुख करें इस प्रकार प्रतिज्ञा करके अपने मित्र हयपति और गजपति को बुलाकर उनको साथमें लेकर हाथी और घोड़ों से पृथ्वीको व्याकुल करता हुआ राजा विक्रमादित्य अपनी सम्पूर्ण सेना लेकर राजा नृसिंहदत्त से लड़ने को गया जब प्रतिष्ठान के निकट पहुँचा तब राजा नृसिंहदत्त उसे आताहुआ जानकर सब सेनाको तैयार करके युद्ध के लिये बाहर निकला उससमय उन दोनों राजाओं की सेनाओंका ऐसा घोर आश्चर्य्यकारी युद्धहुआ कि हाथी और घोड़ों के साथ पैदल लड़े युद्धहोते २ राजा नृसिंहदत्त के एक करोड़ पैदलों से विक्रमादित्य की सबसेना हारगई और विक्रमादित्य भागकर पाटलिपुत्र नगरको चलागया और उसके मित्र अपने२ देशको भागगये तब राजा नृसिंहदत्त बन्दीगणों से कीगई अपनी प्रशंसाको सुनता हुआ अपने नगरके भीतरगया तदनन्तर राजा विक्रमादित्य ने अपने कार्य्यको सिद्धहुआ न जानकर शोचा कि पराक्रमसे नहीं

जीतने के योग्य शत्रुको बुद्धि से जीतना चाहिये इसमें चाहे मेरी कोई निन्दाभी करे परन्तु प्रतिज्ञा झूंठी न होय यह शोचकर और योग्य मन्त्रियोंपर राज्यका भार रखकर बुद्धिवरनाम मुख्य मन्त्री सौ राजपुत्र तथा पांच कुलीन शूरोंको साथमें लेकर राजा विक्रमादित्य भिक्षुकोंकासा भेषबनाकर प्रतिष्ठाननाम नगरको गया वहाँ पहुँचकर मदनमाला नाम वेश्या के राजमन्दिर के समान सुन्दर भवन में गया वह भवनशिखरोंपर लगीहुई पताकाओं के बायुसे चंचल वस्त्रों से मानों राजाको बुलारहाथा उस भवन के मुख्य पूर्बदिशाके फाटकपर रात्रि दिन अनेकप्रकार के शस्त्रोंको धारणाकिये हुये बीस हजार पैदल रक्षक रहते थे अन्य तीन फाटकोंपर दश २ हजार पैदल शूर रक्षक रहते थे ऐसे बड़ेभारी उस भवनके द्वारपर जाकर विक्रमादित्य अपने भीतर जाने के लिये निवेदन करवाकर और प्रतीहारके द्वारा आज्ञापाकर अपने साथियोंसमेत भीतरचला उस मन्दिर में कहीं बड़े २ सुन्दर सैकड़ों घोड़े बँधे थे कहीं बड़े २ उन्नत हाथी झूमते थे कहींपर अनेक २ प्रकार देदीप्यमान शस्त्ररक्खे थे कहीं अनेक प्रकारकेसुन्दर रत्नोंसे देदीप्यमान धनके समूह के समूह से भरेहुये खज़ाने इकट्ठे थे कहींपर सैकड़ों सेवकलोग अपना २ कार्य्यकररहेथे कहींपर सैकड़ों बन्दियों के समूह उच्चस्वरसे स्तुति कररहे थे और कहींपर मृदंग की ध्वनिके अनुसारमधुरगान होरहाथा इसप्रकार शोभा देखता हुआ सात डेवढ़ियों का उल्लंघन करके अपने सब साथियोंसमेत मदनमाला के रहने के बड़े उन्नत दिव्य सुन्दरस्थान में पहुँचा मदनमाला भी अपने सेवकों के द्वारा यह सुनकर कि यह सम्पूर्ण घोड़े आदि पदार्थों को बड़े ध्यानसे देखताहुआ आयाहै उसे कोई

छिपाहुआ उत्तम पुरुष जानकर कुछदूर आगे चलकर प्रणाम कर के लेगई और भीतर लेजाकर राजाकेयोग्य आसन पर बैठाकर बड़ा सत्कार किया राजा भी उसके रूप लावण्य तथा विनय से वशीभूत होकर अपनेको नहीं प्रगट करके उसकी बड़ी प्रशंसा करनेलगा उससमय मदनमालाने स्नान पुष्प अनुलेपन वस्त्र तथा बहुमूल्य आभूषणों से राजाका सन्मान करके उसके सम्पूर्ण साथियों को रोजीना दिवाकर मन्त्री समेत राजाको अति उत्तम भोजन करवाये और उसके साथ मद्यपानादि क्रीड़ासे दिन व्यतीत करके रात्रि के समय उसके सुन्दर स्वरूप से वशीभूत होकर अपना शरीर भी उसके अर्पण करदिया इसप्रकार मदनमाला से सेवा कियागया राजा विक्रमादित्य अपने को छिपाकर चक्रवर्तियों के समान ऐश्वर्य्यों को भोग करता हुआ रहनेलगा वह नित्यही याचकोंको जितना धन देता था सो सब मदनमाला अपनेपाससे दिलवाती थी और उससे भोग कियेगये अपने शरीर तथा धनको धन्य मानती थी वह राजाके ऐसी वशीभूत होगई थी कि अन्य पुरुषों से पराङ्मुख होकर अत्यन्त अनुरक्त राजा नृसिंहदत्तको भी अपने युक्तिपूर्वक निवृत्त करदिया इसप्रकार उसके सेवनको देखकर राजाने अपने बुद्धिवर मन्त्री से एकान्त में कहा कि धनकी चाहनेवाली वेश्या काम में भी धनके विना नहीं प्रसन्न होती है ब्रह्माने मानों सम्पूर्ण याचकों का लोभ वेश्याओं को ही देदिया है परन्तु यह मदनमाला मुझे अपने धनको भोग करतेहुये देखकर विरक्त तो नहीं होती किन्तु स्नेहसे अधिक प्रसन्न होतीहै तो इससमय इसकेसाथ कैसे प्रत्युपकार करना चाहिये जिससे मेरी प्रतिज्ञा भी पूरी होजाय यह सुनकर बुद्धिवर मंत्रीने

कहा कि जो आपके चित्तमें ऐसाही है तो प्रपञ्च बुद्धिनाम भिक्षुक के दियेहुये अमूल्य रत्नोंसे कुछ इस को भी दीजिये मंत्रीके यह वचन सुनकर राजा बोला कि उन सम्पूर्ण रत्नोंके भी देनेसे इसका प्रत्युपकार नहीं होसक्ता परंतु इसी भिक्षुक के सम्बन्ध में एक और उपाय है जिससे इसका प्रत्युपकार होजायगा---यह सुनकर मंत्री ने कहा कि हे राजा ! उस भिक्षुकने आपकी क्यों सेवाकी थी वह सब वृत्तान्त मुझसे भी कहिये तब राजाने कहा कि सुनो मैं तुमसे उसकी सब कथा कहताहूं पहले पाटलिपुत्र नगर में प्रपञ्च बुद्धि-नाम भिक्षुक ने मेरी सभामें आकर एक सम्पुट (एक प्रकार का डिब्बा) मुझे दिया मैंने उसे लेकर विना खोलेही खज़ाञ्ची को देदिया इसीप्रकार से वह वर्ष दिनतक रोज़ एक सम्पुट लातारहा और मैं विना खोलेही अपने खज़ाञ्ची को देतारहा एक दिन भिक्षुक का दियाहुआ डिब्बा मेरे हाथसे गिरकर दैवयोग से खुल गया और उसमें से अग्निके समान प्रज्वलित एक महारत्न निकला मानों उसने अपना हृदय खोलकर मुझे दिखला दिया उस रत्नको देखकर मैंने और सब डिब्बे भी मँगवाकर उनमें से सब रत्न निकलवा लिये और उस समय प्रपञ्चबुद्धि से कहा कि तुम इन बहुमूल्य रत्नोंसे मेरा नित्य सेवन क्यों करतेहो तब उसने एकान्त में मुझसे कहा कि इस आनेवाली कृष्णपक्षकी चतुर्दशी को रात्रिके समय श्मशान में मुझे कोई विद्या सिद्ध करनी है हे वीर ! मैं चाहता हूं कि वहां मेरी सहायता के लिये आप आइये क्योंकि वीरों की सहायता से निर्विघ्नता पूर्वक सुगमता से सब सिद्धियां सुलभ होजाती हैं उस भिक्षुकके यह बचन मैंने स्वीकार करलिये इसके उपरान्त वह भिक्षुक तो प्रसन्न होकर चलागया

और कुछ दिनों के पीछे वह कृष्णपक्ष की चतुर्दशी आई और मुझे उस भिक्षुकके वचनों का स्मरण आगया तब मैं सम्पूर्ण आह्निक करके सायंकाल तक अपने सम्पूर्ण कार्य्य करता रहा और सन्ध्या वन्दन के उपरान्त कुछ सोगया उस समय गरुड़ पर चढ़ेहुये लक्ष्मीजी समेत भक्तवत्सल भगवान् विष्णु ने स्वप्न में मुझे दर्शन देकर कहा कि यह प्रपंचबुद्धि नाम भिक्षुक अपने नामके अर्थ से युक्त है यह तुमको श्मशान में लेजाकर बलिदान करना चाहता है इससे वह जो कुछ कहै वही न करने लगना तुम उससे कहना कि पहिले तू ऐसाही कर फिर मैं भी उसे सीखकर करूंगा जब वह उसीप्रकार से करने लगे तब उसीक्षण तुम उसको मार डालना इसप्रकार से जो सिद्धि उसको होनेवाली है वह तुम को हो जायगी यह कहकर भगवान्के अन्तर्द्धान होजानेपर मैंने जगकर शोचा कि विष्णु भगवान् की कृपा से मुझे इस मायावी की माया मालूम होगई इस प्रकार शोचकर दूसरे प्रहर में खड्ग लेकर श्मशान को गया वहां वह भिक्षुक पूजनकर रहा था वह मुझे देखकर अत्यन्त प्रसन्न होकर बोला कि हे राजा! नेत्र बन्द करके अंगों को फैलाकर नीचेको मुख करके पृथ्वी में लेटजाओ इस प्रकार से हम तुम दोनों को बड़ी सिद्धि हो जायगी तब मैंने उससे कहा कि तुम प्रथम इस रीतिसे लेटो उसे देखकर मैं भी उसी रीतिसे लेटूंगा यह सुनकर वह मूर्ख उसी प्रकार से पृथ्वी में लेट गया तब मैंने खड्ग से उसका शिर काटडाला उस समय यह आकाशवाणी हुई कि हे राजा! तुमने जो इस महापापी भिक्षुकको मारा यह बहुत अच्छा किया जो यह आकाश में अपनी गति सिद्ध करना चहताथा वह तुमको सिद्धहोगई और मैं कुबेरहूं

तुम्हारे धैर्य्यसे तुमपर बड़ा प्रसन्नहूं इस से तुम जो चाहो सो वर मुझ से मांगो यह कहकर प्रकटहुए कुबेरजी को प्रणाम करके मैंने कहा कि जिस समय में आपसे कोई अपने प्रयोजन का वर चाहूंगा तब आप प्रकटहोकर मुझे वही वर दीजियेगा तब कुबेर एवमस्तु कहकर अन्तर्द्धान होगये और मैं अपने घरको चलाआया यह मेरा सम्पूर्ण वृत्तान्त है इससे मैं अब कुबेरके वरसे मदनमाला का प्रत्युपकार करूंगा तो हे बुद्धिवर! तुम इनराजपुत्रों को अपनेसाथ लेकर पाटलिपुत्र को जाओ और मैं भी मदनमाला का प्रत्युपकार करके वहीं चला आऊंगा और अवसरपाकर फिर वहां आऊंगा यह कहकर राजाने अपने मंत्री को परिकर समेत विदाकर दिया और उस के चलेजाने पर उस दिनको व्यतीत करके रात्रि के समय होनेवाले बियोग से उत्कंठित होकर मदनमाला के साथ वह रात्रि व्यतीत की और मदनमाला भी अपनी अन्तरात्मा से मानों राजाको दूरहुआ सा जानकर वारम्बार आलिंगन करके उत्कंठा से रात्रिभर सोई नहीं प्रातःकाल राजा सन्ध्या बन्दनादिक आवश्यक कार्य करके अकेलाही देवमंदिर में जपकरने के बहाने से गया और वहां जाकर कुबेर देवता का आवाहन करके प्रकट हुए कुबेर जी को प्रणाम करके वह वर जो उन्हों ने पहले देने को कहाथा उन से मांगा कि हे देव! सुवर्ण के पांच अक्षयपुरुष मुझे दीजिये जिन के अंग निरन्तर काटनेपर भी पूरेही बनजायाकरैं तब कुबेरदेवता एवमस्तु कह कर अन्तर्द्धान हो गये और राजा को उसी समय सुवर्ण के पांचपुरुष उसी मंदिर में दिखाई दिये तब राजा देवमंदिर से निकलकर अपनी प्रतिज्ञाको स्मरण करताहुआ आकाशमार्ग से पाटलिपुत्र को चलाआया वहां आकर अपने मंत्री पुरवासी

तथा सब रानियों का प्रसन्न करके राज्यकार्य्य करने लगा परन्तु उसका चित्त प्रतिष्ठान देश में ही लगारहा राजा तो यहां चला आया और वहां वह मदनमाला राजा के आने की बहुत काल तक बाटदेखकर उसे ढूंढ़ने के लिये देवमंदिरमें गई वहां उसे राजा तो नहीं दिखलाई दिया परन्तु सुवर्ण के पांचपुरुष बहुत बड़े दिखाई दिये उनको देखकर और राजा को न पाकर वह दुखित होकर शोचनेलगी कि मेरा प्रियकोई गन्धर्व अथवा विद्याधर था जो मुझे यह पांच पुरुषदेकर आकाश को चलागया तो उसके बिना भार तुल्य इनपुरुषोंको मैं क्याकरूं यह शोचकर अपने सेवकों से पूंछनेलगी कि तुमने मेरे प्यारे कोकहीं देखा तो नहीं है और उस के ढूंढ़ने के लिये इधर उधर फिरनेलगी फिर राजाको कहीं भी न पाकर विलाप करतीहुई मदनमाला को मंदिर उपवन तथा किसीस्थान में चैन न पड़ा और वियोग से अत्यन्त व्याकुलहोकर वह अपना शरीर त्यागने को उद्यत होगई उसकी यह दशा देखकर सम्पूर्ण लोगोंने उसे समझाया कि हे मदनमाले ! विषाद न करो तुम्हारा प्रिय कोई कामधारी देवताहै वह तुमको फिर प्राप्त होजायगा इनवचनों को सुनकर उसके चित्तमें कुछ भरोसाहुआ और सावधान चित्त करके उसने यह प्रतिज्ञा की कि छः महीने के भीतर जो मुझे वह दर्शन नहीं देगा तो मैंसर्वस्व दान करके अग्नि में जल जाऊंगी इसप्रकार कीप्रतिज्ञा से अपने को सावधान करके वह उसका ध्यान करके नित्यदान करनेलगी एकदिन उसने सुवर्ण के पुरुषों से एक के हाथ काटकर ब्राह्मणों को देदिये दूसरेदिन उसको उसपुरुषके हाथ फिर ज्योंके त्यों दिखाईदिये तब रात्रिभरमें उसके हाथोंको उत्पन्नहुआ जानकर उसने सब पुरुषोंके

हाथ काटकर दान करदिये फिर उन सब के भी उसी प्रकार सब हाथ निकलआये तब उनपुरुषों को अक्षय जानकर वह वेदपाठी ब्राह्मणों को जो जितने वेद पढ़ाहो उनको उतनीही भुजा देने लगी कुछ दिनों में दिशाओं में फैलीहुई उस चरचाको सुनकर चार वेद का जाननेवाला गुणवान् दरिद्री संग्रामदत्तनाम ब्राह्मण पाटलिपुत्र से दान लेनेको उसके यहांगया तबद्वारपालों के द्वारा उस ब्राह्मणको आया जानकर उस ब्राह्मण को सुवर्ण की चार भुजादान में दीनी उस समय मदनमाला के विरह से कृश तथा पीले अंगों को देखकर और उसके दुखी परिजनों से सम्पूर्ण वृत्तान्त तथा घोर प्रतिज्ञाको सुनकर संग्रामदत्त दुखी तथा प्रसन्न होकर दो ऊंटोंपर उनचारों भुजाओं को लादकर अपने पाटलि-पुत्र नगरको चलाआया वहां आकर उसने राजा बिक्रमादित्य से यह विज्ञापनाकरी कि हे महाराज ! मैं इसनगरी का रहनेवाला ब्रा-ह्मणहूं दरिद्रसे व्याकुल होकर मैं धन उपार्जन करने को दक्षिण दिशा में गया था राजा नृसिंह के प्रतिष्ठान नामपुर में पहुँचकर अत्यन्त यशस्विनी मदनमालानाम वेश्याके यहां मैं दानलेनेको गया था कोई दिव्य पुरुष उसके पास बहुत कालतक रहकर उसे पांचसुवर्ण के अक्षयपुरुष देकर अन्तर्द्धानहोगया है उसके विरह से महाव्याकुल होकर उस वेश्या ने जीवन को बिषकी पीड़ा शरीरको निष्फल भार और भोजनको चोरी के समान मानकर धैर्य्य रहित होकर अपने परिजनोंके बहुत समझानेसे यह प्रतिज्ञा की है कि छः महीने के भीतर मेरा प्रिय मुझे नहीं मिलेगा तो मैं अपने इस अभागे शरीरको अग्निमें जलादूंगी इसप्रकार प्रतिज्ञा करके शरीर त्याग करने के निश्चयसे युक्त मदनमाला धर्म्म की

इच्छा करके नित्य महादान करतीहै हे महाराज ! मैंने उसे देखाहै कि यद्यपि भोजन थोड़ा करने से उसका शरीर कृश होगयाहै परन्तु उसकी शोभा न्यून नहीं हुई है जिस सुन्दर पुरुषके पीछे सुन्दरी मदनमाला धर्मकी इच्छा करके शरीरको त्याग करनेकी इच्छा कर रही और जिसने विरक्त होकर उसका त्याग किया है वह पुरुष मेरे मतसे निन्द्यभी और वन्द्यभी है उसी वेश्याने मुझ को चार सुवर्णकी भुजा इसनिमित्त दी हैं कि मैं चारों वेद पढ़ाहूं तो अब मैं अपने घरमें सदावर्त जारी करके स्वधर्मका सेवनकिया चाहताहूं इसमें आप मेरे सहायक हूजिये उस ब्राह्मण के मुख से इसप्रकार अपनी प्रियाकी वार्ता को सुनकर राजाका चित्त उसी समय मदनमालाकी ओर चलागया तब प्रतीहारको उस ब्राह्मण के मनोरथ को सिद्ध करने की आज्ञा देकर और मदनमाला का प्राणों से भी अधिक अपने ऊपर अनुराग देख कर और अपनी प्रतिज्ञाके सिद्ध होने के लिये उसकी सहायताके लिये उत्कण्ठित होकर और उसके शरीरत्याग करनेकी अवधिमें थोड़ाहीसा समय बाकी जानकर राजा विक्रमादित्य मन्त्रियोंको सम्पूर्ण राज्य सौंप कर आकाश मार्ग से प्रतिष्ठान नगर में अपनी प्रियाके यहां पहुँचा और वहां उसने चन्द्रिकाके समान उज्ज्वल वस्त्रवाली विबुध (पण्डित और देवता लोग) लोगों को अपने ऐश्वर्य्य की देने वाली अमावास्याके दिनकी चन्द्रमाकी कलाके समान अपनी कृशित प्रिया देखी वहभी नेत्रों में अमृत की वृष्टि करनेवाले राजा को अकस्मात् देखकर कुछ भ्रान्तियुक्तहोकर मानों फिर भागजाने के भयसे उसके गले में दोनों हाथ डालकर लिपट गई और बोली कि हे निर्दय ! मुझ निरपराधिनीको छोड़कर तुम क्यों चलेगयेथे

उसके यह बचन सुनकर राजाने कहा कि चलो एकान्त में कहेंगे यह कहकर उसे एकान्त में लेजाकर राजाने नृसिंहराजा के जीतने की प्रतिज्ञासे लेकर अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन किया और प्रपञ्चबुद्धिको मारकर आकाश में उड़नेकी शक्तिका सम्पूर्ण वृत्तांत तथा कुबेरके वरदानसे उनपांचों सुवर्ण पुरुषों के मिलनेका वृत्तांत और ब्राह्मणके द्वारा उसके अनुराग को सुनकर अपने वहां जाने का वृत्तान्त वर्णन करके कहा कि हे प्रिये! यह राजा नृसिंह बड़ा बलवान् है इससे मैं अपनी सेना के बलसे तो इसको नहीं जीत सका और द्वन्द युद्ध में आकाश में उड़कर मैं उसे मारभी लेता परन्तु अधर्म्म से जीतना क्षत्री लोगोंको उचित नहीं है इससे मैंने जो यह प्रतिज्ञाकी है कि राजा नृसिंह मेरे द्वारपर आवेगा तो बंदी लोग तथा प्रतीहार लोग उसका सेवकोंके समान मुझसे निवेदन करेंगे सो इस प्रतिज्ञा के पूर्ण होने में तुम सहायता करो यह सुनकर उसने कहा कि मैं धन्यहूं और राजाके साथ सलाह करे अपने बन्दियों को बुलाकर यह आज्ञादी कि जब राजा नृसिंह मेरे मकानपर आवे तब तुम लोग द्वारपर दृष्टि लगाये खड़े रहना और द्वारमें प्रवेश करने के समय यह कहना कि हे महाराज! राजा नृसिंह आपका बड़ा भक्त है और आपसे बहुत स्नेह करताहै इसप्रकार कहने पर जब राजा पूछे कि यहां कौन है तो कह देना कि महाराज बिक्रमादित्य भीतरहैं बन्दियों से इसप्रकार कहकर प्रतीहारी से कहा कि राजा नृसिंह जब आवे तब उसको रोकना नहीं इसप्रकार आज्ञा लेकर मदनमाला दूसरी बार अपने प्रियको पाकर सुखपूर्व्वक बहुतसा दान करतीहुई रहनेलगी इसके उपरान्त राजा नृसिंह मदनमाला के अत्यन्त दानका वृत्तान्त सुनकर और पांच

अक्षय सुवर्ण के पुरुषों को प्राप्त होना सुनकर उसे देखने के लिये उसके यहां आया उस समय प्रतीहारीने उसे निषेधकिया नहीं और वन्दीलोग उच्चस्वर से यह कहने लगे कि हे महाराज! नृसिंह आप का बड़ा भक्त है और आपसे सदैव नम्र रहता है यह सुनकर भय तथा क्रोधसे युक्त होकर राजानृसिंह ने पूछा कि भीतर कौन है मन्त्रियों ने कहा कि महाराज विक्रमादित्यहैं यह सुनकर उसने अपने चित्तमें शोचा कि विक्रमादित्यने जो प्रतिज्ञाकी थी वह पूर्ण-कर लीनी यह बड़े तेजस्वी हैं इसने आज मुझे जीत लिया इस समय यह अकेला हमारे यहां आयाहै इससे इसका मारनाभी उचित नहीं है इसप्रकार शोचकर वन्दियों से निवेदन कियाहुआ राजा नृसिंह भीतरगया उसको मुसकुरातेहुए भीतरआते देखकर विक्र-मादित्यने मुसकुराकर उठकर उसे अपने गलेसे लगाकर अपनेपास बैठालिया फिर परस्पर कुशल क्षेम पूछकर प्रसंग से राजानृसिंहने विक्रमादित्यसे पूछा कि यह सुवर्ण के पुरुष कहां से आपने पाये हैं उसके इसप्रकार पूछने पर विक्रमादित्यने प्रपञ्चबुद्धि नाम भिक्षुक के मारने से आकाश में गमन करने की शक्ति का प्राप्तहोना और कुबेर की कृपा से अक्षय सुवर्ण के पांचपुरुषों का मिलना विस्तार पूर्वक वर्णन किया यह सुनकर नृसिंह ने उसको आकाश में उड़-ने के कारण महाशक्तिमान जानकर और उसकी बुद्धिको पाप से निवृत्त जानकर उसके साथ मित्रता करली और मित्रता करके उसे अपने घरमें लेजाकर राजा लोगों के योग्य उसका बड़ा सत्कार किया और उसे मदनमालाकेही घर भेजदिया इसप्रकार राजा विक्रमादित्य ने अपने पराक्रम और बुद्धिसे अपनी प्रतिज्ञाको पूर्ण करके वहां से अपने देशके चलने का विचारकिया उससमय

मदनमाला भी विरहको सहने के लिये समर्थ न होकर अपनेसम्पूर्ण गृहादिक ब्राह्मणों को दान करके राजा के साथ चलने को उद्यतहुई तब राजा विक्रमादित्य मदनमालाके हाथी घोड़े व सब सेनाको साथ में लेकर उस समेत अपने पाटलिपुत्र नगरमें आया और राजा नृसिंह से मित्रता होने के कारण अपने देशमें भी अत्यन्त आनन्दपूर्वक मदनमाला के साथ रहनेलगा ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे द्विपञ्चाशत्तमःप्रदीपः ५२ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेत्रिपंचाशत्तमःप्रदीपः ५३ ॥

पत्युःपरंनकिमपिस्त्रियःसाध्वीयथासती ।
राज्ञागुणवरागर्तेपिहितापिचिखेदनो ५३ ॥

(अर्थ) पतिव्रता स्त्रियों को पतिसे परे और कुछ प्रिय नहीं है जैसे रानी गुणवरा राजा से तहखाने में बन्द करी भी खेद न पाई अर्थात् अपने को बुरी समझी ५३ ॥

वर्द्धमान नाम पुरमें वीरभुज नाम एक बड़ा धर्मात्मा राजा था उस राजाके सौ रानियां थीं उनमें से गुणवरा नाम रानी राजा को अत्यन्त प्यारी थी उन सौ रानियों में किसी के भी कोई पुत्र न था एक समय राजा ने श्रुतवर्द्धननाम वैद्य से पूछा कि कोई ऐसी भी ओषधिहै जिससे पुत्र होसके यह सुनकर वैद्यने कहा कि हे महाराज ! आप वनका बकरा मँगाइये तो मैं ऐसी ओषधि बना सक्ता हूं वैद्य के इस वचन को सुनकर राजाने उसी समय प्रतीहारको भेजकर वनका बकरा मँगादिया वैद्यने उस बकरे को रसोईदारों को देदिया कि इसके मांसका बड़ा सुन्दर रस बनालाओ जब रसबनकर आगया तब उसने सम्पूर्ण रानियों को बुलवाकर उस रसमें कोई चूर्ण मिलाकर थोड़ा २ सबको पिला दिया

उससमय अन्य अन्य सब रानी तो आई थीं परन्तु गुणवरा पूजामें थी फिर उस गुणवरा समेत पूजन करके आया और उस रसमें से कुछ भी बचा न देखकर उस वैद्य से बोला कि तुमने गुणवरा के लिये कुछ भी नहीं रक्खा जिसके लिये यह सम्पूर्ण कार्य्य किया था उसीको तुम भूलगये राजा के यह बचन सुनकर वैद्यके उदासीन होजाने पर राजा ने रसोईदारों से कहा क्या उस बकरे के मांस में से अभी कुछ बाकी है उन्होंने कहा कि मांस तो नहीं रहा परन्तु सींग बाकी हैं तब वैद्यने कहा कि यह बहुतही अच्छा है सींगों के भीतर के गूदेका रस अति उत्तम होता है यह कहकर सींगों के गूदे का रस बनवाकर वही चूर्ण उसमें भी मिलाकर गुणवराको पिलादिया तब राजा की वह निन्नानबे रानियां गर्भवती हुई और समय पाकर सबके पुत्र उत्पन्न हुये और रानी गुणवरा ने सबके पीछे गर्भवती होने के कारण सबके पीछे पुत्र उत्पन्न किया राजावीरभुजने उस पुत्रको सींगोंके रससे उत्पन्नहोने के कारण उसका नाम शृंगभुज रक्खा सम्पूर्ण भाइयोंसमेत बढ़ताहुआ शृंगभुज अवस्था में तो सबसे छोटा था परन्तु गुणों में सबसे श्रेष्ठहुआ वह रूपमें काम के समान धनुर्वेद में अर्जुन समान और बलमें भीमसेन के समान था इस प्रकार शृंगभुज को गुणवान् देखकर वीरभुजकी सम्पूर्ण रानियां गुणवरा से ईर्षा करने लगीं उनमें से अयशोलेखा नाम रानी ने सब से सलाह करके जब राजा उसके यहां आया तब उदासीन होकर राजासे कहा कि हेआर्य्यपुत्र! आपतो दूसरों के दोषोंको मिटातेहो फिर अपने घरके दूषणोंको कैसेसहतेहो यह जो सुरक्षितनाम सम्पूर्ण अन्तःपुरों का अधिकारी है उसके साथ आपकी गुणवरा रानी आसक्त है और उसके सिवाय अन्य

पुरुष अन्तःपुरवालों को मिल भी नहीं सक्ताहै क्योंकि अन्य सब रक्षक तो नपुंसकहैं यह बात आपकी सम्पूर्ण रानियों को विदित होगईहै उसके यहवचन सुनकर राजाने बहुत विचारकरके अपनी सम्पूर्ण रानियों से जाकर पूछा उन सबने भी कपट से यही बात राजासे कही तब बुद्धिमान् राजा वीरभुजने क्रोधको रोककर विचारा कि रानी गुणवरा सुरक्षित पर ऐसे दोषका सम्भव नहीं होसक्ताहै परन्तु यह प्रवाद तो इसप्रकारसे फैलाही है इससे बिना निश्चय किये इस बातका भेद किसी के आगे नहीं खोलना चाहिये और युक्तिपूर्वक इन दोनों को पृथक् २ रखकर देखना चाहिये कि क्या होताहै यह निश्चयकरके राजाने दूसरे दिन सुरक्षितको बुलाकर क्रोधपूर्वक कहा कि हे पापी! मैंने सुनाहै कि तुमने ब्रह्महत्या की है इससे जब तक तुम सम्पूर्ण तीर्थयात्रा न कर आओगे तबतक मैं तुम्हारा स्वरूप नहीं देखूंगा यह सुनकर उसने घबराकर कहा कि हे महाराज! मैंने ब्रह्महत्या कहां की है तब राजाने उससे फिर कहा कि धृष्टता मतकरो पापके नाश करनेवाले उस कश्मीर देशको जाओ जहां विष्णुभगवान्से पवित्र कियागया विजयक्षेत्र नन्दिक्षेत्र तथा वाराहक्षेत्रहै और जहां बहतीहुई भगवती गंगाका वितस्ता ऐसा नामहै ऐसे पवित्र और मंडवक्षेत्र तथा उत्तर मानसरोवरसे युक्त कश्मीरदेश की यात्रा से पवित्रहोकर तुम मेरेपास आओ यह कहकर राजाने उस बिचारे सुरक्षितको निरपराधही तीर्थयात्राके बहाने से बहुतदूर भेजदिया तदनन्तर राजा स्नेह क्रोधतथा बिचारसे युक्तहोकर रानी गुणवराके मंदिरमें गया उसने राजाको उदासीन देखकर बहुत व्याकुल होकर कहा कि हेआर्य्यपुत्र!आज अकस्मात् आप उदासीन क्यों हैं यह सुनकर राजाने

बात बनाकर उससे कहा कि हे रानी ! आज कोई महाज्ञानी आकर मुझसे कहगयाहै कि रानी गुणवरा को कुछ कालतक तहखानेमें बंद रखिये और आप ब्रह्मचारी हूजिये नहीं तो आप के राज्य का नाश होजायगा और गुणवरा मरजायगी उस ज्ञानी के इन वचनों से मुझेबड़ाविषादहोरहा है यह सुनकरपतिव्रता रानी गुणवरा भययुत तथा अनुराग से व्याकुल होकरबोली हे आर्यपुत्र ! तो आजही आप मुझको तहखाने में क्यों नहीं छोड़देते जो मेरे प्राणों से भी आपका हितहोय तो मैं धन्यहूं मेरी चाहे मृत्यु होजाय परन्तु आप को कोई हानि न होय क्योंकि इसलोक और परलोक में स्त्रियोंको पतिही एक परम गति है यह सुनकर राजाने नेत्रों में आंसू भरकर अपने चित्त में शोचा कि इस रानी पर और सुरक्षित पर कोई सन्देह नहीं होता मैंने इसको निस्सन्देह देखाहै और उसके मुख की कान्ति भी नहीं म्लानहुई थी तथापि इसप्रवादका निश्चयकरना अवश्य उचितहै यह शोचकर रानी से राजाने कहा कि तो यहीं तहखाना बनवाकर तुमरहो उसने कहा बहुत अच्छा जैसी महाराज की आज्ञाहोय तब राजाने वहीं तहखाना बनवाकर उसे बंदकरदिया और उसके पुत्र शृंगभुज को उदासीन देखकर उससे भी वही कारण कह दिया रानी गुणवराने राजाका हित जानकर उस तहखाने को भी स्वर्ग के तुल्य मानलिया ठीकहै (सतीस्त्रियों को अपना सुख दुःख नहीं मालूम होता) उनको तो पतिकाही सुख महासुखहै रानी गुणवराकी यह दशा देखकर रानी अयशोलेखाने एकान्तमें निर्वासभुज अपने पुत्रसे कहा कि रानीगुणवरा तो मेरे उद्योगसे गढ़े में बन्दकरदीगई अब इसका पुत्रभी इसदेश से निकल जाय तो बहुत अच्छा हो इससे हे पुत्र! तुम अपने अन्य

भाइयोंसे भी सलाहकरके शीघ्रही इसके देशसे निकालनेकी युक्ति करो माताके यह वचन सुनकर निर्व्वासभुज अपने अन्य भाइयोंसे सलाहकरके शृंगभुज के निकालने का उपाय शोचनेलगा एक समय सम्पूर्ण राजपुत्र अस्त्रोंका अभ्यास कररहे थे उससमय उनको एकबड़ाभारी बगुला महलपर दिखाई दिया उसे देखकर उनसबोंको बड़ा आश्चर्य हुआ उन सबको आश्चर्यित देखकर उसी मार्ग से आयेहुए किसी ज्ञानी क्षपणक (श्रावकयती) ने कहा कि हेराज पुत्रो! यह बगुला नहीं है यह अग्निशिख नाम राक्षस बगुले का रूप धरेहुए नगरोंका विनाश किया करताहै तो इस हेतु से इसको बाण मारकर भगादो क्षपणकके यह बचन सुनकर निन्नानवे राज-पुत्रोंने अलग २ वाण मारा और किसी का भी वाण उसके नहीं लगा तब वह क्षपणक फिर बोला कि तुम्हारा छोटा भाई शृंगभुज इस बगुलेको मारसक्ताहै इससे वह योग्य धनुष लेकर इसको मारे उसके यह बचन सुनकर निर्व्वासभुज अपनी माताके वचनों को स्मरण करके विचारने लगा कि शृंगभुजके निकालने का यह अवसर मुझे मालूम होताहै कि अपने पिता राजाका धनुषबाण लाकर शृंगभुजकोदूं जो यह उस सुवर्ण के वाण से इस बगुलेको मारेगा और बगुला बाण समेत उड़ जायगा तब बाणको ढूंढ़नेके लिये इसे लेकर हम सब इधर उधर जायँगे तब ढूंढ़ने से बकरूप-धारी यह राक्षस तो मिलेगा नहीं और शृंगभुज वाण बिना लिये लौटेगा नहीं इसप्रकार से हमारा कार्य सिद्ध होजायगा यह शोच कर उसने अपने पिताका धनुषबाण शृंगभुज को लादिया उसने वह धनुषबाण लेकर पराक्रम से धनुषको खैंचकर वह बाण उसके मारा और बाणके लगतेही बगुले के शरीरसे रुधिरकी धार बहने

लगी और वाण समेत वह वहांसे उड़गया तब शृंगभुज से नि-र्वासभुज और उसकी प्रेरणासे अन्य सब भाई कहने लगे कि वह सुवर्णमय वाण देदो नहीं तो हम सब तुम्हारेही आगे अपना २ शरीर त्याग देगे क्योंकि राजा उस वाणके विना हम लोगों को निकालदेगा और उसके समान न बनवाये से वनसक्ता है और न मोल मिलसक्ताहै यह सुनकर शृंगभुजने अपने कुटिल भाइयों से कहा कि धैर्य धरो दीन होकर भय मतकरो मैं जाकर उसराक्षस को मारकर वाण लाऊंगा यह कहकर और अपना धनुष वाण ले-कर शृंगभुज पृथ्वी मे रुधिर की धारको देखता हुआ जिस दिशा में वह बगुला गयाथा उसी दिशाको चल दिया उस समय अन्य सब भाई तो प्रसन्न होकर अपनी २ माता के पास चलेगये और शृंगभुज क्रमसे जाते २ एक बन में बहुत दूर जाकर पहुँचा उस बनमें एक बड़ा सुन्दरपुर उसे मिला वह पुर क्याथा मानों पुण्य-रूपी वृक्षका फल समय पर भोग करने के लियेप्राप्त हुआथा वहां उपवनमें किसीवृक्षके नीचे क्षणभर विश्राम करनेके पीछे उसे एक बड़ी रूपवती कन्या दिखाई दी विरहमें प्राणों के हरनेवाली और संगममें प्राणोंके देनेवाली उस कन्याको मानो ब्रह्माने अमृत और विष मिलाकर बनायाथा धीरे २ प्रेमयुक्त दृष्टि से देखती हुई वह कन्या जब निकट आई तबशृंगभुजने उससे पूछा कि हे मृगनयनी! इस पुरका क्या नामहै यहांका राजा कौनहै तुम कौनहो और यहां किस लिये आईहो तबवह नीचे को मुखकरके तिरछी दृष्टिसे देख कर मधुरवाणीसे बोली कि यह सम्पूर्ण सम्पत्तियोसे युक्त धूमपुर नाम नगरहै अग्निशिख नाम राक्षस यहांका राजाहै उसीकी रूप-शिखा नाम मैं कन्याहूं और तुम्हारे असामान्य स्वरूपको देखने

के लिये यहां आईहूं अब तुम बतलाओ कि तुम कौनहो और यहां किसलिये आये हो उसके यह बचन सुनकर शृंगभुज ने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त बाणके निमित्त धूमपुरमें आने तकका कहदिया उसके सम्पूर्ण वृत्तान्त को सुनकर रूपशिखा बोली कि तुम्हारेसमान त्रैलोक्य में कोई धनुर्द्धारी नहीं है जिसने बकरूप धारी मेरे पिताको भी बाण से मारा यह बाण मैंने खेलने के लिये लेलिया है और हमारे पिताको महादंष्ट्र नाम मन्त्री ने घावको अच्छे करनेवाली ओषधि लगाकर उसके घावको आराम करदिया तो अब हे आर्यपुत्र! अपने पितासे कहकर तुम्हें भीतर लेचलूंगी क्योंकि मैंने अपना शरीर तुम्हारे अर्पण करदियाहै यह कहकर रूपशिखा शृंगभुजको वहीं बैठालकर बोली कि हे तात असाधारणरूप कुल शील! तथा अवस्थाके गुणोंसेयुक्त शृंगभुजनाम कोई राजपुत्र यहां आयाहै मैं जानती हूं कि वह मनुष्य नहीं है किसी देवताका अवतारहै जो वह मेरापति न होगा तो मैं अपना शरीर त्यागदूंगी उसके यह बचन सुनकर अग्निशिख बोला कि हे पुत्री! मनुष्य तो हमारे आहार होते हैं और जो इतने पर भी तुम्हें आग्रहहै तो उस राजपुत्र को यहां लाकर मुझे दिखलाओ तबरूपशिखा शृंगभुज से सब वृत्तान्त कहकर उसे अपने पिताके पास बुलालाई अग्निशिखने प्रणाम करतेहुए शृंगभुजसे कहा कि हेराजपुत्र! जो तुम मेरी आज्ञा को न उल्लंघन करो तो मैं अपनी पुत्री स्वरूपशिखा तुमको देदूं उसके यह बचन सुनकर शृंगभुजने नम्रतापूर्वक कहा कि बहुतअच्छा मैं आपकी आज्ञाका उल्लंघन कभी नहीं करूंगा तब प्रसन्नहोकर अग्निशिख बोला कि अच्छा जाओ स्नानस्थान से स्नानकरके शीघ्र मेरेपास आओ उससे यहकहकर अग्निशिख

रूपशिखा से बोला कि तुम जाओ और शीघ्रही अपनी सब बहनों को साथ लेकर चलीआओ उसके यह वचन सुनकर वह दोनों बाहर निकले तब शृंगभुजसे रूपशिखाने कहा कि हे आर्य्यपुत्र! मेरे सौ बहनें हैं सबका एकही समान स्वरूपहै सबके वस्त्र आभूषण एकसेही हैं और सबके गले में एकही प्रकारके हारहैं इससे हमारा पिता हम सबको मिलाकर तुम्हें मोहित करने के लिये कहेगा कि इनमें से जिसको चाहो उसे लेलो मैं अपने पिताके कपट के अभिप्राय को जानती हूं नहीं तो हम सबको वह क्यों बुलाता मैं उससमय गलेसे अपनाहार निकालकर अपने शिरमें लगाऊंगी इसी परिचय से तुम मेरेऊपर बनमाला डालदेना मेरापिता भूतों के समानहै इसकी बुद्धि में विवेक नहीं है इसी से वह मेरे साथभी छल करताहै क्योंकि जातिका स्वभाव कभी भी नष्ट नहीं होताहै इससे यह जो कुछ तुमसे तुम्हारे छलने को कहे सो सब स्वीकार करके तुम मुझसे कहदेना तब जो उचित होगा सो मैं करूंगी यह कहकर रूपशिखा अपनी बहनों के पास चलीगई और शृंगभुज स्नान करनेको चलदिया फिर रूपशिखा अपनी सम्पूर्ण बहनोंको साथलेकर अग्निशिखके पासआई और शृंगभुजभी स्नानकर वहीं आया तब अग्निशिख शृंगभुजको एक बनमाला देकर बोला कि इनमेंसे जो तुम्हारी प्रिया हो उसके गले में इस बनमालाको डाल दो उसने बनमाला लेकर पहले संकेतके अनुसार रूपशिखाके गले में पहरादीनी यह देखकर अग्निशिखने कहा कि प्रातःकाल मैं तुम दोनोंका विवाह करदूंगा यह कहकर उसने उन सबको जानेकी आज्ञादी और क्षणभर में शृंगभुज को बुलाकर फिर कहा कि इन दोनों बधियाबैलोंको लेकर नगरके बाहर जो डेढ़सौमन तिल इकट्ठे

रक्खेहैं उन्हें पृथ्वी में बोआओ उसके बचनोंको स्वीकारकरके शृंग-भुजने उदास होकर रूपशिखासे जाकर यह बात कही उसने कहा हे आर्य्यपुत्र ! खेद न करो चलो मैं अपनी मायासे सम्पूर्ण कार्य्य सिद्ध करदूंगी यह सुनकर शृंगभुज उसीको साथलेकर नगर के बाहर आया और तिलों के ढेरमें से कुछ तिललेकर बोनेलगा यह तो बोताहीरहा किन्तु रूपशिखाने अपनीमायाके बलसे शीघ्रही पृथ्वी को जोतकर सम्पूर्ण तिल बोदिये तिलोंको बोयाहुआ देखकर शृंगभुजने अग्निशिखसे आकरकहा कि सब तिल मैंने बोदिये तब उस छली ने फिर कहा कि मुझे उन तिलों के बोने से कुछ प्रयोजन नहीं है जाओ उन सब को इकट्ठा करआओ यह सुन कर उसने रूपशिखा से जाकर कह दिया उसने उसी समय अपनी मायासे असंख्य चींटी उत्पन्न करके सब तिल इकट्ठा करदिये यह देखकर शृंगभुज ने फिर जाकर अग्निशिख से कहा कि सम्पूर्ण तिल इकट्ठे होगये यह सुनकर वह मूर्ख फिर बोला कि यहां से दक्षिण दिशामें दो योजन पर वनमें एकशून्य शिवमन्दिरहै उसमें धूमशिखनाम मेरा प्रियभाई रहताहै वहां जाकर तुम देवमन्दिरके सन्मुख खड़े होकर कहना कि हे धूमशिख ! कुटुम्ब सहित तुमको निमंत्रण देनेके लिये अग्निशिख ने मुझे भेजाहै शीघ्रही आओ प्रातःकाल रूपशिखाका बिवाह होनेवाला है यह कहकर शीघ्रही चलेआओ और प्रातःकाल रूपशिखा के साथ बिवाहकरो उस पापी के इन वचनों को स्वीकार करके शृङ्गभुजने रूपशिखा से जाकर सब कहदिया तब रूपशिखा मृत्तिका जल कांटे तथा अग्नि उसे देकर बोली कि हे आर्यपुत्र! तुम मेरे इस घोड़ेपर चढ़कर शीघ्रही शिवालयकोजाओ और शीघ्रही धूमशिखको निमन्त्रण देकर

इसी घोड़ेपर सवार होके भगातेहुए चलेआओ और लौटते समय बारम्बार पीछेको देखते जाना जो पीछे धूम्रशिखको आता देखना तो अपने पीछे मार्ग में यह मृत्तिका छोड़ देना तिसपर भी जो धूम्रशिख पीछेही आवे तो यह जल अपने पीछे मार्ग में छोड़ देना और फिरभी जो वह पीछे आवे तो यह कांटे छोड़देना और जो इतनेपर भी वह पीछे आवे तो यह अग्नि अपने पीछे मार्ग में छोड़देना इसप्रकार करनेसे तुम निर्विघ्नता पूर्वक यहां आजाओगे सन्देह न करो जाओ आज मेरी विद्याका बल देखना उसके यह वचन सुनकर भृङ्गभुज मृत्तिका आदि पदार्थों को लेकर उसी के घोड़ेपर चढ़कर देवमन्दिर को गया वहां बाईंओर पार्वती तथा दाहिनीओर श्रीगणेशजी से युक्त श्रीशिवजी को नमस्कार करके और अग्निशिखा का निमंत्रण धूम्रशिखसे कहकर घोड़ा दौड़ाताहुआ वहां से चला क्षणभरके पीछेही जैसे उसने मुख मोड़कर पीछेको देखा तो धूम्रशिख पीछे चला आरहा था तब उसने पीछे मार्ग में मृत्तिका डालदी उस मृत्तिकासे बड़ाभारी पर्व्वत होगया उस पर्व्वत को किसी प्रकार उल्लंघन करके जब वह राक्षस फिर पीछे आया तो उसने अपने पीछे जल छोड़ा उससे मार्ग में बड़ी भारी नदी होगई उस नदीको भी किसीप्रकार उल्लंघन करके जब वह फिर पीछे आया तो उसने वह कांटे अपने पीछे मार्ग्ग में छोड़ दिये उनकांटों से मार्ग्ग में बड़ाभारी कांटों का वन होगया उस वनको भी उल्लंघन करके वह राक्षस जब पीछेही आया तब वह अग्नि उसने अपने पीछे मार्ग में डालदी उससे वह सम्पूर्ण वन जलनेलगा और खाण्डववनके समान जलतेहुए उसवनको उल्लंघन करने में असमर्थ होकर खिन्न तथा भयभीत होकर वह राक्षस

लौटगया उससमय रूपशिखाकी मायासे मोहित होकर उसराक्षस को आकाशमार्ग्ग से उड़ने की याद न रही उस राक्षस को लौटा हुआ देखकर शृंगभुज अपनी प्रियाकी मायाकी प्रशंसा करता हुआ निर्भय होकर धूमपुर में पहुँचा वहां पहले रूपशिखाके पास जाके उसका घोड़ा देके और सब वृत्तान्त कहके अग्निशिख के पास जाकर बोला कि मैं तुम्हारे भाई को निमन्त्रण दे आया यह सुनकर अग्निशिखने आश्चर्य्यित होकर कहा कि जो तुम वहां गयेहो तो वहां की कुछ पहचान बताओ तब शृंगभुज नेकहाकि वहां श्रीशिवजीकी बाईंओर तो पार्वतीजी हैं और दक्षिणकी ओर विघ्नहर्ता श्रीगणेशजी हैं यही पहचान है यहसुनकर अग्निशिख शोचनेलगा कि यह वहां गया भी परन्तु मेरा भाई इसको नहीं खासका मैं जानताहूं यह मनुष्य नहीं है कोई देवताहै इससे यह मेरी कन्या के योग्यही वरहै यह शोचकर उसने शृंगभुजको रूपशिखाके पास भेजदिया और यह भेद उसे कुछ नहीं मालूम हुआ शृंगभुजने रूपशिखा के पास जाकर भोजनादि करके विवाह के लिये उत्कंठित होके वह रात्रि किसीप्रकार से व्यतीत की प्रातः-काल अग्निशिख ने अग्निको प्रज्वालित करके अपनी सम्पत्तिके अनुसार रूपशिखा उसको देदी कहां तो राक्षसकी पुत्री रूपशिखा कहांराजपुत्र शृंगभुज औरकहां इन दोनोंका विवाह वाह प्राक्तन-कर्म्मों की विचित्र गति है जैसे पंकसे उत्पन्नहुई कमलिनी को पाकर राजहंस शोभित होता है उसीप्रकार राक्षसकी पुत्री रूपशिखा को पाकर शृंगभुज शोभित हुआ विवाह के उपरान्त कुछ दिनोंके व्यतीत होनेपर शृंगभुजने एकान्तमें अपनी प्रियासेकहा कि हे प्रिये! चलो बर्द्धमानपुरको चलें वह हमारी राजधानी है मेरे

भाइयों ने मुझे युक्तिपूर्वक वहां से निकाला है यह बात मैं नहीं सहसक्ताहूं क्योंकि हमसरीखे लोगों को मानही प्राणहैं इस से तुम मेरे लिये इस अपनी जन्मभूमिको छोड़कर अपने पितासे कहके और उससुवर्णके बाणको लेकरचलो शृंगभुजके यहवचन सुनकर रूपशिखा बोली कि हे आर्यपुत्र! जैसा आप कहोगे वैसाही मैं करूंगी जन्मभूमि और स्वजन क्या पदार्थ हैं मेरे तो आपही सब कुछहो क्योंकि सती स्त्रियों को पति के सिवाय और कोई गति नहीं है परन्तु यह जो आपने कहा कि अपने पिता से कहो सो योग्य नहीं है क्योंकि वह हम लोगों को छोड़ना नहीं चाहताहै इस से उसक्रोधी से विनाही कहे चलिये जो पीछे से परिजनों के कहने से वह आवेगा तो मैं अपनी माया से उसे मोहित करदूंगी उसके यह वचन सुनकर शृंगभुज बहुत प्रसन्नहोगया दूसरे दिन रूपशिखा रत्नोंसे भरेहुए डिब्बेको लेके और सुवर्ण के बाणको भी लेकर शृंगभुज समेत अपने शरवेग नाम घोड़ेपर चढ़कर उपवन के विहारके बहाने से उस नगरके बाहर चलीआई वहांसे वर्द्धमान पुरकी ओर कुछ दूर चले आने पर अग्निशिख उनके गमन को जानकर क्रोधसे आकाशमार्ग में उड़कर उनकेपीछे आया उसके आगमन के वेगसे होनेवाले शब्दको सुनकर रूपशिखा ने कहा कि हे आर्य्यपुत्र! मेरा पिता मेरे लौटाने के लिये पीछे से आरहा है इससे तुम यहीं ठहरो देखो मैं इसको अपनी मायासे कैसा मोहित करतीहूं यह तुमको घोड़े समेत देख नहीं सकेगा क्योंकि मैं अपनी विद्यासे तुम्हें ढके देतीहूं यह कहकर उसने घोड़े से उतरकर अपना पुरुषकासा वेष बनालिया और एक लकड़ीवाले से जो कि लकड़ी लेनें आयाथा उससे कहकर कुल्हाड़ी लेकर वह

लकड़ी काटने लगी इतने में अग्निशिखने वहां आकर आकाशसे उतरकर उसे लकड़हारा जानकर पूछा कि यहां तुमने इस मार्गसे जाते हुए कोई स्त्री पुरुष देखे हैं उसने कहा नहीं हम परिश्रम से दुखी होरहे हैं हमने कुछ नहीं देखा आज राक्षसोंकास्वामी अग्नि-शिख मरगया है उसके जलाने के लिये हम को बहुतसी लकड़ी काटनी हैं यह सुनकर वह मूर्ख राक्षस शोचनेलगा कि अरे क्यामैं मरगया हूं अब मुझे उस कन्या से क्या प्रयोजन है पहले अपने घर में जाकर पुरजनों से अपनी मृत्यु का वृत्तान्त तो पूछलूं यह शोचकर वह शीघ्रता से अपने घरको लौटगया और रूपशिखा अपने पति समेत हँसतीहुई वहां से चली अग्निशिखघरमें जाकर हँसतेहुए अपने परिजनों से अपने को जीताहुआ सुनकर प्रसन्न होकर क्षणभरही में फिर उसीके पीछे आगया तब घोरशब्दसे उस को फिर आयाहुआ जानकर रूपशिखा उसी प्रकार अपने पति को छिपाकर मार्ग में आतेहुए किसी हलकारे के हाथ से पत्रले-कर पुरुषका वेष बनाकर खड़ी होगई इतने में उस राक्षसने वहां आकर आकाशसेउतरकर उससे पूंछा कि तुमने कोई स्त्रीपुरुष इधर जातेहुए देखे हैंउसने कहा नहीं मैंने जल्दी में कुछ नहीं देखा अ-ग्निशिख नाम राक्षसों के राजा को उसके शत्रुओं ने मारा है अब कुछप्राण उसके बाकी हैं इसलिये उसने मुझे चिट्ठीदेकर अपनेभाई धूम्रशिखको राज्य देनेकेलिये बुलानेको मुझे भेजा है यह सुनकर अग्निशिख अपने मनमें क्या मुझे शत्रुओंने मारडाला है इसलिये घबड़ाकर अपने घरको लौटगया उसे यह ज्ञान नहीं हुआ कि मैं तो अभी भला चंगाहूं मारा कौन गया ब्रह्माकी सृष्टि में अपूर्व २ तामसी विचित्र जीवहैं घरमें जाकर हँसते हुए अपने परिजनों से

अपने मारेजानेके वृत्तान्त को सिंग्यासी जानकर वह मोहित होकर अपनी कन्याको भूजकर फिर नहीं आया रूपशिखाभी इसप्रकार अपने पिताको मोहितकरके शृङ्गभुजके साथ उसी घोड़ेपर सवार होलीनी ठीकहै सती स्त्रियां अपनेपतिके हितके सिवाय और कुछ नहीं जानतीं तब शृङ्गभुज अपनी प्रियासमेत उसीघोड़ेको दौड़ाकर बड़ी शीघ्रता से वर्द्धमानपुर में पहुँच गया वहां वीरभुज उसे स्त्री समेत आया सुनकर प्रसन्न होके मन्दिरसे बाहर उसके देखने को आया सत्यभामासे युक्त श्रीकृष्णजीके समान रूपशिखासेयुक्त शृङ्गभुजको देखकर राजाको नवीन राज्य मिलनेकासा सुखहुआ और घोड़े से उतरकर रूपशिखासमेत पैरोंपर गिरते हुए शृंगभुज को हृदयमें लगाकरराजाके नेत्रोंसे आंसू बहनेलगे और उन्हींआंसुओंसे मानों दुःखरूपी अमंगल को शान्त करके राजा बड़े उत्सवसे उसे भीतर लेगया और सुखपूर्वक बैठालकरबोला कि हे पुत्र! तुम कहां गये थे पिताके यह वचन सुन उसने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कह दिया और राजाके सन्मुख अपने निर्वासभुज आदि सब भाइयों को बुलाकर वह सुवर्ण का तीर रूपशिखा से उन्हें दिलवा दिया राजावीरभुज सब वृत्तान्तको जानकर और अपने सन्मुखही बाण का देना देखकर अपने वीरभुजादिक पुत्रों से विरक्तहोकर केवल शृंगभुज को ही अपना पुत्र मानकर उसपर अधिक स्नेह करने लगा और उसने शोचा कि जैसे इन भाई रूप शत्रुओं ने निरपराध शृंगभुजको द्वेषसे निकाल दियाथा उसीप्रकार इन सब पुत्रों की माताओंने मेरी निर्दोषप्रिया गुणवराको मिथ्या कलंकलगाया होगा इससे आजही चलकर निश्चय करनाचाहिये इसप्रकार शोचकर राजा रात्रिके समय अयंशोलेखा रानी के यहां परीक्षा करने

को गया वहां राजा के आने से प्रसन्न होकर मद्य पीके रति के उपरान्त श्रम से कुछ औंघकर रानी अयशोलेखा बकने लगी कि जो मैं गुणवरा को मिथ्या दोष न लगाती तो आज राजा मेरे यहां इस प्रकार क्यों आता उस दुष्टरानी के यह वचन सुन-कर राजा अपने विचारको पुष्ट जानकर क्रोधयुक्त होके वहांसे चला आया और अपने प्रधान पुरुषों को बुलाकर बोला कि गुण-वरा को गढ़े से निकाल के और स्नान कराके शीघ्र मेरे पास लेआओ उस ज्ञानी ने इसी समयतक अनिष्टके शान्ति करने के लिये गुणवराको गढ़े में रखनेकी आज्ञादीथी यह सुनकर वह लोग उसी समय गुणवराको निकालकर स्नान कराके और नवीनआभू-षण वस्त्र पहराकर राजा के निकट लेआये तब राजा बहुत काल के विरह के उपरान्त उसे देखकर उसके गले में लिपटगया और परस्पर आलिंगन से तृप्त न होकर वह रात्रि व्यतीत की राजाने उस समय गुणवरा से भृंगभुजका भी सम्पूर्ण वृत्तान्त कह दिया उसे सुनकर गुणवरा अत्यन्त प्रसन्न हुई राजा तो यहां आकर गुणवरा से मिलकर अत्यन्त आनन्द को प्राप्त हुआ और वहां रानी अयशोलेखा होश में आकर अपने छलको प्रकट हुआ जानकर अत्यन्त खेदको प्राप्तहुई प्रातःकाल राजा वीरभुज ने रानी गुणवरा के पास भृंगभुजको रूपशिखा समेत बुलवा भेजा उसने वहां आकर अपनी माताको गढ़े से निकलीहुई देखकर अत्यन्त प्रसन्न होकर रूपशिखा समेत बड़े आनन्द पूर्व्वक प्रणाम किया गुणवरा भी बहुत दूरदेश से आयेहुए बधू समेत अपने पुत्र को आलिंगन करके आनन्द की पराकाष्ठाको प्राप्तहुई उस समय राजा की आज्ञा से भृंगभुजने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त और जो २

रूपशिखा से विचित्र कार्य किये थे वह सबविस्तारपूर्वक कहे उस वृत्तान्त को सुनकर रानी गुणवरा बोली कि हे पुत्र! इस विचित्र चरित्रवाली रूपशिखाने तुम्हारेलिये क्या २ नहीं किया इसने अपने प्राणोंकी आशा भाईबन्धु तथा स्वदेश छोड़कर तुम्हारे प्राण बचाये और तुम्हें स्वदेश तथा बन्धुओं से मिलाया भाग्यवश से यह कोई देवी तुम्हारे लिये उत्पन्न हुई है इसने अपने आचरणों से सम्पूर्ण पतिव्रताओंको नीचे करदिया रानी के यह वचन सुनकर राजाने कहा कि बहुत ठीकहै और रूपशिखाने विनय से अपना शिर झुकालिया उस समय अयशोलेखा से मिथ्या दोष लगाया हुआ अन्तःपुरका रक्षक सुरक्षित सम्पूर्ण तीर्थ का भ्रमण करके राजाके द्वारपर आया प्रतीहार के मुख से उसका आना सुनकर राजा ने उसे भीतर बुलाके प्रणाम करतेहुए उसको बड़े आदर से अपने पास बैठाया और उसीकेद्वारा सम्पूर्ण दुष्ट रानियोंको बुलवाकर उसीसे कहा कि इन सबको तहखानों में बन्दकरदो यह सुनकर उन सब रानियोंको भयभीत देखकर रानी गुणवरा अत्यन्त कृपापूर्वक राजाके चरणोंमें गिरकर बोली कि हे आर्यपुत्र! इनको तहखाने में बन्द न करवाइये मेरे ऊपर कृपाकरिये मैं इन सबको भयभीत नहीं देखसक्ती हूं इसप्रकार प्रार्थना करके उसने राजा से उन सबका बन्धन छुड़वा दिया ठीकहै विरोधियों पर दया करना ही महात्मा लोगोंका बदलालेना है तब वह सम्पूर्ण रानी लज्जित होकर अपने अपने घरको चली गई और राजा ने रानी गुणवरा को अत्यन्त सुशील मानकर अपने को महा धन्य माना कि जिसे ऐसी स्त्री मिली इस के उपरान्त राजा ने निर्वास आदिक अपने सम्पूर्ण पुत्रों को बुलवाकर युक्तिपूर्वक उनको नि-

कालने के लिये कहा कि मैंने सुनाहै कि तुम सब पापियों ने कोई पथिक वैश्य मारडाला है इससे तुम लोग यहां मतरहौ सम्पूर्ण तीर्थोंका पर्यटन करो राजाके यह वचन सुनकर वह सब उसे समझा न सके क्योंकि स्वामी के हठ करने पर कौन विश्वास करासक्ता है तब उन सब भाइयों को जाते देखकर भृंगभुज कृपा से आंसू भरकर अपने पितासे बोला कि हे तात! आपकृपा करके इनके एक अपराधको क्षमा करिये और यहकहकर चरणोंपर गिरपड़ा राजा भी उसके विनय को देखकर और बाल्यावस्थाही में व्रज में रहने वाले श्रीकृष्ण भगवान् के समान सम्पूर्ण शत्रुओं के मारने में समर्थ जानकर उसके वचन स्वीकार करलिये और वह निर्वासभुज आदि सब भाई भी उसको अपने प्राणोंका रक्षक जाननेलगे सब प्रजालोग भी भृंगभुज के ऐसे २ उत्तम गुणोंको देखकर उसपर बड़ा अनुराग करनेलगे तदनन्तर राजाने भृंगभुज को गुणों में सबसे बड़ा जानकर उसके सम्पूर्ण बड़े भाइयों को छोड़कर उसीको युवराज पदवीदी तब युवराज पदवी को पाकर भृंगभुज अपने पितासे आज्ञालेकर सम्पूर्ण सेनाको साजकर दिग्विजय करनेको गया और अपनी भुजाओं के पराक्रमसे सम्पूर्ण पृथ्वी के राजा लोगों को जीतकर उनको अपने साथ में लेकर और दिशाओं में अपनी कीर्तिको फैलाकर लौटआया इसप्रकार सम्पूर्ण पृथ्वी को अपने वशमें करके भृंगभुज अपने भाइयोंसमेत सम्पूर्ण राज्य के कार्यों को करके अपने माता पिताको प्रसन्नकरनेलगा तब उसके पिता माता राजा रानी भी निश्चिन्तहोकर आनन्दपूर्वक ऐश्वर्यका भोग करनेलगे और भृंगभुज भी सम्पूर्ण ब्राह्मणों को दानादि से प्रसन्न करताहुआ रूपवती सम्पत्ति के सं-

मानरूप शिखा के साथ सुखपूर्व्वक रहनेलगा इसप्रकार से सती स्त्रियां सब रीतियों से अपने पतिका सेवन करती हैं जैसे कि गुणवरा और रूपशिखा दोनों सास वहू ने की ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे त्रिपञ्चाशत्तमःप्रदीपः ५३ ॥

अथदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेचतुःपञ्चाशत्तमःप्रदीपः ५४ ॥

पठनात्प्राप्यते विद्यानक्लेशैर्नमनोरथैः ।
जलेयथाप्टदासेतुर्वध्यमानोनसिद्धयति ५४ ॥

(अर्थ) विद्या पढ़ने से प्राप्त होती है कुछ मनोरथों से वा क्लेश व खेद आदिकों से नहीं आती है जैसे वालू की भीत से जल नहीं रोका जाता ५४ ॥

प्रतिष्ठान देश में तपोदत्तनाम एक ब्राह्मणथा उसने बाल्यावस्था में पिताके ताड़ना करनेपर भी विद्या नहीं पढ़ी जब अवस्था अधिकहुई तब सबलोगोंसे अपनीनिन्दा सुनकर पश्चात्ताप करके विद्याकी प्राप्तिके लिये श्रीगंगाके तटपर जाके तपस्या करने लगा वहां उसे उग्रतप करताहुआ देखकर इन्द्र ब्राह्मणका स्वरूप धारण कर उसके निवारण करने के लिये उसके निकट आये और उसीके आगे किनारेपर की वालू लेकर गंगाजी में फेंकनेलगे यह देखकर तपोदत्त मौनको त्यागकरके बोला कि हे ब्राह्मण! यह तुम क्या करते हो उसके वहुत पूछनेपर इन्द्रने कहा कि लोगों के पारजानेके लिये मैं गंगामें पुल बनारहाहूं यह सुनकर उसने कहा कि हे मूर्ख! प्रवाह से वहजानेवाली वालूसे कहीं गंगाजीकापुल बनसक्ताहै तब इन्द्रने उससे कहा कि जो तुम यह जानते हो तो विना पढ़नेके व्रत उपवासादि करके विद्याके उपार्जन करने को क्यों उद्युक्त हुए हो अक्षरों के विना लिखना और अध्ययन के विना विद्या खरगोशके

सींग और आकाश के चित्रके समान है इन्द्रके यह वचन सुनके तपोदत्त उन वचनों को यथार्थ जानकर तपको त्यागकर अपने घर चलागया ॥

इति श्री दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेचतुःपंचाशत्तमःप्रदीपः ५४ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेपंचपंचाशत्तमःप्रदीपः ५५ ॥

फलंहिभुज्यतेपुंभिः पूर्वजन्मसमुद्भवं ।
प्रत्यक्षंदर्शयामास वैद्यंतत्फलगौरवम् ५५ ॥

(अर्थ)---मनुष्य निज२पूर्वजन्मका संचितकर्म फल भोगते हैं जैसे वैद्यको एक साधरण मनुष्य राजा बनेने निज तपका फल आँखों से दिखाया ५५ ॥

विलासपुर नाम नगर में विनयशील नाम एक बड़ा सुशील राजाथा उसके प्राणों से भी प्यारी कमलप्रभा रानीथी राजा बहुत कालतक सुखपूर्वक उस रानी के साथ विहार करताहुआ रहा समय पाकर सुन्दरता की नष्ट करनेवाली वृद्धावस्था उस राजा के प्रकट हुई वृद्धावस्था को देखकर राजा शोचने लगा कि पाले से मारे हुए कमल के समान अपना म्लान मुख मैं रानीको कैसे दिखाऊं हा धिक्कार है मेरा तो मरनाही अच्छा है यह शोचकर उसने तरुणचन्द्रनाम वैद्यको सभामें बुलाकर कहा कि हे तरुणचन्द्र! तुम हमारे बड़े भक्तहो और बड़े चतुरहो इससे मैं तुम से पूछता हूं कि क्या कोई ऐसी भी युक्ति है जिससे वृद्धावस्था निवृत्त होजाय राजा के यह बचन सुनकर केवल कलाओं सेही युक्त वह कुटिल तरुण चन्द्र अपने को परिपूर्ण करने की इच्छा से शोचनेलगा कि यह राजा मूर्ख है इससे प्रथम इसके पाससे खूब धन लेनाचाहिये फिर जैसा होगा तैसा देखाजायगा यह शोचकर वह राजासे बोला कि

हे स्वामी! पृथ्वी में एक बड़ाभारी गढ़ा खुदवाकर आठ महीनेतक आप अकेले उसमें रहिये और मेरी दी हुई औषध खाइये तो आप की वृद्धावस्था दूरहोजाय वैद्यके यहवचन सुनकर राजाने शीघ्रही पृथ्वी में एक बड़ाभारी गढ़ा बनवाया ठीकहै विषयके लोभी मूर्ख लोग विचार नहीं करसक्ते हैं राजाको वैद्यकी आज्ञा में उद्यत देख कर मंत्रियों ने कहा कि हे महाराज! प्राचीनलोगों के सत्त्व तपतथा दमसे और युगके प्रभावसे रसायन सिद्ध होती थी आजकल तो रसायन केवल सुनी है देखी नहीं है और जो कोई करताभी है तो सामग्री के न मिलने से विपरीत फल मिलताहै इससे आपकोइस के कहने में आना योग्य नहीं है क्योंकि धूर्तलोग बहुधा अज्ञानों को ठग २ कर खाया करते हैं आप विचारिये तोसही क्या गईहुई अवस्था भी फिर लौटसक्ती है मंत्रियों के इत्यादिक अनेक वचन धनीलोग तृष्णा से भरेहुए राजाके हृदयमें नहीं समाये और वह उस वैद्यके कहने से अपने सम्पूर्ण ऐश्वर्य को छोड़कर उस गढ़ेमें अकेलाही गया केवल वैद्य अपने नौकरके साथ औषधादि देनेको उसके पास जाताथा राजा उस अन्धकार मय गढ़े में अपने हृदय से अधिक होने के कारण निकलेहुए अज्ञान में मानों कुछकाल तक रहा उसमें रहते २ जब छःमहीने व्यतीत होगये तब वह वैद्य राजाकी वृद्धावस्था को और भी अधिक देखकर राजा के समान आकृतिवाले किसी युवापुरुषको तुझे राजा बनाऊंगा यह कहकर सुरंग खोदकर रात्रिके समय उसी गढ़ेमें लेगया और सोतेहुए राजा को मारकर वहां से लेकर किसी अन्धे कुएँमें छोड़आया और उस तरुणपुरुषको वहीं बैठालकर वह सुरंग बन्दकरदीनी ठीकहै मूर्ख लोगों में निरर्गल अवकाशपाकर उद्दंड साधारणलोग कौनसा

साहस नहीं करते हैं तब उस वैद्यने दूसरे दिन राजाके सम्पूर्ण परिकरके लोगों से कहा कि मैंने छःमहीने में राजाको युवाकरदिया और दोमहीनेमें इसकारूपभी बदलजायगा इससे तुमलोग कुछ दूरसे राजा की चेष्टा देखो यह कहकर उसने सम्पूर्ण लोगोंको बुलाकर उस युवा पुरुषसे सबके नाम और कार्य बतलाये इस युक्तिसे उसने दोमहीने तक उस युवापुरुषको रानीपर्यन्त सम्पूर्ण परिकर पहिचनवादिया और सुन्दर भोजनों से उसे पुष्ट करके आठ महीने के बाद बाहर निकालकर सब से कहा कि देखो राजा अजर होगया उस समय सम्पूर्ण लोग राजाको औषध से अजरहुआ जानकर उसको सब ओर से घेरकर खड़े होकर देखने लगे तदनन्तर वह तरुणपुरुष स्नान करके बड़े उत्सवपूर्वक मन्त्रियों के साथ सम्पूर्ण राज्यकार्य करनेलगा तबसे उसका नाम राजा अजर होगया और सम्पूर्ण रानियों के साथ क्रीड़ा करताहुआ राज्यके सुखों को भोगनेलगा वैद्य के छलको न जानकर सब लोगोंने यहीजाना कि यह वही राजा है रसायनके प्रभावसे इसका स्वरूप बदलगया है तब राजा अजरसेन से सम्पूर्ण प्रजा तथा रानी कमलप्रभा को अपने ऊपर अनुरक्त करके अपने मित्रोंसमेत राज्य सुखको भोगनेलगा उसने अपने परममित्र भेषजचन्द्र तथा पद्मदर्शन को इतने हाथी घोड़े और रत्नदिये कि वह राजाके समान ऐश्वर्य्यवान् होगये परन्तु तरुणचन्द्र नाम वैद्यको केवल औषधि के लिये रक्खा और सत्य तथा धर्म्म से उसको च्युत जानके उसपर विश्वास नहीं किया एकदिन उस वैद्यने एकान्तमें राजासे कहा कि तुम मुझे कुछभी नहीं गिनतेहो स्वतन्त्रतासे जो चाहतेहो सो करतेहो क्या वहदिन भूलगया जो मैंने तुमको राजा बनाया था यह सुनकर राजा अजर

ने वैद्यसे कहा कि अरे तुम वड़े मूर्खहो कौन किसको करताहै और कौन किसको देताहै अपने पूर्वजन्मके कर्महीं सब करते हैं और देते हैं इससे तुम अभिमान न करो यहमुझे तपके प्रभाव से राज्य मिलाहै यह बात मैंतुमको थोड़ेही कालमें प्रत्यक्ष दिखादूंगा उसके यह वचन सुनकर उस वैद्यने भयभीत होकर शोचा कि यह तो धृष्टतारहित वड़ाधीर ज्ञानी मालूम होताहै जो गुप्तवातका जानना राजा लोगों को वशमें रखनेका मुख्यकारण होताहै वह भी इसके सम्मुख नहीं चलता इससे इसीके अनुकूल वनारहना चाहिये और देखूं यह क्या अपने तपकाप्रभाव मुझे दिखावेगा इसप्रकार शोचकर वह वैद्य चुपहोगया दूसरेदिन राजाअजर तरुण चन्द्रादिकों को लेकर भ्रमण करने को निकला भ्रमण करते २ नदी के तीर पहुँचा वहां नदीके प्रवाहमें वहतेहुए पांच सुवर्ण के कमल उसने देखे सेवकोंके द्वारा वह कमल मँगवाकर और देखकर उसने अपने पास खड़ेहुए तरुणचन्द्र वैद्य से कहा कि तुम नदी के किनारे २ जाकर इन कमलों के उत्पन्नहोने का स्थान देखआओ और देखकर शीघ्रही मुझ से कहो मुझे इन अद्भुत कमलों के लिये वड़ा आश्चर्य्य होरहाहै तुम वड़े चतुरहो इसीसे मैं तुमको भेजता हूं यह कहकर राजा तो अपने घरको चलाआया और तरुणचन्द्रने विवश होकर उसी नदी के किनारे चलते २ नदी के तटपर एक शिवजी का मन्दिर और एक वड़ाभारी वरगदका वृक्ष जिसपर कि किसी मनुष्य के हाड़ोंकी पँजरी लटकरहीथी उसे देखा और वहां थकके स्नानकरके श्री शिवजीका पूजनकरके कुछ देरतक विश्रामकिया उससमय अकस्मात् मेघ बरसनेलगा जल वरसने से वरगद की शाखाओं में लटके हुए मनुष्य के पिंजरसे जो जलके विन्दु नदी

में गिरे वह सुवर्ण के कमल होगये यह आश्चर्य देखकर तरुणचन्द्र शोचने लगा कि यह क्या आश्चर्य्य है इस निर्जन वनमें किससे पूछूँ अथवा ईश्वर की अनेक आश्चर्य्यों से भरीहुई सृष्टिको कौन जानसकता है मैंने सुवर्ण के कमलोंका उत्पत्ति स्थान तो देखही लिया है अब इस पांजरको नदीके जलमें फेंकदूं तो एक तो धर्म्म होगा और इसकी पीठपर कमल उत्पन्नहोंगे यह शोचकर उसने वह पंजर जलमें फेंक दिया और वह दिन वहीं व्यतीतकरके कई दिनों में वहां से धीरे २ चलकर विलासपुर पहुँच के राजद्वार में अपने आगमनका निवेदन करवाया फिर द्वारपालसे आज्ञापाकर राजा अजरके निकट पहुँचके तरुणचन्द्र जैसे कि कुशल पूछकर चाहताही था कि मैं सब वृत्तान्त कहूँ वैसेही राजाने वहां से सब लोगों को हटाकर उससे कहा कि हे मित्र! तुमने सुवर्ण के कमलों के उत्पत्ति स्थानको देखा और उस उत्तमक्षेत्र में तुमने मनुष्यका पांजर लटकता हुआ भी देखा वह मेरा पूर्वजन्म का शरीरहै वहां मैंने पैरों से बरगदको पकड़के नीचेको मुखकरके तपकरते २ शरीर सुखाकर त्याग करदियाथा उसी तपके माहात्म्यसे पांजरसे गिरेहुए जलके विन्दु सुवर्ण के कमल होजाते हैं और तुमने जो वह पांजर जलमें फेंकदिया सो बहुत उचितकिया तुम मेरे पूर्वजन्म के मित्र हो और यह मेघजचन्द्र तथा पद्मदर्शनभी मेरे पूर्वजन्म के बड़े मित्र हैं हे मित्र! उसी तपके प्रभावसे मुझे ज्ञान तथा राज्य प्राप्त हुआ है और पूर्वजन्म का स्मरण भी बना है मैंने युक्तिपूर्वक यह तुमको प्रत्यक्ष दिखा दिया और पांजर फेंकने की पहचान भी तुम्हारे निश्चयके लिये तुमसे कहदी इस से तुम यह अभिमान छोड़दो कि मैंने इसको राज्य दियाहै और अपने चित्त में खेदभी मतकरो

प्राक्तन कर्मके बिना कोई किसीका दाता नहीं है मनुष्य जबसे गर्भ में आताहै तभी से अपने प्राक्तन कर्मरूपी वृक्षके फल को खाताहै राजा अजरके यह वचन सुन कर और यथार्थ जानकर तरुणचन्द्र उसीदिन से सन्तोषपूर्वक उसका सेवन करने लगा और राजा अजर भी आदरपूर्वक उसे बहुतसा धन देकर रानी तथा मित्रों समेत पुण्य के प्रभावसे मिलेहुये अकंटक राज्यका सुखपूर्वक भोग करने लगा ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेपञ्चपञ्चाशत्तमःप्रदीपः ५५ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेषट्पञ्चाशत्तमःप्रदीपः ५६ ॥

विधिःस्वरोचकंकर्म लृभिःकारयतिप्रभुः ।
अरोचकंप्रकुर्वाणश्चिराजीवोयथामृतः ५६ ॥

(अर्थ) विधाता निज रुचिके अनुकूलही लोगों से कर्म्म क-रताहै अन्य नहीं जैसे अरोचक कर्म्म करता चिरजीवी वैद्य मृत्यु को प्राप्त हुआ ५६ ॥

चिरायुनाम नगर में चिरायु नाम एक बड़ा धनवान् चिरंजीवी राजा था उसके बुद्धदेव का अवतार नागार्जुन नाम दयालुदानी तथा विज्ञानी एक मन्त्री था वह सम्पूर्ण ओषधियों की युक्ति जानताथा इससे उसने रसायन बनाकर अपने को और राजा चिरायुको अजर तथा चिरजीवी करलियाथा एकसमय नागार्जुन का एक पुत्र जो कि सम्पूर्ण पुत्रोंमेंसे उसे अधिक प्रियथा मरगया उस दुःखसे व्याकुल होकर नागार्जुनने मनुष्योंकी मृत्युकी शांति के लिये अपने तप तथा दानके प्रभावसे बहुतसी ओषधियां मि-लाकर अमृत बनाया एकही औषध उसमें मिलाने को बाकी थी उसके मिलाने का समय आवेही था कि इन्द्रने यह जानकर देव-

ताओं से सलाह करके अश्विनीकुमार से कहा कि नागार्जुन से जाकर हमारे यह वचन कहौ कि तुम मन्त्री होकर भी यह क्या अन्याय करते हो क्या तुम ब्रह्माके भी जीतने को उद्यत हुयेहो क्योंकि ब्रह्माने मनुष्य मृत्युके लिये उत्पन्न किये हैं तुम अमृत बनाकर उन्हें भी अमर बनाया चाहतेहो ऐसा करने से देवता और मनुष्यों में भेदही क्या रहैगा और पूज्यपूजक के अभावसे संसार की मर्यादा नष्ट होजायगी इससे हमारे वचनको मानकर तुम अमृत मत बनाओ नहीं तो देवता लोग कुपित होकर तुमको शाप देंगे और जिस पुत्रके शोकसे यह यत्न तुमने कियाहै वह स्वर्ग में सुखपूर्वक रहताहै यह कहकर इन्द्रने अश्विनीकुमार को नागार्जुन के पास भेजा तब अश्विनीकुमारने नागार्जुन के पास आकर अर्घपाद्यादि सत्कारके गृहण करनेके पीछे इन्द्रका संदेशा उसे सुनाया और यह भी कहा कि तुम्हारा पुत्र स्वर्ग में सुखपूर्वक वर्तमानहै इन्द्रके सन्देशे को सुनकर नागार्जुन उदासीन होकर शोचनेलगा कि जो मैं इन्द्रका बचन नहीं मानूंगा तो देवता तो अलग रहें पहले यह अश्विनीकुमारही मुझे शाप देंगे इससे अमृत को जाने दो मेरा मनोरथ सिद्ध नहीं होगा और मेरा पुत्र तो अपने पुण्यों से उत्तम गति को पहुँचही गया इस प्रकार शोचकर उसने अश्विनीकुमार से कहा कि मैंने इन्द्र की आज्ञा मानली अब मैं अमृत नहीं बनाऊंगा जो आप न आजाते तो मैं पृथ्वी के सम्पूर्ण जीवों को पांचही दिन पीछे अजर अमर करदेता यह कहकर नागार्जुनने अश्विनीकुमार के आगेही वह सिद्ध होनेवाला अमृत पृथ्वी में गाड़दिया तब अश्विनीकुमार ने इससे आज्ञा लेकर इन्द्र के पास जाके उनसे यह सब वृत्तान्त कहकर उनको प्रसन्न किया

इसके उपरान्त राजा चिरायुने जीवहरनाम अपने पुत्रको युवराज पदवीदी युवराजपदवी पाकर वह जीवहर प्रसन्न होकर अपनी धनपरा नाम माताको प्रणाम करने गया धनपराने पुत्रको प्रसन्न देखकर कहा कि हे पुत्र ! इस युवराजपदवी को पाकर चलेगये परन्तु राज्य किसी को भी नहीं प्राप्तहुआ क्योंकि नागार्जुन ने इसको ऐसी रसायन बनाकरदी है कि जिससे यह आठसौ वर्षका पूरा होचुकाहै न जाने अभी कितने अल्पायु इसके राज्य में युव. राज होंगे यह सुनकर अपने पुत्रको उदासीन देखकर उसने कहा कि जो तुम राज्य लेना चाहतेहो तो यह उपायकरो कि नागार्जुन प्रतिदिन सम्पूर्ण आह्निक करके भोजन के समय यह ढंढोरा पिट वाताहै कि कौन याचक है किसे क्या दियाजाय और कौन क्या चाहताहै उस समय तुम जाकर उससे कहौ कि तुम अपना शिर मुझे देदो तब वह सत्यवक्ता अपना शिर काटकर तुमको देदेगा इसप्रकार उसके मरजाने पर उसके शोकसे राजा कै तो मरजायगा या वनको चलाजायगा इसरीति से तुमको राज्य मिलैगा इसके सिवाय और कोई उपाय राज्य मिलने का नहीं है माता के यह वचन सुनकर जीवहरने प्रसन्न होकर यही उपाय करनेका निश्चय किया ठीकहै—खेदका विषयहै कि राज्यके लोभ से बन्धुता का स्नेह भी नष्ट होजाताहै इसके उपरान्त दूसरे दिन जीवहरने भोजनके समय कौन क्या मांगता है इत्यादि बचन कहतेहुए नागार्जुनसे उसका शिर मांगा युवराजकी यह याञ्चा सुनकर उसने कहा कि हे वत्स! मेरे इस शिर को लेकर तुम क्या करोगे मांस हड्डी तथा बालों का समूह रूप यह शिर तुम्हारे किसकाम आवेगा इतनेपर भी जो तुमको इससे कुछ प्रयोजन नहीं है तो तुम काटलो यह

कहकर उसने अपनी गर्दन उसके आगे रखदी रसायन से दृढ़ उसकी ग्रीवाके काटने में राजपुत्र के बहुत से खड्गों के टुकड़े२ होगये परन्तु ग्रीवा नहीं कटी उससमय इस वृत्तान्त को सुनकर राजा चिरायु भी वहां आकर नागार्जुन को शिर देने से निवारण करनेलगा तब उसने कहा हे राजा! मुझेअपने पूर्वजन्मों का स्मरण है मेरे निन्नानबे जन्महो चुके हैं उन सब जन्मों में मैंने अपना शिर दियाहै यह सौवां जन्म है इसमें भी मुझे शिर देनाहै इससे आप मुझे निषेध न कीजिये मेरे पाससे अर्थी कभी विमुख होकर नहीं लौटता है अब मैं अपना प्राण शिर तुम्हारे पुत्रको दिये देताहूं तुम्हारे देखने के लिये मैंने इतनी देरलगाई है यह कहकर और राजासे मिलकर उसने अपने पाससे एक चूर्ण लेकर राजपुत्र के खड्ग में लगादिया उस खड्गके प्रहारसे राजपुत्रने नालसे कमल के समान नागार्जुनका शिर गर्दन से अलग काटलिया उससमय सम्पूर्ण लोग रोदन करनेलगे और राजा चिरायु भी प्राणदेनेको उद्यतहुआ तब यह आकाशवाणी हुई कि हे राजा! ऐसा अनर्थ न करो यह तुम्हारा मित्र नागार्जुन शोक करनेके योग्य नहीं है यह मुक्तहोकर बुद्धके समान उत्तमगतिको प्राप्त हुआहै यह आकाश-वाणी सुनकर राजा चिरायु बहुतसा दान करके शोकसे राज्यको त्यागके बनको चलागया और वहां कुछकाल तपकरके परमगति को प्राप्त हुआ और उसका पुत्र भी जीवहर राज्यपर बैठतेही नागा-र्जुन के पुत्रों ने अपने पिताका बध स्मरणकरके राज्यमें भेदकरवा के उसे मरवाडाला तब जीवहर के शोकसे उसकी माता धनपराका भी हृदयफटगयाठीकहै अनुचित मार्गोंसे चलनेवालोंका कल्याण कैसे होसक्ताहै जीवहरको माता समेत मराहुआ देखकर मंत्रि

ने राजा विराट के अन्य रानी से उत्पन्नहुये शतायुनाम पुत्रको राज्यपर बैठाया इसप्रकार नागार्जुन से मनुष्यों की मृत्युके नाश के लिये बनायेहुये अमृत को देवतालोग न सहके और नागार्जुन भी मृत्युको प्राप्तहुआ इससेब्रह्माका बनायाहुआ यह अनित्य जीव लोक इस्सहदुःखों से भराहुआ है जो ब्रह्मा नहीं चाहते हैं वह सैकड़ों यत्नों से भी कोई नहीं करसक्ता है ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेषट्पंचाशत्तमः प्रदीपः ५६ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्तपंचाशत्तमःप्रदीपः ५७ ॥

सपत्नीनापकर्तव्याऽपकारंकुरुतेपरम् ।
यथाहिकाव्यालंकारामहद्वैरंचकारह ५७ ॥

(अर्थ) सपत्नी का अपकार करना वह भी फिर वैरसे महान् अपकार कराती है-जैसे-(काव्यालंकारा) ने अधिक संगमा को दो फल खाने से वैर साधनकिया ५७ ॥

अलका से भी महासुन्दर एक ऐरावती नाम नगरी है उस में परित्याग सेन नाम राजा था उसके प्राणों के समान दो रानी थीं एक तो उसी के मंत्री की पुत्री अधिकसंगमा नाम और दूसरी किसी राजा की पुत्री काव्यालंकारा नाम उस राजाके कोई पुत्र न था इसी से अपनी दोनों रानियों को साथ लेकर निराहार होके कुशों के आसनों पर बैठकर उसने तप करना प्रारम्भकिया उसके तप से प्रसन्नहुई भगवती पार्वतीने दोदिव्य फलदेकर उससे कहा कि हे राजा! उठो यह दोनों फल अपनी रानियों को देदो तुम्हारे दो वीर पुत्र होंगे यह कहकर पार्वती जी अन्तर्द्धान होगईं और राजा ने उठकर अपने हाथ में दोनों फलों को देख के रानियों से स्वप्न का वृत्तान्त कहा और प्रसन्नता पूर्वक श्री भगवती जी का

पूजन किया और पारण किया तदनन्तर मंत्री के गौरव से पहले अधिकसंगमा नाम रानी के यहां जाकर रात्रिके समय उसे एक फल खिला के उसी के साथ निवास किया और दूसरा फल दूसरी रानी के लिये अपने शिरहाने रखलिया जब राजा सोगया तो रानी अधिकसंगमाने उठकर अपनेही दो पुत्रों के होनेकी इच्छा से उस फलको भी खालिया क्योंकि स्त्रियों को अपनी सौतों से स्वाभाविक बैरहोताहै प्रातःकाल उठकर उस फलको ढूंढ़तेहुए राजासे रानी ने कहदिया कि वह फल भी मैंनेही खालिया तब राजा उदासीन होके दिन व्यतीत करके रात्रिके समय रानी काव्यालंकाराके यहांगया और जब उसने फलमांगा तब राजाने कहदिया कि मेरे सोजाने पर तुम्हारी सौत दूसराफल भी खागई राजा के यह वचन सुनकर और पुत्रोत्पत्ति के निमित्त उस फल को न पाकर वह रानी चित्तमें अत्यन्त दुःखित होके चुपहोरही कुछदिनों के व्यतीत होने पर रानी अधिकसंगमा गर्भवती हुई और समय पूरे होने पर एकसाथही उसके दो पुत्र हुए राजा परित्यागसेन ने पुत्रों की उत्पत्ति से अपने मनोरथ को सफल जान के अत्यन्त प्रसन्न होकर बड़ा उत्सव किया और कमल के समान नेत्र वाले अद्भुत स्वरूपवान् अपने बड़े पुत्र का नाम इन्दीबरसेन रक्खा और छोटे का नाम अनिच्छासेन रक्खा क्योंकि उसकी माता ने राजा की अनिच्छा से वह फल खाया था उनदोनों बालकों को देखकर इसके साथ मुझे बदला अवश्य लेना चाहिये कि किसी युक्तिसे इनदोनों बालकोंका नाश होजाय इसप्रकार शोचकर वह उसका उपाय ढूंढ़नेलगी जैसे जैसे वह दोनों बालक बढ़े तैसे तैसे उस रानी के हृदय में बैररूपी वृक्षभी बढ़तागया क्रम से जब वह

दोनों तरुणहुए तब दिग्विजय की इच्छा से अपने पिता से बोले कि हमदोनों अस्त्रविद्या सीखचुके और युवावस्था भी आगई तो इन व्यर्थ भुजाओं को लेकर क्याकरें विजय की इच्छा से रहित क्षत्रीकी भुजा तथा यौवनको धिक्कारहै इससे हे तात! हमें दिग्विजयके लिये आज्ञादीजिये पुत्रों के यह वचन सुनकर राजा परित्यागसेन ने प्रसन्न होकर उनकी यात्रा को आरम्भकरदिया और यह भी कहदिया कि जो तुम्हें मार्ग में कोई संकटपड़े तो भगवती पार्वती जी का स्मरण करना क्योंकि उन्हीं की कृपा से तुमदोनों का जन्महुआ है यह कहकर बहुत सी सेना तथा जमींदार साथमें देकर उन्हें बिदाकिया और पीछेसे अपने प्रधानमंत्री उन बालकों के मातामह बुद्धिमान् प्रथमसंगमा को भेजा तब महाबलवान् उन दोनों राजपुत्रोंने जाकर पहले पूर्वको विजयकिया अपने पुत्रों के इस वृत्तान्तको सुनकर राजा परित्यागसेन रानी अधिकसंगमा समेतप्रसन्नहुआ और रानी काव्यालंकारा द्वेषरूपी अग्नि से अत्यन्त संतप्तहुई तब उसने सन्धि विग्रह के अधिकारी कायस्थको बहुतसा धन देकर राजाकी ओरसे ज़मींदारों को जोकि उसके साथ में थे यह पत्र लिखवाया कि वह दोनों मेरे पुत्र अपनी भुजाओं के बल से सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतकर मुझे मारकर राज्य लेना चाहते हैं इससे जो तुम लोग मेरे भक्तहो तो विना विचारेही इन दोनों को मारडालो यह लिखवाकर पत्र देकर हलकारेको भेज दिया उसहलकारे ने छिपकर सेनामें जाके वहपत्र उन छोटे राजाओंको जो उन पुत्रों के साथ उनकी रक्षाके लिये राजाने भेज दिये थे दे दिया उन लोगों ने वह पत्र बांचकर राजनीति को अत्यन्त कठिन समझकर और राजाकी आज्ञाका उल्लंघन करना उचित न जानकर

रात्रिके समय सलाहकरके उन दोनों के मारनेका निश्चय किया यद्यपि राजपुत्रों के गुणों से वह सब प्रसन्न थे तथापि राजा की आज्ञासे विवशहोकर उन लोगोंने यह विचार किया कि इसवार्त्ता को किसी मित्रके मुखसे जानकर उन राजपुत्रों का मातामह प्रथम संगमनाम महामंत्री उन्हें घोड़ों पर सवार कराके उनको लेकर भागा रात्रिकेसमय मार्ग न जानने के कारण वह तीनों विन्ध्याचलके वनमें चलेगये वहां रात्रिके व्यतीत होजाने पर चलते २ मध्याह्नके समय घोड़े प्यासे होकर जल न पाकर मरगये और वह वृद्धमंत्री भी क्षुधा तथा तृषा से तालूके सूखने के कारण अपनेदौहित्रोंके देखतेही मरगया घोड़ोंको तथा अपने मातामह को मरा हुआ देखकर वहदोनों शोचनेलगे कि देखो हमारे पिताने हमारी उस दुष्ट सौतेली माताके कहने से अपराधके बिना भी हम लोगों की यह दशा की इसप्रकार शोचकर दुःखित होके और पिता के उपदेश को स्मरण करके उन्होंने भगवती पार्वतीजीका ध्यान किया भक्तवत्सल भगवती के ध्यान करतेही क्षुधा तृषा तथा श्रमका नाश होगया और उनके शरीर में बल बढ़गया तब वह दोनों भगवती जीकी कृपाके विश्वाससे सावधान होके भगवती विन्ध्यवासिनी के दर्शन करनेको चले और मार्गके श्रम के विनाही वहां पहुँच कर भगवती के आगे निराहार होके भगवतीकी आराधना करने के लिये तप करनेलगे इस बीचमें वह सम्पूर्ण राजालोग सेना में मिलके उन दोनों राजपुत्रोंके मारने के लिये उनके डेरेपर आये वहां मातामह के साथ उनको भागाहुआ जानकर मंत्र के खुलजाने से भयभीत होके राजापरित्यागसेन के पास चलेआये और वहां राजाको सम्पूर्ण लेख दिखाकर सब वृत्तान्त वर्णन किया

राजा वह सब वृत्तान्त सुनकर घबराकर क्रोधपूर्वक बोला कि यह लेख मेरे भेजेहुए नहीं हैं यह तो कोई इन्द्रजाल है हे मूर्खो! क्या तुम इतनाभी नहीं जानतेहो कि मैं इतने कठिन तप से प्राप्तहुये अपने पुत्रोंको मरवाडालता तुमने तौ उन्हें मारही डालाहोता परंतु वह अपने पुण्यसे बचगये और उनके मातामहने मंत्रीहोने का फल दिखाया उनसे इसप्रकार कहके राजाने भागे हुये मिथ्यालिखनेवाले उसकायथ को बहुतदूर से पकड़ मँगवाकर सबहाल पूछ कर मरवाडाला और उस दुष्टकार्य्य करनेवाली रानी काव्यालंकारा को पुत्रघातिनी जानकर तहखाने में बन्द करवादिया परिणाम को बिना शोचे द्वेषसे अन्धेहोकर सहसा कियागया पाप विपत्ति का कारण क्यों न होगा जो राजालोग राजपुत्रों के साथ में से लौट आयेथे उनको राजाने उनके राज्योंसे निकाल करके उनके स्थानापन्न दूसरोंको करदिया और रानी अधिक संगमा समेतदुःखितहोकर अपने पुत्रोंको ढूंढ़ताहुआ राजा भगवती का स्मरण करनेलगा इस बीच में राजपुत्र इन्दीवरसेन पर तप से प्रसन्न हुई भगवती विन्ध्यवासिनीने स्वप्न में एक खड्ग देकर उससे कहा कि इस खड्ग के प्रभाव से तुम दुर्जय शत्रु को भी जीतोगे और जो कुछ इच्छाकरोगे वह सब भी इस खड्गके प्रभाव से मिलैगी और इसीसे तुम दोनोंके सब मनोरथ भी पूर्णहोंगे यह कहकर भगवती के अन्तर्द्धान होजानेपर इन्दीवरसेन ने जगकर अपनेहाथमें खड्ग देखा और अपने भाई से स्वप्नका वृत्तान्तकहके तथा खड्ग दिखाकर उस समेत प्रसन्नहोके वनके फलफूलों सेही व्रतका पारण किया तदनन्तर भगवतीकी कृपासे श्रमरहित होकर वह दोनोंभाई भगवतीको प्रणामकरके आनन्दपूर्वक खड्गको लेकर वहांसे चले

बहुत दूर चलकर एक बड़ासुन्दर नगरमिला जिसके सुवर्णमयगृहों को देखकर सुमेरुपर्व्वत की भ्रांति होती थी उसनगर के द्वारपर एक बड़ाभयङ्कर राक्षस खड़ाथा उससे इन्दीवरसेनने पूँछा कि इस नगर का क्यानाम है और इसका स्वामी कौन है तब उस राक्षसने कहा कि इस नगरका शैलपुर नाम है और यमदंष्ट्रनाम हमारा स्वामी यहां का राजा है राक्षस के यह वचन सुनकर यमदंष्ट्र के मारने की इच्छा से इन्दीवरसेन अपने भाई समेत उस नगर में प्रवेश करनेलगा तव उस द्वारपाल ने रोका तो इन्दीवरसेन ने अपने एकही खड्गके प्रहार से उसका शिर काटकर नगर के भीतर राजभवन में जाके सिंहासन पर बैठेहुए यमदंष्ट्र नाम राक्षस को देखा उसके बाईओर एक बड़ी स्वरूपवती स्त्री बैठी थी और दहिनी ओर एक दिव्यकुमारी बैठी थी इसप्रकार स्त्रियों के बीचमें बैठेहुए बड़ी २ दाढ़ों से भयंकर मुखवाले उस यमदंष्ट्र को इन्दीवरसेन ने युद्ध करने को बुलाया वह भी खड्ग लेकर उठखड़ा हुआ और उनदोनों का युद्धहोनेलगा युद्ध में इन्दीवरसेनने कईबार अपने खड्ग से उस राक्षस का शिर काटा परन्तु वह बारम्बार जम जम आया उसकी इसमाया को देखकर उसकुमारी स्त्रीने जो कि इन्दीवरको देखकर अनुरक्त होगई थी यह संज्ञा (इशारा) की कि शिरको काटकर उसके दो टुकड़े करडालो इस संज्ञाको जानकर उसने शीघ्रही राक्षस का शिर काटकर दो टुकड़े करडाले इससे उसकी माया नष्टहोगई और शिर फिर नहीं जमा इसी से वह राक्षस मरगया राक्षसके मरजाने पर उस स्त्री तथा कुमारी को प्रसन्न देखके भाई समेत इन्दीवरसेनने बैठकर उनसे पूँछा कि ऐसे सुन्दर पुर में यह केवल एक द्वारपाल राक्षस से युक्त राक्षसों का राजा

कौनथा और तुम दोनों कौनहो जोकि इसे मरादेखकर प्रसन्न हो रही हो यह सुनकर उनमें से कुमारी बोली कि इस शैलपुर में वीरभुज नाम राजाथा उसकी यह मदनदंष्ट्रा नाम रानी है इस यमदंष्ट्रा नाम राक्षसने अपनी मायासे वीरभुज नाम राजाको उसके सब परिकर समेत खाकर इस मदनदंष्ट्रा को अपनी स्त्री बनालिया और इस रम्यपुरमें सुवर्ण के घर बनाकर परिकरके विनाही इसके साथ रमण करताहुआ रहनेलगा और मैं उस राक्षसकी खड्गदंष्ट्रा नाम छोटी बहिन हूं अभी मेरा विवाह नहीं हुआ है तुम्हें देखकर मेरे चित्तमें अनुराग उत्पन्न हुआ है इससे हे आर्य्य पुत्र ! तुम मेरे साथ विवाहकरो इस राक्षसने हठपूर्वक इस मदनदंष्ट्रा के साथ विवाह किया था इसीसे उसके मरने से इसको प्रसन्नता हुई है इस प्रकार उस खड्गदंष्ट्रा के वचन सुनकर इन्दीवरसेन उसके साथ गान्धर्व्व विवाह करके उसीनगर में भगवती के दियेहुए खड्ग के प्रभाव से मनोवांछित भोग करताहुआ अपने भाई समेत रहा एकदिन खड्ग के प्रभाव से आकाशगामी विमान बनाकर इन्दीवरसेन ने अपने भाई को उसपर बैठालकर अपने माता पिता से अपना वृत्तान्त कहने के लिये भेजा वह विमानपर चढ़कर क्षणभर में इरावतीनाम पुरी में पहुँचकर अपने माता पिताके निकटगया जैसे चन्द्रमा को देखकर तीव्रदुःखरूपी धूपसे व्याकुल चकोर प्रसन्नहोते हैं उसी प्रकार अनिच्छासेन को देखकर उसके माता पिता प्रसन्न हुए पैरोंपर पड़ेहुए अपने छोटे पुत्र अनिच्छासेनको आलिंगन करके राजा और रानी ने सन्देह युक्तहोकर अपने बड़े पुत्रका कुशल पूछा तब उसने अपने भाई की कुशल कहकर आदि से अन्ततक का सब वृत्तान्त वर्णन किया और अपने माता पिता से अपनी पापिन

सौतेली माताका कियाहुआ वह कुकार्य सुना तदनन्तर कुछदिन वहां रहकर दुस्स्वप्नों के देखने से शंकित होके उसने अपने माता पितासे कहा कि मैं अब जाकर आपकी उत्कंठा का वर्णन करके आर्य्य इन्दीवरसेनको यहीं लिवायलाता हूं इससे आप मुझे जाने की आज्ञादीजिये यह सुनकर राजा और रानी ने उसको जाने के लिये आज्ञादेदी तव अनिच्छासेन विमान में चढ़के आकाशमार्ग से शैलपुर को गया और प्रातःकाल उसने अपने भाई के मंदिरमें जाकर देखा कि इन्दीवरसेन पृथ्वीपर अचेत हुआ पड़ाहै और खड्ग-दंष्ट्रा तथा मदनदंष्ट्रा उसके पास बैठीहुई रोरही हैं यह देखकर घवरा के उसने पूछा कि मेरेभाई की यह क्या दशाहोगई तब मदन-दंष्ट्रा तो खड्गदंष्ट्रा की निन्दा करनेलगी और खड्गदंष्ट्रा नीचे को मुख करके बोली कि तुम्हारे चलेजाने के उपरान्त एकदिन जब मैं स्नान करने को गई तब तुम्हारा भाई एकान्त में इस मदनदंष्ट्रा के साथ भोग करनेलगा स्नानसे लौटकर मैंने इसको रमण करते देखकर बहुतसे कुवाच्य इससे कहे तदनन्तर तुम्हारेभाईके विनय करनेपर भी भाग्य के समान दुर्लंघ्य ईर्ष्या से मोहित होकर मैंने शोचा कि यह मेरा कहना न मानकर अन्य स्त्री के साथ रमण करता है मैं जानतीहूं कि इसे खड्गके माहात्म्य से इतना अभिमान है इससे यह खड्ग छिपादेना चाहिये यह शोचकर जब तुम्हारा भाई सोगया तबमैंने खड्गको उठाकर अग्निमें छोड़दिया खड्गके अग्निमें छोड़तेही इसकी तो यहदशा होगई और खड्ग कलंकित होगया तब मैं तो पश्चात्ताप करनेलगी और मदनदंष्ट्रा मेरी निन्दा करनेलगी फिर शोकसे व्याकुल होके हमदोनोंके मरनेके लिये उद्यत होनेपर तुम यहां आगये तो अब तुम इसखड्गको लेकर मुझहत्यारिन राक्षसी

को इसी खड्गसेमारो उसके यह वचन सुनकर अनिच्छासेनने उस को अवध्य जानकर अपनाही शिर काटनाचाहा उस समय यह आकाशवाणीहुई कि हे राजपुत्र! ऐसा साहस मतकरो तुम्हारा बड़ा भाई मरा नहीं है खड्गके अपराधसे इसको देवीने मोहित करदिया है और इस खड्गदंष्ट्राका भी कोई अपराध नहीं है क्योंकि शापसे उत्पन्न होनेवाली स्त्रियों के बहुधा ऐसेही काम हुआ करते हैं यह दोनों पूर्वजन्मकी तुम्हारे भाईकी स्त्रियां हैं इससे तुम जाकर उन्हीं भगवती पार्वतीजी को प्रसन्न करो इस आकाशवाणीको सुनकर अनिच्छासेन मरण के उद्योग से निवृत्त होकर विमान पर चढ़के और उस कलंकित खड्गको लेकर विन्ध्यवासिनी को गया वहां पहुँचकर उपवास करके भगवती को प्रसन्नकरनेके अर्थ अपनाशिर काटनेको उद्यत हुआ उससमय यह आकाशवाणी हुई कि हे पुत्र! साहस मतकरो मैं तुम्हारी भक्तिसे प्रसन्नहूं तुम्हारा भाई जी उठेगा और यह खड्ग फिर निर्मल होजायगा इस आकाशवाणी को सुन कर और खड्गको अपने हाथमें निर्मल देखकर अनिच्छासेन भगवतीकी परिक्रमा करके और अपने विमानपर चढ़कर शैलपुर में अपने भाईके निकट आया और उसे उसी समय चैतन्यहुआ देख कर नेत्रोंमें अश्रुभरकर उसके पैरोंपर गिरपड़ा और उसने भी उसे पैरों से उठाकर अपने गले में लगालिया उस समय वह दोनों स्त्रियां भी अनिच्छासेन के पैरोंपर गिरकर बोलीं कि तुमने हमारे पतिके प्राण रखलिये इसके उपरान्त इन्दीवरसेन के पूछनेपर उस नें सब व्यौरेवार वृत्तान्त कह दिया उस सम्पूर्ण वृत्तान्तको सुनकर इन्दीवरसेन खड्गदंष्ट्रा पर क्रोधित नहीं हुआ और अपने भाईपर अत्यन्त प्रसन्नहुआ फिर अनिच्छासेन के मुखसे अपनी सौतेली

माताकी माया से उस खड्गको लेकर उसीके प्रभाव से मिलेहुए विमानपर अपने भाई तथा स्त्रियोंसमेत चढ़कर और सुवर्णके मंदिरों को भी उसीपर रखकर आकाशमार्ग से इरावती नाम पुरीको चला आया वहां आकाशसे उतरकर पुरवासियोंके चित्तमें आश्चर्यकराता हुआ राजमंदिरमें अपने माता पिताके पास भाई तथा स्त्रियों समेत गया और आंसू भरकर अपने माता पिताके चरणों पर गिरा वह भी सहसा अपने पुत्रको देखकर और उसे हृदय से लगाकर सन्ताप रहित होगये और दिव्यरूप बहुओंको भी वन्दना करती देख कर उनके चित्तमें परमानन्द हुआ तदनन्तर कथाके प्रसंगसे उन दोनों बहुओंको अपने पुत्रकी पूर्व्वजन्म की स्त्रियां जानकर और विमान तथा सुवर्ण के मन्दिरोंको देखकर उन दोनों रानी अधिक संगमा तथा राजापरित्यागसेन के चित्त में आश्चर्यपूर्वक प्रसन्नता हुई इस प्रकार अपने माता पिता को प्रसन्न करके इन्दीवरसेन अपने भाई और स्त्रियों समेत कुछ कालतक सुखपूर्व्वक रहा कुछ समय के उपरान्त अपने पिता से आज्ञा लेकर अपने भाई समेत दिग्विजय करने को गया और खड्गके प्रभावसे सम्पूर्ण पृथ्वी जीत कर राजालोगोंसे सुवर्ण हाथी घोड़े तथा रत्नलेकर लौटआयालौटकर आये हुए इन्दीवरसेन के पीछे सेना के चलने से जो धूलउड़ रही थी सो मानों सम्पूर्ण बिजय कीहुई पृथ्वी उसके पीछे पीछे चलीआती थी राजापरित्यागसेन अपने पुत्रको दिग्विजय करके लौटाहुआ जानकर राजधानी से बाहर आगे से जाकर ले आया और जब मंदिरमें आगया तब रानी अधिक संगमा भी अपनेपुत्रों से मिलकर अत्यन्त प्रसन्नहुई इस प्रकार अपने माता पिता को प्रसन्न करके और सम्पूर्ण बिजय कियेहुये राजालोगों का सत्कार

करके इन्दीवर सेन ने वह खड्ग जो राजालोगों से मिलाथा देकर उसे अकस्मात् अपने पूर्वजन्मका स्मरण आगया है वह मैं आप को सुनाताहूं हिमालयके शिखरपर मुक्तापुरनाम एक नगरहै उस में मुक्तासेन नाम विद्याधरोंका राजा है उसके कम्बुमती नाम रानी में पद्मसेन और रूपसेननाम दो पुत्रहुये उनमें से पद्मसेनके साथ आदित्यप्रभानाम विद्याधरी ने स्वयंवर करलिया यह जानकर आदित्यप्रभा की सखी चन्द्रवती नाम विद्याधरी ने भी कामार्त्ता होकर पद्मसेन के साथ विवाह किया तब दो स्त्रियों से युक्त पद्मसेन सौत से ईर्ष्या करनेवाली आदित्यप्रभा से बहुत खिन्न होकर अपने पितासे बोला कि हे तात ! मैं प्रतिदिन ईर्ष्यायुक्त स्त्रियों के कलहको नहीं सहसक्ताहूं इससे इस दुःख के दूर करने के लिये मेरी तपोवन जानेकी इच्छा है सो आप मुझे आज्ञा दीजिये जब एक बार कहने से पिताने आज्ञा नहीं दी तब पद्मसेन ने बड़ाहठ किया उससमय उसके बहुतसे हठ करनेसे क्रुद्ध होकर मुक्तासेनने उसको यह शाप दिया कि तुम तपोवन में जाकर क्या करोगे मृत्युलोक में जाओ वहां यह बड़ी आदित्यप्रभा नाम कलहकारिणी तुम्हारी स्त्री राक्षस योनिमें उत्पन्न होकर तुम्हारी स्त्रीहोगी और यह दूसरी तुम्हारी बहुत प्यारी चन्द्रवती किसी राजा की रानी होकर राक्षसकी स्त्री होगी फिर पीछे से तुम्हारी स्त्री होगी और यह रूपसेन भी तुम्हारे साथ तपोवन जानेकी इच्छा करता था इससे यह भी वहां तुम्हारा छोटा भाई होगा वहां दो स्त्रियों के होनेसे कुछ दुःख अनुभव करके जब सम्पूर्ण पृथ्वी जीतकर अपने पिता को देदोगे तब इन सबसमेत तुम अपनी जातिको स्मरणकरके शाप से छूटजाओगे इसप्रकार अपनेपिता से अपने शापका उद्धार सुन

कर पद्मसेन अपने भाई तथा स्त्रियों समेत पृथ्वी में उत्पन्नहुआ हे तात! वह पद्मसेन मैंहीं हूं जिसका कि आप ने इन्दीवरसेन नाम रक्खाहै मैं अपना सब कर्त्तव्य करचुका और जो रूपसेन नाम दूसरा विद्याधर कुमारथा वह यही अनिच्छासेननाम मेराछोटाभाई है आदित्यप्रभानाम जो मेरी स्त्री वह यह खड्गदंष्ट्रा है और दूसरी चन्द्रावती नाम मेरी स्त्री मदनदंष्ट्रा है इस समय हमारे शाप की अवधिआगई इससे हम अपने स्थानको जाते हैं यह कहकर अपने भाई तथा स्त्रियोंसमेत पद्मसेन ने अपना मानुषी स्वरूप त्यागकर विद्याधरों का स्वरूप धरलिया और अपने पिताको प्रणाम करके स्त्रियों को गोदमें लेकर अपने भाई समेत आकाशमार्ग से अपने मुक्तापुर नगर में पहुँचकर अपने पिता मुक्तासेन तथा माता कम्बु-मती को प्रणाम किया कम्बुमती समेत मुक्तासेन भी अपने पुत्रों और बहुओंको देखकर उनका सत्कार करके अत्यन्त प्रसन्न हुआ इस प्रकार शापसे छूटकर पद्मसेन ईर्ष्या रहित आदित्यप्रभा और चन्द्रप्रभा समेत सुखपूर्वक रहने लगा॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्तपंचाशत्तमःप्रदीपः ५७॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेअष्टपंचाशत्तमःप्रदीपः ५८॥

हीनसत्त्वस्य दुर्बुद्धेर्जायावै जायते वृथा॥
अर्थलोभंयथात्यक्त्वाकामन्यरतासमा५८॥

(अर्थ)-हीन पराक्रमवाले दुर्बुद्धि की स्त्री भी वृथा निरर्थक होजाती है। जैसे अर्थलोभ की स्त्री उसे छोड़ अन्यपुरुष के पास-ही रही ५८॥

एक बड़ा धनवान् अर्थलोभ नाम यथार्थनाम वाला एकप्रती-

हारथा उस प्रतीहार के मानपरानाम महासुन्दर स्त्री थी अर्थ लोभ राजा के यहां से उपार्जन कियेहुए धनसे व्योपारभी करताथा और अत्यन्त लोभके कारण सेवकों पर विश्वास न करके रोजगार के व्यवहारों में अपनी स्त्री से काम कराताथा यद्यपि वहस्त्री इसकाम को अपने चित्तसे अपने योग्य नहीं समझती थी तथापि पति के आधीन होकर उसे वनियों के साथ व्यवहार करना पड़ताथा उस के सुन्दररूप तथा मधुर वचनों के लोभसे वहुत से व्योपारी उसके पास खरीदने तथा वेचनेको आते थे हाथी घोड़े रत्न तथा वस्त्रादिक जो २ पदार्थ वह मानपरा वेचती थी उसमें वड़ी आमदनी देखकर अर्थलोभ अत्यन्त प्रसन्न होता था एकसमय वहां किसी दूरदेश से सुखधननाम एक वैश्य वहुत से घोड़े तथा हाथी आदि लेकर वेचने को आया उसका आना सुनकर अर्थलोभ ने मानपरा से कहा कि हे प्रिये ! सुखधननाम वैश्य किसी दूरदेश से यहां आयाहै उसकेपास वीसहजार घोड़े और चीनदेशके उत्तमवस्त्रों के असंख्य जोड़े हैं इससे तुम उसके पास जाकर पांचहज़ार घोड़े और दश हज़ार वस्त्रोंके जोड़े लेजाओ उन पांच हज़ार घोड़ों में एकहज़ार अपने घोड़े मिलाकर मैं राजाके पासलेजाऊंगा और राजाके हाथ वेचूंगा यह कहकर अर्थलोभ ने मानपराको सुखधन वैश्यके पास भेजा मानपराने सुखधन से पांचहज़ार घोड़े और दशहज़ार वस्त्रों के जोड़े मोल लेनेको कहा सुखधन उसके रूपको देखकर कामके विवश होकर स्वागत करके उसे एकान्त में लेजाकर वोला कि मूल्य लेकर तो हम तुमको एक घोड़ा अथवा एक वस्त्र भी नहीं देंगे परन्तु जो तुम एक रात्रि मेरे साथरहो तो पांच सौ घोड़े और पांचहज़ार वस्त्र मैं तुमको दूंगा यह कहकर उसने मानपरासे अपनी

अभिलाषा बहुत प्रकटकी ठीक है स्वच्छन्द व्यवहार करनेवाली स्त्रियोंपर किसकी इच्छा नहीं चलती है तब मानपराने उससेकहा कि मैं अपने पतिसे जाकर पूंछती हूं कदाचित् वहलोभके कारण मुझे इस बातकी भी प्रेरणा करदेगा यह कहकर उसने अपने घरमें आके अर्थलोभ से जो कुछ सुखधनने एकान्त में लेजाकर उससे कहाथा वह सब कहदिया यह सुनकर अर्थलोभने कहा कि हे प्रिये ! जो एकही रात्रिमें पांच सौ घोड़े और पांच हज़ार जोड़े मिलते हैं तो क्या दोषहै आज रात्रिभर जाकर तुम वहीं रहो कल प्रातःकाल चली आना अपने पतिके यह बचन सुनकर वह मानपरा उसपर घृणा करके अपने मनमें यह शोचनेलगी कि स्त्री के वेचने वाले सत्त्व रहित अत्यन्त लोभयुक्त इस पतिको धिक्कारहै मेरे लिये अब वही पति अच्छा है जो पांचसौ घोड़े तथा पांच हज़ार जोड़े देकर मुझे एक रात्रिके लिये मोल लेताहै यह शोचकर अर्थलोभ से यह कहकर कि मेरा इसमें कोई दोष नहीं है मानपरा उसे छोड़कर उस सुखधन के यहां चलीगई सुखधन ने उसे आई देखकर सम्पूर्ण वृत्तान्त पूछके बड़े आश्चर्य पूर्वक उसके मिलनेसे अपने को धन्य माना और उसीसमय पांचसौ घोड़े तथा पांच हज़ार जोड़े अर्थलोभ को भेज दिये और अपनी सम्पत्ति की मूर्त्तिमती फलश्री के समान मानपरा के साथ सुखपूर्वक रात्रिभर रहा प्रातःकाल उस निर्लज्ज अर्थलोभ के भेजे हुए बुलाने के लिये आये हुए सेवकों से मानपरा बोली कि उसने मुझे बेचडालाहै मैं दूसरे की स्त्री होगई अब मैं फिर उसके पास कैसे जाऊँ क्या जैसा वह निर्लज्जहै वैसीही मैंभी निर्लज्ज होजाऊँ तुम्हीं लोग बताओ क्या मुझे यह बात शोभा देती है इससे तुम लोग जाओ जिसने मुझे

मोल लिया है वही मेरा पति है मानपरा के यह वचन सुनकर सेवकों ने जाके अधोमुख होकर के अर्थलोभ से मानपरा का उत्तराका उत्तर कह दिया सेवकोंके वचन सुनकर उसने चाहा कि मैं सुखधन के पास से मानपरा को ज़बरदस्ती लेआऊं तब उसके हरबलनाम एक मित्रने कहा कितुम सुखधन के यहांसे उसे नहीं लासक्के हो उस वीरके आगे तुम्हारी वीरता नहीं चलैगी यह बड़ा बलवान्है बलवान् मित्रभी उसके साथमें हैं और मानपरा के मिलने से उसका उत्साह बढ़रहाहै और तुमतो कृपणताके कारण कि भेजीहुई स्त्रीने त्यागदिया है इस से निरुत्साह होरहे हो और तुम स्वतःबलवान् नहींहो न तुम्हारेसाथ कोई बलवान् मित्र है इससे तुम उसको जीत नहीं सक्के और कदाचित् राजा जानलेगा तो वह भी तुमको स्त्रीका बेचनेवाला जानकर तुमसे क्रुद्ध होजायगा इस से चुपरहो अपनी हँसी मतकरवाओ इस प्रकार मित्रके समझाने पर भी अर्थलोभने क्रोध से अपनी सेना लेकर जाके सुखधन का घर घेर लिया तब सुखधन तथा सुखधन के मित्रों की सेनाने निकलकर अर्थलोभ को सेनासमेत मारभगाया वहांसे भागकर अर्थलोभने राजासे जाकर कहा कि हे महाराज! सुखधन नाम वैश्यने मेरी स्त्री हरलीनी है उसके वचन सुनकर राजाने क्रोधसे सुखधन को पकड़मँगवाना चाहा तब संधाननाम मंत्रीने राजासे कहाकि हे महाराज! साधारणतासे वह पकड़ने में नहीं आवेगा क्योंकि ग्यारह मित्रों के साथ में आये हुये सुखधन केपास सब मिलाकर एक लाखसे भी अधिक घोड़े हैं और इस विषयका अभी कुछतत्त्व भी नहीं मालूम हुआहै ऐसा प्रसिद्ध पुरुष बिना किसी कारणके ऐसा निन्दित कर्म कभी नहीं करसक्काहै इससे दूत भेजकर प्रथम

पूछलेना चाहिये कि वह क्या कहताहै मंत्रीके यह वचन सुनकर राजाने सुखधनके पास अपने दूतके मुखसे उन सब बातोंको सुन कर राजा बाहुबल अर्थलोभको साथ लेकर सुखधनके यहां मानपराके देखने के लिये और उसके मुखसे उस के वृत्तान्तको सुनने के निमित्त उसके घर गया वहां आदरपूर्व्वक सुखधनसे प्रणाम कियेगये राजाने ब्रह्माकी भी सौन्दर्यता लक्ष्मीको आश्चर्य करानेवाली मानपराको देखा और उससे सब वृत्तान्त पूछा उसने नम्रतापूर्वक अर्थलोभके आगेही राजासे अपना सब वृत्तान्त कह दिया सो सुनकर और सत्यसत्य जानकर और अर्थलोभको निरुत्तर देखके राजाने मानपरासे कहा कि अब क्या होना चाहिये तब मानपरा बोली कि हे महाराज ! जिस लोभीने आपत्ति के विनाही मुझे अन्य पुरुषके हाथ बेचडाला उस सत्त्वहीन निर्लज्ज लोभीके पास अब मैं कैसे जाऊं यह सुनकर राजानेकहा कि बहुत ठीकहै तब काम क्रोध तथा लज्जा से व्याकुल होकर अर्थलोभ बोला कि हे महाराज ! यह सुखधन और हम मित्रों की सहायताके विना अपनी २ सेनासमेत युद्धकरैं तब आप हमारा और इसका पराक्रम देखिये अर्थलोभ के यह वचन सुनकर सुखधन बोलाकि सेनासे क्या प्रयोजनहै आवो हम तुम दोई द्वन्द युद्धकरैं दो में से जो कोई जीतेगा उसी को मानपरा मिलैगी यह सुनकर राजा ने कहा कि ऐसाही होना चाहिये तब सब लोगोंके आगे घोड़ों पर चढ़कर वह दोनों युद्धभूमि में उतरकर परस्पर युद्ध करनेलगेसुखधनने घोड़ेके ऐसा भालामारा कि जिससे घोड़ा उछला औरअर्थलोभ नीचे गिरपड़ा इसी प्रकार और तीनवार घोड़ेको मार२कर सुखधन ने अर्थलोभको पृथ्वीपर गिराया परंतु धर्मयुद्ध जानकर

पृथ्वीपर पड़ेहुये अर्थलोभ को जीवसे न मारा पांचवींवार अर्थलोभ घोड़ेपरसे गिरा और ऊपरसे घोड़ाभी उसपर गिरा इसीसे वह मूर्च्छित होगया तव उसके सेवक उसे उठालेगये उससमय सवलोगों ने सुखधन की वड़ी प्रशंसा की राजा वाहुवल ने भी उसका वड़ा सत्कार करके उसकी लाई हुई भेंट उसी को लौटादी और कुकर्म से पैदा किया हुआ अर्थलोभका सव धन छीनकर उसके स्थानमें दूसरा प्रतीहार रखकर प्रसन्न होकर अपने मन्दिर को गमन किया ठीकहै सज्जनलोग पापियोंका सम्पर्क छोड़कर प्रसन्न होते हैं सुखधनभी इसप्रकार मिली हुई मानपरा के साथ विहार करता हुआ आनन्द पूर्वक रहने लगा इसप्रकार सत्त्व रहित पुरुषों से धन तथा स्त्री निकल जाती है और सत्त्ववान् के पास आपही आती है ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेअष्टपञ्चाशत्तमःप्रदीपः ५८ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकोनषष्टितमःप्रदीपः ५९ ॥

भोगश्रीरेव सुखदाह्यर्थश्रीस्तुवृथैवहि ।
अर्थवर्मायथाक्लेशी भोगवर्मासभोगयुक् ५९ ॥

(अर्थ) भोगलक्ष्मीही सुख देनेवाली है और द्रव्यलक्ष्मी तो भोग विन वृथाही है जैसे—अर्थवर्मा क्लेशवान् था और भोगवर्म्मा भोगवान् भया ५९ ॥

कौतुकपुर नाम नगरमें बहु सुवर्ण नाम यथार्थनामवाला राजा था उसके एक यशोवर्मा नाम क्षत्री सेवकथा राजाने दानी होकर भी उसे कभी कुछ नहीं दिया और जब २ वह राजासे मांगताथा तब तब राजासूर्यकी ओरहाथकरके कहताथा कि मैं तो देना चाहताहूं परन्तु यह भगवान् नहीं चाहते कि मैं तुमको कुछ देऊं राजा के यह वचन सुनकर यशोवर्मा अवसर ढूंढ़ता रहा एक दिन सूर्य

ग्रहणके समय दान करते हुए राजा से उसने कहा कि जो सूर्य्य आपसे मुझे कुछ नहीं लेनेदेते हैं उनको आज वैरीने पकड़रक्खा है इससे आप मुझे जो कुछ चाहियेसो दीजिये यह सुनकर राजा ने हँसकर उसे वहुतसा सुवर्ण तथा अनेक वस्त्र दिये थोड़े दिनों में उस धन को खा पीकर और फिर राजा से कुछ न पाकर खिन्न हुआ यशोवर्म्मा अपनी स्त्री के मरजाने पर विन्ध्यवासिनी को गया वहां जाके उसने यह विचारकरके कि इस निरर्थक जीतेहुए भी मरेहुए के समान मेरे शरीरसे क्या प्रयोजन है या तो मैं इस शरीर को भगवती के आगे त्याग दूंगा वा यथेच्छ वर लूंगा यह निश्चयकरके उसने विन्ध्यवासिनी के आश्रम में कुशाके आसन पर निराहार होके घोर तप किया तपसे प्रसन्न हुई भगवती ने प्रसन्न होकर स्वप्नमें उससे कहा कि हे पुत्र! मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हूं बताओ मैं तुमको अर्थश्रीदूं या भोगश्री दूं यह सुनकर यशोवर्मा ने कहा कि मैं इन दोनोंका भेद अच्छी तरह से नहीं जानता हूं तब भगवतीने कहा कि तुम्हारे देश में जो अर्थवर्म्मा और भोगवर्मा दो वैश्यहैं उनकी लक्ष्मी जाकर देखो उनमेंसे जिसकीलक्ष्मी तुम्हें अच्छी लगे वही आकर मुझसे मांगना यह सुनकर यशोवर्मा जागकर प्रातःकाल पारण करके कौतुकपुर नाम अपने देश में आया वहां आकर वह पहले सुवर्ण तथा रत्नादि के व्यवहार से असंख्य धनके उपार्ज्जन करनेवाले अर्थवर्मा के घरमें जाकर उस की सम्पूर्ण सम्पत्तिको देखता हुआ उसके पास गया अर्थवर्माने उसका बड़ा आदर सत्कार करके उसे घृत सहित मांसके बहुत उत्तम २ भोजन करवाये और आप दो तोले घीसचू थोड़ासा भात तथा थोड़ासा मांसका रस खाया उसके बहुत थोड़े भोजनको देख

कर यशोवर्मा ने पूछा कि साहजी क्या तुम इतनाही खातेहो यह सुनकर उसने कहा कि आज तुम्हारे साथके कारण थोड़ासा मांस तथा भात और दो तोले घी खालियाहै रोज तो मैं एक तोले घी तथा केवल सत्तूखाताहूँ क्योंकि इससे अधिक मुझ मन्दाग्निवाले को पचताही नहीं है यह सुनकर यशोवर्म्मा ने अपने चित्तमें अर्थवर्माकी व्यर्थ लक्ष्मीकी बड़ी निन्दा की तदनन्तर रात्रिके समय अर्थवर्मा ने यशोवर्म्मा को दूध भात खिलवाया और आप केवल चारपैसेभर दूधपिया इसके उपरान्त अर्थवर्मा और यशोवर्मा दोनों एकही स्थान में जुदे २ पलँगों पर सोये अर्धरात्रि के समय यशोवर्मा ने स्वप्न में देखा कि थोड़े से भयंकर पुरुष दण्डों को हाथ में लियेहुए वहां आये और तूने एक तोले घी मांस भात तथा चार पैसे भर दूध रोज से अधिक क्यों खाया यह कहके अर्थवर्म्मा के पैर पकड़कर खींचके लाठियों से मारनेलगे और जितना उसने अधिक भोजन कियाथा वह सब उसके उदरसे निकालकर लेगये यह स्वप्न देखकर जैसेही यशोवर्मा उठा वैसेही अर्थवर्म्मा के पेटमें शूलउठा और सेवकों के द्वारा उदर मलवाने से उसको वमन होगया वमन से जब उसका शूल शान्तहोगया तब यशोवर्म्मा ने शोचा कि इस अर्थश्री को धिक्कारहै जिसका भोग ऐसा कठिनहो इसका तो न होनाही अच्छाहै यह शोचकर यशोवर्मा वह रात्रि वहीं व्यतीतकरके प्रातःकाल अर्थवर्मासे पूछकर भोगवर्माके यहां गया भोगवर्मा ने उसका बड़ा अतिथिसत्कार करके कहा कि आज आप हमारेही यहां भोजन करियेगा उसके यहां आभूषण वस्त्र तथा गृहके सिवाय और कुछ भी सम्पत्ति न थी उसने उसी समय किसी अन्यसे धन उधारलेकर किसी दूसरेको उधार देदिया

उसी व्यवहारमें उसको थोड़ीसी अशर्फी मिलीं वह अशर्फियां उस ने अपने नौकरके हाथ अपनी स्त्री के पास भोजनकी सामग्री इकट्ठी करने को भेजीं इतनेही में इच्छाभरणनाम उसके एकमित्र ने आकर उससे कहा कि चलो भोजन तैयारहै आज हमारेही यहां भोजन करनाहोगा सब मित्र बैठेहुए तुम्हारी प्रतीक्षा कररहेहैं यह सुनकर भोगवर्म्माने कहा कि आज हमारे यहां एक महिमानआयेहैं इससे मैं नहीं आसक्ता यह सुनकर उसनेकहा कि आप अपने साथ इनको लेचलिये क्या यह हमारे मित्र नहीं हैं उसके इसप्रकार आग्रह करनेपर भोगवर्म्मा ने यशोवर्म्मा को साथ लेजाकर वहीं भोजन किया और वहां से आकर सायंकाल के समय अपने यहां दिव्य भोजन यशोवर्माको करवाये और आप भी किये फिर रात्रि के समय उसने अपने सेवकों से पूंछा कि आज रात्रिभरको हमारे यहां कोई वस्तु जलपान के लिये है कि नहीं सेवकों ने कहा कि नहीं सेवकों के वचन सुनकर भोगवर्मा आज पिछली रात्रिमें मैं जल कैसे पीऊंगा यह कहकर सोरहा और यशोवर्म्मा भी उसी के पास सोगया अर्द्धरात्रि के समय यशोवर्म्मा को यह स्वप्न दिखाई दिया कि कुछ पुरुष हाथों में डंडा लियेहुए अन्य पुरुषों को मार मारकर यह कह रहे हैं कि तुम यहां रहे आज भोगवर्मा के लिये जलपानको कोई वस्तु क्यों नहीं लाये तब उन पुरुषोंने हाथजोड़ कर कहा आज क्षमा कीजिये फिर ऐसा अपराध कभी न होगा यह सुनकर वह दंडधारी पुरुष उन्हें साथ लेकर चलेगये यह स्वप्न देखकर यशोवर्मा जगकर शोचनेलगा कि भोगवर्मा की भी यह भोगश्री बहुत श्रेष्ठहै परन्तु अर्थवर्मा की अत्यन्त बढ़ीहुईथी अर्थ श्री भोगके बिना व्यर्थ है इसप्रकार बिचारते२उसने वह रात्रि व्य-

तीतकरके प्रातःकाल भोगवर्मासे आज्ञालेकर कुछ दिनचलके विन्ध्यवासिनीजीके आश्रममें पहुँचकर कुशासनपर बैठकर फिर तप किया तब भगवती ने उससे स्वप्नमें कहा कि तुम भोगश्री लोगे अथवा अर्थश्री भगवती के वचन सुनकर यशोवर्मा ने भोगश्री मांगी और भगवती उसे अभीष्टवर देकर अन्तर्द्धान होगई प्रातःकाल यशोवर्मा उठके पारण करके अपने घरको आया और भगवतीकी कृपासे प्राप्तहुई भोगश्री का सुखपूर्वक भोगकरनेलगा ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकोनषष्टितमःप्रदीपः ५९ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेषष्टितमःप्रदीपः ६० ॥

चिरदाताका दृष्टान्त ॥

चिरदाता ददात्येनं चिरकाले धनं बहु ॥
यथाप्तसमयेनोऽदाद्ददात्वसमयेबहु ६० ॥

(अर्थ) चिरदानी देरसे देनेवाला चिरकालमें भी बहुतसा धन देताहै जैसे चिरदाताने समय में तो कुछ न दिया पर विलम्ब होने से निज पुत्र मरण समयमें भी बहुतसा धन दिया ६० ॥

चिरपुर नाम नगरमें चिरदाता नाम एक राजाथा उस राजाके सम्पूर्ण परिवारवाले महादुष्टथे एकसमय किसी देशसे आयाहुआ प्रसंग नाम शूद्र अपने दो मित्रोंके साथ राजाके यहां नौकरहुआ उसे पांचवर्ष सेवा करते २ व्यतीतहुए परन्तु राजाने उत्सवादिक निमित्तों में भी उसे कुछ नहीं दिया और उस सेवकने मित्रों के प्रेरणाकरने परभी परिकरकी दुष्टतासे राजा से विज्ञापन करने का अवसर पाया एक समय उस राजा का बालक पुत्र मरगया तब सम्पूर्ण सेवक राजाको दुःखी जानके उसके निकट गये उनमें से

प्रसंग नाम सेवक अपने मित्रोंके निवारण करने पर भी शोकसे व्याकुलहोकर राजासे बोला कि हे स्वामी ! हमने वहुतकालतक आपकी सेवाकरी और आपने हमें कुछ नहीं दिया इतने परभी आपने नहीं दियाहै तो आपका पुत्र देगा इस आशासे हमने आपकी सेवा नहीं छोड़ी अब भाग्यवशसे उसको भी परमेश्वरने हरलिया तो अब हमारा यहां कौनहै हम जातेहैं यह कहकर और प्रणाम करके प्रसङ्ग अपने मित्रोंको साथलेकर वहां से चला तब राजाने यह बड़े दृढ़ सेवकहैं क्योंकि पुत्रकी आशासे यह इतने दिनतक रहे इससेइनका त्याग नहीं करना चाहिये यह शोचकर उन्हें बुलवाकर इतना धनदिया कि वह दरिद्रसे निर्भय होगये इसप्रकारसे मनुष्योंके विचित्र स्वभाव होतेहैं देखिये राजाने समयपर तो नहीं दिया परन्तु असमयपर बहुतसा धन दिया ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेषष्टितमःप्रदीपः ६० ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकषष्टितमःप्रदीपः ६१ ॥

नपुंसकयक्षका दृष्टान्त ॥

श्रेयस्तावत्प्रकुर्वीत यावद्धानिर्नसर्वथा ॥
यक्षःस्वपुंस्त्वदानेन नपुंस्त्वमगमद्यथा ६१ ॥

(अर्थ) भला तभीतक करना जबतक निज सर्वथा हानि नहीं होती है—जैसे यक्षने नपुंसकको निज पुरुषपनदिया तो फिर उसे नपुंसकही रहनापड़ा ६१ ॥

सुरपुर नाम नगरमें सूरसेन नाम राजाहै उसके विद्याधरी नाम बड़ी रूपवती कन्याहै राजाने उस कन्याको विमलनाम राजाके बड़े रूपवान् प्रभाकर नाम पुत्रको देनाचाहा और विमलने उस विद्याधरी की प्रशंसासुनके अपने पुत्रके लिये दूत भेजकर राजा

शूरसेनसे विद्याधरी मांगी तब शूरसेनने बहुत प्रसन्नहोके प्रभाकर के साथ उस विद्याधरीका विवाहकरदिया और उसीके साथ उसको बहुतसा धनदेकर विदाकरदिया तदनन्तर विद्याधरी अपने श्वशुर के गृहमें पहुँचकर रात्रि के समय पति के साथ शयन स्थानमें गई वहां प्रसंग विना कियेही सोयेहुये अपने पति प्रभाकरको नपुंसक जानकर हाय २ मुझ अभागिनको नपुंसक पतिमिलाहै यह शोच करतीहुई विद्याधरी ने रात्रि व्यतीत करके दूसरे दिन अपने पिताको यह लेखलिखा कि आपने कैसे विना देखेभाले नपुंसकके साथ मेरा विवाह करदिया उस लेखको पढ़कर उसका पिता राजा शूरसेन बहुत क्रोधितहुआ कि विमलने मुझको ठगाहै तबउसने विमलको यह चिट्ठी लिखी कि तुमने छलकरके अपने नपुंसक पुत्रके साथ मेरी कन्याका विवाह करवालिया अब तुम इसकाफल भोगो मैं आकर तुमको मारूंगा इस लेखको पाकर विमलने व्याकुलहोके अपने मन्त्रियों से पूछा कि इस दुर्जय राजासे बचनेका अब कौनसा उपायहै यह सुनकर पिंगदत्तनाम मन्त्री ने कहा कि हे स्वामी! इसमें एकही उपायहै वह मैं आपको बताता हूं स्थूलशिरा यक्षके आराधनका मन्त्र मुझे मालूमहै इसमन्त्रको जपकर स्थूलशिरा को सिद्धकरके उससे अपने पुत्रके निमित्त लिंग माँगिये तो विग्रह शान्तहोजाय मन्त्री के यहवचन सुनकर राजाने मन्त्रसीखकर उसके द्वारा उस यक्षको सिद्ध करके उससे अपने पुत्रकेलिये लिंगमांगा उसने प्रभाकरको थोड़े दिनकेलिये लिंग देदिया इससे प्रभाकर तोपुरुषहोगया परन्तु यक्ष नपुंसक होगया और वह विद्याधरी प्रभाकरको पुरुष देखकर उसके साथ रमण करके अपने चित्तमें शोचनेलगी कि मद्के दोषसे मुझे भ्रान्ति

होगई थी मेरापति नपुंसक नहीं है यह शोचकर उसने पिताको इसी आशयका पत्र भेजदिया उस पत्रको पाकर राजा शूरसेन क्रोधरहित होकर शान्त होगया इसी वृत्तान्तकोजानकर भैरवजी ने आप कोपकरके स्थूलशिरयक्षको बुलाकर यह शापदिया कि तैंने अपना लिंग देकर नपुंसकत्व अंगीकार किया इससे तूजन्म भर नपुंसकरहेगा और वह प्रभाकर जन्मभरपुरुषरहेगा इसप्रकार से वह यक्ष तो नपुंसकहोके महादुःखी होरहाहै और प्रभाकरपुरुष होकर सुख भोग रहा है ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे एकषष्टितमःप्रदीपः ६१ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे द्विषष्टितमःप्रदीपः ६२ ॥

मा बापकी आज्ञा विन दुःखी(चक्र)नाम वैश्यपुत्रका दृष्टान्त॥

पित्रोराज्ञांविनायोज्ञो विचरेत्सलभेदघम् ।
चक्रनामायथादुःखंपित्रोराज्ञांविनाऽलभत् ६२ ॥

(अर्थ) माता पिताकी आज्ञा विना जो कोई कहीं चलाजावे वह दुःख पाताहै—जैसे (चक्र) नाम वैश्यपुत्र निज मा बापोंकी आज्ञा बिन चलागया तो तिसने दुःख पाया ६२ ॥

धवलनामपुरमें चक्रनाम एक वैश्यका पुत्र अपने माता पिता की बिना आज्ञा लिये स्वर्णद्वीपको व्यवहार करने को गया वहां पांचवर्ष में बहुतसा धन उपार्जन करके वह अपने देशमें आनेके लिये रत्नों से भरेहुए जहाजपर चढ़कर चला जब किनारा कुछही दूर बाकी रहा तब आकाश से जलकी वृष्टि और महाप्रचंड वायु चलनेलगी उसी से वह जहाज टूटगया तब जहाजके कुछलोग तो पानी में बहगये और कितनोंही को मगरमच्छों ने खाडाला

और चक्रको आयुर्बल शेष होने के कारण समुद्रने लहरों से कि-
नारेपर फेंकदिया वहां उसे एक कालेवर्णवाला भयंकर पुरुष हाथ
में पाश लियेहुए दिखाईदिया वह पुरुष उस चक्रको अपने पाश
में बांधकर सभामें सिंहासनपर बैठेहुए किसी पुरुषके पास लेगया
और उसी सिंहासनपर बैठेहुए पुरुषकी आज्ञा से उसीने उस वैश्य
को लोहमय गृह में लेकर बन्दकर दिया वहां चक्रने एक दूसरे
पुरुषको देखकर जिसके शिरपर तपाहुआ लोहे का चक्र निरन्तर
भ्रमण कररहाथा उससे चक्रने पूछा कि तुम कौनहौ किस कारण
से तुमको यह कष्ट दियागया है और तुम कैसे जीते हो यह सुन-
कर उसने कहा कि मैं खड्गनाम वैश्यका पुत्रहूं मैंने अपने माता
पिताके वचन नहीं माने इसी से उन्हों ने कुपितहोके मुझे यह
शापदिया कि हे दुष्ट! तू हमको शिरमें लगेहुए संतप्त लोहेके चक्र
के समान दुःखदेताहै इससे तुझे भी ऐसीही पीड़ाहोगी यहकहकर
उन्हों ने मुझे रोते देखकर कहा कि रोओमत एकही महीने तुम
को ऐसी पीड़ाहोगी यह सुनकर मैंने शोकसे वह दिन व्यतीत
करके रात्रिके समय स्वप्नसा देखा कि एक घोर भयंकर पुरुष मेरे
पास आया उसी ने मुझको यहां लाकर बन्दकिया और मेरे शिर
पर यह चक्र रक्खा पिता के शापके प्रभावसे मेरे प्राण नहींनि-
कलते हैं आज मुझे यहां आये महीनाभर व्यतीत होगया परन्तु
अब भी मैं शापसे नहीं छुटाहूं खड्गवैश्य के यह वचन सुनकर चक्र
ने कहा कि परदेश जानेके समय मैंने भी अपने पिताके वचन
नहीं माने थे और उन्होंने क्रोधकरके मुझे शापदिया था कि जो
तुझे धन मिलेगा वह सब नष्ट होजायगा इसीसे जो कुछ मैंने धन
उपार्जन कियाथा वह सब समुद्रमें नष्टहोगया और यहां किसीपुरुष

ने मुझे लाकर बन्दकरदिया इससे अब मेरे जीवनसे क्या प्रयोजन है तुम इस चक्रको मेरे शिरपर रखकर अपने शापसे छूटो चक्रके इसप्रकार कहतेही यह आकाशवाणीहुई कि हे खड्ग! तू शाप से छूटगया अपने शिर से इस चक्रको लेकर इस चक्र वैश्य के शिर पर रखदे इस आकाशवाणीको सुनकर खड्गने वह तप्त चक्र उस चक्रनाम वणिक्पुत्रके शिरपर रखदिया और खड्ग वैश्यको कोई अदृश्य पुरुष उसके घर को लेगया वहां वह भक्ति से अपने माता पिताकी आज्ञानुसार सब कार्य करताहुआ सुख पूर्वक रहने लगा और वह वैश्य अपने शिरपर उस तप्त चक्रको धारणकरके बोला कि पृथ्वी में जितने पापीहोयँ वह सब इस पापसे छूटजायँ और जबतक उसके सम्पूर्ण पाप क्षीण न होजायँ तबतक यह चक्र मेरे शिरपर घूमतारहे उसके यह वचन सुनकर आकाशवासी देवता लोगों ने प्रसन्नहोके पुष्पों की वृष्टिकरके कहा कि हे महासत्त्व! तू धन्यहै तेरी इस करुणासे तेरा सब पापनष्टहोगया तुझे अक्षयधन मिलैगा देवता लोगों के इसप्रकार कहतेही चक्र वैश्यके शिर से वह तप्त चक्र नष्टहोगया और प्रसन्नहुए इन्द्रका भेजाहुआ एक विद्याधर उसे बहुमूल्य रत्नदेके गोदी में लेकर धवलनाम नगर में पहुँचाकर अन्तर्द्धान होगया और वह चक्र वैश्य अपने माता पिताके पास जाकर उन्हें सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाके उनको आनन्दितकरके सुखसे उनका सेवन करताहुआ आनन्दसे रहनेलगा॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे द्विषष्टितमः प्रदीपः ६२ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागेत्रिषष्टितमःप्रदीपः ६३ ॥

भद्रघट और शुभदत्तदरिद्रीका दृष्टान्त ॥

सम्प्राप्तमपिनश्येत धनंमूढदरिद्रणः।

शुभदत्तोभद्रघटं प्राप्तंमत्तोजहोयतः ६३ ॥

(अर्थ) मूर्ख दरिद्रीका प्राप्तहुआ भी धन नष्टहोजाताहै—जैसे शुभदत्त पाये भी भद्रघटको मत्तहोकर नृत्यकरने में खो बैठा ६३ ॥

पाटलिपुट नाम नगरमें एक शुभदत्तनाम दरिद्री रहताथा वह प्रतिदिन वनसे काष्ठ लाके और बेचकर अपने कुटुम्बको पालन किया करताथा एक दिन वनमें काष्ठकेलिये बहुत दूर जाकर शुभदत्तने दिव्यआभूषण तथा वस्त्रधारी चार यक्षदेखे उन यक्षों ने उसे भयभीत देखकर और उसे दरिद्री जानकर कृपापूर्वककहा कि हे शुभदत्त ! तुम यहां हमारे पासरहो और हमारी सेवाकरो हम बिना क्लेशही के तुम्हारे घरका निर्वाह करदेंगे उनके वचनको स्वीकार करके शुभदत्तने वहीं रहकर उनको स्नानादिक करवाये भोजन के समय उन यक्षों ने शुभदत्तसे कहा कि हे शुभदत्त ! इस भद्रघट से तुम भोजन निकाल २ कर हमको देते जाओ शुभदत्त उस घटको शून्य देखकर भोजन देने में विलम्ब करनेलगा तब उन यक्षों ने मुस्कुराकर उससे कहा कि हे शुभदत्त ! तुम इसके माहात्म्यको नहीं जानतेहो इसके भीतर हाथडालकर जो तुम चाहोगे सो सब मिलेगा क्योंकि यह घटकामप्रदहै उनके यह वचन सुन कर जैसेही उसने घड़े में हाथडाला वैसेही उसको यथेच्छ सम्पूर्ण पदार्थ मिले उससे उसने उनयक्षों को भोजन कराया और उनके तृप्त होने के पीछे आपभी भोजनकिया इसप्रकार भक्तिसे तथा भय से यक्षों का नित्य सेवन करताहुआ कुटुम्बकी चिन्ता से व्याकुल शुभदत्त वहांरहा और दुःखसे पीड़ित उसके कुटुम्बको यक्षोंने स्वप्न में कुछ धन देकर और शुभदत्तका वृत्तान्त कहकर सावधान कर दिया तदनन्तर एकमहीनेके व्यतीत होजानेपर यक्षोंने शुभदत्तसे

प्रसन्नहोकर कहा कि हे शुभदत्त ! हम तुम्हारी भक्तिसे तुमपर प्रसन्न हैं जो चाहोसोमांगो यह सुनकर उसनेकहा कि जो आप सत्य २ मुझपर प्रसन्नहैं तो यह भद्रघट मुझको देदीजिये यहसुनकर यक्षों ने कहा कि इसकी तुम रक्षा नहीं करसकोगे क्योंकि यह टूटजाने पर भागजाताहै इससे अन्य कोई वरमांगो यक्षों के इसप्रकार स-मझानेपर भी शुभदत्तने अन्य वरनहीं लेनाचाहा तब उन्होंनेवह घट उसे देदिया उस भद्रघटको लेके और यक्षों को प्रणाम करके शुभदत्त अपने घरमें आया और रहनेलगा एक समय उसके ब-न्धुओं ने उसे भारढोने से रहित तथा अत्यन्त ऐश्वर्यवान् देखकर मद्यपिलाकर उससे पूँछा कि तुम्हारे पास यह ऐश्वर्य कहांसे आया उनके यह वचन सुनकर वह मूर्ख कुछ उत्तर न देकर अभिमान से उस घड़ेको कन्धेपर रखकर नाचनेलगा नाचने में वह घड़ा पृथ्वी में गिरके फूटके उसी समय अपने स्थानको चलागया और शुभदत्त अपनी पूर्वदशाको प्राप्त होगया इसप्रकार से मद्यपाना-दिक दोषों के प्रमादसे नष्टहुई बुद्धिवाले अभागी लोग प्राप्तहुये धनकी भी रक्षा नहीं करसके हैं ॥

इति श्री दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेत्रिषष्टितमःप्रदीपः ६३ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेचतुष्षष्टितमः प्रदीपः ६४ ॥

ईश्वरवर्मा वेश्यागामी का दृष्टान्त ॥

कुट्टिनीकूटचरितं योजानातिसपंडितः ।
यथाहीश्वरवर्मापवेश्यातोथधनम्बहु ६४ ॥

(अर्थ)-कुटिनी के कूट चरित्र को जाने वह पंडितहै-जैसे ईश्वरवर्मा ने निज पिता की शिक्षा करके वेश्या से सब धन ले-लिया ६४ ॥

चित्रकूटनाम बड़े समृद्धिमान नगरमें रत्नवर्मानाम बड़ा धन-वान् वैश्य रहताथा उसके श्री शिवजी के आराधन से ईश्वरवर्मा नाम एक पुत्र उत्पन्नहुआ उस ईश्वरवर्माको उसने सम्पूर्ण विद्या पढ़ाकर युवा होनेवाला जानकर अपने चित्तमें शोचा कि ब्रह्माने यौवनसे अन्धेहुए धनवानोंके लिये धन तथा प्राणोंका हरनेवाला वेश्यानाम मूर्त्तिमान् कपट बनायाहै इससे मैं अपने इस पुत्र को वेश्याओं का कपट सिखाने के लिये किसी कुटिनी के सुपुर्द करूं जिससे वेश्या लोग फिर इसे ठग न सकें यह शोचकर रत्नवर्म्मा ईश्वरवर्मा को साथलेकर यमजिह्वानाम कुटिनी के घरगया वहां मोटी ठोढ़ीवाली लम्बे दांतवाली तथा टेढ़ी नाकवाली यमजिह्वा अपनी कन्याको यह शिक्षा देरही थी कि हे पुत्री! धनसे सब की प्रतिष्ठा होती है परन्तु वेश्याओं की विशेष करके और स्नेहकर ने से धन मिल नहीं सक्ता इससे वेश्याको किसी से स्नेह न करना चाहिये सन्ध्याके समान वेश्याओंका राग दोषरूपी अन्धकारका बढ़ानेवाला होताहै इससे वेश्या सुरक्षित नटीके समान मिथ्या राग दिखावे वेश्याको चाहिये कि पुरुषके साथ अनुराग प्रकटकर के उससे सब धन लेले और धन लेकर निकालदे और जो उसे फिर धन मिले तो उसको स्वीकार करले मुनिके समान जो वेश्या बालक में युवामें वृद्धमें रूपवान् में तथा कुरूप में समभाव रखती हैं उनको परमार्थ प्राप्तहोताहै इसप्रकार अपनी पुत्री को शिक्षा देती हुई यमजिह्वाके पास रत्नवर्मा अपने पुत्रको लेकर गया और बैठ कर उससे बोला हे आर्य्ये! मेरे पुत्रको वेश्याओं की सम्पूर्ण कला सिखादो जिससे यह चतुरहोकर वेश्याओं के जालमें न फँसे इस कार्यके लिये मैं तुमको एक हजार अशर्फ़ी दूंगा यह सुनकर उस

कुटिनी ने वह अंगीकार करलिया तव रत्नवर्मा उसे अशर्फी देकर तथा अपने पुत्रको सौंपकर अपने घर चलाआया और ईश्वरवर्मा यमजिह्वा के यहां रहा और एकही वर्ष में सम्पूर्ण वेश्याओं की कला सीखकर अपने पिताके यहां चला आया और सोलह वर्ष का होकर अपने पितासे बोला कि हे तात ! धनसेही धर्म तथाकाम की प्राप्तिहोतीहै और धनहीसे प्रतिष्ठा तथा यशकी प्राप्तिहोती है इससे आप मुझे परदेश जानेकी आज्ञा दीजिये उसके यह वचन सुनकर रत्नवर्मा ने उसे पांच करोड़ अशर्फी रोज़गार करनेको दीं उन्हें लेकर ईश्वरवर्मा अपने कुछ सजाती मित्रों को साथ लेकर स्वर्णद्वीप को चला मार्ग में चलते २ क्रमसे मिलेहुए कांचनपुर नाम नगर के बाहर किसी उपवन में टिका और उसी उद्यान में स्नान तथा भोजन करके नगर देखनेको गया उस नगरके किसी देवमन्दिरमें जाकर उसने देखा कि युवावस्थारूपी वायुसे उछली हुई रूपके समुद्र की लहरके समान सुन्दरीनाम एक वेश्या नृत्य कर रही है उसे देखतेही वह उसके वशीभूत ऐसाहुआ कि जिस से कुट्टिनी की सम्पूर्ण शिक्षामानो कुपित होकर उसके पाससे भाग-गई नृत्यके अन्तमें उसने अपने एक मित्रको भेजकर सुन्दरी से अपना प्रयोजन कहलवाया सुंदरी ने कहा मैं धन्यहूं ऐसाकहकर स्वीकार करलिया तब ईश्वरवर्मा अपने डेरे पर चतुर रक्षकों को छोड़कर सुन्दरी के मकानपर गया वहां सुन्दरीकी माता मकरकटी ने उसका बड़ासत्कार कियाऔर रात्रिके समय रत्नोंसे देदीप्यमान जड़ाऊ पलँग से युक्त शयनस्थान में सुन्दरी के साथ उसकोभेजा वहां नृत्य में तथा सुरति में अत्यन्त निपुण उस सुन्दरी के साथ रमणकरके वह दूसरे दिन भी पास से नहीं हटती हुई बड़े प्रेम को

प्रकट करती हुई सुन्दरी को अत्यन्त अनुरागयुक्त देखकर वहांसे नहीं आनका और दो दिनकेलिये पचीसलाख अशर्फी देनेलगा सुन्दरी ने उससे कहा कि धन तो मुझे बहुत मिलचुकाहै परन्तु आप सरीखा पुरुष नहीं मिलाथा जो आपही मुझे मिलगये तो मैं धनलेकर क्या करूंगी सुन्दरीके इसप्रकार कहनेपर उसकी माताने कहा कि अब जो कुछ हमारे पासका धन है सोभी इन्हींकाहै इससे यहभी लेकर उसीमें रखदो क्या हानिहै माताके वड़े कहने सुनने से सुन्दरी ने वड़े आग्रह से वह अशर्फी लीं उसके इस आग्रहको देख मूर्ख ईश्वरवर्मा ने उसके अनुरागको सत्यही जाना और उसके रूप से नृत्य से तथा गीतसे वशीभूत होकर दो महीने वहां व्यतीतकिये और इतने दिनों में दो करोड़ अशर्फी उसे दीं ईश्वरवर्माको इसप्रकारसे मोहित देखकर उसके मित्र अर्थदत्तने उससे आकर एकान्त में कहा कि हे मित्र! कातर की अस्त्रविद्या के समान तुम्हारी वह सम्पूर्ण कुट्टिनीशिक्षा क्या समय पर व्यर्थ होगई यह जो तुम वेश्या के प्रेम में सत्यता समझ रहेहो सो क्या कभी मरुमरीचिकाओं में भी जल मिलताहै इससे जबतक वह तुम्हारा सम्पूर्ण धन नहीं क्षीण होताहै तभीतक यहांसे निकल चलो तुम्हारे पिता जो सुनेंगे तो बहुत कुपित होंगे उसके यह वचन सुनकर ईश्वरवर्म्मा ने कहा कि वेश्याओं में विश्वास न करना चाहिये यह तुम्हारा कहना ठीक है परन्तु यह सुन्दरी ऐसी नहीं है यह क्षणभर भी मेरे देखे विना अपने प्राण त्यागदेगी इससे जो सर्वथा चलना हीहै तो उसे जाकर समझाओ उसके यह बचन सुनकर अर्थदत्त उसीके साथ उस सुन्दरी वेश्या के पासगया और उससे बोला कि तुम्हारी प्रीति ईश्वरवर्मापर बहुत अधिकहै परन्तु इसे रोज़गार के

लिये स्वर्णद्वीप को अवश्य जानाहै वहां से बहुतसा धन उपार्जन करके लौटकर तुम्हारेही पास सदैव यह सुखपूर्व्वक रहैगा इससे हे सखी! इसे जानेकी आज्ञा देदो यह सुनकर आंसू भरके ईश्वरवर्मा के मुखको देखती हुई सुन्दरी मिथ्या विषाद करके बोली कि आप जानिये मैं इसमें क्या कहूँ परिणाम को बिना देखे कोई किसी पर विश्वास नहीं करसक्ता है मुझे कुछ कहना सुनना नहीं है मेरे भाग्य में जो बदाहोगा सो होगा यह सुनकर उसकी माताने कहा कि दुःख न करो धैर्य्य धारणकरो तुम्हारा प्यारा लौट कर तुम्हारे पास अवश्य आवेगा इसप्रकार उसे समझाकर उस कुटिनी ने उससे सलाह करके ईश्वरवर्मा के जानेके मार्ग में एक कुएँ में जाल लगवादिया तब सुन्दरी शोक प्रकट करके भोजन बहुतकम करनेलगी और गीत तथा नृत्यादिकों से विरक्तरही तदनन्तर ईश्वरवर्म्मा अपने मित्रके बतायेहुये दिनमें सुन्दरीके घरसे परदेश को चला और वह कुट्टिनी तथा सुन्दरी भी मंगलाचार करके उसे भेजने को चली नगरके बाहर जहां कुएँमें उसने जाल बँधवाकर रक्खा था वहीं से ईश्वरवर्मा को विदाकिया और जैसेही ईश्वरवर्मा वहां से कुछदूर चला वैसेही सुन्दरी उस कुएँ में कूदपड़ी तब हापुत्री हासखी यह उसकी माता का तथा सखियों का घोर शब्द ईश्वरवर्म्मा सुनकर अपने मित्रोंसमेत लौटकर अपनी प्यारी को कुएँ में गिरी देखकर शोकसे विह्वलहोगया और उस मकरकटीने बहुत रोकर जालके जाननेवाले अपनेही नौकरोंको सुन्दरी के निकालने को उस कुएँ में उतारा उन्होंने कुएँ में जाकर सुन्दरी जीती है जीती है यह कहकर उसे कुएँ में से निकाला कुएँ में से निकलकरसुन्दरी अपनेको मूर्च्छितसा बनाकर उसलौटेहुए ईश्वर

वर्म्मा से बहुत पुकारने पर धीरे से बोली तब ईश्वरवर्म्मा बहुतप्रसन्न होके उसे स्वस्थ करके उसीके साथ उसके घरको लौटआया और सुन्दरी के प्रेमको यथार्थ जानकर इतनेही में अपने जन्मको सफल मानकर यात्रा का उद्योग छोड़कर वहीं रहा तब अर्थदत्तने उसे यात्रासे निवृत्त हुआ जानकर उससे कहा कि हे मित्र! मोहसे तुम अपने को क्यों नष्टकिये देतेहो कुएँमें गिरनेसे इस सुन्दरीके स्नेह में विश्वास न करो क्योंकि ब्रह्मा भी कुटिनियों की कूट रचनाको नहीं जानसक्ते हैं तुम अपना सबधन नष्ट करके पिता से जाकर क्या कहोगे और कहां जाओगे इससे जो तुम अपना भलाचाहो तो अब भी इससे बचो अर्थदत्त के इन वचनोंपर ध्यान न देकर महीने भरमें वह तीनकरोड़ अशर्फ़ी भी उसने खर्च करडालीं तब सुन्दरीने तथा उसकी माता मकरकटी ने उसे निर्धन जानकर अर्द्ध-चन्द्र (गर्दनी) देकर घरसे बाहर निकाल दिया उसकी यह दशा देखकर अर्थदत्तादिकों ने अपने नगरमें आकर उसके पितासे सब वृत्तान्तकहा अपने पुत्रके वृत्तान्तको सुनकर रत्नवर्म्मा दुःखितहोके उसी यमजिह्वा कुटिनी के पास जाकर बोला कि तुमने एकहज़ार अशर्फ़ी लेकर मेरे पुत्रको अच्छी शिक्षादी कि मकरकटीने थोड़ेही कालमें उसका सर्व्वस्व हरलिया यह कहकर उसने अपने पुत्रका सब वृत्तान्त उससे कहा तब यमजिह्वाने कहा कि तुम अपने पुत्र को यहां बुलाओ अब में उसे ऐसाउपाय बताऊंगी जिससे वह उस मकरकटीका सर्व्वस्व हरलावेगा उसकी यहप्रतिज्ञा सुनकर रत्नवर्म्मा ने शीघ्रही ईश्वरवर्म्मा के बुलाने को अर्थदत्त को भेजा अर्थदत्तने कांचनपुर में जाके ईश्वरवर्म्मा से उसके पिताका संदेशा कहकर कहा कि हे मित्र! तुमने मेरा कहना नहीं माना इसीसे वेश्याओं

की सत्यता तुमको प्रत्यक्ष दीखनीपड़ी तुमने पांच करोड़ अशर्फ़ी देकर अर्द्धचन्द्रपाया—कौन बुद्धिमान् वेश्याओं में तथा बालूमें से स्नेहपाने की इच्छा करताहै अथवा इसमें तुम्हारा क्या अपराधहै संसार का धर्म्महो ऐसा है तभीतक मनुष्य बीर चतुर तथा कल्याणका भागी रहता है जबतक कि स्त्रियों की चेष्टाओं में नहीं फँसताहै इससे अब तुम अपने पिताके पास चलकर इस वेश्या से बदला लेनेका यत्न करो इसप्रकार समझाकर अर्थदत्त ईश्वरवर्मा को उसके पिताके पास लेआया वहां रत्नवर्म्मा उसे बहुत समझा कर यमजिह्वा कुटिनी के पास लेगया और अर्थदत्त से सुन्दरीके कुएँ में गिरने आदिका सब वृत्तान्त उस कुटिनी के सम्मुख कहलवाया सुन्दरी का कुएँमें गिरना सुनकर यमजिह्वाने कहा इसमें मेराही अपराधहै कि मैंने इसको यह माया नहीं सिखादीथी मकरकटीने कुएँ में जाल बंधवादिया होगा इसीसे वह सुन्दरी उसमें गिरकर नहीं मरी अच्छा कोई हानि नहीं है इसका भी प्रतीकार मेरे पास है यह कहकर उसने अपनी दासियों से कहा कि मेरे आलनाम बन्दरको लेआओ उसकी आज्ञा पाकर एक दासी उस आलको लेआई यमजिह्वा ने उस आलको हजार अशर्फ़ी देकर कहा कि हे पुत्र! इन अशर्फ़ियों को निगलजाओ जब वह उसके कहने से उन अशर्फ़ियों को निगलगया तब यमजिह्वाने उससे कहा दश इसको दो पचास इसको दो पांच इसको दो इसप्रकार अनेक खर्चों में उसने उस बन्दरसे वह अशर्फ़ी दिलवाई और वह बन्दर उगल २ कर देतागया बन्दरकी इस युक्तिको दिखाकर यमजिह्वाने ईश्वरवर्मासे कहा कि तुम इस बन्दर को लेकर फिर उस सुन्दरी के पास जाओ और इस बन्दरको कहीं एकान्त में अशर्फ़ी

निगलवाकर उसके साम्हने इससे अशर्फ़ी खर्चकरवाओ तब सुंदरी इस वन्दरको चिन्तामणि के समान देखकर तुम्हें अपना सर्वस्व देकर वह वन्दर मांगेगी उसके मांगनेपर तुम बड़ी आग्रह करके उसका सर्वस्वलेके इस वन्दरको दो दिनके खर्चके माफ़िक अशर्फ़ी निगलवाके उसे देकर शीघ्रही वहां से वहुत दूरपर चलेजाना यह कहकर यमजिह्वाने वह वन्दर ईश्वरवर्म्माको देदिया और रत्नवर्मा ने उसे दो करोड़ अशर्फ़ी देकर सुन्दरी के यहां भेजा वह उन अशर्फ़ियों को तथा वन्दरको लेकर अपने परिकर समेत सुन्दरी के यहां गया सुन्दरी ने उसे फिर वहुतसा धन लायाहुआ जानकर बड़े आदरपूर्वक अपने यहां रक्खा वहां उसने आदर सत्कार के उपरान्त अर्थदत्त से उस आलनाम वन्दरको मंगवाकर उससेकहा कि हे पुत्र! तीनसौ अशर्फ़ी भोजनादिक के खर्चके निमित्त दोसौ ताम्बूलादि के खर्चकोदो और सौ मकरकटीको दोसौ ब्राह्मणों को देनेके लिये मुझेदो और हज़ार से जो कुछ वाक़ीहों वह सब सुंदरी को देदो इसप्रकार ईश्वरवर्माके कहने से आलने प्रथम निगलीहुई अशर्फ़ियां उगल २ कर सवको दीं इसीयुक्ति से एक पक्षतक ईश्वरवर्माको उस वन्दर के द्वारा अशर्फ़ियोंको व्यय करवाते देखकर सुन्दरी तथा मकरकटी ने शोचा कि यह वन्दररूपधारी चिन्तामणि इसे सिद्धहुई है जोकि प्रतिदिन एक हज़ार अशर्फ़ी देताहै जो यह वन्दर इससे मुझे मिलजाय तो वहुत अच्छा होय यह शोचकर सुन्दरी ने भोजन करके एकान्तमें वैठेहुए ईश्वरवर्म्मासे कहा कि जो सत्य आप मुझपर स्नेह करतेहो तो यह आल मुझको देदो यह सुनकर ईश्वरवर्म्मा हँसकर बोला कि यह तो मेरे पिताका सर्वस्व है इसे कैसे देसक्ताहूं यह सुनकर सुन्दरी ने कहा

कि मैं तुम्हारी पांचोंकरोड़ अशर्फियां फेरदूंगी तुम इसको मुझे दे दो तब ईश्वरवर्म्मा ने कहा कि चाहे तुम अपना सर्वस्व अथवा यह नगर भी मुझे देदो तौभी मैं इसको यह वन्दर नहीं देसक्ता यह सुनकर सुन्दरी ने कहा कि मैं अपना सर्व्वस्व तुमको देतीहूं तुम मुझे यह वन्दर देदो अपने पिता को नाराज होने दो यह कहकर वह उसके पैरों पर गिरपड़ी तब अर्थदत्तादिकों ने ईश्वरवर्म्मा से कहा कि अच्छा यह वन्दर इसे देदो जो कुछ होगा सो देखाजायगा मित्रों के कहने से ईश्वरवर्म्मा ने उसका सर्वस्वलेने पर वह वन्दर देना स्वीकार किया और वन्दर पाने की आशा से प्रसन्नहुई सुन्दरी के साथ वह दिन आनन्द से व्यतीत किया दूसरेदिन प्रातःकाल फिर प्रार्थना करतीहुई सुन्दरीको ईश्वर-वर्मा दोहज़ार अशर्फी निगलवाकर वह बन्दर देकर और उसका सर्वस्वलेकर शीघ्रही वहांसे अपने परिकारसमेत स्वर्णद्वीपको रोज़-गार करने के लियेगया उसके चले जानेपर दोदिन तक उस व-न्दरने हज़ार २ अशर्फी सुन्दरी को दीं और तीसरे दिन वहुत मांगनेपर भी सुन्दरी को कुछ नहीं दिया तब सुन्दरी ने क्रोधकर के उसके एक घूंसामारा इससे उस वन्दर ने भी क्रोधितहोकर सुन्दरी का मुख अपने दांतों से और नखों से फाड़डाला तब मकर-कटीने लाठियों से उस वन्दरको ऐसा पीटा कि वह मरगया उसे मराजान के सुन्दरी अपने सर्वस्वको नष्टहुआ जानकर प्राण देने को उद्यतहुई और लोगों के वहुत समझानेपर मृत्युसे निवृत्तहुई ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेचतुष्षष्टितमःप्रदीपः ६४ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेपञ्चपष्टितमःप्रदीपः ६५ ॥

दुश्शीला व्यभिचारिणीका दृष्टान्त ॥

प्रामाण्यमपिस्यादेवक्वचिद्बालभाषितम् ।
पतिमारिणिदुःशीलानिश्चितावालकोक्तितः ६५॥

(अर्थ) कहीं २ बालककी कही बात भी प्रमाण होजातीहै-जैसे निजपति मारिणी स्वैरिणी दुश्शीला निज सुत करके बता देने से निश्चितभई अर्थात् पहिचानी गई ६५ ॥

किसी ग्राम में देवदास नाम एक कुटुम्बी बैश्य रहता था उस की दुश्शीलानाम बड़ी दुराचारिणी स्त्री थी उसके दुराचार को बहुधा लोग जानगये थे एक समय देवदास किसी कार्य्य से राजा के यहांगया था उस समय दुश्शीला ने उसके मरवाने की इच्छा से अपने किसी जारको बुलाकर छतपर छुपारक्खा और रात्रिके समय आकर भोजन करके सोगये देवदासको उसके हाथसे मरवा डाला और उसके चलेजानेपर कुछ रात्रिरहे यह हाहाकारकिया कि चोरोंने मेरे प्रतिको मारडाला उसके रोवने को सुनकर भाई बन्धुओं ने आकर घरकी सब वस्तु यथास्थित देखकर और जो इसे चोरों ने माराहै तो वह चोर तेरी कोई वस्तु क्यों नहीं लेगये यह कहकर उसके पुत्रसे पूंछा कि तुम्हारे तातको किसनेमारा है उसने कहा कि कल दिनमें कोई युवा पुरुष मेरे यहां आकर छत पर बैठरहा था उसीने ऊपर से उतरकर रात्रिके समय मेरे पिताको मारा उस बालकके यह वचन सुनकर उनलोगों ने यह जानकर कि इसके जारने देवदासको माराहै उसजारको ढूंढ़कर उसीसमय मारडाला और उस बालक को लेकर दुश्शीला को निकाल

दिया इसप्रकार से स्त्रियां परपुरुषपर अनुरक्त होकर अपने पुरुष को मारडालती हैं॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे पञ्चषष्टितमःप्रदीपः ६५॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेषट्षष्टितमःप्रदीपः ६६॥

वज्रसार सेवकका दृष्टान्त॥

दुष्प्रतिष्ठांलभेत्कामी कुटिलःकामिनीषुहि।
वज्रसारस्स्वभार्यातो नासाछेदमवापह ६६॥

(अर्थ) कुटिल कामी जन कामिनियों में महा अप्रतिष्ठा पाता है जैसे-निज स्त्री को दंडदेते भये वज्रसार ने निज नाक कान कटाये ६६॥

वत्सराज के सेवक बड़े शूरवीर सुन्दर वज्रसार के मालवदेश में उत्पन्नभई एक बड़ी स्वरूपवती प्यारी स्त्री थी एकसमय उस स्त्री का पिता तथा भाई उस स्त्री को लिवाने के लिये मालवदेश से आये तो वज्रसार ने उनका बड़ा सत्कार करके राजा से आज्ञा ले अपनी स्त्री समेत उनके साथ जाकर मालवदेश में निवास किया और एक महीने के वाद अपनी स्त्री को वहीं छोड़कर राजा को सेवने के लिये वह यहां चला आया कुछ दिनों के उपरांत अकस्मात् उसके क्रोधन नाम मित्र ने आकर उससे कहा कि तुम ने अपनी स्त्री को पिता के घर छोड़कर अपने घरका सत्यानाश करदिया वहां उस पापिनि ने अन्य पुरुष से स्नेह कर लियाहै आज वहां से आये हुये किसी प्रामाणिक पुरुष से मैंने यह हाल सुनाहै इससे तुम उसे छोड़ दूसरा बिवाह करलेओ यह कहकर क्रोधन के चले जाने पर वज्रसार ने शोचा कि यह बात सत्य मालूम होतीहै नहीं तो मैंने वह पुरुष बुलाने को भेजा उस

के साथ वह क्यों नहीं आई इससे में आपही उसे बुलाने जाऊंगा देखें वहां क्या होता है यह निश्चय करके वज्रसार मालवदेश में जाकर अपने सास श्वशुरकी आज्ञा से अपनी स्त्री को विदा कराकर वहां से चला और वहां से कुछ दूर आकर मार्ग में मिलेहुये किसी वनके एकान्त स्थान में जाय उसने निज स्त्री से पूछा कि मैंने सुना तू परपुरुपसे स्नेह करती है और मुझे निश्चय भी होता है कि जब मैंने तुझे बुलवाई थी तब तू नहीं आई इससे सत्य २ कहना नहीं तो में तुझे मारडालूंगा यह सुन उसने कहा कि जो तुम्हारा ऐसाही निश्चय है तो मुझ से क्यों पूछते हो जो चाहो सो करो उसके यह वचन सुनकर वज्रसारने उसे वृक्ष में बांधकर बहुत पीटा और उसके सब वस्त्र खोल लिये, वस्त्र खोलने से उसे नग्न देखकर वह मूर्ख कामके वशीभूत होकर रमण करनेकेलिये उससे आलिंगन करने लगा और रतिके लिये उससे प्रार्थना की तो तिस कुलटाने कहा कि जैसे तुमने मुझको वृक्षमें बांधकर पीटा तैसे तुमको भी बांधकर पीटूं तब तुम्हें रति करने दूंगी नहीं तो नहीं तब तिसने कामके वशीभूत होकर उसका कहना मान लिया तब तो तिस कुलटाने उसके हाथ पैर बड़ी कठिनता से बांधे और उसी के शस्त्र से उसके नाक कान काटलिये और पुरुषकासा भेपबनाय वहही शस्त्र आप लेके कहीं चलीगई उसके जाने के उपरान्त ओपधि लेने के लिये कोई आयाहुआ वैद्य वज्रसार को वृक्षसे बँधा देख कृपापूर्वक खोलकर उसे अपने घरमें लेगया वहां उस वैद्यकी ओपधिसे कान नाकके अच्छे होजानेपर वह अपने घरकोआया॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेउत्तरार्द्धेषट्षष्टितमः प्रदीपः ६६॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागेसप्तषष्टितमःप्रदीपः ६७ ॥
कल्याणवती रानीका दृष्टान्त ॥

व्यभिचारान्निवर्त्तेत वीरस्त्रीज्ञानिनीयथा ।
बभूवकल्याणवती विमुखीजारतःक्षणात् ६७॥

(अर्थ) शूरबीरकी ज्ञानवाली स्त्री व्यभिचार से छूट जाती है जैसे कल्याणवती रानी परपुरुषसे कामवश रति चाहती भी तिस की तुच्छता पर घृणाकरके व्यभिचारसे निवृत्त भई ६७ ॥

दक्षिणदेश में सिंहवल राजा की मालवदेश के राजाकी (कल्याणवती) नामक पुत्री पटरानीथी एकसमय उस राजा के गोत्री भाइयों ने मिलकर उसको उसके देश से निकाल दिया तब वह, निज रानी कल्याणवतीको साथलेकर अपने श्वशुरके यहां मालवदेशको चला उसने मार्ग में मिलेहुए वनमें अकस्मात् आयेहुये सिंहको एकही खड्गके प्रहारसे मारडाला और चिंहाड़ करते वनके हाथीकी सूंड़ खड्ग से काट डाली और बीचमें मिली हुई चोरोंकी सेनाको अकेलेही मारकर भगा दिया इस प्रकार मार्गका उल्लंघन करके मालवदेश में पहुँचके उसने रानी से कहदिया कि मार्गका वृत्तान्त अपने घरमें किसी से मत कहना क्योंकि शत्रुओं से हारकर मुझको यह सब बातें लज्जाकारक होंगी यह कह वह निज श्वशुरके मन्दिर में गया और उससे सम्पूर्ण वृत्तांत कहकर उसकी सेना लेके और रानीको वहां छोड़कर गजानीक, नाम निज मित्र से भी कुछ सेना लेने को गया उसके चलेजाने पर एक दिन कल्याणवतीने महलके ऊपर चढ़कर किसी सुन्दर परपुरुष को देखके कामके बशीभूत होके यह शोचा कि यद्यपि मैं जानती हूं कि

आर्यपुत्रसे अधिक स्वरूपवान् और बलवान् दूसरा कोई पुरुष नहींहै तथापि चित्तकी वृत्ति चलायमान होतीहै अच्छा जो चाहे सो होय इसके साथ अवश्य रमण करूंगी यह शोच उसने निज सखी के द्वारा अपना अभिप्राय उससे कहके रात्रि के समय उसको रस्सी से निज महल में चढ़ा लिया वह पुरुष वहां आकर भय से उस के पलँग पर नहीं बैठसका यह देखकर रानी को यह जानकर कि यह नीचहै बड़ा खेद हुआ और उस समय एक भयङ्कर सर्प्प महलके ऊपर आकर उड़ने लगा उसे देख भयभीतहो उसपुरुषने एक बाण धनुषमें लगाके मारा तो बाणके लगने से वह कटकर महल के ऊपर गिर पड़ा तब वह पुरुष उस सर्पको झरोखेमेंसे बाहर फेंककर प्रसन्नहो नाचने लगा उसकीइस तुच्छताको देखके कल्याणवती ने निज जीमें विचार कर कहा कि इस अधम निःसत्त्वको लेकर मैं क्या करूंगी उसके इस अभिप्रायको जान उसकी सखीने उस पुरुषके सामने उस राजपुत्रीसे कहा कि तुम्हारा पिता आताहै तो तिस पुरुषने भयभीतहो शीघ्रही रस्सीको पकड़के अपनी राह लिया व्याकुलहो भयसे गिरा नहीं यह कुशलहुई तब उसके चले जानेपर कल्याणवतीने अपनी सखी से कहा कि तुमने मेरा अभिप्राय जानलिया यह बहुत अच्छाकिया जो इसनीच को युक्तिपूर्वक निकाल दिया देखो मेरापति व्याघ्रसिंहादिकों को भी मारकर लज्जित हुआ और वह सर्प्पकोही मारकर नाचने लगा इससे ऐसे पराक्रमीको छोड़कर ऐसे निःसत्त्व पुरुषपर मेरा प्रेम कैसेहोय मेरी स्थिरतारहित इसबुद्धिकोधिक्कारहै अथवाकपूरको छोड़कर अशुचि वस्तुओं पर जानेवाली मक्षिकारूप सब स्त्रियों को धिक्कारहै इस प्रकार पश्चात्ताप करके कल्याणवती अपने पतिकी राह देखनेलगी।

इसी बीचमें सिंहवलराजा गजानीक से वहुतही सेना लेकर अपने शत्रुओं को जीतकर कल्याणवती को अपने श्वशुर के यहां से लेगया और प्रसन्नतापूर्वक वहुतसा दान देकर निष्कंटक राज्य करनेलगा ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेउत्तरार्द्धेसप्तषष्टितमःप्रदीपः ६७ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेअष्टषष्टितमःप्रदीपः ६८ ॥

गधे और किसान का दृष्टान्त ॥

वाकादोषात्प्रकटताजायतेगुप्तरूपिणः । गर्द भोहियथाज्ञातःकृषिकारेणशब्दतः ६८ ॥

(अर्थ)--वाणी के दोष करके निज छिपारूप भी प्रकट हो जाताहै-जैसे रींकने पर गधा पहिंचाना गया ६८ ॥

किसी धोबी ने अपने दुर्वल गधेको शेर का चमड़ा उढ़ाकर नाज के खेत में छोड़दिया वह गधा वहुत दिनों तक अन्नखाया किया और उसे शेर जानकर किसी ने निवारण नहीं किया एक दिन कोई धनुषधारी खेती करनेवाला उसे देखके और सिंहजान के भयभीत होके कम्बल ओढ़कर निहुरे २ चला उसे इसप्रकारसे जाते देखकर वह गधा उसे भी गधा जानकर उच्चस्वर से वुलाने लगा उस शब्दको सुनकर खेतीवाले ने उसे गधा जानकर वहां आके उसको मारडाला ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेअष्टषष्टितमःप्रदीपः ६८ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकोनसप्ततितमःप्रदीपः ६९ ॥

शशेसे हाथी वशहोने का दृष्टान्त ॥

स्वल्पोपिकुर्य्याद्वशतंमहान्तमपिबुद्धितः । शशोयथाहस्तिराजंमहान्तंनकरोद्वशं ६९ ॥

(अर्थ) छोटा भी जीव निज बुद्धि ने भारी भी शत्रुको वश कर लेताहै-जैसे हाथी को एक शशेने वशमें किया ६६ ॥

दृष्टान्त-चन्द्रसर नाम किसी निर्मल जलवाले तड़ागपर शिली-मुखनामखरगोशों का राजा रहताथा एक समय अनावृष्टिके कारण अन्य जलाशयों के सूखजाने से चतुर्दन्तनाम हाथियों का राजा सम्पूर्ण अपने हाथियों समेत वहां जल पीनेको आया इससे हाथियों के पैरों से बहुत खरगोश कुचल गये तब उस हाथी के चले जानेपर उसी शिलीमुखने सभा करके विजयनाम खरगोशसे कहा कि यह गजराज जलका स्वाद जानगयाहै अब यह बारम्बार यहां आवेगा इससे सब खरगोशोंका नाश होजायगा इस हेतुसे इसका कोई उपाय शोचो और उसके पास जाकर कोई युक्तिकरो क्योंकि तुम कार्य्यका उपाय तथा कहनेकी युक्ति जानतेहो जहां २ तुम गयेहो वहां २ सब कार्य सिद्धिहुएहैं उसके यह वचन सुनकर वह विजयनाम खरगोश उस हाथीके पास एक ऊंचेसे शिखरपर चढ़कर हाथी से बोला कि मैं चन्द्रमाका भेजाहुआ दूतहूं उन्होंने तुम से कहाहै कि शीतल चन्द्रसर तड़ाग मेरे निज रहनेका स्थानहै वहां जो खरगोश रहते हैं उनका मैं राजाहूं और वह मेरे बड़े प्रिय हैं इसीसे मेरा नाम भी शशी होगयाहै देखो तुमने मेरे तड़ागका नाश कियाहै और मेरे खरगोशोंको माराहै अब जो तुम फिर ऐसा करोगे तो मुझसे इसका दण्ड पाओगे उसके यह वचन सुनकर हाथियोंके स्वामी ने भयभीत होकर कहा कि अब ऐसा अपराध मैं नहीं करूंगा यह सुनकर उसने कहा कि अच्छा तुम मेरे साथ चलकर उनके दर्शन करके अपने अपराधों को क्षमा कराओ यह कहके उस खरगोशने हाथियों के राजा को अपने साथ लाकर

ताड़ग में चन्द्रमा का प्रतिविम्ब दिखाया उस प्रतिविम्बको देखकर वह गजराज प्रणाम करके भयभीत होकर अन्यवनको भागगया और फिर वहां कभी न गया ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकोनसप्ततितमःप्रदीपः ६९ ॥

अथ दृष्टान्त प्रदीपिनी चतुर्थभागे सप्ततितमःप्रदीपः ७० ॥

दोपक्षियों और विलाव का दृष्टान्त ॥

नकुर्यात्क्षुद्रविश्वासंघातमेवकरोतिसः ।
यथाविश्वासितौतुर्वैभक्षयामासपक्षिणो ७० ॥

(अर्थ) क्षुद्रप्राणी का विश्वास न करना वह घातही करताहै जैसे—विश्वास किये बिलावने दोनों पक्षी खालिये ७० ॥

दृष्टान्तकाक का—एक समय किसी वृक्षपर मैं रहता था उसी वृक्ष के नीचे एक कपिञ्जल पक्षी भी घोंसला बनाकर रहता था किसी समय वह कपिञ्जल कहीं चलागया और वहुत दिन तक नहीं आया इतने में एक खरगोश आकर उसके घोंसले में रहने-लगा कुछ दिनों में कपिञ्जल भी आया उसी समय कपिञ्जल और खरगोशका परस्पर यह विवादहोने लगा कि यह घोंसला कि-सका है बहुत विवाद करके वह दोनों निर्णय करनेवाले किसी सभ्यको ढूंढ़ने के लिये चले और मैं भी उनका कौतुक देखने को उनके पीछे २ चला कुछ दूरचलकर किसी तड़ाग के निकट जीवहिंसा के लिये मिथ्या व्रतधारण किये हुये ध्यान से आधा नेत्र बन्दकरके बैठे हुए बिलाव को देखकर उसे धर्मात्मा जानकर वह दोनों निर्णय कराने के लिये उसके कुछ समीप गये और उस से बोले कि हे भगवन् ! आप बड़े धर्मात्मा तपस्वीहो इससे आप ही हमारा न्यायकरो यह सुनकर वह बिलाव धीरे से बोला कि

तप करते २ में बहुत क्षीणहोगया हूं इस से मुझे अच्छे प्रकार सुनाई नहीं देता अत्यन्त निकट आकर कहो तो मैं निर्णय करूं क्योंकि अच्छे प्रकार निर्णय न करने से दोनों लोक नष्ट होतेहैं इस प्रकार से कहकर उनदोनों को बिलाव ने अपने पास बुला कर मारके खाडाला ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्ततितमःप्रदीपः ७० ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागे एकसप्ततितमःप्रदीपः ७१ ॥

ब्राह्मण और धूर्तों का दृष्टान्त ॥

एकबुद्धिर्भिद्यतेहि प्रायशोबहुवक्तृभिः ॥
द्विजोयथाभिकथितोबुद्धिमाजातिमकांजहौ ७१

(अर्थ)-एककी बुद्धि बहुतों के कथनसे बहक जाती है जैसे बहुत वक्ता धूर्तों से कहे गये ब्राह्मण ने निजबकरे की बुद्धि को तजी ७१ ॥

कोई ब्राह्मण किसी गांवसे बकरा मोल लेकर कन्धेपर रखकर चला मार्ग में बहुतसे धूर्तों ने उसे देखकर वह बकरा लेना चाहा उनमेंसे एकने जाकर उस ब्राह्मणसे कहा कि हे ब्राह्मण! यह कुत्ता तुमने अपने कन्धेपर क्यों रक्खाहै इसे छोड़दो उसके इस कहने को न मानकर वह ब्राह्मण उसे कन्धेपर रक्खेही रहा तब अन्य दो धूर्तों ने ब्राह्मणसे कहा हे ब्राह्मण ! यह कुत्ता तुमने कन्धेपरक्यों चढ़ायाहै यह सुनकर वह ब्राह्मण कुछ सन्देह युक्तहोकर बकरे को कन्धेपर रक्खेहुएही चला तब अन्य तीन धूर्तों ने उससे आगे जाकर कहा कि तुम ब्राह्मणहोके कुत्ते को क्यों कन्धेपर चढ़ातेहो हम जानते हैं कि तुम ब्राह्मण नहीं हो व्याधहो इसी कुत्तेसे जीवों की हिंसा करवाते हो यह सुनकर उस ब्राह्मणने शोचा कि किसी

भूतने मेरी दृष्टि हरकर मुझे सन्देह कराने को यह कुत्ता देदियाहै क्योंकि इन सब की दृष्टि में अन्तर नहीं होसक्ताहै यह शोचकर वह उस बकरे को छोड़ स्नानकरके अपने घरको चलागया और उन धूर्तों ने बकरे को ले जाके और मारके खाया ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकसप्ततितमःप्रदीपः ७१ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेद्विसप्ततितमःप्रदीपः ७२ ॥

राक्षस और चोरों का दृष्टान्त ॥

स्वविवादेनकार्यस्य हानिरेवोपजायते ।
यथाराक्षसचौरोत्थ विवादेद्विजजागरः ७२ ॥

(अर्थ)–आपस में विवाद करने से भी निजकाज की हानि होजाती है जैसे चोर और राक्षसकृत विवादसे ब्राह्मण का जागरण होगया ७२ ॥

किसी ब्राह्मण ने कहीं से दो गौएँ पाई थीं उन गौओंको देख कर किसी चोरने उन्हें चुरालेनेका विचारकिया और उसी समय किसी राक्षसने उस ब्राह्मण को खाने का विचार किया इसीलिये वह दोनों चोर और राक्षस रात्रि के समय उस ब्राह्मण के यहां चले और मार्ग में मिलकर परस्पर अपना अपना अभिप्रायकहके उस ब्राह्मण के यहां पहुँचे वहां चोरने राक्षस से कहा कि मैं पहले गौओं को लेजाऊं तब तुम इस ब्राह्मणको खाना नहीं तो तुम्हारे छूने से यह ब्राह्मण जगपड़ैगा तो मैं गौएँ कैसे लूंगा यहसुनकर राक्षस ने कहा कि पहले इस ब्राह्मण को खाऊंगा ऐसा न होय कि जब तुम गौओंको खोलो और ब्राह्मण जगपड़े तो मेरा परिश्रम व्यर्थ होजाय उनके इस कलह को सुनकर ब्राह्मण जगपड़ा और

राक्षस के नाश करनेवाले मंत्रोंका जप करनेलगा इससे वह चोर और राक्षस दोनों भागगये ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेद्विसप्ततितमःप्रदीपः ७२ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेत्रिसप्ततितमःप्रदीपः ७३ ॥

सूपकी कन्या का दृष्टान्त ॥

यादृशस्तादृशंप्रेष्ठं लभतेकिंविवादतः।
लेभेतुमूषिकाकन्यातमेवाखुपतिरूपतिम् ७३ ॥

(अर्थ)–जो जैसा हो उसे वैसाही प्रिय मिलताहै विवाद करनेसे क्याहै जैसे मूषकी ने कन्या होनेपर भी वही मूषक पतिपाया॥

पूर्वसमय में किसी मुनिनें बाजके पंजेसे छूटीहुई एक छोटीसी मूपिकाको पाकर उसे अपने तपोबलसे कन्या बनाली और अपने आश्रममें उसका पालनकरके जब वह युवतीहुई तो किसीबलवान् के साथ उसका विवाह करनेकी इच्छाकरके सूर्यसे कहा कि मैं इस कन्याका किसी बलवान् के साथ विवाह करना चाहता हूं इस से आपही इसको ग्रहण करलीजिये यह सुनकर सूर्य्य देवताने कहा कि मेघ मुझसे अधिक बलवान्हैं वह क्षणभरही में मुझे आच्छादित करलेते हैं यह सुनकर मुनिने मेघों को बुलाके उसके साथ विवाह करने को कहा यह सुनकर मेघों ने कहा कि वायु हम से अधिक बलवान् है क्योंकि वह हम सबको क्षणभरही में चारों दिशाओं में फेंक देता है तब मुनिने कहा कि तुम इससे अपना विवाह करलो उसने भी यह कहा कि पर्वत हमसे भी अधिक बलवान् हैं क्योंकि हमभी उन्हें नहीं हिला सकते यह सुनके मुनि ने एक पर्वत को बुलाकर उससे कहा कि तुम इसके साथ विवाह करलो यह सुनकर उसने कहा कि मूसे हमसे भी अधिक बलवान्

होतेहैं क्योंकि वह हममें भी छिद्र करदेते हैं यह सुनके मुनिने एक मूसे को बुलाकर कहा कि तुम इसके साथ बिवाह करो यह सुन कर उसने कहा कि महाराज यह मेरे विल में कैसे जायगी तब मुनि ने उसे मूषिकाही वनाकर उस मूषक के साथ उसका विवाह कर दिया ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेत्रिसप्ततितमःप्रदीपः ७३ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेचतुःसप्ततितमःप्रदीपः ७४ ॥

मेढ़क और सर्प का दृष्टान्त ॥

कृतवैरेनविश्वासःकार्य्यःसम्यक्तयायथा ।
कृतोविश्वस्तसर्पेण वर्षाभूतांमहत्त्वयः ७४ ॥

(अर्थ)–वैरी में विश्वास नहीं करना चाहिये जैसे विश्वास किये सर्प ने मेढ़कों का महानाश करडाला ७४ ॥

कोई वृद्ध सर्प सुखपूर्वक जीवों के पकड़ने में असमर्थ होकर किसी तड़ाग के तटपर निश्चलहोकर वैठा उसे इसप्रकार निश्चल वैठा देखकर दूरही से मेढ़कों ने उससे पूछा कि तुम जैसे पहले मेढ़कों को पकड़कर खाते थे अब क्यों नहीं खाते हो यह सुनकर वह बोला कि मैंने किसी ब्राह्मण के पुत्र मेढ़कों को काटखायाथा इससे उसके मरजाने से उसके पिताने क्रोधकरके मुझे यह शाप दियाहै कि तू मेढ़कोंका वाहनहोगा तो अब मैं तुम्हारा वाहनहोगयाहूं इससे तुमको कैसे खासक्ताहूं यह सुनकर मेढ़कों का राजा जलसे निकलकर अपने मन्त्रियों समेत उसकी पीठपर चढ़गया तब उस सर्प ने उनको कुछ दूर भ्रमण कराके कहा कि अब मैं थकगया हूं मुझे कुछ भोजन दीजिये बिना भोजन के मैं नहीं चलसक्ता हूं यह सुनकर मेढ़कों के राजा ने कहा कि अच्छा तुम

मेरे थोड़े से सेवकों को रोज खालिया करो तव उस सर्प ने धीरे २ क्रमपूर्वक सव मेढ़क खालिये और वाहनके अभिमानसे मेढ़कोंका राजा देखताही रहा इसप्रकार से बुद्धिमान् लोग मूर्ख शत्रुओंको मारलेते हैं ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे चतुस्सप्ततितमःप्रदीपः ७४॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे पञ्चसप्ततितमःप्रदीपः ७५ ॥

मूर्ख ब्राह्मणोंका दृष्टान्त ॥

विभागोऽपिकृतोमूर्खैर्निजहानिप्रदायकः ।
यथाविभाजितादासी द्विजैर्हानिप्रदाभवत् ७५ ॥

(अर्थ) मूर्खोंका किया विभाग भी हानिकारक होताहै जैसे दो ब्राह्मणों ने निज एक दासीका विभाग किया तो तिनकी महाही हानि भई ७५ ॥

मालवदेश में दो सगेभाई ब्राह्मणोंने अपने पिताका धन वांटनेका विचारकिया और कमती वढ़तीका झगड़ा न होय इसलिये उपाध्यायसे पूछा कि क्या करैं उस वैदिक उपाध्यायने कहा कि हरएक वस्तुके दो २ भागकरके एक २ लेलो जिससे आपस में विगाड़ न होय यह सुनकर उन्हों ने घर, शय्या, पात्र तथा पशुओंको भी दो २ भाग करके वांट करलिया एक दासी भी उनके यहांथी उसके भी उन्होंने दोभाग किये यह सुनकर राजाने क्रोध करके उन दोनोंका सर्वस्व छीन लिया इसप्रकार मूर्खलोग मूर्खों के उपदेश से दोनों लोकोंका नाश करते हैं इससे बुद्धिमान् को चाहिये कि मूर्खोंको छोड़के सदैव बुद्धिमानोंही का सेवन करे हे स्वामी ! कहीं संन्यासी सन्तोषसे भिक्षा मांग २ कर खाते थे और इसी से मोटे ताज़े बने रहते थे उन्हें देखकर कुछ मित्रों ने परस्पर

कहा कि भिक्षा मांगकर भी यह संन्यासी कैसे स्थूल होरहेहैं उनमें से एकने कहा कि इनको मैं इसप्रकार के भोजन करने पर भी दुर्बल करदूंगा यह कहकर उसने उन संन्यासियोंको निमन्त्रण देके अपने यहां एक दिन बड़े २ स्वादिष्ठ उत्तम भोजन करवाये इस से उन मूर्खों को उस स्वादका स्मरण करके भिक्षाका अन्न नहीं रुचने लगा इसीसे वह दुर्बल होगये तब जिसने उन्हें भोजन करवायेथे वह अपने मित्रोंको उन संन्यासियोंके पास लेजाकर बोला कि देखो इन संन्यासियों को भिक्षामें सन्तोषथा इसीसे यह हृष्टपुष्ट बने रहते थे अब इनका संतोष नष्ट होगया है इसी से यह दुर्बल होगये हैं इससे सुख चाहनेवाला बुद्धिमान् पुरुष अपने चित्त में सदैव संतोष रक्खे क्योंकि सन्तोष न करने से दोनों लोकों में दुस्सह दुःख प्राप्त होताहै उसके यह बचन सुनके उन सबने उसदुःखदायी असन्तोष का त्याग कर दिया ठीक है सत्संग से किसका भला नहीं होताहै ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे पञ्चसप्ततितमःप्रदीपः ७५ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे षट्सप्ततितमःप्रदीपः ७६ ॥

अनेक मूर्खोंके दृष्टान्त ॥

स्वर्णलोभीमहामूर्खो मूर्खमूर्खस्तथाक्रमात ।
द्वारमूर्खोथमहिषीमूर्खोमूर्खदरिद्रकः ॥
वैद्यमूर्खश्चेतिमूर्खाःकथितावैप्रदीपके ७६ ॥

(अर्थ) सुवर्णका लोभी महामूर्ख मालमूर्ख आमूर्ख द्वारमूर्ख महिषमूर्ख और मूर्खवैद्य इतने मूर्ख वर्णन किये हैं ७६ ॥

अब एक सुवर्ण के लोभीकी कथा आप सुनिये कोई युवा पु-

रूप अपने पिताके साथ तड़ाग पर जल पीनेको गया वहां उसने सुवर्णचूर्ण नाम पक्षी का सुवर्णके वर्णका जल में प्रतिविम्ब देख कर सुवर्ण जानके तड़ाग में उतर कर उसको लेनेलगा परन्तु चंचल जलके सिवाय उसके हाथमें कुछ न आया और उसे वारम्वार जल पकड़ते देखकर उसके पिताने उससे उस सुवर्णचूड़को भगा दिया और उसे जलके वाहर वुलाकर समझा दिया कि यह सुवर्ण न था पक्षीका प्रतिविम्ब था इसीप्रकार से निर्विचार लोग भ्रान्ति से मोहितहोकर लोगोंमें उपहास को प्राप्त होते हैं अव आप अन्य महामूर्खोंका वृत्तान्त सुनिये कि किसी वनियेंका ऊंट भारकेमारे मार्ग में थकगया था तव वह अपने सेवकोंसे वोला कि मैं एक ऊंट मोल लेने जाताहूं इसपर का कुछ वोझ उसपर लाददूंगा और तुम लोग जो यहां पानी वरसे तो इस वातका ध्यान रखना कि इन गठरियों के चमड़े में जल न लगने पावे यह कहकर उस वैश्यके चले जाने पर मेघों से आकाश घिरगया और जल वरसने लगा तव उन सेवकों ने यह शोचकर कि हमारे स्वामी ने कहा है कि इन गठरियों के चमड़े में जल न जानेपावे उन गठरियों में से कपड़े निकालकर उनके चमड़ोंपर लपेट दिये इससे सव वस्त्र नष्ट होगये इतने में उस वनियें ने आकर कपड़ों को भीजते देखके कहा कि हे मूर्खो! तुमने सव कपड़े नष्ट करदिये यह सुनकर वह वोले कि हे स्वामी! आपही ने तो कहाथा कि गठरियों के चमड़े पानी में न भीजने पावें तव वह वैश्य वोला कि चमड़ों के गीले होनेसे वस्त्र भी गीले न होजायँ इसलिये मैंने तुमसे कहा था कि केवल चमड़ेही की रक्षा के लिये कहा था यह कहकर उसने ऊंटोंपर सव असवाव लाद कर अपने घर जाके उन मूर्ख सेवकों का सर्वस्व छीनलिया इसप्र-

कार से मूर्खलोग तात्पर्य को न समझकर उलटाकाम करके अपने तथा स्वामी के प्रयोजन को नष्ट करते हैं अब आप पुओं के मूर्ख की कथा सुनिये किसी मूर्ख पथिकने पैसे के आठपुए लिये उनमें से छः पुए खानेसे उसकी तृप्ति न हुई और सातवें के खाने से तृप्ति होगई तब वह चिल्लाकर रोनेलगा कि हाय मैंने यह पुआ पहलेही क्यों न खाया जिससे मेरे यह छः पुए बचजाते उसके रोदन का वृत्तान्त जानकर लोग हँसने लगे अब आप द्वारके रक्षक मूर्खकी कथा सुनिये किसी बनियें ने अपने मूर्ख सेवक से कहा कि मैं घर में जाताहूं तुम दूकानका द्वार देखते रहना यह कहकर उसके चले जाने पर वह मूर्ख सेवक दरवाजा उतारके अपने कन्धेपर लाद के नटका तमाशा देखने चलागया और लौटकर उस वैश्यके क्रोधसे डाटकर बोला कि आपहीने तो द्वारकी रक्षा करनेको कहा था इस प्रकार से तात्पर्य को न जानकर केवल शब्दों के ही जाननेवाले मूर्खलोग विपरीत कार्य किया करते हैं अब आप भैंसोंके मूर्खोंकी कथा सुनिये कुछ ग्रामीण पुरुषों ने किसी का भैंसा लेकर उसी के आगे गांव के बाहर लेजाके किसी बर्गद के वृक्षके नीचे मारकर खाडाला तब भैंसेके स्वामी ने राजाके यहां जाके उनकी नालिश की राजाने उन ग्रामीणों को बुलाया उनके आगे भैंसेके मालिक ने राजासे कहा कि हे स्वामी! इन ग्रामीणों ने तड़ागके तटपर बर्गद के नीचे मेरा भैंसा मारकर खाया है यह सुनकर उनमें से एक वृद्ध मूर्ख ने कहा कि इस गाँवमें न तड़ाग है न बर्गदका वृक्षहै तो हमने इसका भैंसा कहां खाया यह बड़ा झूंठहै यह सुनके उसने कहा कि तुम्हारे गांवके पूर्व्वकी ओर क्या तालाब के निकट बर्गद का वृक्ष नहीं है वहाँ बैठकर अष्टमी के दिन मेरा भैंसा तुम लोगोंने मारकर

खाया है यह सुनकर उस वृद्धने कहा कि हमारे गांवमें न पूर्व्वदिशा है न अष्टमी तिथि है यह सुनकर राजाने हँसकर उसके उत्साह बढ़ाने के लिये उससे कहा कि तुम बड़े सत्यवादीहो तुम्हारे कहने में कुछ झूंठ नहीं है अब तुम सत्य २ कहो कि तुमने भैंसा खायाहै या नहीं यह सुनके उस वृद्धने कहा कि जब मेरा पिता मरगया था उसके तीनवर्ष पीछे मैं पैदाहुआ था उन्होंने ही मुझेयह सब चतुरता सिखाई है इससे मैं कभी झूंठ नहीं कहताहूं इसका भैंसा तो मैंने खायाहै परन्तु सब इसकी बातें झूंठहैं यह सुनकर राजाने बहुत हँसके उन ग्रामीणों को दंडदिया इसप्रकार से मूर्खलोग प्रकट करने की बातको छिपाते हैं और नहीं प्रकट करनेकी बातको प्रकट करदेते हैं अब एक अन्य मूर्ख की कथा सुनिये कि किसी दरिद्री मूर्ख से उसकी स्त्रीने कहा कि प्रातःकाल मेरे पिताके यहां उत्सवहै वहां मैं जाऊँगी इससे जो आप कमलोंकी माला मुझे न लादोगे तो आजसे न मैं आपकी स्त्री न आप मेरे पति उसके यह वचन सुन के वह मूर्ख रात्रि के समय राजा के तालाव पर कमल तोड़ने को गया वहां रक्षकों ने उससे पूँछा कि तुम कौनहो उसने कहा कि मैं चक्रवाकहूं यह सुनकर रक्षक लोग प्रातःकाल उसे बांध के राजा के पास लेगये राजाके पास भी जाके वह चक्रवाक कासा शब्द करनेलगा तब राजाने उससे युक्तिपूर्वक सब वृत्तान्त पूछकर उसको मूर्ख जान के छोड़दिया अब आप एक मूर्ख वैद्य की कथा सुनिये किसी ब्राह्मण ने किसी मुर्ख वैद्य से कहा कि तुम मेरे पुत्र का कूबर वैठालदो यह सुनकर उस वैद्य ने कहा कि तुम मुझे दश पैसेदो तो मैं इसका कूबर वैठाल दूं और जो न वैठालदूं तो इसके दशगुने तुमको फेरदूंगा यह कहके उस वैद्यने दशपैसे लेकर कूबर

के बैठाने में बहुतसा उद्योग किया परन्तु वह न बैठा इससे उसने दशगुने पैसे फेरदिये इसप्रकार अशक्य कार्य्य की प्रतिज्ञा करने से केवल हास्य तथा हानिही होती है इससे बुद्धिमान्‌को चाहिये कि ऐसी २ मूर्खता से सदैव बचारहै ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेषट्सप्ततितमःप्रदीपः ७६ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्तसप्ततितमःप्रदीपः ७७ ॥

दो स्त्री वाले पुरुष का दृष्टान्त ॥

अलालितातुहितदा लालिताहितहारिणी ।
द्वेहिभार्य्येयथाप्रोक्तेहितदाहितकारके ७७ ॥

(अर्थ) बिनलालन की दुहागिन स्त्री तो साध्वीहोने पर हित देनेवाली होती और लालनकरी स्त्री दुःखदायक होजातीहै जैसे एक पुरुष की दो स्त्री थीं तिनमें पहिली हितकारक दूसरी हितहारक अर्थात् व्यभिचारणी थी ७७ ॥

मालवदेश में बड़ा प्रसिद्ध एक श्रीधर नाम ब्राह्मण था उसके दो पुत्र थे बड़े का नाम यशोधर और छोटे का नाम लक्ष्मीधर यह दोनों एक साथही उत्पन्नहुये थे इसी से इनके रूप भी समान थे यह दोनों तरुण होके विद्या उपार्जन करने के लिये परदेशको चले मार्ग में चलते २ जल तथा वृक्षों से रहित उष्ण पृथ्वीवाले बड़े घोर बनमें पहुँचे उसबनमें धूप तथा तृष्णासे महाव्याकुलहोके वह दोनों कुछ दूर चलके सायंकालके समय एक बावड़ीपरपहुंचे उसबावड़ी के तटपर एक फलवान् सघन वृक्ष लगाथा उस वृक्षके नीचे कुछबैठके श्रमको दूर करके उन दोनोंने उसबावड़ी में स्नान किया और सन्ध्याबन्दन कर उसी वृक्षके फलखाके बावड़ी का जलपिया और रात्रिहोजाने पर जीवों के भय से वह दोनों उसी

वृक्षपर चढ़के बैठे उस समय बावड़ी के जलमें से बहुत से पुरुष निकले उनमें से किसी ने उस पृथ्वी पर बुहारीदी किसीने चौका दिया किसीने फूल बखेरे किसीने सुवर्ण का पलँगलाकर बिछाया किसीने उस पलँग पर बिछौने बिछाये किसीने दिव्य भोजन किसीने दिव्य आभूषण लाके उसी वृक्षके नीचे रक्खे और किसी ने चन्दन तथा तैलादिक पदार्थ लाके रक्खे इसप्रकार सब सामग्री इकट्ठे होजानेपर एक दिव्यपुरुष हाथ में खड्गलिये हुये उस बावड़ी में से निकला और आकर दिव्य आसन पर बैठा उसके शरीर में चन्दनादि लगा के और सब आभूषण पहराके वह सबलोग बावड़ी में चलेगये उसके जानेपर उस दिव्य पुरुषने अपने मुखसे सौभाग्य के आभूषण धारण कियेहुये एक साध्वी स्त्री और दिव्य वस्त्र तथा दिव्य आभूषण पहनेहुई दूसरी अत्यन्त सुन्दर स्त्री नि-काली वह दोनों उसकी स्त्री थीं परन्तु दूसरी उसे बहुत प्यारी थी मुखसे निकल कर वह पहली स्त्री अपने पतिके लिये तथा सपत्नी के लिये सुवर्ण के पात्रों में रखकर भोजन लाई वह दिव्यपुरुष उस दूसरी स्त्री के साथ उन पदार्थों को भोजन करके सुवर्ण के पलँगपर उसे साथ लेकर लेटा और रति करके सोगया और वह पहली स्त्री भोजन करके उसके पैरदाबने लगी और वह दोनों स्त्री भी जागतीहीरहीं यह देखकर उस वृक्षपर बैठेहुये वहदोनोंब्राह्मण यह सलाह करके कि यह कौनहै यहबात इस पैरदाबनेवाली से पूंछना चाहिये इसलिये वृक्षसे उतरकर उसके पासगये उसके पास उन्हेंजाते देखकर उसदूसरीस्त्रीने अपने पतिके पाससे उठकरयशो-धरसे कहा कि तुम मुझसे प्रसंगकरो यहसुनकर यशोधरने कहा कि तुम परस्त्रीहो मैं तुम्हारे साथ रमण नहीं करसक्ता तुमको ऐसा नहीं

कहना चाहिये यह सुन वह फिर बोली कि दरोमत तुम सरीखे सौ पुरुषोंके साथ मैं रति करचुकीहूं तुमको विश्वास न हो तो देखलो मेरे अंचल में सौ अँगूठी बँधीहुई हैं जिस २ के साथ मैंने रमण कियाहै उस २ से एक एक अँगूठी लेली है यह कह उसने निज अँचल से खोल सौ अँगूठी उसे दिखलादीं तब यशोधरने कहा कि तुम सौ क्या चाहे लाखोंके साथरमणकरो परन्तु मैं तो तुमको माता के समान जानताहूं मैं उन पुरुषोंकासा कामांध नहीं हूं इसप्रकार उसके निषेधको सुनकर उस पुंश्चलीने निजपतिको जगाकरकहा कि आपके सोजाने पर इस पुरुषने मेरा धर्म नष्ट करदिया यहसुन वह खड्गलेके उसे मारनेको चला तब पहिली स्त्रीने उसके चरण ग्रहण करके कहा कि आप व्यर्थ ब्रह्महत्या न कीजिये इसी पापि-निने इससे कुसंग करनेको कहा पर इसीने माता कहके निषेधकर दिया तब इसने तुम्हें जगाकर तुमसे मरवाना चाहाहै और इसने मेरे आगेही सौ पुरुषों के साथ कुसंग कियाहै और सबसे एक २ अँगूठी लीहै और मैंने आपसे इसलिये कभी नहीं कहा कि आप को कदाचित् विश्वास न हो पर आज आपको पापसे बचाने के कारण मुझे कहनाही पड़ा अब भी जो आपको विश्वास न होता होय तो इसके अंचल में सौ अँगूठी बँधी हैं खोल लीजिये और मेरा यह सतीधर्म्म भी नहीं जो निज पति से झूंठ बोलूं यह कह उसने निज प्रभाव दिखाने को वृक्षकी ओर दृष्टिकी तो वह भस्म होगया फिर उसे निज अनुग्रहही से हरा किया यह प्रभाव देख उसने निज स्त्री को हृदयसे लगालिया और उसके अंचल में सौ अँगूठियां देख उसकी नाक काटके निकालदी और यशोधर से निज अपराध क्षमाकराकर कहा कि मैं ईर्षासे इन दोनों स्त्रियोंको

हृदयमें रखके इनकी रक्षा करताथा इतनेपर भी इस पापिनिकी मैं रक्षा नहीं करसका ॥ विद्युतंकःस्थिरींकुर्य्यात्कोरक्षेच्चपलां स्त्रियम् । साध्वीयदिपरंस्वेनशीलेनैकेनरक्ष्यते॥(अर्थ) बिजली कौन ठहरा सक्ता तैसेही चपला स्त्रीकी कौन रक्षा करसके केवल शीलहीउनकी रक्षाकरसक्ताहै शीलवती स्त्री दोनों लोकोंमें निजपतिकी रक्षाकरती है जैसे इसने आज मेरीकी इसीकी कृपासे मेरी पुंश्चलीसे कुसंगति छूटी और ब्रह्महत्या के पापसे भी बचा यह कह उसने यशोधरऔर लक्ष्मीधरसे बैठाकर पूंछा कि तुमदोनों कहांसे आतेहो और कहांको जाओगे तब यशोधरने उससे सब वृत्तान्त कह विश्वासपाय उससे पूंछा कि हे महाभाग! जो यह गुप्त बात न हो तो कहिये कि आप कौनहैं और ऐसे ऐश्वर्य्य होनेपर भी आपका जलमें निवास क्योंहै यहसुनके वह पुरुष बोला कि हिमालयके दक्षिण ओर कश्मीरनाम देशहै तिस सुन्दर देशमें मैं भवशर्म्मानाम एक ग्रामीण ब्राह्मणथा और मेरेदो स्त्रियांथीं एक समय जैनिभिक्षुकोंसे मेरी पहिचानहोगई इससे मैंने उनके शास्त्र में कहाहुआ उपोषण नाम नियम किया जब वह व्रत समाप्त होनेपर आया तो एक मेरी पापिनि स्त्री हठपूर्व्वक मेरे साथ सोरही और रात्रिके पिछले पहर उठकर मैंने निद्रा में अज्ञान होकर उसके साथ रमण किया इसीसे वह मेरा व्रत खण्डित होगया और मैं उसके प्रभावसे जल पुरुष हुआ यहां भी वेही दोनों मेरी स्त्रियां हुई हैं जो मेरे शयनपर सोरही थी वही पापिनी पुंश्चलीहुई और दूसरी यह पतिव्रता है उस अखण्डितव्रत का भी यह प्रभाव है कि मुझे निज पूर्वजन्म का स्मरण बनाहै और रात्रिके समय ऐसा ऐश्वर्य्य प्राप्त होताहै कि जो मैं उस व्रत को खंडित न करता तो मुझे यह जन्म नहीं प्राप्त होता ऐसे

अपना वृत्तान्त कहके उसने उन दोनों भाइयों का बड़ा सन्मान किया और स्वादिष्ठ भोजन कराय दिव्य वस्त्र पहिराये तदनन्तर उस पतिव्रता स्त्रीने चन्द्रमाकी ओर देख प्रणाम करके कहा कि हे लोकपालो!जो मैं सत्य२ पतिव्रताहूं तो मेरा पति जलवाससे छूट-कर स्वर्गको जाय उसके ऐसे कहतेही आकाश से विमान आया उसपर चढ़ वे दोनों स्त्री पुरुष स्वर्गको चलेगये ठीकहै असाध्यं सत्यसाध्वीनां किमस्तिहिजगत्त्रये ॥ सच्ची पतिव्रताओं को त्रैलोक्यमें क्या असाध्यहै इस आश्चर्यको देखके वे दोनों भाई शेष रात्रि तहांही व्यतीत कर प्रातःकाल वहां से चले और चलते २ निर्जनबन में सायंकाल के समय एक वृक्षके निकट पहुँचे और वहां इधर उधर जलकी तलाश करने लगे उस समय उस वृक्षमें उन्हें यह शब्द सुनाई दिया कि हे ब्राह्मणो!ठहरो आज मैं तुम्हारा अतिथिसत्कार करूंगा क्योंकि तुम हमारे अतिथि हो यह कह वह शब्द तो बन्द होगया और वहांपर एक दिव्य बावड़ी उत्पन्न होगई तथा दिव्य भोजन भी उसी के तटपर आगया इस आश्चर्य्य को देखकर उन दोनों भाइयोंने उस बावड़ी में स्नान सन्ध्योपासन करके उस भोजन को खाया और उसी वृक्षके नीचे आकर बिश्राम करनेका बिचार किया इतने में एक सुन्दर पुरुष उस वृक्ष पर से उतरकर दोनोंके पास आया और स्वागत पूँछके उनके निकट बैठा उसे प्रणाम करके उन दोनों भाइयों ने पूँछा कि आप कौनहैं तब उसने कहा कि पूर्व्वजन्म में मैं दीन ब्राह्मण था भाग्य वश जैनी साधुओंके साथ मेरीसंगति होगई उनके उपदेशसे मैंने एक व्रतकिया उसमें किसी मूर्खने सायङ्काल मुझे भोजन करवा-दिया इससे उस व्रतके खण्डित होजाने के कारण मैं यक्ष होगया

और जो यह व्रत पूराहोजाता तो मैं स्वर्ग में देवताहोता यह कहके उसने उन दोनों से पूँछा कि तुम कौनहो और किस निमित्त यहां आयेहो यह सुनकर यशोधर ने उससे सब वृत्तान्त कहदिया तब उस यक्षने उनसे फिर कहा कि जो तुम विद्या सीखने जाते हो तो मैं अपने निज प्रभाव से तुमको सब दिये देता हूं परदेश जाकर क्याकरोगे विद्वान् होय अपने घरजाओ यह कह उसने उन दोनों को सब विद्यायें देदीं और उसके प्रभावसे वे दोनों अत्यन्त विद्वान् होगये तब उसने उनसे फिर कहा कि तुम दोनों से हम एक गुरुदक्षिणा मांगते हैं हमारे लिये तुम एक दिन का सत्यभाषण ब्रह्मचर्य्य देवताओं की प्रदक्षिणा भिक्षुकों के समय में भोजन मनका संयम और क्षमा इन नियमों समेत उपवास करना और इसका फल हमको देदेना इसी से मैं स्वर्ग्ग में चला जाऊंगा यहसुनकर उन दोनोंने कहा बहुत अच्छा हम ऐसाही करेंगे यह सुनकर वह यक्ष अन्तर्द्धान होगया और उन दोनों भाइयों ने वह रात्रि वहीं व्यतीत कर फिर प्रातःकाल वहांसे चल कईदिन में निज घर पहुँच के अपने माता पिता से वह वृत्तान्त कहकर यक्षका बताया हुआ व्रतकिया और उसका फल उसको दिया उस फलको पातेही वह यक्ष विमानमें बैठके वहां आय उनसे बोला कि तुम दोनों की कृपासेमैं यक्षयोनिसे छूटकर स्वर्गको जाताहूं तुमभी अपने लिये इस व्रतको करना इसके प्रभावसे तुमको इसलोकमें अक्षयधन प्राप्तहोगा और अन्तमें स्वर्गको जाओगे यहकह वह यक्ष स्वर्ग्गको गया और वे दोनों भाई इस व्रतको कर अक्षय धन पाकरके सुखसे रहनेलगे॥

इति श्री दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्तसप्ततितमःप्रदीपः७७॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेऽष्टसप्ततितमःप्रदीपः ७८ ॥

पादमूर्खादि अनेकमूर्खों के दृष्टान्त ॥

पादमूर्खौद्विफणकःसर्पोमूर्खस्ततःपरं ।
मूर्खस्तण्डुलभक्षीचग्रामयायीतिकीर्तिताः७८ ॥

(अर्थ) पादमूर्ख पैर दाबनेवाले मूर्ख दो शिष्य और दोनों फणवाला सर्प्प मूर्ख तथा तण्डुलभक्षी मूर्ख और गांव जानेवाला मूर्ख ये मूर्ख वर्णन किये हैं ॥

किसी गुरूके दो शिष्यथे उन दोनों में परस्पर शत्रुता रहती थी उनमें से एक तो गुरूके दक्षिण चरणको धोके नित्य मलता था और दूसरा वायें को एक दिन दक्षिण चरणका मलनेवाला शिष्य कहीं चलागया था इस से गुरूजी ने वायें चरण के मलने वाले शिष्य से कहा कि आज तुम दक्षिण चरण को भीमलदो यह सुनके उसने गुरूसे कहा कि यह मेरे शत्रु का पैर है इसे मैं नहीं मलूंगा यह सुन गुरूने उससे बड़ा आग्रह किया तो उसने पत्थर लेकर गुरू का वह पैर तोरडाला इस से गुरू ने हाहाकार मचाया उसे सुन बाहर से आकर लोगों ने शिष्यको पीटना चाहा पर गुरूने कृपा से बचादिया दूसरे दिन दूसरे शिष्यने आ-कर गुरू से पैर की पीड़ा का वृत्तान्त पूछकर महाक्रोधित होके यह कहा कि क्या मैं उसके पैर को नहीं तोडूंगा यह कह उसने गुरू का वायां पैर भी तोड़डाला यह जानके लोग उसे पीटने लगे परन्तु गुरूने कृपा करके उसे भी छुड़ालिया उन दोनों का यह वृत्तान्त जिसने सुना वह बहुत हँसा और उनकी दयालुता की बड़ी प्रशंसाकी इस प्रकारसे आपसमें बिरोध करके मूर्ख सेवक

स्वामी के काम को नष्ट करते हैं और उनका कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता है इति। अब आप दो शिरवाले सर्प की कथा सुनिये किसी सर्प के दो शिरथे, उनमें से एक शिरमें तो नेत्रथे और पूंछ की ओर जो शिरथा वह अंधा था उन दोनों में सदैव यह विवाद रहता था कि मैं मुख्य हूं मैं मुख्य हूं पर सर्प अपनेमुख्य शिरकी ओर ही से चलता था एक दिन मार्ग में उस पूंछ वाले शिर ने एक काष्ठ पकड़लिया इससे सर्प का चलना बंदहोगया तो वह सर्प उसी शिरको बलवाला जान उसी की ओर से चला तो कहीं मार्ग में एक जलते हुए अग्निकुंड में गिरकर मरगया ऐसे जो पुरुष गुणों का अन्तर नहीं जानते हैं वे हीनगुण के संग से नष्टहोजातेहैं इति। अब चावल खानेवाले मूर्ख की कथा सुनिये एक मूर्ख अपनी सुसराल गया तो तहां उससे लोगों ने कहा प्रसाद पाइये तो वह बोला मैं तो पाही केचला था फिर तो उन्होंने बहुतही कहा पर उसने भी जायलाख और रहै पाखके अनुसार मुँह की निकली बातका ऐसा दृढ़पक्ष किया कि नहीं ही खाया रात को मारे भूख के नींद न आई आखिर उठनापड़ा तो लगा धराढका सँभालने कहीं थोड़े चावल उसको मिले उसने मुखमें डाले कि सामने कौन २ पुकारा तो चावल मुंह में हीं रहे न भीतरगये न बाहर गेरसका तो सास तिसे पहिचान बोली तो सिवायहूं २ के कुछ उत्तर न पाया तो जान लिया कि इनको यह कोई असाध्य रोग होगया जिससे नहीं बोलसके हैं तो पतिसे कह वैद्यको बुलवाय दिखाया तो तिसने भी उसके मुखको अकस्मात् सूजा जानके बहुत वेगसे बढ़ न जाय इसकारण चीरा लगानाहीं उत्तम चिकित्सा समझके इसके गालपर पैना नश्तर मारा तो तिसका

गल्ला चिरगया पर उसने आह भी न की और उन चावलों को दूसरे गल्ले में लेगया सोही उस वैद्यने कहा देखो यह मवाद इधर आगया अब सब गिरजाताहै यह कह उधर भी नस्तर धर सारा चावल गिरपड़े लोग हँसनेलगे इससे मूर्ख लोग कामको ठीक नहीं करसकतेहैं किसी ब्राह्मणने निज मूर्खपुत्रसे कहा कि कल तुमको अमुक गांव होआवनाहै वह यह सुन सोरहा और सबेरे उनसे बिन पूंछेही उस गांवको चलागया सामको आकर कहा होआया तब पिताने कहा कि क्या प्रयोजन सिद्धहुआ इसप्रकारसे मूर्ख लोग व्यर्थ परिश्रम करके केवल दुःखही उठातेहैं ॥

इति श्री दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेऽष्टसप्ततितमः प्रदीपः ७८ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकोनाशीतितमःप्रदीपः ७९ ॥

बिन विचारकर करनेवाले मूर्ख आदिके दृष्टान्त ॥

अविचार्यप्रकुर्वाणो हास्यमेवफलंलभेत् ।
यथाद्विजान्हन्यमानोद्विजआसीद्विलज्जितः ७९॥

(अर्थ) कोई मूर्खजन निज पुत्रको साथले परदेश को चला मार्गके किसी वनमें उसका पुत्र अलग रहगया तो उसे रीछोंने फाड़खाया किसीप्रकार प्राण बचाय वह अपने पिताके पास आयके कहा कि मुझको लम्बे२ बालोंवाले जीवने काटाहै यह सुन वह खड्ग लेकर उनलम्बे २ बालोंवाले मुनिजनों को मारनेलगा तो तिससे एक पथिकने कहा कि मेरे सामने तुम्हारे लड़केको रीछने काटा और तुम मुनिजनोंको मारतेहो यहसुन वह चुपहोरहा इससे बिना विचारे कोई भी काम नहीं करना चाहिये नहीं तो लोक में उपहास होताहै जैसे किसी मूर्खने मार्ग में गिरी भई अशर्फियों की थैली पाई तो वह मूर्ख प्रसन्नहो उन्हें वहीं गिनने लगा इतने में

उनका स्वामी आगया उलटीली वह उदासहो घर चला आया ऐसे मूर्ख पाये धनको भी खो बैठतेहैं किसी द्वितीयाके चन्द्रमाको देखनेवाले मूर्ख से कहा कि तुम्हारी अंगुली के आगे चन्द्रमाहै तो वह आकाश में न देखकर अंगुलीही के आगे देखनेलगा इसकी मूर्खतापर लोग बहुत हँसे इति ॥ और बुद्धिसे करनेपर असाध्य कार्य भी सिद्ध होजाते हैं जैसे कोई स्त्री अकेली किसी गांवको चली राहमें उसको किसी वन्दरने आय घेरा तो वह उससे वचने के लिये एक वृक्षके इधर उधर घूमनेलगी यह देख उस मूर्ख वन्दरने उस वृक्षको अपनी भुजाओंसे पकड़लिया उसकी इस मूर्खता को देखकर उस स्त्री ने उसके दोनों हाथ पकड़ लिये इससे वह बन्दर पराधीन होकर अत्यन्त क्रोधितहुआ इतनेमें उसी मार्ग से आते हुए किसी अहीर से उस स्त्री ने कहा कि हे महाभाग ! अगर तुम इस वन्दर के आकर हाथ पकड़लो तो मैं अपने वस्त्र सुधारलूं यह सुनकर उस अहीरने कहा कि तुम मेरे साथ रमण करने को कहो तो मैं इस बन्दरके हाथ पकड़लूं उसने कहा बहुत अच्छा तुम इस वन्दरके हाथ पकड़ो मैं तुम्हारे साथ रमणकरूंगी यहकहकर उसने उस वन्दर के हाथ पकड़ाकर चक्कू निकालकर उस बन्दरको मार डाला और उस अहीर से कहा चलो एकान्त में चलें यह कहकर वह बहुतदूर अपने साथ लेगई और जिस गांवको वह जाना चाहतीथी उसी गांवके रहनेवाले कुछ पुरुषों से मिलकर अपने गांव में चलीगई इसप्रकार से उस स्त्री ने बुद्धिके द्वारा अपने धर्म्म की रक्षाकरी इससे इस संसार में बुद्धिही मुख्य है चाहै धनका दरिद्री जीजाय परन्तु बुद्धिका दरिद्री नहीं जीसक्ता ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकोनाशीतितमःप्रदीपः ७६ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेअशीतितमःप्रदीपः ८० ॥

घटकर्पर चोरों का दृष्टांत ॥

चौरमायामहामायामायिनामपिमोहनी ।
राजपुत्रीरम्यमाणौयथास्तांघटकर्परौ ८० ॥

(अर्थ)—चोरोंकी चालाकी बड़ीभारीहै जो मायावालीकी भी मोहनेवाली जैसे राजपुत्री के साथ रमणकरते घटकर्पर चोर होतेभये ॥

हे स्वामी ! एक विचित्र कथा मैं आपको सुनाताहूं किसी नगर में घट और कर्परनाम दोचोर रहतेथे एकसमय रात्रिमें कर्पर घटको बाहर बैठालके राजकन्या के महल में सेंध लगाकर गया वहां उसी समय जगीहुई राजकन्याने उसे कोने में खड़ाहुआ देखकर काम से व्याकुलहोके उसीकेसाथ रमणकिया और धनदेकर उससेकहा कि जो तुम फिर मेरे यहां आओगे तो मैं वहुतसा धन तुमकोदूंगी तब कर्पर बाहर निकल घटको सब धनदेके उससे सब वृत्तान्त कह फिर राजकन्या के पास गया ठीकहै (आकृष्टःकामलोभाभ्याम-पायंकोहिपश्यति) अर्थ काम तथा लोभके वशीभूतहुआ कौन जन परिणाम को देखताहै सोही वह वहां राजपुत्री के पासजाय के कर्पर राजपुत्री के साथ फिर रमणकरके थककर उसी के पास सोरहा सोते २ ही रात्रिभर सब बीतगई प्रातःकाल पुरके रक्षक राजपुत्री के मंदिरमें सेंध देखके भीतरजाय कर्परको बांधकर राजाके पास लेगये तो राजाने क्रोधकरके उसे फांसी की आज्ञादीनी जब उसे राजजन मारनेको लेचले तो मार्गमें मिले घटसे कर्परने एक इशाराकरके कहा कि राजपुत्रीको राजमहलसे लाकर अपने यहां रखलेना उसका आशय जानके कर्परनेभी उसे इशारेसे कहदिया

कि अच्छा मैं लेजाऊंगा तदनन्तर वधिकों ने उसे लेजाय वृक्षमें फाँसी लटकाकर मारडाला और रात्रिके समय घटने राजपुत्री के महलतक सुरंग खोद राजपुत्री के महलमें जाके बंधनमें पड़ीहुई राजपुत्री से कहा कि तुम्हारे लिये जो आज कर्पर मारागयाहै उस का मित्र मैं घटहूं उसी के वचनों से मैं तुमको लेने के लिये यहां आयाहूं इससे तुम मेरेसाथ चलो यह सुन राजपुत्री प्रसन्नहो उस के साथ चलने को तैयारहुई तो घट उसके बंधन खोल सुरंग की राहसे उसे घरले आया प्रातःकाल राजाने निजपुत्री के कहीं जाने के वृत्तान्त को सुनकर शोचा कि उस पापी चोरका कोई साहसी मित्र और अवश्यहै वहही मेरी कन्या को हरलेगयाहै यह शोच राजाने कर्पर की रक्षाके लिये एक मनुष्य नियत करदिया और कहदिया कि कोई वहां इसका शोककरके दाहादि करनेको आवे उसे बांधकर हमारे पास ले आओ उसीसे उस कुलके दागलगाने वाली कुलटा कन्याका पता लगेगा राजाकी यह आज्ञा पाय सेवक लोग रात्रिदिन कर्पर के शरीरकी रक्षा करनेलगे घटने इस बात को जानकर राजपुत्री से कहा कि हे प्रिये! कर्पर मेरा बड़ा प्रिय मित्रथा उसी के उद्योगसे अनेकप्रकारके रत्नों समेत तुम मुझ को प्राप्तहुई हो उसके स्नेहसे बिना अनृणहुए मेरे चित्तको शान्ति न होगी इससे मैं युक्तिपूर्व्वक उसके पासजाकर उसका शोक करूंगा और उसके शरीर को जला के उसकी हड्डियां किसी तीर्थ में डालूंगा और इस बातपर तुम किसीप्रकारका भय मत करना क्योंकि मैं कर्पर के समान मूर्ख नहीं हूं यह कहकर घट तपस्वी कासा वेष बनाके कर्पर (खपरा) में दही भात लेकर पथिक के समान कर्पर के शरीर के पास जाकर अकस्मात् गिरकर हाथ से उस खर्पर

को गिराकर हे अमृत से भरेहुए खर्पर तुम कहांगये इत्यादि वचन कहकर रोनेलगा रक्षकों ने उसका रुदन सुनकर यह जाना कि यह अपने खपरे के लिये रोरहाहै इससे कुछ उसके पकड़नेका विचार नहीं किया तदनन्तर घट क्षणभर शोककरके अपने घर चलाआया और राजपुत्री के साथ आनन्दपूर्वक रहा दूसरे दिन अपने एक सेवक को स्त्रीकासा वेष बनाके और एक सेवक के शिरपर धतूरे मिलेहुए मिष्टान्नसे भराहुआ पात्र रखाकर उन दोनों सेवकों को साथलेके सायंकाल के समय मतवाले ग्रामीणकासा वेष बनाके जहां कर्परका शरीर था वहीं जा निकला उसे देख रक्षकों ने पूंछा भाई तुम कौनहो और यह स्त्री तुम्हारी कौनहै और कहां जाते हो यह सुन उसने कहा कि मैं ग्रामीण पुरुषहूं यह मेरी स्त्री है इसे लेकर मैं अपने श्वशुरके यहां जारहा हूं यह भोजन मेरे साथहै जो आप चाहैं तो आधा आप लोग भी खायँ आधा मैं वहां लेजाऊंगा यह कहके उसने वह मिष्टान्न निकालके उन सबरक्षकोंको दिया और उसके खातेही वे सब बिन चेतहुए इससे रात्रि के समय कर्पर के शरीर को जलाकर घट अपने घर को चलागया प्रातःकाल राजा यह हाल सुन उन मूर्ख सेवकों को निकाल अन्य सेवकों को उन के स्थानमें रखके कहा कि जो कोई इन हड्डियोंको लेने आवे उसे पकड़कर हमारे पास ले आना और कोई कुछ तुम्हें खानेको दे उसे कभी न खाना राजा की यह आज्ञा सुन सेवक लोग रात्रिदिन बड़ी सावधानी से हड्डियों की रक्षा करनेलगे इस वृत्तान्तको सुन के घट भगवती के मोहन मंत्र जाननेवाले अपने मित्र संन्यासी को साथ लेकर कर्पर के शरीर के पास गया और वहां उसके मंत्र के प्रभावसे रक्षकों को मोहित कराके सब हड्डी वहां से ले गङ्गाजी

में वहाके अपने घर आकर राजपुत्री के साथ सुखपूर्वक रहनेलगा राजाने इस वृत्तान्तको सुनकर जाना कि किसी योगी ने यहसब कार्य कियाहै इससे उसने अपने सब नगरमें यह ढंढोरा पिटवाया कि जिस योगी ने मेरी पुत्री का हरण आदि सब विचित्र कर्म्म कियाहै वह मेरेपास आवे में उसको अपना आधाराज दूंगा इस ढंढोरे को सुनके घटने राजाके पास जाना चाहा परन्तु राजपुत्री ने उसे न जानेदिया और उससे कहा कि छलकरके मारनेवाले राजा पर तुम कभी विश्वास न करो उसके यह वचन सुनकर घट भेद खुल जाने के भयसे उस राजपुत्री तथा संन्यासी को साथले कर परदेश को चला मार्ग में राजपुत्री ने उस संन्यासी से एकान्त में कहा कि पहले कर्परनाम चोरने मेरा धर्म नष्ट किया फिर उसके मरजानेपर यह मुझे ले आया इसपर मेरा कुछ स्नेह नहीं है इससे तुम मुझे स्वीकार करो यह कहके वह उस संन्यासी के साथ रमणकरके घटको विषदेके मारकर उसी संन्यासी के साथ चली मार्ग्ग में रात्री के समय एक धनदेवनाम वैश्य उसे मिला संन्यासी के सो जानेपर उससे वह राजपुत्री बोली कि इस अशुभ संन्यासी को लेकर मैं क्या करूंगी तुम मुझे स्वीकारकरो यह कहकर उस सोतेहुये संन्यासी को त्यागकर उस वैश्य के साथ चलीगई प्रातःकाल उस संन्यासी ने राजपुत्री को न देखकर भागीहुई जानके यह शोचा कि (नस्नेहोस्तिनदाक्षिण्यं स्त्रीष्वहोचापलादृते) स्त्रियों में चपलताके सिवाय न स्नेह होताहै न सुशीलता होती है देखो यह पापिनि मुझे विश्वास देकर भी सब धन लेकर भागगई अथवा यही बड़ा लाभहै कि जो उसने घटके समान मुझे भी नहीं मारडाला यह शोचकर संन्यासी अपने देश

को चलागया और राजपुत्री भी धनदेव के साथ उसके देश में पहुँची वहां धनदेव यह शोचकर कि मैं इस पुंश्चलीको घर क्यों लेजाऊं सायंकाल के समय एक वृद्धा स्त्री के घरगया और उस वृद्धा के यहां ठहरके रात्री के समय उससे बोला कि हे अम्ब! तुम धनदेवके घरकी कोई बात जानतीहो यह सुनकर उसने कहा कि उसके यहां की बात क्या पूछतेहो उसकी स्त्री नित्य नवीन पुरुष के साथ रमणकरती है एक चमड़े की पिटारी रस्सी में बांधीहुई उसकी खिड़कीमें लटका करतीहै उस पिटारीमें रात्रिके समय जो कोई पुरुष बैठजाय उसीको वह खैंचकर भीतर बुलालेतीहै और उसके साथ रमणकरके पिछली रातमें उसको निकाल देतीहै वह मद्य से ऐसी उन्मत्त रहतीहै कि ऊंच नीचका उसको ज़रा भी विचार नहीं रहताहै उसका यह दुराचार सम्पूर्ण नगर में प्रसिद्ध होगया है उसके पति को गये हुए बहुत दिन व्यतीत होगये हैं परन्तु अभीतक वह नहीं लौटा उस वृद्धाके यह वचन सुनकर वह वैश्य सन्देहयुक्त होकर अपने घर के निकटगया और वहां पिटारी लटकती हुई देखकर उसमें बैठगया उसे बैठा देखकर दासियों ने रस्सी खैंचकर उसे ऊपर चढ़ालिया वहां उसकी मदान्ध स्त्रीने आलिंगनकरके उसको शय्यापर लिटादिया उसके इस दुराचारको देखकर आलिंगन तथा चुम्बनादि करनेपर भी धनदेवको रमण करनेकी इच्छा न हुई और वह स्त्री उन्मत्त होकर सोरही पिछली रात्रिको उसे दासियों ने वैसेही उस पिटारी में रख बैठाय उतारदिया तब उसने शोचा कि मुझे अब घरसे क्या प्रयोजनहै क्योंकि घरका मुख्यधन तो स्त्रीही होती है उसकी यह दशा है इससे मुझे अब बनको जाना उचित है यह शोचके धनदेव उस

कन्याको भी छोड़कर वनको चलदिया मार्ग में बहुत दिनके पीछे परदेश से लौटेभये रुद्रसोम नाम ब्राह्मण के साथ धनदेव की मित्रता होगई रुद्रसोम धनदेव का सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनकर अपनी स्त्रीपर भी संदेहयुक्त होकर उसीके साथ सायंकाल में अपने ग्राम पहुँचा वहां उसने नदी के तटपर अपने घरके निकट एक उन्मत्त अहीर को गाते देखकर उससे पूँछा कि हे गोपाल ! क्या कोई तरुणी स्त्री तुम्हारे पर आशक्त होगई है जिससे इस संसार को तुम तृणसम समझ के उसके उत्साह में ऐसे मदोन्मत्त हो रहेहो यह सुन वह हँसकर बोला कि सुनो इसमें छिपानेकी कौन बातहै इस गांव के स्वामी रुद्रसोम की स्त्री से मैं नित्य भोग किया करता हूं उसके पतिको गये बहुत दिन हुये उसकी दासी मुझे स्त्री कासा वेष बनाकर उसके पास लेजाती है उस गोपाल के यह वचन सुनकर रुद्रसोमने तत्त्व जानने की इच्छासे अपने क्रोधको रोककर उससे कहा कि मैं तुम्हारा अतिथिहूं इससे अपना वेष मुझे देदो तो आज तुम्हारे बदले मैंही उससे भोग करके आनन्द भोगूं यह सुन उसने कहा अच्छा तुम मेरा यह काला कम्बल ओढ़ लाठी लेके यहां बैठो थोड़ी देर में उसकी दासी आकर तुमको मुझेही समझ स्त्रीकासा वेषबनाके उसके पास लेजायगी आजकी रात्रि तुम्हीं आनन्दकरो मैं विश्रामलूंगा उस गोपालके यह वचन सुनकर रुद्रसोम उससे कम्बल तथा लाठीलेके उसीका वेष बनाकर वहां बैठगया और वह अहीर धनदेवको साथ लेकर कुछ दूरपर अलग जा बैठा तदनन्तर दासी ने वहाँ आकर अन्धकार में रुद्रसोम को न पहचानके गोपालही जानके स्त्रियोंका वस्त्र पहनाकर उसे उसी के मकानमें लेगई वहां उस स्त्रीने उसे गोप जानकर उठके उसका

आलिंगनकिया यह देखके रुद्रसोमने शोचा कि दुष्टस्त्रियां निकट-वर्त्ती नीचपर भी आसक्त होजाती हैं देखो यह पापिनि पड़ोसी गोपपरही अनुरक्तभई यह शोचकर वह कुछ बहाना करके धनदेव के पास चलागया और उससे अपने यहां का सब वृत्तान्त कहा और उसीके साथ बनको चला मार्ग्ग में धनदेवका मित्र शशि मिला वह शशि प्रसंग से उन दोनों का वृत्तान्त सुनकर तहखाने में भी बन्द करीहुई अपनी स्त्रीपर सन्देहवान् हुआ क्योंकि वह भी बहुत दिनों में परदेश से आया था उन दोनों मित्रों के साथ वह शशि सायंकाल के समय अपने ग्राममें पहुँचा वहां कुष्ठसे गले हुये हाथ पैर नखोंवाले एक पुरुषको शृङ्गार करके गाते देख के पूँछा कि तुम कौनहो उसने कहा मैं कामदेवहूं यह सुनके शशिने कहा इसमें क्या सन्देह है यह तो तुम्हारा रूपही कहताहै कि तुम कामदेव हो यह सुन वह कुष्ठी फिर बोला कि इस नामका रहने-वाला एक शशिनाम धूर्त्त ईर्षा से अपनी स्त्रीको तहखाने में बन्द करके एकदासी उसके पासरख परदेशको चलागया है उसकी स्त्री ने मुझपर आसक्तहो निजदेह मेरे अर्पण कररक्खाहै उसकी दासी नित्य मुझे आय पीठमें चढ़ाय लेजाती है इससे कहो मैं कामदेव सच्चाहूं या नहीं यह सुन शशिने निज क्रोधको रोककर कहा कि सत्य २ तुम कामही हो मैं एक बात तुमसे मांगता हूं कि तुमसे उस स्त्री की प्रशंसा सुनकर मेरा भी चित्त उस स्त्रीपर चलायमान हुआहै इससे तुम अपनासा वेष बनाकर मुझे आज उसके पास जानेदो तो इसमें तुम्हारी कोई हानि नहीं है शशि के यह बचन सुनकर उस कुष्ठीने कहा कि अच्छा तुम मेरासा वेष बनाके लत्तों से हाथ पैर बांधकर यहां बैठो जब खूब अन्धकार होजायगा तब

उसकी दासी तुमको अपनी पीठपर चढ़ाके वहां लेजायगी मैं पैरों से चल नहीं सक्ताहूं इसीसे हररोज उसीकी पीठपर चढ़के वहांजाता हूं उस कुष्ठी के यह बचन सुनकर वह शशि उसीकासा रूपबना कर वहां बैठगया और वह कुष्ठी उसके दोनों मित्रोंको साथले- कर वहांसे कुछदूर एक स्थानमें जा बैठा इसके उपरान्त कुछ रात्रि व्यतीतहुए दासी वहां आय शशिको कुष्ठीही जानकर उसको अपनी पीठपर चढ़ाकर उसकी स्त्री के पास लेगई वहां अन्धकार में शशि ने शरीरस्पर्श से अपनी स्त्री को पहचान कर अपने चित्तमें बड़ा खेदकिया और जब वह सोगई तब उठके अपने मित्रों के पास चला आया वहां आके उसने अपने मित्रों से कहा कि स्त्रियां दूरही से मनोहर रहती हैं नीच के साथ संसर्ग करने में इन को जराभी ग्लानि नहीं होती है यह बहुत थोड़ीसीही बातों में पराधीन होजाती हैं इससे इनकी रक्षा करना अवश्य है देखो तहखाने में भी बन्द मेरी स्त्री इस कुष्ठी से अनुरक्त होगई इससे मैं भी तुम्हारे साथ वनको चलूंगा घरमें अब क्याहै यह कहकर वह रात्रिभर उन दोनों के साथ वहीं रहा और प्रातःकाल उन्हीं के साथ वनको चला मार्ग में चलते२सायंकाल के समय वह तीनों एक बावड़ी के किनारे किसी वृक्षके नीचे पहुँचे और उसी बावड़ी में स्नानकर कुछ फल खाके उसी वृक्षपर चढ़के बैठे इतने में उन तीनों ने देखा कि कोई पथिक आकर उस वृक्षके नीचे लेटा और क्षणभरमेंही एक पुरुष उस बावड़ी में से निकलकर अपने मुखसे स्त्री समेत एक पलंग निकाल के स्त्रीके साथ भोग विलास करके उसी पलँगपर सोगया उसके सोजानेपर उस स्त्रीने वहां से उठके उस सोतेहुए पथिक को जगाकर उसी के साथ रमणकिया रति

करने के पीछे उस पथिकने उस स्त्रीसे पूंछा कि तुम दोनों कौन हो यह सुनकर उसने कहा कि यह नागहै और मैं इसकी स्त्री हूं तुम उरोभत मैं निन्नानवे पुरुषों के साथइसीप्रकारसे भोग करचुकी हूं आज तुम्हारे साथ भोग करनेसेसैकड़ा पूराहुआ उन दोनों के इस वार्त्तालापको सुनकर उस सर्पने जगकर उन दोनोंको अपने मुखके फूत्कारसे भस्मकरदिया इस प्रकार से उन दोनों को जला कर उस सर्पके चले जानेपर वह तीनों मित्र आपस में कहनेलगे कि जब शरीरके भीतर भी रक्खीहुई स्त्रियां कुकर्मिणी होजाती हैं तो घरमें जो स्त्रियां रहती हैं उनकी क्या गणनाहै इन चपल स्त्रियों को सर्वथा धिक्कार है इसप्रकार अनेक वार्त्तालापकरके वह तीनों रात्रिको वहां व्यतीतकरके प्रातःकाल तपोवनमें जाके योगाभ्यास के द्वारा चित्तको स्थिरकरके सम्पूर्ण प्राणियों पर समदृष्टि होके समाधि में निरुपम आनन्दका अनुभवकरके तमोगुण से रहितहोके मोक्षपदवी को प्राप्तहुए और उनकी स्त्रियां अपने पापों के प्रभाव से अत्यन्त क्लेशयुक्त होकर नष्ट होगई ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांशुक्लदेवीसहायसंगृहीतायांचतुर्थभाग उत्तरार्द्धेवट-कर्परदृष्टान्तवर्णनोनामाशीतितमः प्रदीपः ८० ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकाशीतितमःप्रदीपः ॥

मुनि और चार जीवोंका दृष्टान्त ॥

उपकारकृतःप्राणीप्रत्युपकारं महत्पुनःकुर्य्यात् ।
यथोपकृतचत्वारःप्रत्युपचक्रुर्मुनिंसम्यक् ८१ ॥

(अर्थ)--उपकार किया कोई प्राणी समयपर महान्प्रत्युपकार करता है जैसे उपकार किये चार जीवों ने मुनिका सम्यक् प्रकार से उपकार किया ॥

किसी वनमें बुद्धि के समान परमदयालु महासत्त्ववान् एक तपस्वी कुटी बनाकर रहताथा वह वहां विपत्ति में पड़ेहुए प्राणियों को अन्नों से तृप्त किया करताथा एक दिन परोपकार के निमित्त भ्रमण करतेहुये उस तपस्वीने एक बड़ा कूपदेखा और उसमें झांका उसे झांकते देखकर उसमें से एक स्त्रीने कहा कि हे महात्मन् ! मैं दीन स्त्री एक सिंह एक स्वर्णचूड़पक्षी और एक सर्प्प हम चारों जीव रात्रि के समय इस कूप में गिर पड़े हैं इस महाक्लेश से आप हमारा उद्धार कीजिये यह सुनकर तपस्वीने कहा कि रात्रि के समय अन्धकार में स्त्रीका सिंहका तथा सर्प्प का गिरना तो कूपमें सम्भवहै परन्तु यह पक्षी कैसे गिरा यह सुनकर उस स्त्रीने कहा कि यह बहेलिये के जालमें फँसकर गिराहै यह सुनकर उस तपस्वीने अपने तपके बलसे उन सबको कूपसे निकालना चाहा परन्तु वह नहीं निकले और तपस्वीके तपकी शक्तिहीन होगई तपकी हीनता को देखकर तपस्वीने अपने चित्तमें जान लिया कि यह स्त्री पापिन है क्योंकि इसके साथ सम्भाषण करतेही मेरी सिद्धि नष्ट होगई यह शोचकर उसने रस्सीडालकर उन सबको कूपसे निकाला और उस सिंहको सर्प्पको तथा पक्षीको मनुष्यभाषा में स्तुति करते देखके उनसे पूँछा कि तुम सब लोगों का क्या वृत्तान्त है सत्य २ हमसे कहो यहसुनकर सिंह बोला कि हम सबको अपने पूर्व्वजन्म का स्मरण है और परस्पर हम बाधा करनेवाले हैं अब क्रमसे हम सबका वृत्तान्त सुनिये यह कहकर वह सिंह अपना वृत्तान्त कहने लगा कि हिमाचल पर वैडूर्य्यशृंगनाम बड़ा सुन्दर पुरहै उस पुरमें विद्याधरों का पद्मवेग नाम राजा है उस पद्मवेगके वज्रवेगनाम पुत्र था वह वज्रवेग अत्यन्त अभिमानी होकर शूरता के मदसे सबके

साथ विरोधकिया करताथा उसके पिताने उसे बहुतसा समझाया परन्तु उस मूर्खने उसका कहना न माना इसीसे उसने क्रोधसे उसे यह शापदिया कि तू मृत्युलोक में उत्पन्नहो शापसे वज्रवेगका सब अभिमान और विद्या नष्ट होगई तब उसने विनयपूर्व्वक अपने पितासे शापका अन्त पूँछा उसे नम्र देखकर पद्मवेगने ध्यानकरके उससे कहा कि तुम पृथ्वी में किसी ब्राह्मणके यहां उत्पन्नहोके इसी प्रकारसे अभिमान करके पिताकेही शापसे सिंह होकर कूप में गिरोगे तब कोई परमकृपालु महासत्त्ववान् तुमको कुएँ में से निकालेगा उसका आपत्ति में प्रत्युपकार करके तुम इस शापसे छूटोगे इस शापान्त को सुनकर वज्रवेग मालवदेश में हरघोषनाम ब्राह्मण का देवघोष पुत्र हुआ और वहां भी शूरताके अभिमान से सबके साथ वैर करनेलगा पिताने उसके अभिमानको देखकर उसे बहुत समझाया जब उसने न माना तब उसने क्रोधकरके उसे यह शाप दिया कि हे दुर्बुद्धे! तू बनका सिंहहोजा हरघोषके इस शापसे देवघोष इस बनमें सिंह हुआ वह सिंह मैंही हूं गतरात्रि को भ्रमण करते२ मैं इस कूपमें गिरपड़ा और आपने कृपाकरके मुझे निकाला अब मैं जाताहूं जब आपपर कोई आपत्ति पड़े तो आप मेरास्मरण कीजियेगा तब आपका उपकारकरके मैं इस शाप से छूटूंगा यह कहकर उस सिंहके चले जानेपर उस तपस्वी के पूछनेसे वह सुवर्णचूड़ पक्षी अपना सब वृत्तान्त इसप्रकार कहनेलगा कि हिमाचल पर्वतपर विद्याधरों का वज्रदंष्ट्रनाम राजाहै उसके लगातार पांच कन्याहुईं इससे उसने तपके द्वारा श्रीशिवजी का आराधन करके रजतदंष्ट्रनाम अत्यन्त प्रिय पुत्रपाया और अत्यन्त स्नेह से उसे बाल्यावस्थाही में सब विद्या सिखलादीं एकसमय रजतदंष्ट्र अपनी

बड़ी बहिन सोमप्रभाको भगवती के आगे झांझ बजाते देखकर उससे हठकरके झांझ मांगनेलगा और जब उसने नहींदी तब हठसे झांझ छीनकर पक्षी के समान आकाशमें वह उड़गया यह देखकर सोमप्रभाने क्रोधकरके उसे यह शापदिया कि तू पक्षी के समान मेरी झांझ लेकर उड़गया है इससे तू स्वर्णचूड़ पक्षी होगा इस शाप को सुनकर रजतदंष्ट्र ने अपनी बहिन के चरणों में पड़कर उसको बहुत मनाया तब उसने कहा कि हे मूढ़! तू पक्षी होकर अन्धे कुएँ में गिरेगा और कोई कृपालु महापुरुष तुझको निकालेगा उसका कुछ उपकार करके तू इस शापसे छूटेगा उसके इसप्रकार कहतेही वह रजतदंष्ट्र स्वर्णचूड़ पक्षी होगया वह स्वर्णचूड़ मैंहींहूं रात्रिके समय में इस कूपमें गिरपड़ाथा सो आपने इस समय निकालाहै अब मैं जाताहूं जब आपपर कोई आपत्तिआवे तब मेरा स्मरण करियेगा उससमय में आपका उपकार करके इस शापसे छूटूंगा यह कहकर उस पक्षीके भी चले जानेपर उसदयालु तपस्वीसे सर्प अपना वृत्तान्त कहनेलगा कि कश्यपजीके आश्रम में मैं मुनिकुमार था वहां एक मुनिकुमार के साथ मेरी परममित्रताथी एकदिन उस मित्र के स्नान करनेके लिये तड़ाग में जाने पर मैंने किनारेपर एक तीनफणका सर्प देखा और अपने मित्र को डराने के लिये सर्प को किनारेपरही मंत्रके बलसे रोक रक्खा क्षणभरमेंही वह मुनिपुत्र स्नानकरके किनारेपर आया और एकाएकी उस सर्पको देखकर मूर्च्छित हो गया थोड़ेकाल में जब उस की मूर्च्छा जागी तब उसने अपने ध्यानके द्वारा यह जानकर कि इसनेही सर्पको रोक रक्खाथा क्रोधकरके मुझे यह शापदिया कि तुम भी इसीप्रकारके तीन फणवाले सर्पहोगे और विनय करने

से यह शापका अन्त बताया कि जब तुम कुएंमें गिरोगे और कोई कृपालु महात्मा तुमको निकालेगा तब उसका प्रत्युपकार करके इस शाप से तुम छूटोगे इस प्रकार से हे दयालो! मैं सर्प हुआ हूं आज भाग्यवशसे मुझ कुएं में गिरेहुए को आपने निकाला है अब मैं जाताहूं जब आप मेरा स्मरण करोगे तब मैं आपका उपकारकरके इस शापसे छूटूंगा यह कहकर सर्प के भी चले जाने पर उस स्त्रीने अपना वृत्तान्त कहा कि मैं राजाके सेवक अत्यन्त शूर बड़े सुन्दर एक तरुण क्षत्रिय की स्त्री हूं पति के इस प्रकार बलवान् होने पर भी मैंने परपुरुष से संग किया मेरे इस कुकर्म्म को जानकर मेरे पतिने मुझे मारडालने की इच्छाकी सखी के द्वारा इस बात को जानकर रात्रि के समय वनमें भागगई और इस कुएँ में गिरपड़ी इस समय आपने मुझे कुएँसे निकालाहै अबमैं जाकर आपकी कृपासे कहीं इस शरीर का पालन करूंगी ऐसाभी कोई दिन होगा जब मैं आपका प्रत्युपकार करूंगी यह कहकर वह कुलटा राजा गोत्रवर्द्धन के नगर में जाकर राजाके सेवकोंसे परिचय करके रानीकी दासी होगई और उस कुलटा के साथ भाषण करने से उस तपस्वी की सब सिद्धि नष्टहोगई इससे उस वनमें फल पुष्पादि कोई वस्तु भी नहीं उत्पन्नहुई तब क्षुधा तथा तृषा से व्याकुल होकर तपस्वीने उस सिंहका स्मरण किया स्मरण करतेही सिंहने आकर मृग मार २ कर उनका मांस उस तपस्वी को खिलाया और कुछदिन इसप्रकार सेवनकरके उससे कहा कि अब मेरा शाप क्षीण होगया है इससे मैं अपने लोकको जाताहूं यह कहकर सिंहरूपको त्यागके विद्याधर होकर मुनिसे आज्ञालेके वह अपने लोकको चलागया उसके चले जानेपर तपस्वीने जीवके

लिये उस स्वर्णचूड़ पक्षीको स्मरणकिया स्मरण करतेही वह रत्न-
जटित आभूषणों से भरीहुई एक पिटारी लेकर उनके पास आया
और बोला कि इस धनसे आपकी सदैव को जीविका होजायगी
और मेरे शापका अन्तभी अब होगया इससे मैं अपने लोक को
जाताहूं यह कहके वह विद्याधर कुमारहोकर अपने लोकको चला-
गया उसके चलेजाने पर वह तपस्वी उन रत्नोंको लेकर बेचनेके
लिये उसीनगर में आया जहां वह स्त्री राजाकी रानीकी दासी
होगई थी वहां किसी वृद्धा ब्राह्मणी के यहां सम्पूर्ण आभूषणों
को रखकर जैसेही वह बाजार को गया वैसेही वह स्त्री उसको
मिली परस्पर वार्त्तालाप होनेपर स्त्रीने कहा कि मैं राजाकी रानी
की नौकरहूं और तपस्वीने भी अपना सब वृत्तान्त कहकर उसे
वृद्धाके स्थानपर लेजाकर वह सब आभूषण दिखादिये उन आभू-
षणों को देखकर उस कुलघ्नने रानी से जाकर कहा कि तुम्हारे
जो आभूषण खोगये थे उन्हें एक भिक्षुक लायाहै रानी ने राजा
से कहा राजाने सुनकर सेवकों को भेजकर आभूषणों समेत तप-
स्वीको बँधवा मँगवाया और उससे सब वृत्तान्त पूछकर सत्य २
जानकर भी सब आभूषणलेके उसे कैदखाने में डलवादिया बन्धन
में पड़कर तपस्वीने उस सर्प का स्मरण किया स्मरण करतेही
सर्प ने आकर उससे सब वृत्तान्त पूछ के कहा कि मैं जाकर अपने
शरीर से इस राजाको शिरसे पैरतक लपेटताहूं जबतक तुम वहां
आकर छोड़ने को न कहोगे तबतक मैं उसे नहीं छोडूंगा और
तुम भी लोगों से कहना कि हम राजाको सर्प से छुटवादेंगे इस
से जब तुम राजाके पास आकर कहोगे कि राजा को छोड़दे तब
मैं राजा को छोड़दूंगा और इस के बदले राजा तुम को अपना

आग राज्यदेगा यह कहकर उस सर्प ने जाके अपने शरीर से राजाका सब शरीर लपेटलिया और अपने तीनों फण राजा के शिरपर रखदिये राजाकी यहदशा देखकर बड़ा हाहाकार मचगया कि सर्प राजाको काटना चाहता है इस हाहाकार को सुनके तपस्वी ने कैदखाने के अधिकारी से कहा कि मैं राजाको सर्प्प से बचा सक्ता हूं सेवकों के द्वारा राजाने इसबात को सुनकर तपस्वी को अपने पास बुलाकर कहा कि जो तुम मुझे इस सर्प से छुटादोगे तो मैं तुमको अपना आधाराज्य देदूंगा इसमें मेरे मन्त्री जामिन हैं राजा के यह वचन सुनकर तपस्वीने सर्प्प से कहा कि तू राजा को शीघ्रही छोड़दे उसके कहतेही सर्पने राजा को छोड़ दिया और राजाने अपना आधा राज्य तपस्वी के नाम लिखदिया और वह सर्प मुनिकुमार होकर सभामें अपना सब वृत्तान्त कहकर महर्षि कश्यपजीके आश्रम को चलागया इसप्रकार से पुण्यात्मा लोगों को बीचमें चाहे क्लेश भी होय परन्तु अन्त में शुभहोता है और इसीप्रकारसे प्राणदान का उपकार भी दुष्ट स्त्रियों के चित्तमें नहीं रहताहै अन्य उपकारों की तो क्या गणनाहै ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकाशीतितमःप्रदीपः ८१ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागे द्व्यशीतितमःप्रदीपः ८२ ॥

जैनि मूर्खादिकों के दृष्टान्त ॥

जैनिमूर्खश्चान्यमूर्खो चौरमूर्खकएवच ।
उपाध्यायोपिमूर्खश्च तथामूर्खप्रधानकः ॥
आकाशगामीमूर्खश्च मार्गमूर्खस्तथैवच ।
इत्यादिकथितामूर्खाः शुक्रेनाऽन्तप्रदीपके ८२

(अर्थ)—जैनिमूर्ख अन्य क्षीरमूर्ख उपाध्यायमूर्ख प्रधानमूर्ख आकाशगामीमूर्ख तथा मार्गमूर्ख इत्यादि मूर्ख इस प्रदीप में शुक्र ने संग्रह करके कहाहै ८२ ॥

किसी मूर्ख जैनी भिक्षुकको मार्ग में कुत्ते ने काटखाया इससे उसने शोचा कि मैं अपने स्थानमें जाकर सब लोगों से कहांतक बताऊंगा कि कुत्ते ने मुझे काटा है और सब लोग मुझसे पूछेंगे कि तुम्हारी जंघामें क्याहुआ मुझे इस बात के बताने में बहुतसा समय व्यतीत करना पड़ेगा इससे सबको यह बात एकहीवार में जतानेका उपाय करना चाहिये यह शोचकर उसने अपने स्थान में जाके मठी के ऊपर चढ़के एक तुरई बजाई उस शब्दको सुन-कर सब भिक्षुक लोगों ने इकट्ठा होकर उससे पूछा कि असमय में आप क्यों तुरई बजारहे हो यह सुनकर उसनें सबसे कहा कि कुत्ते ने मेरे पैरमें काटखायाहै मैं सबसे जुदा २ कहांतक कहता इसहेतु से तुरई से मैंने सबको इकट्ठा कियाहै जिससे एकहीवार सबसे क-हना पड़ा अब तुम सबलोग जानलो कि इसे कुत्ते ने काटाहै यह कहकर उसने वह अपना पैर सबको दिखादिया उसकी इस मूर्खता को देखकर सब भिक्षुक हँसनेलगे ॥

अब एक अन्य मूर्खकी कथा सुनिये बाह्लीकदेशका रहनेवाला एक महाधनवान् अत्यन्त लोभी मूर्ख था वह सदैव अपनी स्त्री-समेत लवणरहित सत्तूखाताथा दूसरे अन्नका उसको स्वाद भी नहीं मालूम था एकदिन उसने भाग्यवशहोके अपनी स्त्री से कहा कि आज तुम मेरे लिये तस्मई बनाओ उसकी आज्ञापाके उसकी स्त्री खीर बनानेलगी और वह कृपण कोठरी के भीतर जाके लेट रहा इसलिये कि कहीं कोई मित्र न आजाय कि उसको भी खीर

खिलानी पड़े इतने में उसके एक धूर्त्त मित्रने आकर उसकी स्त्री से कहा कि तुम्हारा पति कहां है यह सुनकर वह स्त्री कुछ उत्तर दिये बिनाही भीतर जाकर अपने पति से बोली कि तुम्हारा मित्र आयाहै यह सुनकर उसने कहा कि अच्छा उसे बैठा रहने दे तू मेरे पैर पकड़कर रोदनकर और जो मेरा मित्र पूछे तो कहदेना कि मेरापति मरगयाहै इस युक्ति से जब यह चलाजायगा तो हम तुम दोनों मिलकर खीर खायँगे उसके यह वचन सुनकर वह स्त्री उस के पैर पकड़कर रोनेलगी रोदन सुनके वह धूर्त्त भीतर जाकर उस से पूछनेलगा कि तू क्यों रोती है उसने कहा कि मेरापति मरगया है यह सुनकर उसने शोचा कि अभी तो यह आनन्दमें बैठीखीर बनारहीथी और अभी यहां आनकर रोनेलगी है मालूम होताहै कि इन दोनों ने मुझे पाहुनजानके अपनी खीर बचाने के लिये यह प्रपंच रचाहै इससे मुझे यहां से नहीं जाना चाहिये यहशोच कर वह धूर्त्त वहां बैठकर हाय मित्र हाय मित्र कहनेलगा रोदनको सुनकर उसके सम्पूर्ण बांधव आकर उसे मराहुआसा जानके श्मशान लेजाने के लिये उद्यतहुए तब उसकी स्त्रीने कानमें उससे धीरेसे कहा कि अब उठ बैठो नहीं तो यह तुम्हें लेजाकर श्मशानमें जलादेंगे यह सुनकर वह धीरेसे बोला कि यह धूर्त्त मेरी खीर खाना चाहताहै इससे जबतक यह न जायगा तबतक मैं नहीं उठूंगा क्योंकि मुझे प्राणों से भी अन्न अधिक प्याराहै तदनन्तर सब मित्र बांधवों ने उसे लेजाकर श्मशान में जलादिया परन्तु उस मूर्ख ने कुछ न कहा इसप्रकारसे उस मूर्ख ने अपने प्राणतक देदिये परन्तु खीर न खानेदी अब आप अन्य मूर्खों की कथा सुनिये कि उज्जयिनी नगरी में कोई मूर्ख उपाध्याय रहताथा उसको

रात्रिके समय मूसों के उपद्रवसे निद्रा नहीं आतीथी उसने अपनी यह व्यथा किसी मित्र से कही यह सुनकर उसके मित्रने कहा कि तुम बिल्ली कहीं से लाकर पालो वह मूसों को जब खाजायगी तब तुम्हारी व्यथा दूर होजायगी उपाध्याय ने कहा कि बिल्ली कैसी होतीहै और कहां रहती है मैंने आजतक कभी नहीं देखी है यह सुनकर वह मित्र बोला कि उसके कंजे नेत्र होते हैं वर्ण धुमैला होताहै और पीठपर रोयेंदार चमड़ा होता है इस पहचान से तुम बिल्ली मँगवालो यह कहकर उसके चले जानेपर उपाध्याय ने अपने शिष्यों से कहा कि तुम ने बिल्ली की पहचान तो सुनहीली है कहीं से बिल्ली लेआओ उपाध्यायकी आज्ञापाकर सब शिष्य इधर उधर बिल्ली ढूंढ़नेलगे परन्तु बिल्ली कहीं न मिली तब एक कंजे नेत्रवाला तथा धुमैले वर्णवाला विद्यार्थी मृगचर्म्म ओढ़ेहुए उनको मिला उसे सम्पूर्ण लक्षणों से युक्त होनेके कारण बिल्ली जानकर उपाध्याय के पास शिष्यलोग लेआये और उपाध्याय ने भी उसे अपने मित्रके बतायेहुए लक्षणसमेत देख बिल्ली जानके अपने मठमें रखलिया वह विद्यार्थी उसी ब्राह्मणका शिष्य था जिसने उपाध्यायको लक्षण बताये थे प्रातःकाल उस ब्राह्मणने वहां आकर उस मठमें अपने विद्यार्थी को देखकर उन सबसे पूछा कि इसे यहां कौन लाया है यह सुनकर वह मूर्ख उपाध्याय तथा शिष्य बोले कि आपके बतायेहुए लक्षणों के अनुसार यह बिल्ली हम लाये हैं यह सुनकर वह ब्राह्मण हँसनेलगा और बोला कि हे मूर्खो! कहां तो मनुष्य और कहां पशु बिल्ली उसके तो चारपैर होते हैं और पूंछ भी होती है यह सुनकर उन मूर्खों ने उस विद्यार्थी को छोड़कर कहा कि अब आप जैसी बिल्ली बताइयेगा वैसीही हम

लावेंगे उन मूर्खोंके यह वचनसुनकर सवलोग बहुत हँसे ठीक है- मूर्खतासे किसकी हँसी नहीं होती है अब अन्य मूर्खोंकी कथा सुनिये कि किसीमठमें वहुतसे मूर्खोंका प्रधान एकमूर्ख रहताथा एक दिन उसने किसी धर्मशास्त्रीसे तड़ाग बनवाने का बड़ा माहात्म्य सुना इससे उसने अपने मठके ही निकट बड़ा सुन्दर तालाव बनवाया एकदिन वह अपना तालाव देखनेको गया वह उस तालाब की सिड्ढी उसे खुदी हुई मालूमहुई इससे उसने दूसरे दिन फिर जाकर देखा तो औरभी अधिक खुदीहुई सिड्ढी देखी यह देखकर उसने अपने चित्तमें कहा कि मैं प्रातःकालसे यहां आनकर देखूंगा कि कौन तालाबकी सीढ़ियां तोड़ जाताहै यह शोचकर वह दूसरे दिन जैसेही प्रातःकाल तालाव के किनारे आनकर बैठा वैसेही एक बैल आकाशसे उतरकर अपने सींगों से सीढ़ियों को खोदने लगा उसे देखकर उसने यह शोचकर कि यह दिव्य बैलहै इसके साथ मैं स्वर्ग्ग को क्यों न चलाजाऊं उसकी पूँछ अपने हाथों से जाकर पकड़लीनी तब वह बैल उस मूर्खसमेत आकाशमार्ग से उड़कर कैलास पर चलागया वहां मोदकादि दिव्य भोजन पाके वह मूर्ख कुछ दिन सुखपूर्व्वक रहा उस बैल को नित्य आते जाते देखकर उस मूर्ख ने एकदिन भाग्य से मोहितहोके अपने चित्त में शोचा कि इस बैलकी पूँछ पकड़कर मैं अपने भाई बन्धुओं से मिलजाऊं और फिर उसकी पूँछ पकड़कर चलाआऊंगा यह शोच के वह बैलकी पूँछ पकड़कर पृथ्वीपर आया और अपने अन्य मूर्ख मित्रों से मिला उन सबने उससे पूँछा कि तुम कहां गयेथे उसने अपना सब वृत्तान्त उनसे कहदिया उस आश्चर्य्यको सुनकर वह सब बोले कि हमैं भी वहां लेजाकर मोदक खिलाओ यह सुनकर

वह उन सबको युक्ति बताकर तालाबपर लेगया वहां जब वह बैल आया तब उसने उसकी पूँछ पकड़ली उसके पैर दूसरे मूर्खने पकड़-लिये उसके दूसर ने इसीक्रम से सबने एक २ के पैर पकड़ लिये इसप्रकार से एक २ का पैर पकड़कर उन मूर्खोंने जंजीरसी बनाली इतने में वह बैल उन सबसमेत बड़े वेगसे उड़कर आकाशमें चला मार्ग में बहुतदूर ऊपर जाके एक मूर्ख ने अपने प्रधान मूर्ख से कहा कि तुमने वहां कितने २ बड़े मोदक खायेथे यह सुनकर उस प्रधान मूर्ख ने बैलकी पूँछ छोड़कर हाथों से लड्डुओं का प्रमाण बताना चाहा इससे वह सब मूर्खों समेत पृथ्वी में गिरकर नष्ट होगया और बैल आकाशको चलागया उनमूर्खोंकी यहदशा देखकर सबलोग हँसे इसप्रकारसे मूर्ख लोगोंके प्रश्नोत्तरों में भी दोषही उत्पन्न होता है आकाशगामी मूर्खोंकी कथा आपने सुनी–अब अन्य मूर्ख की कथा सुनिये कोई मूर्ख किसी स्थानको जातेसमय मार्ग भूलगया पूछनेपर लोगों ने उसे यह पताबताया कि नदी के किनारे पर जो वृक्ष दिखाई देताहै इसके ऊपरके मार्ग्ग से चलेजाओ यह सुनकर वह मूर्ख उस वृक्षपर चढ़गया और उसके ऊपरकी ऐसी पतली शाखापर पहुँचा कि वह शाखा भारसे एकाएकी झुकगई और वह उसी शाखा को पकड़कर नदी की ओर लटकगया इतने में कोई महावत हाथीको जलपिलानेके लिये उसीमार्गसे नदीपर आया महावत से उस मूर्ख ने कहा कि हे महाशय! तुम कृपाकरके मुझे यहां से उतारलो यह सुनकर उस महावत ने उसे उतारने के लिये उसके पैर पकड़ लिये इससे वह हाथी निकल गया और महावत उसके पैर पकड़े लटका रहगया तब उस मूर्ख ने महावतसे कहा कि जो तुमको गाना आताहो तो शीघ्रता से गाओ गान सुनकर

जो कोई यहां आवेगा वही हम दोनों को उतारेगा उसके कहनेसे महावतने ऐसा मधुर गान किया कि जिससे उस मूर्खने आनन्दसे मोहित होकर डालीको छोड़कर हाथसे ताल देना चाहा इससे वह महावतसमेत नदी में डूबकर मरगया मूर्ख की संगति से उस विचारे महावतके भी प्राण गये ऐसेही मूर्खकी संगतिसे किसीका कल्याण नहीं होता ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेद्व्यशीतितमः प्रदीपः ८२ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागे त्र्यशीतितमः प्रदीपः ८३ ॥

अनेक व्यभिचारिणियोंकी चालाकीके दृष्टान्त ॥

स्त्रीणामलौकिकंकर्म दुर्विज्ञेयंबुधैरपि ॥
रम्यमाणाअपिप्रेम्णास्वैरिण्यःप्रेमदायकाः ८३॥

(अर्थ) व्यभिचारिणी स्त्रियोंकी अलौकिक कर्तव्य को विद्वान् भी नहीं जानसक्ते जैसे स्वैरिणी स्त्रियें प्रेमसे रमणभी करती फिर छलसे प्रेमदायकही होती भई ८३ ॥

धारेश्वरनाम शिवजी के सिद्धिक्षेत्र में एक महामुनि अपने बहुतसे शिष्योंसमेत रहतेथे एक समय उस मुनिने अपने शिष्यों से कहा कि तुम लोगों मेंसे जिस किसी ने कोई अपूर्व बात देखी हो अथवा सुनी हो सो कहै यह सुनकर एक शिष्यने कहा कि मैंने एक अपूर्व बात सुनी है उसको आपके आगे कहताहूं कि कश्मीर देशमें श्रीशिवजी के विजयनाम महाक्षेत्र में एक बड़ा विद्याभि-

मानी संन्यासी रहताथा वह यह संकल्प करके कि मेरी कहीं पराजय न हो श्रीशिवजीको प्रणाम करके विवाद करनेके लिये पाटलिपुत्र नगरको चला मार्ग में बहुतसी नदी पर्वत तथा वनोंको उल्लंघन करके वह एक वनमें थककर किसी वृक्षके नीचे विश्रामकरनेलगा उसी समय एक धार्म्मिक पथिक एक दण्ड तथा कूँड़ी हाथमें लियेहुए उसी वृक्षके नीचे आकरबैठा उससे उस संन्यासी ने पूछा कि तुम कहां से आते हो और कहां को जाओगे यह सुनकर उस धार्मिक ने कहा कि हे मित्र ! मैं पाटलिपुत्र नगर से आयाहूँ और कश्मीर देशके सम्पूर्ण पण्डितों को वादमें जीतने के लिये वहां जाताहूं उसके यह वचन सुनकर उस संन्यासी ने यह शोचकर कि जो मैंने इसको यहां न जीता तो वहां जाकर वहांके बहुतसे विद्वानों को कैसे जीतूंगा उससे कहा कि हे धार्मिक! तुम्हारा कार्य बड़ा विपरीतहै कहां तो मोक्षकी इच्छा करने वाले तुम धार्म्मिक और कहां वाद विवाद करना जो तुम वादके अभिमानरूपी बन्धन के द्वारा संसार से मुक्त होना चाहतेहो तो अग्निसे ऊष्माको और हिमसे शीतको दूर करना चाहतेहो पत्थर की नौकापर चढ़कर समुद्रके पार जाना चाहते हो और प्रज्वलित अग्निको वायुसे निवारण करना चाहते हो ब्राह्मणोंका क्षमा क्षत्रियोंका आपत्ति से रक्षा करना मुक्ति चाहनेवालों का शम और राक्षसोंका कलह करना शीलहै इससे मुक्ति चाहनेवाले को सदैव शान्त तथा जितेन्द्रिय रहना चाहिये और सुख दुःखको त्यागकर संसारके क्लेशों से डरना चाहिये इससे तुम शान्तिरूपी कुठार के द्वारा संसाररूपी वृक्षको काटो वादके अभिमानरूपी जल से उस की जड़को न सींचो उसके यह वचन सुनकर वह धार्मिक उसे

प्रणाम कर आप मेरे गुरुहैं ऐसा कहके प्रसन्नतापूर्वक अपने पाटलिपुत्र नगरको लौटगया और वह संन्यासी उसी वृक्षके नीचे हँसता हुआ बैठा रहा इतने में अपनी स्त्री के साथ वार्त्तालाप करतेहुए किसीयक्षका शब्द उसे सुनाईदिया उसयक्षने हास्य करके एक पुष्पों की माला अपनी स्त्री के मारी उसके लगतेही उसने अपने को मृतकके समान बना लिया यह देखकर यक्षके सब सेवक रोनेलगे क्षणभरमें वहफिर जीनेसीलगी और नेत्र खोलकर यक्षकी ओर देखनेलगी तो उस यक्षने उससे पूछा कि इतने समय में तुझे क्या दिखाई दिया उसने मिथ्या बनाकरके मिथ्या उससे कहा कि आपकी मालाके लगतेही पाशको हाथमें लियेहुए जाज्वल्यनेत्रवाला बड़े २ लम्बे बालवाला एक महाभयंकर श्यामवर्ण पुरुष मुझे दिखाई दिया वह मुझे यमराजके मन्दिर में लेगया तब वहांके अधिकारियों ने उसे धमकाकर मुझे छुड़वादिया उसके यहबचनसुनके वह यक्ष हँसकर बोला किइन्द्रजालसे रहित स्त्रियों की कोई भी बात नहींहोती एक तो पुष्पों के लगने से मरनाही असम्भवहै दूसरे यमराजके लोक से लौटना और भी असम्भव है हे मूर्खे ! तूने तो इससमय पाटलिपुत्र नगरकी स्त्रियोंका अनुकरण किया है उस नगर में जो सिंहाक्ष नाम राजा है उसकी रानी एक समय मन्त्री सेनाधिपति पुरोहित तथा वैद्य इन सबकी स्त्रियोंको साथमें लेकर शुक्लपक्षकी त्रयोदशी के दिन उसीनगर के निकट विशाल मन्दिर में वर्त्तमान सरस्वतीके दर्शनको गई वहां मार्ग्ग में बहुतसे कुबड़े अन्धे तथा पंगुओंने उनसबस्त्रियोंसे यह प्रार्थना की कि हम दीन रोगियों को ओषधि दिलवाओ जिससे हम इस रोग से छूटें—" समुद्रकी लहरोंके समान चंचल बिजलीकी चमक

के समान भंग होनेवाला और यात्रादिक उत्सवों के समानक्षण भर सुन्दर यह संसार है इससेइस असार संसार में दीनों पर दया करना और दरिद्रियों को दानदेनाही सारहै गुणवान्की जीविका तो सब कहीं होती है धनवान् को दानसे क्या तृप्तको भोजन से क्या शीतयुक्तको चन्दनसे क्या और हेमन्तऋतुमें मेघोंसे क्या" इससे हम दीनलोगोंपर दयाकरो उनके यह वचनसुनकर उनस्त्रियों ने परस्पर में कहा कि यह बहुत उचित कहते हैं इससे इनकी औषधि अवश्य करवानी चाहिये यह कहकर वह सब स्त्रियां सरस्वती जीका पूजन करके उन रोगियों में से एक २ को अपने २ घरले गईं और अपने २ पतियों से कहकर उनकी औषधि करवानेलगीं और रात्रि दिन उन्हींकी चिन्ता में रहनेलगीं और बहुतकालतक एक साथ रहने से उन रोगियों पर अनुरक्तहुईं उन स्त्रियों को ऐसा कामका वेगहुआ कि वह तन्मय होगईं और उन्हें यह भी विचार न रहा कि कहां तो यह दीन रोगी और कहां यह ऐश्वर्य्यवान् हमारे पति तब उन रोगियों के साथ रमणकरनेसे जो उन स्त्रियों के नखक्षत तथा दन्तक्षत होगये वह उनके राजा मन्त्री सेनापति पुरोहित तथा वैद्य पतियों ने देखे और सन्देहयुक्त होकर उन सबने परस्परमें यह बात कही तब राजाने उन सबसे कहा तुमलोग अभी ठहर जाओ पहले मैं अपनी रानी से युक्तिपूर्वक पूछलूं यह कहके राजाने अपने मन्दिर में जाकर रानी से स्नेह तथा भय दिखाकर पूछा कि तुम्हारा ओष्ठ किसने काटा और तुम्हारे स्तनों में किसने नखक्षत लगाये हैं सत्य २ कहो नहीं तो तुम्हारा कल्याण न होगा यह सुनकर रानी ने बात बनाकर कहा कि यद्यपि कहने के योग्य बात नहीं है तथापि आपसे कहतीहूं रात्रि के समय एक शङ्ख, चक्रधारी

पुरुष दीवारमें से निकल कर मेरे साथ भोग किया करताहै और भोगकरके इसी दीवारमें गुप्त होजाताहै मेरे जिन अङ्गोंको चंद्रमा और सूर्य्यने भी नहीं देखाहै उनकी यह नित्य दुर्दशा करताहै आप के जीतेही में मेरी यह दुर्दशा होती है रानीके वचन का राजा ने वैष्णवी माया जानकर उसपर विश्वास करलिया और अपने मंत्री आदिकोंसे भी यह वृत्तान्त कहदिया राजाके यह बचन सुनकर वह मूर्खभी अपनी २ स्त्रियोंका विष्णुभगवान्से भोग करनाजान कर चुप होरहे इसप्रकार से पुंश्चली स्त्रियां असत्य बोलने में चतुर होती हैं और मूर्खों को ठगती हैं मैं वैसा मूर्ख नहीं हूं यह कहकर यक्षने अपनी स्त्री को लज्जित किया यक्षकी इससब वार्तालापको सुनकर वृक्षके नीचे बैठेहुए संन्यासी ने हाथजोड़कर यक्ष से कहा हे भगवन्! आपके आश्रम में आया हुआ मैं शरणागत हूं इससे मैंने जो आपके वार्तालाप को सुनाहै उसे क्षमा कीजियेगा उसके यह सत्य वचन कर यक्षने उसके सत्य बचनों से प्रसन्न होकर कहा कि मैं सर्व्व स्थानगत नाम यक्ष हूं मुझसे जो चाहो सो तुम वर मांगो मैं तुम्हारे ऊपर अत्यन्तप्रसन्न हूं यह सुनके संन्यासी ने कहा कि आप अपनी इस स्त्रीपर क्रोध न कीजियेगा यही बर-दान मैं मांगताहूं उसके यह गम्भीर बचन सुनके यक्षने कहा कि अब मैं तुम्हारे ऊपर और भी अधिकप्रसन्न हूं इससे यह वर तो मैंने तुमको दिया अब अन्य बर मांगो यह सुनकर संन्यासी ने कहा कि जो आप प्रसन्नहैं तो मैं अन्य बर यह मांगताहूं कि आज से तुम दोनों मुझेअपना पुत्र करकेमानो यह सुनकर वह यक्षअपनी स्त्रीसमेत प्रकट होकर बोला कि हे पुत्र ! तुम हमारे पुत्रही हो हमारी कृपासे तुम्हारे ऊपर कभी विपत्ति नहीं आवेगी और बि-

वाद कलह तथा द्यूतमें सदैव तुम्हारी जीत होगी यह कहकर उस यक्षके अन्तर्द्धान होजाने पर यक्षको प्रणामकर उस रात्रिको वहीं व्यतीत करके उस संन्यासी ने पाटलिपुत्रनगर में आकर राजद्वारमें प्रतीहार के द्वारा राजा सिंहाक्षसे अपना आगमन कहला भेजा और प्रतीहारके द्वारा राजा की आज्ञा पाके सभामें जाकर यक्षके महात्म्यसे वहांके सम्पूर्ण पण्डितों को वाद विवादमें जीत लिया और फिर उनपर आक्षेप करके उनसे यह कहा कि दिवाल से निकलकर शङ्ख, चक्र, गदा और पद्मधारी पुरुष दांतों से ओठ काटकर और नखोंसे स्तनोंमें क्षत देकर मेरे साथ भोग करके फिर उसी दीवारमें चलाजाता है यह क्या बातहै इसका उत्तर मैं आप से पूछताहूं यह सुनकर सब पण्डित कुछ तत्त्व न समझ कर एक दूसरे का मुख देखते हुए निरुत्तर होगये तब राजा सिंहाक्षने उस से कहा कि यह जो आपने प्रश्न कियाहै इसका उत्तर भी आपही दो यह सुनकर उसने यक्षसे सुनाहुआ उसकी स्त्रीका सब वृत्तान्त कहकर कहा कि मनुष्यको पापकी मूल स्त्रियोंका संग कदापि न करना चाहिये उसके यह वचन सुनके राजाने प्रसन्न होके उसे अपना राज्य देना चाहा परन्तु संन्यासीने अपने देशके स्नेह से राज्य लेना न चाहा तब राजाने उसे बहुतसे अमूल्य रत्न दिये उन रत्नोंको लेकर वह संन्यासी कश्मीर देश में जाके यक्षकी कृपा से दीनता रहित होकर सुखपूर्वक रहने लगा इस वृत्तान्त को कहके शिष्यने मुनिसे कहा कि मैंने उस संन्यासीही के मुखसे यह सब बातें सुनी हैं इस कथाको सुनकर वह मुनि अपने सब शिष्यों समेत बड़े प्रसन्न हुए ॥

इति श्रीकथासरित्प्रदीपिनीचतुर्थभागेत्र्यशीतितमः प्रदीपः ८३ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागेचतुरशीतितमः प्रदीपः ८४ ॥

त्रिमारिका कन्याका दृष्टान्त ॥

विषकन्याविषइव प्रवर्ज्यायत्नतोयथा ॥
त्रिमारिकाथसंजाता यथैकादशमारिका ८४॥

(अर्थ) विषवती कन्या विषके समान यत्नसे वर्जितहै, जैसे विषकन्या होतेही त्रिमारिणी हुई फिर वही एकादश मारिणी कहलाई ८४ ॥

मालवदेश में एक कुटुम्बी ब्राह्मण रहता था उसके तीनपुत्रों के उपरान्त एककन्या उत्पन्न हुई उस कन्याके उत्पन्न होतेहीउस की माता ब्राह्मणकी स्त्री मरगई और दोचार दिनों के पीछे उस का पुत्रभी मरगया और बैलके मारने से उसका एक भाई भी मर गया इसीसे उस ब्राह्मणने अपनी कन्याकानाम त्रिमारिकारक्खा जब समयपाकर वह कन्या युवती हुई तब उसी गांवके रहनेवाले एक धनवान् ब्राह्मणने उसब्राह्मणसे कहा कि इस कन्याका बिवाह मेरे साथ करदे उसकी यह प्रार्थना सुनकर उसने अपनी कन्या-का बिवाह उसके साथ करदिया उस पति के साथ वह त्रिमारिका कुछ दिनतक रही और थोड़ेही कालमें वह मरगया तब उसने किसी अन्यको अपना पति बना लिया वहभी थोड़ेही काल में मरगया उसके पीछे यौवनसे उन्मत्त उस त्रिमारिकाने तीसरा पति किया वहभी थोड़ेही कालमें मरगया इस क्रमसे उसके दश पति मरे तब लोगोंने हास्यसे उसका नाम दशमारिका रख दिया दश पतियोंके मरने के उपरान्त अन्य पति करनेकी उसकी इच्छा देख कर उसके पिताने लज्जित होके उसे अपने घरमें रख लिया और

अन्य पति न करने दिया एक समय उस ब्राह्मण के यहां एक सुन्दर युवा पथिक पुरुष रात्रिभर रहने के लिये टिका उसे देख कर दशमारिका का चित्त उसपर चलायमान हुआ और उस पथिक काभी चित्त दशमारिका पर चलायमान होगया तब कामदेव की पीड़ासे लज्जा रहित होके दशमारिका ने अपने पितासे कहा कि हे तात! अब एक इस पथिकको और मुझे अपना पति बना लेने दीजिये जो यह भी न रहेगा तो फिर मैं संन्यासिनी होजाऊंगी यह सुनकर उस ब्राह्मणने कहा कि हे पुत्री! ऐसा मतकरो तुम्हारे दश पति मरचुके हैं जो यहभी न रहैगा तो लोगोंमें तुम्हारी बड़ी हँसी होगी यह सुनकर उस पथिक ने कहा कि मैं नहीं मरूंगा श्रीशिवजीकी शपथ खाकर मैं कहताहूं कि मेरीभी दश स्त्रियां मरचुकी हैं इससे हम यह दोनों समानहैं उस पथिकके यह वचन सुनकर सब गांवके रहनेवालों की सलाहसे दशमारिकाने उसेभी अपना पति बनाया थोड़े कालमें वह भी शीतज्वरसे मरगया तब यह व्याकुल होके गंगाजी के तटपर संन्यासिनी होगई ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यां चतुर्थभागे चतुरशीतितमः प्रदीपः ८४ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिन्यां चतुर्थभागे पञ्चाशीतितमः प्रदीपः ८५ ॥

धूर्त का दृष्टान्त ॥

धूर्तःस्वमायया द्रव्यं दत्त्वा द्रव्यमुपार्जति।
यथा राज्ञे प्रदत्त्वापि धूर्तो द्रव्यमुपार्जयत् ८५॥

(अर्थ)—धूर्त निजमायासे कुछ द्रव्यदेकरभी बहुत द्रव्य कमा लेताहै—जैसे—धूर्त ने राजाको द्रव्य देकर आप बहुतसा द्रव्य पैदा किया ८५ ॥

दक्षिणदेश के किसी नगरमें पृथ्वीपति नाम एक राजाथा उस

के राज्यमें एक महाधूर्त्त रहताथा वह सदैव नगर वासियोंको ठगा करताथा एकदिन उसने शोचा कि ऐसी धूर्ततासे क्या प्रयोजनहै जिसमें केवल भोजनमात्रही प्राप्त होय ऐसा उपाय करनाचाहिये जिसमें बहुतसा धन मिले यह शोचकर वह धनवान् वणियेकासा वेष बनाकर राजद्वार में गया और प्रतीहारके द्वारा आज्ञापाके राजा के समीप पहुँचकर भेट देकर बोला कि हे स्वामी ! मैं एकान्तमें एक बात आपसे कहना चाहताहूं राजाने उसका सुन्दर वेष देखके उसे एकान्त में लेजाकर कहा कि कहो तब उसने कहा कि हे महाराज ! आप प्रतिदिन सभा में सबके आगे एकान्तमें मुझसे क्षणभर वार्त्तालाप किया करिये इससे मैं प्रतिदिन आपको पांच सौ अशर्फ़ी भेटदिया करूंगा और मेरी प्रार्थना कुछ नहीं है यह सुनकर राजा ने शोचा कि इसमें मेरी क्या हानिहै यह मुझसे कुछ ले तो जायगाही नहीं और उलटी पांच सौ अशर्फ़ी देजाया करेगा और धनवान् वैश्यके साथ वार्त्तालाप करने में किसी प्रकारकी लज्जा भी नहीं है इससे इसकी प्रार्थना स्वीकार करलेनी चाहिये यह विचारकर राजाने उस से कहा कि अच्छा ऐसाही करैंगे राजाकी यह आज्ञा पाकर वह धूर्त राजा को एकान्त में लेजाकर पांचसौ अशर्फ़ी रोज़ देनेलगा इस धूर्तने राजाके साथ वार्त्तालाप करते समय एक अधिकारी की ओर कईवार दृष्टिकरी इससे जब वह बाहर निकला तब उस अधिकारी ने उससे पूछा कि तुम मेरे ऊपर दृष्टि क्यों करते थे यह सुनकर उसने कहा कि राजा तुम्हारे ऊपर बहुत कुपितहैं आज वह मुझसे कहतेथे कि इसने सब मेरा देश लूटखायाहै इसीसे मैं बारम्बार अशर्फ़ी अपने घर से लाकर उसे दी दूसरे दिन उस धूर्तने राजाके पाससे लौटकर उससे कहा कि मैंने राजा

को समझादिया है अब वह तुम्हारे ऊपर कुपित नहीं हैं अब तुम कभी मतडरना जब राजाको कुछ तुम्हारे ऊपर सन्देह होगा तब मैं उनको समझादूंगा इसप्रकारसे उस धूर्त्तने उससे तथा अन्य अधिकारियोंसे युक्तिपूर्व्वक इतना धनलिया कि पांचकरोड़ अशर्फीउस के पास होगई तब उसने एकान्तमें राजा से कहा कि हे महाराज आपको पांचसौ अशर्फी नित्यदेकर भी मैंने आपकी कृपासे पांच करोड़ अशर्फियां इकट्ठी करलीनी आप यह सब अशर्फियां मुझ से लेलीजिये क्योंकि इनमें मेरा क्याहै यह कहकर उसने सब अशर्फी राजाकी भेटकी राजाने उसके बहुत आग्रह करनेपर उसकी आधी अशर्फी लेलीं और प्रसन्न होकर उसे अपना महामन्त्री बनालिया इससे वह धूर्त्त महाधनवान् होगया इसप्रकार से बुद्धिमान् लोग अन्यायसे भी धन पैदा करते हैं और फल प्राप्त होनेपर कुएँ खुदवानेवाले के समान दोषरहित होजाते हैं ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेपञ्चाशीतितमःप्रदीपः ८५ ॥

अथदृष्टान्तप्रदीनीचतुर्थभागेषडशीतितमःप्रदीपः ८६ ॥

मूर्खन्यायी का दृष्टान्त ॥

मूर्खन्यायीमूर्खतयानिर्णयंकुरुतेयथा ।
कृतोद्विजोभारवाहीरजकोगर्भधारकः ८६ ॥

(अर्थ)—मूर्ख न्यायाधीश मूर्खताई सेही निर्णय करताहै जैसे मूर्ख न्यायाधीशने ब्राह्मणको तो बोझ लादनेवाला अर्थात् गधा बनाया और धोबी को गर्भ धारण करानेवाला अर्थात् ब्राह्मण स्थानी बनाया ८६ ॥

पांचाल देशमें देवभूतिनाम एक वैदिक ब्राह्मण रहताथा उसके भोगवती नाम सती स्त्रीथी एक समय देवभूति के स्नान करने के

निमित्त जानेपर भोगवती शाक लेनेके निमित्त शाकवाटिका में गई वहां धोबी के गधे को शाकखाते देखकर लाठी लेकर उसके मारनेको दौड़ी इससे वह गधा भागकर एक गढ़े में गिरपड़ा और उसके एक पैरमें चोट आगई यह जानकर गधेके स्वामी बलासुर नाम धोबीने आकर लातोंसे तथा लाठियों से ब्राह्मणी को बहुत पीटा इससे उस गर्भिणी ब्राह्मणीका गर्भ गिरपड़ा और वह धोबी अपने गधेको लेकर चलागया तदनन्त देवभूति ने आकर अपनी स्त्री की दुर्दशा देखके और सब वृत्तान्त पूँछकर पुराध्यक्ष से यह वृत्तान्त सब जाकर कहा पुराध्यक्ष ने उसका सब वृत्तान्त सुनके धोबीको बुलाके उन दोनोंकी वार्त्तालाप सुनकर यह न्याय किया कि इस धोबी के गधेका पैर टूटगया है इससे जबतक इस गधेको आराम न होय तबतक ब्राह्मण इसका भारढोवे और इस ब्राह्मण की स्त्रीका गर्भ गिरपड़ाहै इससे धोबीही उसके फिर गर्भ उत्पन्न करे इस न्यायको सुनकर स्त्रीसहित वह ब्राह्मण विषखाके मरगया॥

इति श्री दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेषडशीतितमःप्रदीपः८६ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्ताशीतितमःप्रदीपः ८७ ॥

महादानी का दृष्टान्त ॥

महादानीमहत्सिद्धिंलभतेतत्सुतोयथा ।
महादानप्रभावेनकल्पवृक्षोत्सवोमुनिः ८७ ॥

(अर्थ)-महादान देनेवाला भारी सिद्धि पाताहै-जैसे राजपुत्रने सिद्धिपाय कल्पवृक्ष उत्सवकी कामना पूर्णकर सबको स्वर्ग पहुँचाय आप मुनि होकर रहा ८७ ॥

कुरुक्षेत्र देशमें एक मलयप्रभुनाम राजाथा एकसमय दुर्भिक्ष में प्रजाओंको बहुत धन देतेहुए राजा मलयप्रभुसे मंत्रियोंने कहा

कि हे तात आप इन मंत्रियों के कहनेसे दानदेना न छोड़िये क्यों कि आप प्रजाओं के निमित्त कल्पवृक्षहैं और प्रजा आपकी कामधेनुहैं उसके यह वचनसुनके मंत्रियों के वशीभूत होनेवाले राजाने कहा क्या मेरे पास अक्षयधन है जो धनके विनाही मैं प्रजाओंके लिये कल्पवृक्ष बनसक्ताहूं तो तुम्हीं कल्पवृक्ष क्यों नहीं बनते हो पिता के यह वचन सुनकर इन्दुप्रभ यह निश्चय करके कि यातो मैं तपसे कल्पवृक्षही हूंगा या मरजाऊंगा यह कहके तपोवन को चलागया तपोवनमें उसके घोरतपसे प्रसन्नहुए इन्द्रने उससे कहा कि हे महाराज मैं अपनेही नगर में कल्पवृक्ष होजाऊं इन्द्रने कहा कि ऐसाही होगा इन्द्रके इस वरदान से वह अपने नगर में बड़ी शाखाओंपर बैठेहुए मनोहर पक्षियों से शब्दायमान कल्पवृक्षहोके याचकों के दुर्लभ मनोरथों को भी पूर्ण करने लगा इससे उसकी सब प्रजा देवताओंके समान सुख भोग तदनन्तर कुछ काल व्यतीत होने पर इन्द्र ने उस कल्पवृक्ष के पास आकर कहा कि तुम परोपकार करचुके अब अपना स्वरूप धारण करके स्वर्गको चलो इन्द्रके यह वचन सुनकेकल्पवृक्ष राजपुत्र ने कहा कि देखियेसामान्य वृक्षभी अपने पुष्प फल तथा पत्तोंसे सदैव उपकार किया करते हैं तो कल्पवृक्ष होके मैं इतने लोगोंकी आशाको छुड़ाकर केवल अपने सुखके लिये स्वर्गको कैसे जाऊं उसके यह उदार वचनसुन के इन्द्रने कहा कि अच्छा तुम अपनी सम्पूर्ण प्रजाभी अपने साथ स्वर्ग को ले चलो यह सुनकर उसने कहा कि जो आप मुझपर प्रसन्नहैं तो सम्पूर्ण प्रजाको स्वर्ग लेजाइये मुझे स्वर्ग से कुछ प्रयोजन नहीं है मैं मनुष्य होकर परोपकारके निमित्त महातप करूंगा उसके यह वचन सुनके इन्द्र अत्यन्त प्रसन्न होके उसकी सब

प्रजाको लेकर स्वर्गको चलेगये और वह राजपुत्र वृक्षपनको त्यागकर बनमें जाके महातप करके बुद्ध रूप होगया इसी प्रकार से दानी लोगोंको महा सिद्धि प्राप्तहोतीहै यह महादानी की कथा तो मैंने तुमसे कही ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेपडशीतितमः प्रदीपः ८६ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्तशीतितमः प्रदीपः ८७ ॥

महाशीलवालेका दृष्टान्त ॥

महाशीलीशीलतोहि शीलिनःकुरुतेजनान् ।
यथासद्धुपदेशेन शीलिनेमन्त्रिणंयथा ८७ ॥

(अर्थ) महाशीलवाला जन निज सुशीलतासे सबको सुशील करदेताहै जैसे शीलवान् राजाने निज मन्त्री चारु मतिको श्रेष्ठ उपदेशसे शीलवान् बनादिया ८७ ॥

विन्ध्याचल पर्व्वत पर तोतों का बड़ा शीलवान् हेमप्रभ नाम राजाथा उसे अपने पूर्वजन्मका स्मरण बनाथा इसी से वह सदैव धर्म्म का उपदेश किया करता था उसके बड़ा अनुरागी चारुमति नाम तोता प्रतीहार था एकसमय किसी बहेलिये ने चारुमति की स्त्रीको पकड़कर मरवाडाला इससे वह चारुमति बहुत शोकाकुल होकर अत्यन्त दुर्व्बल होगया उसकी यह दशा देखके हेमप्रभ ने युक्ति पूर्व्वक उसके शोक दूर करने के लिये कहा कि तुम्हारी स्त्री मरी नहींहै बहेलिये के जालसे निकल कर वह कहीं भागगई है आज मैंने उसे देखाहै चलो तुम्हेंभी चलकर दिखादूं यह कहके वह उसे अपने साथमें लेजाके एक तड़ागके ऊपर जाके उसे उसीका प्रतिबिम्ब दिखाकर बोला कि यही तुम्हारी स्त्री है यह सुनकर वह अपने प्रतिबिम्बको देखके प्रसन्नहोके पानीमें जाके प्रतिबिम्बकाही

आलिङ्गन तथा चुम्बन करने लगा और स्पर्श न पाके तथा शब्द न सुनकर यह शोचनेलगा कि यह मेरा आलिङ्गन क्यों नहीं करती और बोलती क्यों नहीं है यह शोचके उसने ऐसा निश्चय करके कि यह मेरे ऊपर कुपित होगई है तब एक आंवला लाके उस प्रतिबिम्बके मुखमें रक्खा वह आंवला पानी में बहगया इस से उसने यह जानकर कि इसने आंवला फेंक दिया है खेद युक्त होकर राजा हेमप्रभ से जाकर कहा कि हे स्वामी अब वह न मेरा स्पर्श करतीहै और न वार्त्तालाप करती है और मैंने उसे आंवला लाकर दियाथा वह भी उसने फेंकदिया यह सुनकर राजाने उससे कहा कि यद्यपि कहने के योग्य तो नहींहै तथापि मैं तुम्हारे स्नेहसे कहताहूँ तुम्हारी स्त्री अब अन्य से अनुरक्त होगई है इसीसेवह तुमपर स्नेह नहीं करती है चलो आज चलकर मैं तुमको यह भी दिखादूं यह कहके उसने उसे अपने साथ लेजाके उसके शरीरसे अपना शरीर जोड़के तड़ाग में अपना मिलाहुआ प्रतिबिम्ब दिखाया उस प्रतिबिम्ब को देखके उसने अपनी स्त्रीको अन्यसे अनुरक्त जानके राजासे कहा किहे स्वामी मैंने आपका उपदेश नहीं माना इसीका यह फल मुझे प्राप्त हुआ अब जो कुछ मुझे करना उचित होय सोही आप उपदेश कीजिये उसके यह वचन सुनके राजाने उपदेशका अवसर जानके उससे कहा कि विष खानाअच्छाहै और गले में सर्पका बांध लेना भी अच्छा है परन्तु प्राणि मन्त्रादिकों से भी अगोचर स्त्रियोंपर विश्वास करना उचित नहीं है बहुत रजयुक्त आंधीके समान अत्यन्त चपल स्त्रियां सन्मार्गोंमें चलनेवाले मनुष्यों को कलङ्कित करके अत्यन्त क्लेश देतीहैं इस से धीर सत्ववान् पुरुषोंको स्त्रियोंसे प्रसंग न करके वैराग्यकी प्राप्ति

के लिये शील का अभ्यास करना चाहिये राजाका यह उपदेश सुनकर चारुमति स्त्रियें को त्यागकर बुद्धके समान उर्द्धरेता हो-गया इसप्रकार शीलवान् पुरुष अपने उपदेशोंसे अन्यकोभी तारते हैं यह शीलवान् की कथा हुई ॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेसप्ताशीतितमःप्रदीपः ८७ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेअष्टाशीतितमःप्रदीपः ८८ ॥

महा क्षमावान् मुनिका दृष्टान्त ॥

क्षमावान्क्षमतेस्वामी महायदिगतोपिसन् ॥
मुनिर्विमोचयांचक्रे चौरान्वैनिजघातकान् ८८॥

(अर्थ) क्षमावान् सहनेवाला महा आपत्तिमें भी क्षमा करता है जैसे मुनिने निज घातक चोरोंको भी छुटादिया ८८ ॥

केदारनाथ पर्वत पर सदैव गंगाजी के स्नान करनेवाले जि-तेन्द्रिय बड़े तपस्वी शुभनय नाम एक बड़े मुनि रहतेथे एकसमय चोरोंने उन्हींके आश्रमके निकट पहलेका गाड़ाहुआ सुवर्ण खोद कर न पाकर यह जानकर कि मुनिनेही सुवर्ण लेलियाहै कुटीमें जाकर उनसे कहा कि अरे पाखण्डी मुनि हमारा सुवर्ण दे दे तू चोरोंकाभी चोरहै उनके यह बचन सुनकर मुनिने कहा कि हमने न कुछ लियाहै और न देखाहै यह सुनकर चोरोंने मुनिको ला-ठियोंसे खूब पीटा इतनेपर भी मुनिने वही बचन कहे तब चोरोंने उनको बड़ा दुष्ट जानके उनके हाथ पैर काटके दोनों नेत्र फोड़ डाले फिरभी मुनि ने वही बचन कहे तब चोर उन्हें छोड़कर कहीं चलेगये दूसरे दिन प्रातःकाल मुनिके शिष्य शेखरज्योति नाम राजाने वहां आकर अपने गुरूकी यह दशा देखके और सब वृ-त्तान्त जानके उन चोरोंको ढुँढ़वाकर फांसी देना चाहा यह जान

कर मुनि ने राजा से कहा कि हे राजा जो तुम इनको मारोगे तो मैंभी अपने प्राण देदेऊंगा क्योंकि शस्त्रों से मेरे अंग कटे इस में इनका कौन अपराध है और जो यह कहो कि चोर उन शस्त्रों के प्रेरकथे तो इनकाभी प्रेरक क्रोधथा क्रोधकाभी प्रेरक सुवर्णका नाश था सुवर्णके नाशका प्रेरक मेरे पूर्वजन्मका पापथा और उस पाप काभी प्रेरक मेरा अज्ञान था इससे वही मुख्य अपकारीहै उसी का नाश करना चाहिये और जो इनको अपकारी जानके मारते हो तो उपकारी जानके इनकी रक्षाभी करनी चाहिये क्योंकि जोयह मेरे साथ उपद्रव न करते तो मैं क्षमा किसपर करता इससे यहमेरे पूर्ण उपकारी हैं इत्यादि अनेक वाक्यों से मुनिने राजाको समझा के चोरोंको वधसे वचवाया और इसी क्षमा के माहात्म्य से उनके अंग ज्योंके त्यों होगये और महा सिद्धि उनको प्राप्ति हुई इसप्रकारसे क्षमावान् पुरुष संसार से छूट जातेहैं यह क्षमावान्की कथा हुई ॥ —अब महा धैर्य्यवान् की कथा सुनिये—पूर्वसमय में मालाधार नाम एक ब्राह्मणका पुत्र आकाश में जाते हुए किसी सिद्धकुमार को देखकर उसकी ईर्ष्या से तृणों के पक्ष बांध के उछल २ के आकाश में उड़ना सीखने लगा इसप्रकार से प्रतिदिन व्यर्थ परिश्रम करते हुए उसको एक दिन आकाश से स्वामि कार्तिकजी ने देख कर शोचा कि यह धैर्य्ययुक्त होकर दुर्लभ कार्य्य में भी कैसा श्रम कर रहाहै इससे इस बालक पर मुझे दया करनी चाहिये यह शोचकर उन्हों ने उस बालक को अपनागण बना लिया इसप्रकार धैर्य से देवता भी प्रसन्नहोते हैं ॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेअष्टाशीतितमःप्रदीपः ८८ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकोननवतितमःप्रदीपः ८६ ॥
दृढ़धारी ध्यानी का दृष्टान्त ॥

दृढ़ध्यानधरोध्यानी प्राप्नोतिपदमुत्तमम् ।
वैश्यपुत्रोयथाराजसुतामिच्छन्यदह्यगात् ८९ ॥

(अर्थ) दृढ़ध्यान धरनेवाला ध्यानीजन उत्तम पद पाताहै-जैसे वैश्यपुत्र राज पुत्री को चाहता परमपदको प्राप्तहुआ ८६ ॥

पूर्व्वकाल के बीच कर्नाटक देशमें विजयमाली नाम महाधनवान् वैश्य के मलयमाली नाम पुत्र था एक समय मलयमाली ने अपने पिता के साथ राजद्वार में जाके राजा इन्दु केशरी की इन्दुयशानाम कन्या को देखा उसे देखतेही वह ऐसा उसपर आसक्तहोगया कि उसे न रात्रिको निद्राआई न दिनको कुछ क्षुधा लगी और लोगों के पूछनेपर भी वह कुछ न कहके उसीके ध्यानमें मूकसाबनारहा उसे इसप्रकारसे व्याकुल देखकेराजाके चित्रकरमन्थरकनाम उसके मित्रने उससे कहा कि हे मित्र यहक्या कारणहैकि तुमकिसी की न सुनतेहो और न अपनीकहतेहो मैं तुम्हारापरममित्रहूं मुझसे अपना सब वृत्तान्तकहो उसके यह वचन सुनकर मलयमालीने अपना सब वृत्तान्त उससे कहदिया यह सुनकर मन्थरकने कहा कितुम वैश्य के पुत्रहो तुमको राजपुत्री की इच्छा न करनी चाहिये अपने २ योग्य ही अभिलाषा करने से सबका कल्याण होता है सामान्य तड़ागों की कमलनियों की इच्छा हंसकरे तो उचितहै परन्तु विष्णु भगवान् के नाभिकमल की उसको इच्छा न करनी चाहिये उसके इसप्रकार समझाने पर भी जब मलयमालीको कुछ बोध न हुआ तो उसने राज पुत्री का एकचित्र उतार के उसे देदिया उसचित्रको पाके वह उसी को इन्दुकुशा राजपुत्री

जानके ऐसा उसके ध्यानमें मग्नहोगया कि उसी चित्रका चुम्बन तथा आलिंगनादिक करनेलगा और इसी से उसका क्लेश भी निवृत्तहोगया एक समय वह उसचित्रको लेके चन्द्रोदय में वनके विहार करनेकोगया और उसचित्र को किसी वृक्षकी जड़पर रखके अपनी प्रियाकेलिये वनमें जाकर पुष्पतोड़नेलगा उससमय विनय ज्योतिनाम मुनि उसे देखके आकाश से उतरकर उसका उद्धार करने के लिये अपने प्रभाव से उस चित्र के कोने में एक जीवता हुआ काला सर्प वनाकर अलक्षितहोके वहीं खड़ेरहे इतने में पुष्प तोड़कर लौटेहुए मलयमाली ने चित्र में उस सर्प को देखकर शोचा कि यह सर्प यहां कहां से आया क्या ब्रह्माने मेरी प्रियाकी रक्षाकेलिये तो इसे नहीं भेजाहै यह शोचकर जैसे ही उसने उस चित्रपर फूलआदि रखके चाहा कि मैं इसका आलिंगन करके इसी से पूंछूं कि यह सर्प कहां से आया है वैसे ही मुनिके प्रभाव से उसे मालूमहुआ कि सर्प के काटने से वह मरगई इस से वह हाय २ करके मूर्च्छितहोके गिरपड़ा और क्षणभरमें मूर्च्छाजागने पर उठके एक ऊंचे वृक्षपर चढ़के अपने प्राणदेने को कूदा उसे गिरते देखके कृपालु मुनि ने बीचही में उसे अपने हाथोंपर रोक कर समझाकर उस से कहा कि हे मूर्ख! तुम्हें नहीं मालूम है कि वह राजपुत्री अपने घरमें है यह केवल चित्र की पुतली है तुम किसका आलिंगन करते हो किसे सर्प ने काटाहै यह तुम्हारे विचारों की भावनाओं का भ्रम है जो तुम इतने ही दृढ़ध्यान से तत्त्वका विचार करो तो तुम्हारे सब दुःखदूर होजायँ यह सुनकर मलयमाली मोहसे रहित होके बोला कि हेभगवन्! आपकी कृपासे मेरा यह अज्ञान तो दूरहोगया अब ऐसी कृपाकीजिये जिससे इस

संसार से मैं छूटूं उसकी यह प्रार्थना सुनकर वह मुनि उसे बुद्धजी के बताये हुये ज्ञान का उपदेश करके वहीं अन्तर्द्धान [illegible]ये उस ज्ञानको पाकर वह मलयमाली तपोवन में जाके [illegible]या करके तत्त्वको जानकर बुद्धके समान होगया फिर उसने राजा इन्दुकेशरीके पास आकर ऐसाज्ञान उपदेश किया कि जिससे सम्पूर्ण नगर निवासी मुक्त होगये इसप्रकार से ध्यान करनेवाले मोक्षको प्राप्त होते हैं यह ध्यानवान् की कथा हुई ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकोननवतितमः प्रदीपः ८९ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेनवतितमः प्रदीपः ९० ॥

चित्रगुप्त भक्तचौरका दृष्टान्त ॥

चौरभक्तश्चरेद्भक्तिंचौर्य्यरूपेणचैवहि ।
चौरोहिचित्रगुप्तस्यभक्त्यागात्परमम्पदम् ९० ॥

(अर्थ) चौरभक्त भक्ति भी चुराकरही करता है-जैसे-चोरने चित्रगुप्तको भजा उसीके उपदेश से वह परम पदकोप्राप्तहुआ ९०॥

सिंहलद्वीप में सिंह विक्रम नाम एक चोर ने पराये धन से जन्मभर अपना पोषण करके वृद्धावस्था में चोरी का त्याग करके अपने मनमें शोचा कि परलोक में मेरी कौन रक्षाकरेगा जो मैं विष्णु भगवान् अथवा शिवजी की शरण में जाऊं तो वहां मुझे कौन पूछेगा क्योंकि उनके तो बड़े२ देवता तथा मुनिलोग सेवकहैं इससे सम्पूर्ण जीवोंके कर्मोंके लिखनेवाले चित्रगुप्तकी सेवाकरनी चाहिये वही मेरी रक्षाकरेंगे यह शोचके वह चित्रगुप्त की भक्तिकरनेलगा और उनकी प्रीतिके लिये नित्य ब्राह्मणों को भोजनकरवानेलगा उसकी यह भक्ति देखकर चित्रगुप्त जी उसकी परीक्षा करने के लिये अतिथि का वेष धारण करके उसके पासआये उस

चोर ने उनका पूजन करके भोजन कराके तथा दक्षिणा देकर कहा कि कहो चित्रगुप्त तुमपर प्रसन्नहोयँ यह सुनके चित्रगुप्तने उससे कहा कि शिव विष्णु आदि देवताओं को छोड़कर चित्रगुप्तजीसे ही तुम्हारा क्या प्रयोजन है यह सुनकर उस ने कहा कि तुमको इससे क्या प्रयोजनहै मैं अन्य देवताओं को नहीं प्रसन्न करना चाहता यह सुनकर ब्राह्मण रूपधारी चित्रगुप्त ने कहा कि जो तुम अपनी स्त्री मुझे देने को कहो तो मैं ऐसाकहूं यह सुनके उस चोर ने प्रसन्नहो के कहा कि अच्छा मैं अपनी स्त्री आपको दूंगा आप कहिये यह सुन कर चित्रगुप्त जी अपना स्वरूप धारणकर के बोले कि हे सिंहविक्रम मैं तुमपर प्रसन्नहूं अब बताओ तुमक्या चाहतेहो उसने कहा कि हे स्वामी जिसप्रकार से मेरी मृत्यु न होय वही उपाय बताइये यह सुनकर चित्रगुप्तने कहा कि यद्यपि मृत्यु से कोई भी बचा नहीं सक्ता है तथापि मैं तुम्हें एक युक्ति बताताहूं उसे सुनों जबसे श्रीशिवजी ने श्वेत मुनि के लिये कुपित होके काल को भस्म करके फिर बनाया है तबसे जहां श्वेत मुनिरहते हैं वहां किसीकोभी काल की बाधा नहीं होती वह श्वेत मुनि इस समय पूर्व समुद्र के उसपार तरंगिणी नाम नदी के पार तपोवन में रहते हैं वहीं तुमको मैं लेजाके छोड़ आता हूं तरंगिणी नदी के इसपार तुम न आना कदाचित् तुम आसीजाओगे और तुम्हारी मृत्युहोजायगी तो परलोक में तुम्हारी रक्षा मैं करूंगा यह कहकर चित्रगुप्त जी उस सिंहविक्रम को साथ लेके श्वेत मुनि के आश्रम में पहुँचाकर अन्तर्द्धान होगये इसके उपरान्त कुछ काल व्यतीत होजाने पर काल ने तरंगिणी नदी के इसपार जाकर सिंहविक्रमको लेजाने के निमित्त यह युक्ति

करी कि एक दिव्य स्त्री बनाके तरंगिणी नदी के उसपार सिंहवि-क्रमके पास भेजी उस स्त्री ने अपनी सुन्दरतासे उसे अपने वशी-भूत करके उसके साथ रमण किया कुछ दिनोंके व्यतीत होने पर वह स्त्री अपने भाइयों के देखनेके बहानेसे इसपार आनेके निमित्त नदी में घुसी और बीच में आके बहने सी लगी होके चिल्लाकर बोली कि हे आर्य्यपुत्र मुझ को मरते हुए देख रहेहो और मेरी रक्षा नहीं करते तुम सिंहविक्रम नहीं हो शृगालविक्रम हो उसके यह बचन सुनकर सिंहविक्रम नदी में उतरा और वहस्त्री उसे नदी के इसपार वहाके लेआई यहां आतेही कालने उसके ग-लेमें फांसी डालके कहा—विषयी जीवोंके शिरपरही आपत्ति खड़ी रहती है यह कहकर काल उसको यमराजकी सभामें लेगया वहां चित्रगुप्तने उसे देखकर चुपके से उससे कह दिया कि जो तुम से कोई पूँछे कि तुम पहले स्वर्ग भोग करोगे या नरक तो कह देना कि स्वर्ग फिर स्वर्ग में जाकर स्वर्ग की दृढ़ता के लिये पुण्यकरना और स्वर्ग के दृढ़ होजाने पर सम्पूर्ण पापों के नाश करने के लिये तप करना चित्रगुप्त के यह बचन स्वीकार करके सिंह विक्रम चुपचाप खड़ारहा क्षणभर में यमराज ने चि-त्रगुप्त से पूँछा क्या इस चोरका कुछ पुण्यभी है चित्रगुप्त ने कहा कि हां इसने अतिथियों का बहुत सत्कार कियाहै और अपने इष्ट देवता के प्रसन्न करनेको अपनी स्त्री भी ब्राह्मणको दी है इससे यह एक दिव्य दिन स्वर्ग में रहसक्ताहै चित्रगुप्त के यह बचनसुनकर यमराजने सिंह विक्रमकी ओर देखकर कहा कि बताओ तुम पहले पुण्यका भोग करोगे या पाप का सिंहविक्रम ने कहा कि पहले पुण्यका भोग करूंगा तब यमराजकी आज्ञासे आयेहुए बिमानपर

चढ़के स्वर्ग में जाके उसने आकाशगङ्गा में स्नानकरके सम्पूर्ण भोगों को त्यागकरके केवल जपकिया उस जपके प्रभावसे उसे कई दिव्य दिन तक स्वर्ग में रहनेकी आज्ञामिली तब वह घोर तपसे श्री शिवजीकी आराधना करके ज्ञानको प्राप्त होगया और उसके सम्पूर्ण पातक भस्महोगये इससे नरक के दूत उसका फिरकर मुख भी न देखसके और चित्रगुप्त ने अपने सब कागज़ों पर से उसके सम्पूर्ण पाप काटदिये इसप्रकार से चोर होकर भी सिंह विक्रम ने अपनी बुद्धिके बल से सिद्धि पाई ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागेनवतितमःप्रदीपः ९० ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेएकनवतितमःप्रदीपः ९१ ॥

महामूर्खों के अपूर्व दृष्टान्त ॥

मुक्तबुद्धिर्वैश्यसुतोमूर्खोथतिलबापकः ॥ जलेऽग्नियातामूर्खश्चनासिकावर्धकस्तथा १ वनवासी पशोःपालस्तथाभूषणधारकः ॥ तूलविक्रयिकश्चैव खर्जूरत्रोटकस्तथा २ भूमिस्थधनदर्शाचतथालवणभक्षकः ॥ गोधुङ्मूर्खद्वयंचैववर्णिताअत्रवैक्रमात् ३ ॥

(अर्थ)—एक तो मुक्तबुद्धि नामवैश्यपुत्र और तिल बोनेवाला तथा जलमें अग्नि डालनेवाला मूर्ख और नाक बढ़ानेवाला मूर्ख १ तथा वनवासी पशुपालक मूर्ख और आभूषण पहिरने वाला और रुईबेचनेवाला, खजूरतोड़ने वाला, भूमि में गड़ाधन देखनेवाला, लवणभक्षी और गो दुहनेवाला और दो मूर्ख, ये इतने मूर्ख इस प्रदीप में बर्णित हैं २ । ३ ॥

किसी धनवान् वैश्य के शुक्रबुद्धि नाम, एक पुत्र था वह एक समय बहुतसी वस्तु बेचने के लिये कटाहद्वीपको गया उसके पास बहुत अगर भीथा वहां जाकर उसकी और सब वस्तु तो बिकगई परन्तु अगर नहीं बिका क्योंकि वहां के निवासी अगरका गुणनहीं जानते थे तब उसने वहां कोयले बिकते देखकर उस अगरको जलाकर कोयले कर २ के बेचडाले और घरमें आकर अपनी यह चतुरता सबसे कही इससे उसकी बड़ी हँसीहुई यह अगर जलाने वालेकी कथा सुनी अब तिल बोनेवाले की कथा सुनिये एकसमय किसी ग्रामीण खेती करनेवाले ने भुनेहुए तिलखाये वे उसे बहुत स्वादिष्ट लगे इससे उसने पृथ्वी में भुनेही तिल उपजने के लिये बहुत भुनाय २ करबोय दिये फिरराह देखतारहा सुनके लोगों ने बड़ीही हँसी की इति २ एक समय किसी मूर्ख ने प्रातःकाल पूजन के समय यह शोचा कि मुझे स्नान तथा धूप आदि देनेके लिये अग्नि और जल दोनोंका नित्य काम पड़ताहै इससे दोनों को एक साथही रखलिया करूं तो बहुत शीघ्रता से एकत्रही मिलजायँगे यह कह विचारकर वह जलके घड़े में अग्नि डालकर सोरहा भोरही देखा तो अग्नि बुझगई और जल भी कोयलों से काला होगया तब यह उदासहो शोच करनेलगा तो लोगोंने सुन इसकी बहुतही हँसी करी इति ३ कहीं एक बड़ाही मूर्ख पुरुष था उसकी स्त्रीकी नाक बड़ी चपटीथी और गुरूकी नाक बड़ीथी एक दिन उसने अपने गुरूकोसोते देखकर उनकी नाक काटलई और अपनी स्त्रीकी नाक काटकर उसकी जगह गुरूकी लम्बीनाक लगानी चाही परन्तु वह नहींलगी इसप्रकारसे उसने उन दोनोंको नकटे करडाले बड़ीही हँसीहुई इति ४ कहीं किसी बन में एक

वड़ा धनवान् महामूर्ख पशुपालक रहता था उसके साथ कितने ही दगावाजों ने मित्रता करके उससे कहा कि किसी नगरवासी धनवान् ने अपनी कन्या का विवाह तुम्हारे साथ करने को कहा है यह सुन उसने प्रसन्न होकर उनको थोड़ासा धन दिया कुछ दिनों के पीछे उन्हों ने उससे कहा कि तुम्हारा विवाह होगया यह सुनकर उसने प्रसन्नहोकर उनको वहुतसा धनदिया फिर कुछ दिनों के पीछे उन्हों ने उससे कहा कि तुम्हारे पुत्रहुआ है यह सुनकर उसने अत्यन्त प्रसन्नहोकर अपना सव धन उनको देदिया और दो दिनके उपरान्त हाय२पुत्र कहां है यह कहकर रोनेलगा धूर्तों से ठगेगये पशुओंके समान जड़ उस पशुपाल के रोदनको सुनकर सव लोग हँसनेलगे ऐसे पशुपालकी आपने कथासुनी ४ अव आभूषण पहरनेवाले की कथा सुनिये एक समय चोरों ने रात्रि के समय राजमन्दिर सेकुछ आभूषण चुराकर कहीं गाड़े थे एक मूर्ख ग्रामीण ने पृथ्वी खोदते २ उन आभूषणों को पाकर अपनी स्त्री को जाकर इसप्रकारसे पहराये कि करधनी उसके शिर में वांधी, हार कमरमें, विछुए हाथों में, और कानों में कंकण पहराये यह देखकर हँसतेहुये लोगों से प्रसिद्ध हुए, आभूषणों को जानके राजाने उससे अपने आभूषण छीन लिये और उसे पशु के समान महा मूर्ख जानकर छोड़दिया ५ अव रुईवाले कीकथा सुनिये कोई मूर्ख पुरुष अपनी रुई वेचने को वाजार में गया वहां लोगों ने रुई वुरी और विना साफ कहकर नहीं ली तो उस मूर्खने किसी सुनारको अग्नि में सुवर्ण तपाकर वेचतेहुये देखकर अपनी रुई भी साफ करने के लिये अग्नि में डालदी इससे रुई जल गई और लोग उसकी मूर्खता पर हँसनेलगे ६ अव आप खजूर काट-

नेवालों की कथा सुनिये राजाके सेवकों ने कुछ ग्रामीणों को बुलाकर खजूरके फल लानेकी आज्ञादी उन लोगोंने किसी खजूर के वृक्षमें से अपने आप गिरेहुये खजूरके कुछफल पाकर सब खजूर के वृक्ष काटडाले और उनमें से फल तोड़कर फिर लगाना चाहा परन्तु वे नहीं लगे तब वे वैसेही सब खजूर लेकर राजा के पास आये राजाने खजूरों का काटना जानकर उन्हें बहुतसा दंड दिया ७ अब पृथ्वी में गड़ेहुये धन देखनेवाले की कथा सुनिये किसी राजा ने कहीं से एक पृथ्वीको धनका देखनेवाला बुलवाया राजा के मूर्ख मन्त्री ने ऐसा न होय यह भागजाय इससे उसके नेत्र निकलवा लिये इससे वह पृथ्वी के लक्षणों के देखने में असमर्थ होगया और सबलोग उस मूर्ख मन्त्री का उपहास करने लगे ८ अब आप लवण खानेवाले की कथा सुनिये किसी ग्राम में गह्वरनाम एक महा मूर्ख पुरुष रहताथा एक दिन उसके किसी नगरनिवासी मित्रने उसे अपने यहां लेजाकर बहुत स्वादिष्ट नमकीन भोजन करवाये भोजनके उपरान्त गह्वरने अपने मित्र से पूँछा कि अन्नमें यह किस बस्तुका स्वादथा उसने कहा कि विशेष करके लवणका स्वादथा यह सुनकर उसने नोनको बड़ा स्वादिष्ट जानके मुट्ठीभर पिसाहुआ नोन फांकलिया इससे उसके होठ तथा मूछेंश्वेतहोगई और लोग उसे देखकर बहुत हँसे ९ अब गौदुहनेवाले की कथा सुनिये किसी ग्रामीणके पास एक गौथी वह पाँच सेरदूध रोज देतीथी एकसमय उसके यहां कुछ उत्सवहोने को था इससे उसने महीनेभर पहले गौका दुहना इसलिये बन्दकरदिया कि इकट्ठाही सब दुहलूंगा जब उत्सवका दिन आया तो वह उस गौको दुहनेलगा और गौने पैसाभर भी दूध नहीं दिया इससे वह

महा दुःखीहुआ और लोग उसके वृत्तान्तको सुनकर बहुत हँसे १०
अब अन्य दो मूर्खों की कथा सुनिये तांबे के घड़े के समान गंजे
शिरवाला एक मूर्ख मनुष्य किसी वृक्षके नीचे बैठाथा उसे देखकर
कोई भूखा तरुणपुरुष अपने पास के कैथे उसके शिरपर मारनेलगा
और वह मूर्ख शिरसे रुधिर बहनेपर भी कुछ न बोला मारते२जब
सब कैथे निवटगये तब वह तरुणपुरुष व्यर्थ क्रीड़ाकरके कैथोंको
भी खोकर भूखा अपने घरगया और वह मूर्ख भी यह कहकर कि
स्वादिष्ट कैथोंकीमार मैं कैसे न सहूं वहांसे रुधिर बहाताहुआ चला
गया मूर्खों के राज्यकी पगड़ी के समान उसके शिरमें रुधिर देख-
कर सब लोग हँसेइसप्रकार से निर्बुद्धि लोग उपहास्यको प्राप्त
होते हैं और उनका प्रयोजन कुछ नहीं सिद्ध होता ॥

इति श्री शुक्लोपाध्यायदेवीसहायसंगृहीतायांदृष्टान्तप्रदीपिन्याम्चतुर्थभागे
मूर्खापूर्वचर्णनात्मकोयंएकनवतितमः प्रदीपः ६१ ॥

अथ दृष्टान्तदीपिनीचतुर्थभागेद्विनवतितमःप्रदीपः ६२ ॥

एक मूर्ख की कुलटा स्त्रीका दृष्टान्त ॥

मूर्खस्त्रीकुटिलापिस्याद्यथावृद्धेसमर्पिता ॥
निपादेन समंरेमे पश्यतिस्वपतौमुदा ९२ ॥

(अर्थ) मूर्खकी स्त्री व्यभिचारिणी भी होजाती है जैसे वृद्ध
को सौंपी गई स्त्रीने भील के साथ निज पति के देखते देखते
रमण किया ६२ ॥

किसी नगरमें कोई बड़ा ईर्ष्यावान् पुरुष था उसकी स्त्री बड़ी
रूपवती थी वह अविश्वास करके उसे कभी अकेली नहीं छोड़ता
था एक समय किसी आवश्यक कार्य के निमित्त वह अपनी स्त्री
को साथ लेकर परदेश को चला मार्ग्ग में कुछ दूर चलकर आगे

भील लोगों का गांव जानकर उनके भयसे किसी ग्रामीण बृद्ध ब्राह्मणके यहां वह अपनी स्त्रीकोछोड़करचलागया उसकेचले जाने पर वह स्त्री उस ब्राह्मण के यहां रहकर एकदिन आयेहुए बहुतसे भिलों मेंसे किसीतरुण भिल्लसे स्नेहकरके उसकेसाथ उसके ग्राम में जाकर उसीसे यथेच्छ भोग करनेलगी कुछ दिनोंके उपरान्त उस ईर्ष्यावान् पुरुषने लौटकर उस बृद्ध ब्राह्मण से अपनी स्त्री मांगी तब उस ब्राह्मणने कहा कि मैं नहीं जानताहूं वह कहांगई हां इतना मैं कह सक्ताहूं कि यहां बहुतसे भील आयेथे उन्हीं के साथ वह चली गई होगी उनभीलोंका गांव यहांसे निकटही है तुम वहींजाओ वहां उसका पतालगेगा उसके यह बचनसुनकर वहरोताहुआ भीलों के गांवमें गया और वहां ढूंढ़के अपनी स्त्रीके पास गया वह भी उसे देखकर भयभीत होकरबोली कि हेस्वामी मेराकोई अपराध नहींहै मुझे एक भील जबरदस्ती यहां पकड़ लायाहै यह सुनकर उसने कहा कि अच्छा जो हुआ सो हुआ अब शीघ्रतासे मेरे साथ भग चलो ऐसा न होय कि फिर कोई भील तुमको देखकर पकड़ले उस के यह वचन सुनकर वह बोली कि शिकार खेलकर उस भीलके आनेका यह समयहै वह आजायेगा तो तुमको अवश्य मारडा-लेगा इससे इस गुफामें जाकर तुम छिपरहो रात्रिके समय जब वह भील सोजाय तो उसे मारकर मुझे लेकर निर्भय चले चलना उस कुलटाके यह बचन सुनकर वह मूर्ख उसकी बताई हुई गुफा में चलागया ठीक है (कोवकाशोविवेकस्य हृदिकामांधचेतसः)का-मान्ध पुरुषों के चित्तमें विवेकका अवकाश नहीं होताहै तद-नन्तर सायङ्कालके समय आयेहुए भीलको उस कुलटाने अपना पति दिखला दिया तब उस भील ने उसे गुफा में से निकालके

प्रातःकाल देवीजीके बलिदानकेलिये एक वृक्षमें कसकर बांधदिया और भोजन करके उसीके आगे उसकी स्त्री के साथ भोग करके शयन किया उसे सोया देखकर उस पुरुष ने बहुत व्याकुल होकर भगवतीकी बड़ी स्तुतिकी इससे भगवतीने प्रसन्न होकर उसे ऐसा वरदान दिया कि जिससे बन्धनोंके शिथिल होजानेपर उसने उस भीलकेही खड्गसे उसका शिर काटके अपनी स्त्रीसे जगाकर कहा कि चलो मैंने इस पापीको मारडाला उसके यह वचन सुनकर वह कुलटा अत्यन्त दुःखित होकर उस भीलके शिर को छुपाके अपने साथ लेकर उसके साथ चली और प्रातःकाल नगर में पहुँच कर वह शिर दिखाकर तथा यह कहकर कि इसने मेरे पतिको मारडालाहै चिल्ला २ कर रोनेलगी उसको इसप्रकार रोते देखकर पुरके लोग और रक्षक उन दोनोंको पकड़कर राजाके पास लेगये राजाने उन दोनों से सब वृत्तान्त पूछकर और अपनी बुद्धि के बलसे तत्त्वको जानकर उस कुलटा स्त्री के नाक कान कटवालिये और उस मूर्खको छोड़दिया तब वह उस दुष्ट स्त्री के स्नेहसे रहित होकर अपने घरको चलागया ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेउत्तरार्द्धेद्विनवतितमःप्रदीपः ९२ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेउत्तरार्द्धेत्रिनवतितमःप्रदीपः ९३ ॥

अथ मूर्ख स्त्री का दृष्टान्त ॥

मूर्खस्त्रीगुप्तवार्ताहि प्रकाशयतिसत्वरम् ॥
खगाग्रेकथयामास सर्पवार्त्तांयथासती ९३ ॥

(अर्थ)-मूर्ख स्त्री गुप्तवार्ताको भी शीघ्रही प्रकाशित करदेती है जैसे वेश्याकी मूर्ख दासी ने खग = गरुड़जी के आगे सर्पकी वार्त्ताको कहदिया ९३ ॥

एक कोई सर्प गरुड़जी के भयसे भागकर मनुष्य का रूपधर कर किसी वेश्या के यहां आकर रहाथा और अपने प्रभावसे पांच सौ हाथी रोज उसको दिया करताथा एकदिन उस वेश्याने उससे वहुत हठकरके पूछा कि आप कौनहैं और इतने हाथी आपकेपास कहांसे आते हैं उसने उसकी वड़ी हठ देखकर कामसे मोहितहोकर कहा कि किसी से कहना मत मैं सर्प हूं गरुड़जी के भय से इसप्रकार का होकर तुम्हारे यहां छिपकर रहता हूं उससे यहवात सुनकर उस वेश्याने अपनी कुटनी से एकान्त में कहदीनी इस बीचमें गरुड़जी भी पुरुषका रूप धारणकरके सव स्थानों में ढूंढ़ते हुए वहां आये और उस कुटनी से वोले कि आज मैं इस वेश्या के यहां रहना चाहताहूं एक दिनका जो तुम्हारा मोल होताहै सो मुझसे लेलो यह सुनकर उसने कहा कि एक सर्प पांचसौ हाथी रोजदेताहै तुमको एक दिन रखकर यह क्या करेगी उसके इन वचनों से गरुड़जी ने उस सर्प को वहां रहता जान अतिथिरूप धरके उस वेश्या के घरजाय सर्प को देखा सोही उसे मारखाया इससे वुद्धिमान्जन स्त्रियों से निज गुप्त वार्त्ता न कहैं ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागेउत्तरार्द्धेत्रिनवतितमःप्रदीपः ९३ ॥

अथदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेउत्तरार्द्धेचतुर्नवतितमःप्रदीपः९४॥

गंजे आदि अनेक मूर्खों के दृष्टान्त ॥

खल्वाटस्तैलमूर्खोऽथ अस्थिमूर्खस्तथैवच ॥
चाण्डालकन्यामूर्खोथ मूर्खराजातथैवच ॥
तथामित्रद्वयंचैते वर्णिताःक्रमतोजड़ाः ९४ ॥

(अर्थ) गंजा और तेल लानेवाला मूर्ख हड्डियोंका मूर्ख और

चांडाल की मूर्ख कन्या और मूर्ख राजा तथा दो मित्र मूर्ख ये इतने मूर्ख क्रम से वर्णन किये हैं ६४ ॥

किसी नगरमें तांबे के घटके समान कोई गंजे शिरवाला महा धनवान् मूर्ख पुरुष रहताथा उसे वालों के विना वड़ी लज्जा रहती थी एकदिन किसी धूर्त ने उससे आकर कहा कि एक वैद्यहै उसके पास वालों के उत्पन्न करनेकी औषध है यह सुनकर उसने कहा कि जो तुम उसको लाओ तो मैं तुमको और उस वैद्यको दोनों को वहुत धन दूंगा यह कहकर उसने उसे थोड़ासा धनदिया तव वह धूर्त किसी धूर्तही वैद्यको उसके पास ले आया उस वैद्य ने उससे वहुत कालतक अत्यन्त धनलिया और एकदिन अपना शिर खोलकर युक्तिपूर्वक उसे दिखादिया उसे देखकर भी उसमूर्ख ने जव उससे अपने वालों के लिये औषधमांगी तो उस वैद्य ने उससे कहा कि मैं तो आपही गंजाहूं मैं दूसरे के शिरमें कैसे वाल उत्पन्नकरूं इसी से मैंने अपना शिर खोलकर तुम्हें दिखलादियाथा इतने पर भी तुम नहीं समझेहो यह कहकर वह वैद्य चलागया इसप्रकारसे धूर्तलोग जड़ बुद्धियों से धनलिया करते हैं (अव तेल के मूर्खकी भी कथा आप सुनिये) किसी धनवान्के यहां एकमूर्ख सेवकथा एकसमय उस सेवक को उस धनवान् ने तेल लेने के लिये वाजार में भेजा वह किसी वनिये के यहां से तेल लेकर लौटा आता था मार्ग में किसी पुरुष ने उस से कहा कि देखो यह तेलका पात्र नीचे से टपकताहै इसे वचाओ यह सुनकर उस ने उस पात्रके नीचे के तलेको देखने के लिये उसे उलटकर देखा इससे वह सव तेल गिरपड़ा और सव लोग हँसने लगे और उस के स्वामीने उसका यह वृत्तान्त सुनकर अपने घरसे उसे निकाल

दिया इससे मूर्खका अपनीही बुद्धिसे काम करना अच्छाहै उपदेशसे उलटा फल होताहै (अब अस्थिके मूर्खकी कथा सुनिये) किसी मूर्ख पुरुष की पुंश्चली स्त्रीथी एकसमय उस मूर्खके परदेश चलेजाने पर वह स्त्री अपनी दासीको शिक्षा देकर आनन्दभोगनेके लिये किसी जार पुरुष के यहां चली गई जब वह मूर्ख पुरुष परदेशसे लौटकर अपने घर आया तो उस दासी ने गद्गद वचन करके आंसू भरके उससे कहा कि तुम्हारी स्त्री मरगई और उसे मैंने जलादिया यहकहकर उसने उसे श्मशानमें लेजाके किसी चिता में पड़ी हुई हड्डियां दिखादीं उन्हें देखकर वह बहुत रोकर तिलांजलि देके और उन हड्डियोंको तीर्थ में फेंकके महीने २ पीछे अपनी स्त्रीका श्राद्ध करने लगा उस दासीने जिस ब्राह्मणके यहां उसकी स्त्री निकल कर रहीथी उसी ब्राह्मण को उस स्त्री समेत श्राद्धमें भोजन के लिये बुलाकर उस मूर्ख से कहा कि देखो तुम्हारी स्त्री सती धर्मके प्रभावसे सह देह आकर इस ब्राह्मणके साथ भोजन करतीहै उस मूर्खने उसके वह बचन सत्यही मानलिये और वह पुंश्चली महीने २ आकर अपनेही यहां उत्तम भोजन करती रही इसप्रकारसे दुष्टस्त्रियां मूर्खों को ठगा करती हैं (अब चाण्डालकी कन्याकी कथा सुनिये) किसी चाण्डालकी अत्यन्त रूपवती कन्याने सबसे श्रेष्ठ पुरुषके साथ अपने बिवाह करने का निश्चय किया एक समय वह नगरके भ्रमण करने के लिये निकले हुए राजाको देखकर और उसे सबसे श्रेष्ठ जानकर उसी के साथ बिवाह करने के निमित्त उसके पीछे २ चली मार्ग में मिले हुए किसी मुनिको राजाने हाथी परसे उतरकर प्रणाम किया यह देखकर वह कन्या राजासे भी मुनिको श्रेष्ठ समझकर उनके पीछे

पीछे चली मुनि ने वहांसे चलकर मार्ग में मिलेहुए किसी शिवालय में पृथ्वी पर गिरकर श्रीशिवजी को प्रणाम किया यह देखकर वह मुनि से भी श्रेष्ठ श्रीशिवजी को जानकर मुनिको छोड़कर श्रीशिवजी को अपना पति बनाने के लिये वहीं रही क्षणभर में एक कुत्ता वहां आया और जलहरीपर चढ़के जंघा उठाके अपनी जातिके अनुसार काम करने लगा यह देखकर वह उस कुत्ते को शिवजीसे अधिक जानकर उसीको अपनापति बनानेके लिये उसके पीछे २ चली वह कुत्ता अपने स्वामी चाण्डाल के यहां जाकर उसके पैरों पर लोटने लगा यह देखकर उस चाण्डाल कन्याने कुत्ते से उस चाण्डाल को अधिक जानकर उसी के साथ अपना विवाह करलिया इसप्रकारसे मूर्ख लोग बहुत ऊंचे बढ़कर भी अपनेही स्थानों में आ गिरते हैं (अब आप एक मूर्ख राजा की कथा सुनिये) किसीनगरमें बड़ा धनवान् राजा अत्यन्त मूर्ख तथा कृपण था एक दिन उसके हित चाहनेवाले मन्त्रियोंने उस से कहा कि हे स्वामी! दानसे परलोक में दुर्दशा नहीं होती है इस से आपभी दान किया करिये क्योंकि यह जीव तथा धन क्षण भंगुर है यह सुनकर उस ने कहा कि मैं तभी दान दूंगा जब कि मैं मरकर अपने को दुर्दशा में पड़ा देखूंगा यह सुनकर वह मन्त्री अपने हृदय में हँसकर चुप हो रहे इसप्रकार मूर्ख लोग धन को नहीं छोड़ते हैं चाहे धनही उन को छोड़ जाय (अब दो मित्रोंकी कथा सुनिये) कान्यकुब्ज देशमें चन्द्रापीड़ नाम राजाके एक धवलमुखनाम सेवकथा वह सदैव बाहरही भोजन करके अपनेघरमें जाताथा एकदिन उसकी स्त्रीने उससे पूँछा कि तुम नित्य कहां से भोजनकर आतेहो यह सुनकर उसने कहा कि

हे सुन्दरी ! मैं अपने मित्रके यहां से भोजनकर आताहूं इस संसार में मेरे दो मित्रहैं एक कल्याणवर्म्मा नाम वैश्य वह भोजनादिक से मेरा उपकार करताहै और दूसरा वीरवाहु अपने प्राणोंसे भी मेरा उपकार करनेवाला है यह सुनकर उसकी स्त्री ने उससे कहा कि तुम अपने दोमित्रोंको मुझे भी दिखाओ उसके कहनेसे वह अपनी स्त्रीको साथलेकर पहले अपने मित्र कल्याणवर्माके यहांगया उसने उसका वड़ा सत्कारकिया और वड़े उत्तम भोजन कराके वहुमूल्य वस्त्र तथा आभूषण पहराये इसप्रकार वह दिन उसके घरमें व्यतीत करके दूसरे दिन धवलमुख स्त्रीसमेत अपने दूसरे मित्र वीरवाहु के यहांगया वह उस समय जुआ खेलरहा था उसने जुआ खेलतेही खेलते उससे क्षेम पूँछकर बिदाकिया तब उसकी स्त्रीने अपने पति धवलमुख से पूँछा कि हे आर्य्यपुत्र कल्याणवर्म्मा ने आपका वड़ा सत्कार किया और वीरवाहुने केवल आपकी क्षेम पूँछकर स्वागत ही किया तो आप इन दोनों में से वीरवाहु को श्रेष्ठ समझतेहो उसने कहा तुम मेरे दोनों मित्रोंसे जाकरकहो कि अकस्मात् राजा मेरे ऊपर कुपित हुआ है इससे तुमको उन दोनों का भेद मालूम होजायेगा यह सुनकर उसने प्रथम कल्याणवर्मा से जाके कहा कि आर्यपुत्रपर राजा अकस्मात् कुपित हुआहै यह सुनकर वह बोला कि मैंतो वैश्य हूं वताओ मैं राजाका क्या करसक्ता हूं उसके यह बचन सुनकर उसने बीरवाहुसे भी यही बात जाकर कही वह इस बात को सुनतेही ढाल तलवार लेकर दौड़ता हुआ धवलमुख के पास आया उसे देखकर धवलमुख ने उससे कहा कि मन्त्रियों ने राजाको शान्त करदियाहै अब आप जाइये यह सुनकर बीरवाहुके चले जानेपर उसने अपनी स्त्रीसे कहा कि हे प्रिये ! तुमनेइन दोनों

अनन्तर देखलिया उसके यह वचनसुनकर वह स्त्री अत्यन्त प्रसन्न हुई इसप्रकार दिखावे के मित्र और होतेहैं और यथार्थ मित्र अन्य होते हैं (तुल्येपिस्निग्धतायोगे तैलंतैलंघृतंघृतं) चिकनाई में समान होनेपर भी तेल तेलही है घी घीहीहै ॥

इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेउत्तरार्द्धेचतुर्नवतितमःप्रदीपः ९४ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेउत्तरार्द्धेपंचनवतितमःप्रदीपः९५॥

जलडर आदि महामूर्खों के अपूर्व दृष्टान्त ॥

तृषार्तःपुत्रघातीचमहामूर्खस्तथैवच ॥ ब्रह्मचारिसुतश्चाथज्योतिर्वित्क्रोधनस्तथा १ मूर्खराजासुतावर्धीपणलुब्धस्तथैवच ॥ प्रत्यभिज्ञायुतःप्रातिनिधौमांसप्रदायकः २ आमलानयनश्चैतेप्रदीपेऽत्रप्रकीर्तिताः ॥

(अर्थ)–तृषा से आर्त = पियासा और पुत्रघाती तैसे महामूर्ख,ब्रह्मचारी का पुत्र, ज्योतिषवेत्ता, क्रोधीमुख राजा, सुतबधाने वाला, धेलेका लोभी और पहिचानने वाला और बराबरी में निज मांस देनेवाला तथा आमले लानेवाला ये इतने महामूर्ख इस प्रदीप में कहे हैं इति २ ॥

किसी मूर्ख पथिक ने बहुतदूर चलके प्यासा होकर नदी के किनारे पहुँचकर भी जल नहीं पिया वहांपर खड़ेहुए किसी अन्यपुरुष ने उससे कहा कि तुम प्यासे होकर भी जल क्यों नहीं पीतेहो उसनेकहा कि इतना जल मैं कैसे पियूं यहसुन के वहहंस कर बोला कि जो तुम सब जल नहीं पियोगे तो क्या राजा तुम को दंडदेगा उसके इसप्रकार हँसकर कहनेपर भी उसने जल नहीं

पिया इसप्रकार से मूर्खलोग जो काम सब नहीं करसक्ते हैं यथा शक्ति उसका एक अंश भी नहीं करते हैं (अब पुत्रघाती की कथा सुनिये) किसी दरिद्री मूर्ख पुरुष के पुत्र बहुत से थे एक समय उसने एक पुत्र मरजानेपर दूसरे को भी इसलिये आपही मारडाला कि मेरा एक पुत्र बहुत दूर मार्ग में अकेला कैसे जायेगा तब सब लोगों ने उसकी मूर्खतापर हँसके उसको अपनेदेश से निकालदिया इसप्रकार मूर्खलोग पशुओं के समान निर्विवेक होते हैं (अब दूसरे एक बड़े मूर्ख की कथा सुनिये) लोगों के साथ वार्तालाप करतेहुए किसी मूर्ख ने एक सुन्दर पुरुषको देखकर कहा कि यह मेरा भाई लगताहै इससे मैं इसका धनलेले ताहूँ और मैं इसका कोई नहीं हूं इससे इसका क़र्ज़ा मुझे नहीं देना पड़ेगा उसके यह बचन सुन के वह सब लोग हँसदिये इस प्रकार से स्वार्थान्ध मूर्खों की अत्यन्त विचित्र कथाहोती हैं (अब ब्रह्मचारी के पुत्रकी कथा सुनिये) किसी मूर्ख ने अपने मित्रों के साथ वार्तालाप करने में अपने पिताकी प्रशंसा करते २ कहा कि मेरा पिता बाल्यावस्था से ही बड़ा ब्रह्मचारी है उसके समान कोई नहीं है यह सुनकर उसके मित्रों ने कहा तो तुम्हारा जन्म कैसेहुआ तब उसने कहा कि मैं उसका मानस पुत्रहूँ यहसुनकर वह सबलोग बहुत हँसे इसप्रकार से मूर्खलोग असंबद्धमहा मिथ्या बातें कहा करते हैं (अब एक ज्योतिषी की कथा सुनिये) कोई मूर्ख ज्योतिषी अपने देश में जीविका से रहितहोकर अपनी स्त्री और पुत्र समेत परदेश को चलागया और वहां अपना मिथ्या ज्ञान प्रकट करने के लिये लोगों के आगे अपने बालक को हृदय से लगाकर रोनेलगा उसे रोते देखकर लोगों

ने पूछा कि तुम क्यों रोतेहो उसने कहा कि मैं भूत भविष्य और वर्तमान तीनोंकालकी बातें जानताहूं इससे मुझे मालूमहुआ कि आज के सातवेंदिन यह बालक मरजायगा यह कहकर उसने उस दिन के सातवेंदिन अपने बालक को मारडाला उस बालक को मरादेखकर लोगोंने विश्वासयुक्त होके उसको बहुत सा धन दिया और वह उस धनको लेकर अपने घरको आया [illegible] प्रकार से मूर्ख लोग धन के लिये अपने पुत्रको मारडालते [illegible]रन्तु बुद्धिमान् लोग उनपर प्रसन्न नहीं होते हैं (अब आप एक क्रोधी पुरुष की कथा सुनिये) किसी ग्राम में कोई पुरुष किसी मकान के बाहर खड़ा हुआथा और उसस्थान के भीतर कोई अन्य पुरुष अपने मित्रों से उसकी प्रशंसा कररहा था उन मित्रों में से एकने कहा कि हे मित्र! आपका कहना बहुत ठीकहै परन्तु उस- में दो दोष हैं एक साहस और दूसरा क्रोध यह सब बातें उसने बाहरही से सुनकर भीतरजाकर जिसने उसे क्रोधी और साहसी कहाथा उसके गले में कपड़ा लपेटकर कहा अरे मूर्ख! मैंने क्या साहस तथा क्रोधकिया है सो बताओ यह सुनकर उस से सब लोग हँसकर कहनेलगे कि इसके ही कहने से क्या है तुमने तो आपही अपना क्रोध और साहस प्रकट करदिया इसप्रकारसे निज प्रकट दोषको भी मूर्खलोग नहीं जानते हैं (अब कन्या बढ़ानेवाले की कथा सुनिये) किसी राजा के एक बड़ी सुरूपवती कन्या उ- त्पन्नहुई उसने उसका बड़ा सुन्दररूप देखकर वैद्योंको बुलाकेकहा कि कोई ऐसीऔषध देओ जिससे मेरी कन्या बहुत वेगसे बढ़जावे जिस से मैं किसी योग्य बरके साथ उसका विवाह करदूं यह सुन वैद्यों ने उससे कहा महाराज! औषध तो है पर कहीं दूरदेश

में है और उसका यह विधान है कि जबतक वह औषध न आवे तबतक आप अपनी कन्याको अलक्षित करके रखिये राजाने उन के यह वचनसुनके अपनी कन्या उन्हें सौंपदी कि आपही इसको अलक्षित करके रखिये राजाकी आज्ञापाके वह उस कन्याको अपने घर लेगये और कई वर्ष के उपरान्त जब वह तरुणहुई तो राजाके पास लेआये और बोले कि हे महाराज ! औषधके प्रभावसे यह कन्या तरुण होगई उस कन्याको युवती देखकर राजाने उस को बहुतसा धनदिया इसप्रकारसे धूर्तलोग मूर्खोंका धन हरते हैं (अब धेलेके पैदा करनेवाले मूर्खकी कथा सुनिये) किसी नगर-निवासी धनवान् के यहां एक ग्रामीण सेवकथा वह सालभर नौ-करी करके किसीकारण से नौकरी छोड़के अपने घरको चलागया उसके चलेजानेपर उस धनवान् ने अपनी स्त्रीसे पूँछा कि हे प्रिये ! वह तुमसे कुछ लेतो नहींगया है उसने कहा हां धेला लेगया है यह सुनके वह दशपैसे खर्च करके सेवकके घरजाकर अपनाधेला लेआया उसकी इस चतुरतासे सबलोग बहुतहँसे इसप्रकारसे मूर्ख लोग थोड़े के निमित्त बहुतव्यय करते हैं (अब पहिंचान रखने-वाले मूर्खकी कथा(सुनिये) कि जहाजपर चढ़कर समुद्रमें जातेहुए किसी मूर्खका चांदीका पात्र समुद्रमें गिरपड़ा उस मूर्खने वहांभँ-वर आदि की पहिंचान देखली और विचारलिया कि जहां ऐसे भँवर पड़ते होंगे वहांसे अपना पात्र निकाललूंगा यह शोचकर उसने समुद्रके पारजाकर किसी नदीमें भँवर पड़ते देखकर कटोरा मिलने केलिये उसमें गोतामारा लोगोंने पूँछा तुम क्यों गोतालगा-रहेहो तबउसने अपना सब अभिप्राय कहदिया इससे उसका बड़ा उपहास्यहुआ (अब आप बदले में मांस देनेवाले मूर्ख की कथा

सुनिये) किसी मूर्ख राजाने अपने महल परसे दो पुरुषोंको देखा और उनपर प्रसन्न होकर उन्हें बुलाकर अपने यहां नौकर करलिया उनमेंसे एक ने रसोई में से थोड़ा सा मांस चुराया इससे राजाने पावभर मांस उसके शरीर में से कटवा लिया और जब मांसके कटने से वह पृथ्वीपर गिरकर तड़फने लगा तब अपने प्रतीहार से कहा कि पावभर से अधिक मांसइसे दिलवादो इसे बड़ी व्यथा होरही है यह सुनकर प्रतीहार ने अपने चित्त में हँसकर कहा किक्या शिर काटने से मराहुआ मनुष्य सौ शिरके देने से भी जीसक्ता है और राजा से अच्छा कहके उसे वैद्योंके यहां लेजाके औषध लगवा के स्वस्थ करवादिया इसप्रकारसे मूर्ख स्वामी न दण्डदेना जानते हैं और न कृपा करना जानते हैं (अब द्वितीय पुत्र चाहनेवाली मूर्ख स्त्री की कथा सुनिये) किसी स्त्रीके एकही पुत्रथा उसने द्वितीय पुत्रकी अभिलाषासे किसी छलित तपस्विनीसे कहा किं पुत्र होनेका कोई उपाय मुझे बताओ उसने कहा कि यह जो तुम्हारा पुत्र है इसे देवताके आगे मारकरजो बलिचढ़ाओ तो अवश्य तुम्हारे पुत्रहोगा उसके यह वचन सुनकर वह ऐसाही करनेको उद्यत हुई तो उसकी हित चाहनेवाली किसी वृद्धस्त्रीनेउससे कहा कि हे मूर्खनी ! तू अपने विद्यमान पुत्रको मारकर अन्यपुत्र पाना चाहती है जो इसके मारनेपर भी तेरे पुत्र न हुआ तो क्या करेगी इसप्रकार उसके निषेध करने से वह उस मूर्खतासे निवृत्त हुई ऐसे बहुधा दुष्टस्त्रियों के कुसंगसे मूर्खस्त्रियें विनाविचारे कार्य करने लगती हैं पर श्रेष्ठ वृद्धस्त्रियां उन्हें निवारण करदेती हैं (अब आंवले लानेवाले की कथा सुनिये) किसी गृहस्थीने निज मूर्ख सेवक से कहा कि बाग में से मीठे २ आँवले तोड़लाओ तो तिसने आँवले

चल २ के तोड़े और जूंठे कर लाय स्वामीसे कहा कि मीठे २ चख२ के लायाहूं स्वामी लाचार हुआ ॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेऽत्तरार्द्धे पंचनवतितमःप्रदीपः ९५ ॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनी चतुर्थभागेउत्तरार्द्धेषण्णवतितमःप्रदीपः ९६ ॥

मूलदेव धूर्त और उसकी स्त्रीका दृष्टान्त ॥

धूर्तोधूर्ततयोक्तस्तु वशगोजायतेयथा ॥
मूलदेवस्तथोक्त्यासआसीत्स्त्रीवशगः स्फुटम् ९६ ॥

(अर्थ)-धूर्तजन धूर्तताकर के कहागया वश में होजाताहै जैसे मूलदेव निज स्त्रीकी उक्तिसे उसके वश में होता भया ९६ ॥

दृष्टान्त-मूलदेव कहता है कि कहीं २ सतीस्त्रियें भी सती होती हैं मैंने जो अनुभव किया है वही आपको सुनाताहूं कि एकसमय मैं अपने मित्र शशि के साथ पाटलीपुर नगर में सैर करने गया वहां नगर के वाहर एक तड़ागमें वस्त्र धोती एक स्त्रीसे मैंने पूछा कि यहां पथिक कहां टिकते हैं यह सुन उसने कहा कि तट पर चकवे जल में मछली और कमलों में भ्रमरवास करते हैं यहां पथिकोंका कहां ठिकाना देखा उसके यह गम्भीर वचन सुनकर मैं शशि के साथ नगरमें गया तो तहां नगरमें घरके आगे एकलड़का रोरहा खीर उसके आगे धरी तो मैंने कहा कि यह लड़का मूर्ख है जो खीर खाता नहीं और रोरहा है यह सुनतेही लड़का आंख पोंछ के कहनेलगा कि तुम ग्रामीणजन महामूर्ख हो एक तो खीर ठंढी होती है और रोनेसे कफ सूखता तथा भूखभी बढ़ती जाती है तुम ग्रामीणजन रोदन के गुण नहीं जानते यह सुनके हम दोनों लज्जित होकर आगे चले तो एक स्थान में एक पेड़ पर एक सुन्दर कन्या आम के वृक्ष के नीचे निज बहुत सी सखियों सहित

बैठीथी मैंने उस कन्या से कहा कि कुछ आम हमको देओ तो वह बोली गरम आम खाओगे या ठंढे तब मैंने आश्चर्यित होके कहा कि पहिले गरम फिर ठंढेखायँगे यह सुनकर उसने थोड़े से आम धूल में फेंकदिये तो तिनको मैंने निज मुख से फूंकदेदेकर खाये तब वह हँसकर बोली यह तो गरम आमहैं जो फूंक देदेकर खाये अब ठंढेखाओ तो बस्त्रमें लेलेओ उन्हें विन फूंकदेके खाओगे उस के यह वचन सुनकर आम लेके लज्जितहोकरचले तब मैंने शशि तथा अन्य साथियों से कहा कि मैं इस चतुर कन्याके साथ विवाह करूंगा और इसे हास्यका उत्तरदूंगा मेरेवचन सुनकर मेरे साथियों ने उस कन्याके पिताका स्थान ढूंढ़ा दूसरे दिन भेष बदलकर हम सब उसके घर जाकर वेदका पाठकरनेलगे तो वेदपाठको सुनउस कन्याके पिता यज्ञस्वामी नाम ब्राह्मणने हमसे पूंछा कि तुम कहां रहतेहो हमने कहा हम मायापुरीसे विद्या पढ़नेको यहां आये हैं यह सुन उस धनवान् ब्राह्मणने कहा कि अच्छा तुम मेरे ही यहां चार महीने कृपाकरके रहो तो हमने कहा जो चारमहीनेमें आप हमारा मनोरथ पूर्ण करनेकी प्रतिज्ञाकरो तो हम चौमासेभर तुम्हारेहीयहां रहें यह सुनके यज्ञस्वामीने कहा कि जो मेरी सामर्थ्य से मनोरथ पूर्णहो सकेगा तो मैं अवश्य पूर्णकरूंगा उसके यह वचनसुनकर हम सब चार महीनेतक वहां रहेजब चार महीने पूर्ण होगये तब हमारे साथियोंने उससे कहा कि अब हमारे मनोरथको पूर्ण करो यह सुनकर यज्ञस्वामी ने कहा कि तुम लोग क्या चाहते हो तब शशीने मुझे दिखाके उससे कहा कि अपनी कन्याका विवाह इस के साथ करदो शशी के यह वचन सुनके यज्ञस्वामीने बचनबद्ध होकर अपनी उस कन्याका विवाह मेरे साथ करादिया रात्रिके

समय मैंने शयनस्थान में जाकर उससे कहा कि तुम्हें उष्ण और ठण्ढे आमों का क्या स्मरण है यह सुनके उसने मुझे पहचान के हँसकर कहा कि नागरिक लोग ग्रामीणों को इसीप्रकार से हँसा करते हैं तुम इसमें कुपित क्यों होते हो यह सुनकर मैंने उससेकहा कि हे नागरिके ! तुम सुखसे रहो मैं तुझे छोड़कर चला जाऊंगा यह मेरी प्रतिज्ञाहै यहसुनकर उसने कहा कि मेरीभी यह प्रतिज्ञाहै कि तुम्हीं से उत्पन्न हुए पुत्रसे तुमको बँधवाकर यहां बुलाऊंगी यह प्रतिज्ञा करके वह पराङ्मुख होकर सोरही और मैं उसके सो-जाने पर अपनी अँगूठी उसकी उँगली में पहराकर उठके अपने साथियों के पास चलाआया और उसकी चतुरता देखने के लिये उन सबके साथ उज्जयिनी में आगया और वह स्त्रीभी प्रातःकाल उठकर मुझे न देखकर और मेरे नामसे चिह्नित अँगूठीको अपनी उँगलीमें देखकर शोचने लगी कि वह तो अपनी प्रतिज्ञाको पूर्ण करके मुझे छोड़कर चलागया अब मुझको भी पश्चात्ताप छोड़ कर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करनी चाहिये इस अँगूठीमें मूलदेव नाम लिखा हुआ है इससे मूलदेव नाम जो धूर्त्त प्रसिद्ध है वही यह है और वह उज्जयिनी में रहताहै ऐसा लोग कहतेहैं इससे युक्ति पूर्वक उज्जयिनी में जाकर अपना मनोरथ पूर्ण करूं यह विचार के उसने अपने पितासे कहा कि हे तात ! मेरा पति मुझे छोड़कर चलागया उसके विना यहां मैं नहीं रहसक्ती इससे मैं तीर्थयात्राको जाती हूं पिता से यह कह के वह बहुतसा धन तथा परिकरलेकर वेश्याका वेष बना के उज्जयिनी में आई वहां उसने अपने सब परिकर से सलाह करके अपना नाम सुमंगला प्रसिद्ध किया और उसके सेवकों ने नगर भरमें यह प्रसिद्धी करदी कि कामरू देश

से सुमंगला नाम वेश्या आई है और बहुतसा धन लेकर अपने पास पुरुषको आने देती है यह प्रसिद्ध करके वह वहीं की रहने-वाली देवत्तानाम वेश्यासे सुन्दर मकान लेकर उसमें रहनेलगी उसकी प्रशंसा को सुनके पहले मेरे मित्र शशीने सेवकके द्वारा उससे पुछवाया कि तुम्हारा क्या मूल्यहै यह सुनकर उसने कहा कि जो कामी मेरा कहना माने वह यहां आवे मुझे मूल्यसे कुछ प्रयोजन नहीं है मैं पशुओंके समान मूर्ख पुरुषोंके साथ संग नहीं करती सेवकके द्वारा उसके उत्तर को सुनकर रात्रि के पहलेही प्र-हर में शशी उसके यहां गया वहां पहलेही द्वारपर द्वारपाल ने उस से कहा कि हमारी स्वामिनी की यहआज्ञाहै कि जो तुम स्नान करके भी आयेहो तो भी यहाँ स्नानकरो यह सुनकर शशी ने स्नान करना स्वीकारकिया वहाँ दासियों ने उसे स्नान कराने में पहलाप्रहर व्यतीतकिया स्नान करके जब वह दूसरे द्वार पर गया तो द्वारपाल ने उससे कहा कि तुम नवीन वस्त्रों से अपना शृंगारकरो उसने शृंगार करना भी स्वीकार किया वहाँ दासियों ने शृंगार में दूसराप्रहर व्यतीतकरदिया शृंगार करके जब वह तीसरे द्वारपरगया तो द्वारपालने उससे कहा कि भोजन करके भीतर जाना द्वारपाल के वचन सुनके उसने भोजन करना भी स्वीकार किया तब दासियों ने अनेक प्रकार के व्यंजनों के ही परोसनेमें तीसराप्रहर भी व्यतीत करदिया भोजन के उपरान्त जब चौथेद्वार पर वहगया तब द्वारपाल ने उससे कहा कि हे ग्रामीण ! यहाँ से तू चलाजा क्या रात्रिके पिछले प्रहर में वेश्याओं से संगमकिया जाता है द्वारपाल के यह बचन सुनकर शशी खिन्नहोकर वहाँ से चलाआया इसप्रकार से उसने बहुत से कामियों को अपने घरसे

निकलवा दिया इस बृत्तान्त को सुनकर दूतों के द्वारा वर्त्तालाप करके मैं भी सुन्दर वस्त्रादिक पहरके उसके यहांगया और बहुसा धन देके द्वारपालों को प्रसन्न करके स्नानादिक बिना किये उस के शयन स्थान में पहुंचा मैंने तो उसको नहीं पहचाना परन्तु उसने मुझे पहचानकर अभ्युत्थान करके मुझे पलंगपर बैठाकर मधुर २ बचनों से बहुत प्रसन्न किया तब उसके साथ संभोगपूर्वक उसरात्रि को व्यतीत करके उससे मेरा ऐसा अनुराग हुआ कि मैं उसके यहां से न आसका और वह भी मेरे साथ बड़ा स्नेह प्रकट करके जब तक गर्भवती न होली तब तक क्षणभरही मेरे पास से न हटी गर्भस्थिति के पीछे एक झूठापत्र बना के उसने मुझे दिया और कहा कि राजाने यह पत्र भेजा है इसे तुम पढ़ो उसपत्र को खोलकर जो मैंने पढ़ा तो उसमें यह लिखा था कि कामरूप देश से श्रीमान् महाराज मानसिंह सुमंगलाको यह आज्ञा है कि तुम्हेंगये बहुत समय व्यतीत होचुका है इससे शीघ्रहीचली आओ मुझ से इसपत्र को सुनकर वह दुःखित सी होकर मुझ से बोली कि मैं अबजातीहूं मेरे अपराध को क्षमा करना क्योंकि मैं पराधीन हूं यह व्याज करके वह अपने पाटलिपुत्र नगरको चलीगई और मैं उसे पराधीन जानके उसके संग नहीं गया वहां उसने समय पाकर एक पुत्र उत्पन्नकिया उसने बाल्यावस्थाही में सब कलायें सीखलीं बारह वर्षकी अवस्था में उसने चपलता से अपने समान अवस्थावाले दासको पीटा इस से वह दास रोकर बोला कि तू मुझे क्या मारता है तेरे पिताका कुछ ठीक नहीं है तेरी माता विदेश में भ्रमण करनेगई थी वहीं न जाने किसके संग से गर्भ रहगया उस दास के यह बचन सुनकर उसने लज्जित

होकर अपनी मातासे पूंछा कि हे अंबे ! मेरा पिता कहां है और कौन है बालकके यह वचन सुनकर उसपरम चतुर स्त्रीने समय जानकर कहा कि तुम्हारे पिताका मूलदेव नाम है वह मुझे छोड़कर उज्जयिनी में चलागयाहै यह कहकर उसने सब वृत्तान्त उससे कहदिया तब उस बालकनेकहा कि हे अंब ! मैं जाकर अपने पिताको लाकर तुम्हारी प्रतिज्ञाको पूर्ण करूंगा यह कहकर वह अपनी मातासे मेरे सम्पूर्ण चिह्न पूँछकर उज्जयिनी में आया यहां द्यूतस्थान में मुझे द्यूत खेलते देखकर पहिंचान के उसने धूर्त्तता से सब ज्वारियों को जीतकर याचकोंको सब धन देदिया तदनन्तर रात्रिके समय उसने जहां मैं शयन करता था वहां आकर युक्तिपूर्वक मुझको खाटपरसें उतारके पृथ्वी में लिटाकर वहखाट बाजार में लेजाकर रक्खी जब मेरी निद्रा खुली तब मैं अपने को पृथ्वी में पड़ा देखकर बहुत लज्जित हुआ और वहां से बाजार में जाकर देखा तो वह बालक उस खाट को बेचरहा है यह देखकर मैंने उससे जाकर कहा कि इस खाटका क्या मूल्य है मेरे वचन सुनकर वह बोला कि हे धूर्त्त ! यह खटिया मूल्य से नहीं मिलैगी कोई अपूर्व या अद्भुत वृत्तान्त कहने से यह मिलैगी यह सुनकर मैंने उससे कहा कि मैं तुमसे एक अद्भुत वृत्तान्त कहताहूं परन्तु उसे तुम तत्त्वसे सत्य जानकर स्वीकारकरना और जो तुम मेरे ऊपर विश्वास न करके उसे असत्य कहोगे तो तुम जार से उत्पन्न हुए जाने जावोगे और यह खाट मैं तुमसे ले लूंगा यह नियम तुम स्वीकार करो तो मैं अपूर्व्व वृत्तान्त कहूं तब उसने कहा कि कहो तब मैंने कहा कि पूर्व्वसमय में किसी राजा के राज्य में दुर्भिक्ष हुआ तो उसने शूकरकी प्रिया की पीठपर नागोंके बाहनों के जल से आपही खेती की इससे बहुतसा अन्न

उत्पन्न हुआ और दुर्भिक्ष शान्त होगया यहसुन उस बालकने कहा कि नागों के बाहन मेघ हैं और शूकरकी प्रिया पृथ्वी है क्योंकि वाराहजी ने धारणकीथी इससे मेघों के जलसे जो अन्नहुआ तो क्या आश्चर्य है यहसुन उसने मुझे चकितहुआ देखके फिर कहा कि हे धूर्त्त! अब मैं तुमसे अपूर्ववात कहताहूं जो तुम सुनकर तत्त्वसे उसे सत्य २ जानके उसपर विश्वास करोगे तो मैं यह खाट तुमको देदूंगा और नहीं तो तुम मेरेदास होजाना मैंने कहा कि अच्छा कहो तव उसने कहा कि पूर्व्वसमय में एक ऐसा बालक उत्पन्न हुआथा जिसने उत्पन्न होतेही अपने पैरकेभार से पृथ्वी को कँपा दिया और उसीसमय बढ़कर लोकान्तर में पैररक्खा यहसुन कर तत्त्व न जानकर मैंने कहा कि यह बिलकुल मिथ्याहै इसमें जरा भी सत्य नहीं है तवउस बालकने कहा कि क्या वामनरूप विष्णु भगवान् के उत्पन्नहोतेही उनके पैरकेभारसे पृथ्वी नहीं कांपी उसी समय बढ़कर क्या उन्होंने स्वर्गमें पैर नहीं रक्खा इससे मैंने तुमको जीतलियाहै अब तुम मेरे दास होगयेहो यह सम्पूर्ण बाजारके लोग मेरे और तुम्हारे साक्षी हैं इससे मैं जहां जाऊं तहां तुम मेरे साथ २ चलो यहकहके उस बालकने मेराहाथ पकड़लिया और वहां बैठे हुये लोगोंने कहा कि यहबालक बहुत ठीक कहताहै तब वहमुझे बांधकर पाटलिपुत्र में अपनी माता के निकट लेगया वहां उसकी माताने मुझे उसके साथ देखकर मुझसे कहा कि हे आर्यपुत्र! मैंने आज अपनी प्रतिज्ञा पूर्णकरली है क्योंकि तुमहीं से उत्पन्न हुये पुत्र से तुमको यहां पकड़ मँगवायाहै यह कहकरउसने सब वृत्तान्त वर्णन कर दिया तब उसके सब बान्धव बहुत प्रसन्नहुये और उसे निष्कलंक जानके सबने बड़ा उत्सवकिया और मैं भी बहुत प्र-

सन्नहोके बहुतदिन उसके साथ रहकर यहां चलाआया इसप्रकार से हे स्वामी! कुलीन स्त्रियां प्रायः पतिव्रता होती हैं यह जानना चाहिये कि सब स्त्रियां कुलटाही होतीहैं मूलदेवसे इस कथाको सुनकर महाराज विक्रमादित्य अपने मन्त्रियों सहित बहुत प्रसन्न हुआ इसप्रकारके अनेक२भांतिकी कथाओंको सुनके और अनेक प्रकारके आश्चर्य्यकारी कार्य्योंको करके महाराज विक्रमादित्य ने सप्तद्वीपा पृथ्वीका राजभोगा॥

इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेउत्तरार्द्धेषण्णवतितमः प्रदीपः ९६॥

अथ दृष्टान्तप्रदीपिनीचतुर्थभागेउत्तरार्द्धेसप्तनवतितमःप्रदीपः९७॥

शिष्ट श्री अलखरामजीका दृष्टान्त॥

शिष्टाःविशिष्टाःपरदुःखहारिणो नप्राप्तमिच्छं तिधनादिकंबहु॥यथाऽऽसद्वृद्धप्रपितामहोमम वृद्धः समृद्धोलखराम नामकः ९७ चकार राज्ञः सदने सनाटकं प्रदीयमानां जगृहे न सम्पदाम्॥ तुष्टः शताष्टादशसंख्यबंदिनः कारागृहादाविरमोचयत् स्वयम् ९८॥

(अर्थ) शिष्ट विशिष्ट परदुःखहारी महात्माजन किसी से दिये प्राप्त भये भारीभी धनादिककी इच्छा नहीं करतेहैं जैसे हमारे वृद्ध प्रपितामह श्री अलख रामजीने॥ राजा जयपुराधीशके यहां निज शिक्षित महा योगीनाम नाटककिया और तिनसे दीयमान महाभारी सम्पत्ति को ग्रहण नहीं किया किंतु तिनके कारागृह में अठारहसौ कैदियोंके प्रकट आपने छुटवाये जिनका वर्णन ये है॥

दृष्टान्त-हमारेवृद्धप्रपितामह श्रीसुखानन्दात्म श्रीमान् रामजी

भये इनका जीवनचरित्र ऐसे श्रुतहैं कि ये किन्हीनाथ महात्माकी कृपासे जन्मे थे इससे इनका नाम अलखनाथ भया ये वालपनसेही ब्रह्मचर्य्यादि नियम युक्तहुये और तरुण होनेपर एकमित्र ब्राह्मणको साथ लेकर सिद्धिविद्या सीखने के लिये कामरूप देशको गये वहां बहुत समयतक स्त्रियोंने इनको भ्रमा रक्खे तदनन्तर किसी पनिहारिनकी वताई युक्तिसे ये दोनों नगरसे वाहर निकले सोही पीछेसे वे स्त्री इनको अनेकप्रकार के दुर्वचन कहतीरहीं पर इन्हों ने शिक्षा के अनुसार पीठ फेरकर न देखा तो बच चलेआये आतेही राह में उस ब्राह्मणने तो निज सिद्धिके बलसे एकभारी पहलवानको पछाड़ा जो छःपसेरी की सांकलपैरमें डाल चलताथा उसकी सांकलसे इनका पैर छूजानेपर वह इनसे लपटगया तो शिथिलहो गिरा इति ॥ और अलखनाथजीने निज नाटकको जहां तहां प्रसिद्धकिया तिसे देखतेही सारी सभा मोहित होजातीथी एकसमय महाराज जयपुराधीशके दरबारमें नाटक ठहरा तो तिन सहालापी अर्थात् साथ आलाप स्वरमिलानेवाला शिष्य निज विवाह के आवश्यकसमय में रुकाथा सो वह विवाहमंत्रही से निबट भगकर एक रात्रि दिन भरमें वहां पहुँचा उधर इन्हों ने निज योगी नाटक करना आरम्भकिया तो आलाप उस शिष्य के न होने से पूर्ण न ऊंचागया तो मनसे निज शिष्यका स्मरणकिया सोही वह स्वनुष्ठित देवता के समान गर्ज बोला “ अलखनाथजी महाराज ! हाजिरहूं ” तब आलाप पूर्णहुआ तो राजाने प्रसन्नहो थालमेंमोती आदि द्रव्यले इनकी भेंट करनेके लिये आगे धरा तो नृत्य करते२इन्हों ने निज पैर से उसको ठुकरा दिया तो राजाने कहा “ महाराज अलखनाथजी कांई चाहिजे सो भणों ,, तब श्री अलखनाथजी ने निज

मनोरथ रागिनी में प्रकट किया उस समय आप भठियारे की जात वर्णन करते थे ॥

रागिनी ॥ राजा मेरी चिड़ियों दा बंध कटादे । राजा मेरी० अन्तरा । अठारह सौ कैदी तेरे घर सबकी कैद हटादे ॥ राजा मेरी० हे राजन् ! हम तेरा द्रव्य आदिक कुछ नहीं चाहते किन्तु तुम्हारे यहां ये अठारह सौ उमर कैदी हैं तिन सबको आप छोड़ दीजिये, राजाने सुनतेही सबको छोड़दिये तबसे हमारे घरमें चोरोंने आना छोड़दिया था केवल एक चोर हमारे पितामह चिमन रामजी ने चौकीदार के प्राण बचाने के हेतु मारा तबसे वो प्रतिज्ञा टूटी ऐसे तिन अलखरामजी का यश सारे संसार भरमें फैल रहाहै यहां तक कि पाश्चिमात्य प्रांत देशोंमें बहुधा स्त्रियेंभी "अलखो आयो महल खवर करियो" इत्यादि राग गाती हैं विशेष चरित्र ग्रन्थबढ़ने के कारण नहीं लिखते केवल प्रसंगसे वंश परम्परामात्र कहते हैं ॥

सवैप्रतापेनसुपूजितोऽभवत्पुरोहितोविप्रवरेषुपूजितः ॥ स्ववंशवृद्ध्यैजगृहेसुतंवरंसुदासुनाम्नासहजंसरामकम् ॥ ततानसोयंनिजवंशतंतुमुत्पादयामाससुतानथासौ ॥ अष्टौवसूनप्रतिमाँश्चतेषुगुणाग्रणीर्धौंकलरामशर्मा ९९ ॥

फिर तो वे अलखरामजी निजप्रतापसे पूजितहुये और ब्राह्मणों के कार्य बोधक अग्रगण्य (पुरोहित) भये फिर उन्हीं ब्राह्मणजनों करके निजवंश वृद्धिके अर्थ अर्थात् पुत्रका उपाय करना चाहिये ऐसे प्रेरे भये तिन्होंने सहायदाता "सहजराम" नाम से श्रेष्ठपुत्र गोदलिया फिर तो तिन्होंने निज बंशरूप तन्तुको ताना विस्तार

किया अर्थात् बंशवढ़ाया सो आठौं वसुओं के समान आठ पुत्र हरसहाय १ गोविन्दराम २ कृष्णसहाय ३ जीतमल ४ नवनिधराम ५ धौंकलराम ६ और चिमनराम ७ रामरिख ८ ये उत्पन्न किये तिनमें भी गुणोंकरके अग्रगण्य "श्रीधौंकलरामजी,, भये ॥

अश्वारूढःप्रविचरन्भूरिदेशवरेष्वसः ॥ प्रगर्जन्केशरीवासौपूज्यमानोद्विजातिभिः ॥ अथतस्याभवन्पुत्राश्चत्वारश्चतुरावराः ॥ धनीरामकन्हीरामावीश्वरीलालएवच ॥

ऐसे वे (श्रीधौंकलरामजी) श्रेष्ठ अश्वपर सवारभये बहुत से नगरों में विचरा करते औ तहां २ ही ब्राह्मणोंकरके पूजेजाते और सिंह के समान गर्जना करते थे फिर तिन (धौंकलरामजी) के धनीरामजी १ कन्हीरामजी २ ईश्वरीसहायजी ३ लालचन्द्रजी ४ येचार पुत्र उत्पन्नभये जो बड़े चतुरभये ॥

आसीद्योवीश्वरीदत्तवर्य्यःकोवैसर्वास्तद्गुणान्वक्तुमीशः ॥ बिभ्युर्यस्यप्रौढवीर्य्यप्रभावाद्दुष्टाजीवाःप्राणिसंहारिणोऽपि १०० ॥

इनमें जो ईश्वरीसहायजी भये तिनके सम्पूर्ण गुण कहने को कौन समर्थहै जिनके भारी प्रभाव से दुष्टजीव जो प्राणियों को संहार करनेवाले ऐसे सिंहादिक डरतेभये इति ॥ एक समय श्रीमत् ईश्वरीसहायजी श्री जयन्तीजी अर्थात् जीर्णदेवी की यात्रा को गये तो तहां मन्दिर के भीतर पाठ करते रहे रात्रि होने पर पंडोंने कहा आपभी यहां से हटजाइये यहां अर्द्धरात्रि को सिंह

आला है इससे कोई नहीं रहता इन्होंने हर्षितहोकर कहा हम रहेंगे देखें हमको सिंह क्याकहेगा निदान अर्द्धरात्रिभये सिंह आया और आप वैसेही ध्यान से नेत्र मूंदे स्थितरहे सिंहके दर्शन करके चले जानेपर उठते समय आंखें खोलीं तो तिनने पुस्तक के ऊपर एक टकोकुआरीपाया सोही निजअभीष्ट सिद्धिरूप वरदानजान उन्हों ने ग्रहण किया उसी के प्रतापसे शुभचिन्तकका जन्महुआ तो नाम भी "देवीसहाय„ही रक्खागया इति । तथा एक समय श्री प्रयाग राजसे आतेभये इनको राहमें कई वृकभिड़ाओं ने आघेरा तोइन्हों ने निज कमण्डलु में कङ्कर रखकर ऐसा घण्टा नादकिया कि वे भयखाय भगगये इति । और एक समय रात्रिको ये किसी ग्रामसे विवाह कराकर आते थे राहमें चोर सामने से आते थे तो इन्होंने उनको भय देनेके लिये ऐसा निज अद्भुतरूप किया कि लाठी छतुरीको एकके ऊपर एक लगानेसे बहुत ऊंचे दिखाईदिये तो चोरों ने डरकर भागनेके सिवाय कोई अवकाश न पाया ऐसे बहुतसे चरित्र हैं ग्रन्थ बढ़ने के भयसे थोड़े दिङ्मात्र प्रदर्शित कियेहैं इति ॥

श्रेष्ठःसूनुस्तस्यगंगासहायःप्रज्ञायुक्तोयाजकेशःप्रवक्ता ॥ तद्भ्राताऽसौशुक्लदेवीसहायोविद्यारत्नैर्भूरिभिर्भूषितोऽस्ति १०१ ॥

तिन (श्रीमत श्री ईश्वरी सहायजी) के पुत्र प्रज्ञायुत प्रवक्ता (श्री गङ्गासहायजी) याजकेश थे तिनका कनिष्ठ भ्राता (शुक्ल देवीसहाय शर्म्मा) है जो बहुतसे विद्यारूप अमोल्य रत्नों से विभूषित है ॥

शब्दन्यायविदात्मशास्त्रकुशलोज्योतिःप्रबोधे